श्री रत्नत्रय आराधना

(पूजन-पाठ-संग्रह नवीन)

: रचनाकार :-

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदयप्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

मुनि श्री सुयशगुप्तजी

मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक :

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

Email : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम : श्री रत्नत्रय आराधना (पूजन-पाठ-संग्रह नवीन)

आशीर्वाद : गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार : आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी
दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी
वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी
गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी
आर्यिका आस्थाश्री माताजी

सर्वाधिकार सुरक्षित : रचनाकाराधीन

प्रकाशन वर्ष : 2019

संस्करण : प्रथम आवृत्ति : 2500 द्वितीय आवृत्ति : 5000
तृतीय आवृत्ति : 5500 चतुर्थ आवृत्ति : 5000
पंचम आवृत्ति : 3000 षष्ठम आवृत्ति : 2100
सप्तम आवृत्ति : 1000

प्रकाशक : श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थान
1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ
2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332
3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288
4. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922
5. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687
6. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर
9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

आशीर्वाद

श्रावक धर्म के अंतर्गत पूर्वाचार्यों ने श्रावक के षट्आवश्यक कर्म बताए हैं, जिसमें सर्वप्रथम देवपूजा, गुरुपूजा व जिनवाणी की आराधना बताई है। पूजा के प्रकरण में नवदेवता की पूजा करनी चाहिए। पूजा किए बिना श्रावक की क्रिया अधूरी है। पूर्वाचार्यों ने जिनवाणी, जिनग्रंथों में अनेक प्रकार की पूजाओं का प्रकरण लिखा है, पूजाएँ भी लिखी हैं, श्रावक विद्वानों ने भी अनेक प्रकार की पूजाएँ लिखी हैं उन्हीं के अंतर्गत वर्तमान मुनि/आर्यिका भी पूजाओं के प्रकरण लिख रहे हैं, पूजा भी लिखे रहे हैं। यह वर्तमान श्रावक वर्ग का बड़ा भारी पुण्योदय है। उसमें विद्वान् साधुवर्ग लेखन कार्य अच्छा कर रहे हैं। उसमें आचार्य कनकनंदीजी सबसे आगे हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि आपके संघस्थ साधुवर्ग भी विद्वत्ता का परिचय दे रहे हैं, उनकी लेखनी भी चल रही है। मेरे परमशिष्य कविहृदय प्रज्ञायोगी आचार्यश्री गुप्तिनंदी, ग.आ. राजश्री माताजी, ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी, आर्यिका आस्थाश्री ने भी अनेक प्रकार की पूजाएँ लिखीं सो अब वह रचनाएँ "**श्री रत्नत्रय आराधना**" के रूप में छपने जा रही हैं। पूजक को यह अवश्य ही पसन्द आएँगी व देव-शास्त्र-गुरुओं की पूजा करके वे मनुष्यभव सार्थक करेंगे। यह कार्य पुण्य बढ़ाने वाला व आत्मा के निकट पहुँचाने वाला है। रचनाकारों ने यह कार्य किया, उनका कार्य प्रशंसा के योग्य है। मैं उनको बहुत-बहुत आशीर्वाद देता हूँ। वो इसी प्रकार अपने समय का सदुपयोग करते रहें। प्रकाशक को भी आशीर्वाद, द्रव्यदाताओं को भी आशीर्वाद।

कल्याणमस्तु।

"इति"

- गणाधिपति गणधराचार्य कुन्थुसागरजी

सन्मार्गदर्शक का शुभाशीर्वाद

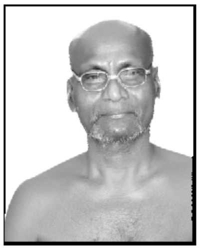

प्रत्येक जीव सुख को चाहता है एवं दुःख को नकारता है। सुख प्राप्त करने का मार्ग है :''देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा (भक्ति), आत्मज्ञान एवं आत्मसंयम। देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा ही प्रकारान्तर से आत्मश्रद्धा आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मसंयम है। स्वात्मविश्वास एवं उसकी उपलब्धि के लिए प्राथमिक अवस्था में आत्मशोधक को देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति/सेवा/पूजा आदि अवलंबन चाहिए। सम्यक्दृष्टि भक्ति से भगवान बनना चाहता है; परन्तु अज्ञानी/मोही मिथ्यादृष्टि भक्ति से भिखारी बनना चाहता है। धन, वैभव, भोग की चाह करके भिखारी बनना चाहता है। अज्ञानी यह नहीं जानता है ना ही मानता है कि निष्काम, निर्मल भक्ति से जो पुण्य बंध होता है, उससे सांसारिक सुख मिलता है एवं भक्ति से जो आत्मा की विशुद्धता बढ़ती है, उससे कर्म की निर्जरा होती है, जिससे परम्परा से मुक्ति भी मिलती है; **परन्तु सांसारिक सुख प्राप्त करने की इच्छा से जो भक्ति, दान, विधान, पंचकल्याणक, रथयात्रा, तीर्थयात्रा आदि करते हैं, उससे अधिक पुण्य बंध नहीं होता और जो पुण्य बंध होता भी है,** वह निरतिशय, पापानुबंधक, संसारवर्द्धक पुण्यबंध होता है, जिससे दुःख ही मिलता है। पूजा/भक्ति आदि क्रिया मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभ, ईर्ष्या, राग-द्वेष आदि को घटाने हेतु की जाती है न कि इन्हें बढ़ाने के लिए; परन्तु वर्तमान में अधिकतर व्यक्ति अधिकांशतः पूजादि कार्य महान उद्देश्य एवं पवित्र भावना से प्रायः रिक्त होकर या कुछ तो इससे विपरीत होकर करते हैं।

अतः पूजादि का वास्तविक स्वरूप क्या है, इसका दिग्दर्शन हमारे संघस्थ उदीयमान कवि एवं विचारक श्रमण प्रज्ञायोगी आचार्य गुप्तिनंदी, गणिनी आर्यिका राजश्री एवं गणिनी आर्यिका क्षमाश्री, आर्यिका आस्थाश्री ने विभिन्न छन्दबद्ध पूजा में किया है। उन सभी को मेरा क्रमशः प्रतिनमोऽस्तु समाधिरस्तु आशीर्वाद है।

प्रकाशक व द्रव्यदाताओं को भी आशीर्वाद।

-आचार्य कनकनंदीजी

प्रस्तावना

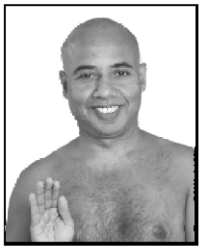

अरिहंत सिद्धाचार्य को वंदन बारम्बार।
पाठक साधु सरस्वती करते जग उद्धार।।

अभी तक देखा, पढ़ा व सुना है, साथ ही अनुभव भी किया है–**भक्ति में वह शक्ति होती है कि वह पतित को पावन, रंक को राजा, शैतान को इंसान और इंसान को भगवान बना देती है।** धनंजय कवि, मनोवती, अंजनचोर, नंदीमित्र और कुन्दकुन्द भगवान की ग्वाले की पर्याय आदि बहुत से देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति करने वालों के उदाहरण हैं। इसलिए कहा गया है :–

एकापि समर्थेयं जिनभक्तिं दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।

यह पंचमकाल दुःखमाकाल है। इस समय संहननशक्ति, ज्ञान, विवेक आदि सद्गुण घट रहे हैं और लेश्या, कषाय, राग–द्वेष आदि दुर्भाव बढ़ते जा रहे हैं। ऐसी दुःषम परिस्थिति में ना तो कोई उत्कृष्ट विशुद्ध चारित्र धारण कर सकता है और ना ही ज्ञानाराधना करके कोई पूर्ण निर्मल ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। वर्तमान में अधिकांशतः सामान्य प्राणियों का ज्ञान और ध्यान में भी मन नहीं लगता **अतः कर्मों से छूटने, दुःखों से मुक्त होने और पापों से बचने का एक ही मुख्य माध्यम वर्तमान में हमारे पास बचा है और वह है जिन–आगम–गुरु की भक्ति।**

प्राचीन और अर्वाचीन ऐसी बहुत–सी जीवन्त घटनाएँ हमारे सामने हैं। चाहे सामान्य गृहस्थ/श्रावक हो या श्रमण जब–जब भी उन पर विपत्ति आई तब वे दुःख, संकट के समय, धर्म की रक्षा के लिए भक्ति में ही लगे और हर आपत्ति से छुटकारा प्राप्त किया। भक्तामर, विषापहार, एकीभाव स्तोत्र आदि इसी के स्पष्ट प्रमाण हैं।

प्रश्न उठता है कि अरिहंत तो अभी हैं नहीं और सिद्धप्रभु सिद्धशिला से ऊपर विराजमान हैं। आचार्य, उपाध्याय, साधु स्वयं साधक हैं, निर्ग्रन्थ हैं उनके पास कोई जादुई चिराग नहीं है तथा भगवान की वाणी ही जिनवाणी है जो

कि हमारे पास लिपिबद्ध में है तथा कथाञ्चित् द्रव्य रूप से उसे जड़ भी कहा जा सकता है। जिनप्रतिमाएँ भी जड़ हैं फिर उनकी भक्ति से दुःखों से मुक्ति कैसे हो सकती है? इसका उत्तर अतिसूक्ष्म ढंग से मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक प्रणाली से प्राप्त किया जाता है। आराध्य की भक्ति में उनके गुणों का चिंतन स्मरण किया जाता है। मन में शुभभाव होते हैं, वचन आराध्य का गुणगान करते हैं और काय भी भक्ति करने में तथा द्रव्य चढ़ाने में तल्लीन होता है। इस प्रकार **विषय/कषायों से हटकर मन/वचन/काय शुभ क्रिया में एकाग्र होते हैं।** हृदय में अद्‌भुत आनंद, आह्लाद की हिलोरें उठती हैं, मन में शुभ परिस्पन्द होता है, जिससे अंतर और बाह्य वातावरण शुद्ध होता है, उस समय आत्मा में अद्‌भुत चेतना शक्ति प्रस्फुटित होती है, **उस शक्ति और आनंद से ही कर्मों की निर्जरा होती है, हमारे योग्य शुभ वर्गणाएँ एकत्र हो जाती हैं, जिससे समस्त दुःख, संकट, आपत्ति, विपत्ति दूर हो जाती है।** समस्त बंधन टूट जाते हैं और सुख, आनंद की प्राप्ति होती है; परन्तु यह क्रिया तभी हो सकती है जब आराध्य-आराधक-आराधना विधि तथा उसके योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सभी शुद्ध एवं योग्य होवें अन्यथा कारण बिना कार्य नहीं हो सकता।

आज वर्तमान में अधिकांश लोगों ने इस कर्म काटने के पवित्र माध्यम को दूषित कर दिया है। किसी ने द्रव्य को पूर्णतया गौण कर प्रतीक को अपनाया है, मात्र वाचनिक भावों को प्रधानता दे रखी है तो किसी ने भावों को गौणकर द्रव्य को प्रधानता दी है, जबकि आचार्यो ने कहा है-

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तु कामः।
आलम्बनानि विधिनान्यवलम्ब्य वल्गन, भूतार्थ यज्ञ पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥

किसी ने द्रव्य और भाव सबको छोड़कर मात्र नामस्मरण जय-जयकार करने को ही सब कुछ मान लिया है; किन्तु ये ही सब कुछ नहीं हैं ये तो इसके पृथक्-पृथक् एक-एक अंग मात्र हैं। यदि आराध्य के आदर्शो पर नहीं चले, उनके सद्‌गुणों को नहीं अपनाया तब कितना भी थाल भर-भरकर पूजा करें, उनके गुणों को याद करें, नाम स्मरण करें, वह सही अर्थों में पूजा नहीं है मात्र आडम्बर और थोथी क्रिया है। सच्चे अर्थो में उनके आदर्शों पर चलना, उनके गुणों को अपनाने का प्रयास करना पूजा है। महात्मा गाँधी ने भी कहा- ''शुभ भावों के साथ सत्कर्म ही पूजा है'' अर्थात् भगवान के गुणस्तवन के साथ-साथ

उनके सद्गुण, दया, करुणा, प्रेम, वात्सल्य, सेवा, परोपकार, संगठन, साहस, विनय, आदर आदि गुणों को अपनाना पूजा है। साथ ही अपने भावों के प्रतीक हेतु आगम अनुसार शुद्ध प्रासुक द्रव्य चढ़ाकर भी पूजा करना चाहिए। इस प्रकार द्रव्य–भाव–कर्म तीनों विधि से पूजा करना चाहिए।

इसी उद्देश्य को लेकर यह **''श्री रत्नत्रय आराधना''** आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें देव–शास्त्र–गुरु की आराधना है, सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यग्चारित्र की आराधना है, पूज्य तीर्थंकर आदि महापुरुष, उनकी साधनास्थली (तीर्थक्षेत्रादि) तथा उनके जीवन की घटना विशेष की आराधना है इसलिए इसका नाम **''श्री रत्नत्रय आराधना''** है।

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव व **परम पूज्य सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्यरत्न श्री कनकनंदी गुरुदेव** के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से **मैंने व मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी, गणिनी आर्यिका राजश्री व गणिनी आर्यिका क्षमाश्री, आर्यिका आस्थाश्री** ने अथक परिश्रम से इसे पुस्तक का रूप दिया है, पूजाओं को बनाया है। इसमें अध्यात्म, द्रव्य–भाव, व्यावहारिक, नैतिक आदि गुण तथा इतिहास आदि सबका सम्यक्रूप से समायोजन करने का पूरा–पूरा प्रयास किया है। तथापि त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है; क्योंकि हम सभी छद्मस्थ प्राणी हैं। पूर्वाचार्यों के साथ वर्तमान दीक्षा–शिक्षा गुरुओं के उपदेश अनुसार उनके अनुभूत भावों को ही हमने पद्य का रूप दिया है। इसमें हमारा कुछ भी नहीं है। हम तो प्रेषक मात्र हैं। अच्छे भाव पंक्तियाँ आदि सब गुरुओं का है और त्रुटियाँ सब मेरी हैं। अतः सभी आराधक, विज्ञजन अपना कषाय कल्मष हटाकर, त्रुटि को सुधारकर शुभभावों से इस पुस्तक का पूरा–पूरा लाभ लें तथा क्रमशः सभी आराध्य पद को प्राप्त हों।

श्री रत्नत्रय आराधना का नवीन संशोधित परिवर्द्धित संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें अनेक नवीन पूजाओं का समावेश किया गया है।

इस पुस्तक के द्रव्यदाता को मेरा आशीर्वाद। पुस्तक के प्रकाशक तथा प्रत्यक्ष परोक्ष सभी सहयोगियों को मेरा नमोऽस्तु आशीर्वाद, साधुवाद तथा मैं भी क्रमशः अतिशीघ्र परम पद को प्राप्त करूँ ऐसी महती भावना के साथ।

–आचार्य गुप्तिनंदी

मेरे विचार बिन्दु

रत्नत्रय आराधना कर भावों के साथ।
पूजक बन मुक्ति चहूँ संबल दो हे नाथ।।

प्रत्येक जीव का परम लक्ष्य/उद्देश्य रत्नत्रय पालन कर मुक्ति प्राप्त करने का होना चाहिए। रत्नत्रय की आराधना के लिए देव-शास्त्र-गुरु की पूजा, वंदना, आरती, नमस्कार, गुण-स्मरण, स्तवनादि साधन हैं। साधन के माध्यम से साध्य को प्राप्त किया जाता है। यदि साधन योग्य नहीं होगा तो साध्य को प्राप्त करने में बाधा आएगी। पूज्यता को प्राप्त करने के लिए पूजक को अंतरंग और बहिरंग अनेक प्रकार की साधन सामग्रियों का संग्रह करना पड़ता है। अंतरंग साधन स्वरूप भावों की निर्मलता और बहिरंग सामग्री के लिए योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की शुद्धता चाहिए। इन दोनों का परस्पर में अविनाभावी संबंध है। इन दोनों के अभाव में पूजक की साधना अधूरी है। मात्र दिखावा है/छलावा है/आत्मवंचना है।

साधक अपनी स्वेच्छानुसार गद्य या पद्य रूप में भगवान का कीर्तन करता है; क्योंकि भक्ति एवं कीर्तन नौका की तरह संसार समुद्र से तिरने का माध्यम है। भक्त जब भक्ति में तल्लीन हो जाता है तब वह चारों ओर से संकल्प विकल्पों के जाल से दूर हटकर स्वयं के परमात्मा को पाने के लिए कटिबद्ध हो जाता है। उस समय वह अपने अशुभ कर्मों की निर्जरा करके शुभ भावों का संचय करता है और यही शुभ भाव परम्परा से मुक्ति का कारण बनते हैं। आचार्य वीरसेनस्वामी ने धवला में कहा है कि भक्ति के माध्यम से निधत्ति और निकाचित कर्म भी झड़ जाते हैं। ऐसी भक्ति करने के लिए आराधक को सर्वप्रथम आगम में वर्णित श्रावकाचारों प्रथमानुयोग ग्रन्थों का समग्रता से स्वाध्याय करना चाहिए; क्योंकि आज्ञाप्रधानी बने बिना और सत्य को जाने बिना भक्ति करना यथार्थ भक्ति नहीं है। भक्ति करते समय भक्त भगवान के गुणस्मरण के साथ-साथ स्वयं के आत्मगुणों को जानने, पहचानने और प्राप्त करने का

प्रयास करता है इसलिए वह अपने मन से प्रभु की श्रद्धा, वचन से गुणस्तवन और काय से उसी रूप में क्रिया करता है।

भक्ति भक्त को भगवान बनाने की प्रक्रिया है। वर्तमान में यह देखने, सुनने और अनुभव में आ रहा है कि इस भक्ति को माध्यम बनाकर समाज में परिवार में, गाँव में, देश में, द्वेष–कलह, फूट और वैषम्यता बढ़ती जा रही है। आपसी संगठन, मैत्री, परोपकार आदि भावनाएँ लुप्त होती जा रही है। जब रक्षक ही भक्षक बन जाए तब उस देश की रक्षा कौन कर सकता है? कोई नहीं। इसी तरह आगम और शास्त्र ही हमारे लिए जब अस्त्र–शस्त्र बन रहे हैं, तब हमारा और समाज का उद्धार कौन कर सकता है? कोई नहीं। इस भयानक कैंसर और कोढ़ जैसे रोग को दूर करने के लिए स्वयं का बलिदान करना होगा। अतएव सत्य को जानने के लिए आगम का निष्पक्ष और अनेकांत दृष्टि से स्वाध्याय चिंतन–मनन और उस रूप कार्यप्रणाली आवश्यक है। पूजक, आराधक और साधक बनने के बाद कषायों की मंदता, समता, धैर्यता, स्वावलम्बन, निष्पक्षता, वात्सल्य और उदारता आदि भावों का प्रादुर्भाव होना चाहिए।

हमने इतिहास नैतिकता, व्यावहारिकता और आध्यात्मिकता आदि विषय का पुट देकर द्रव्य और भाव की मुख्यता को लेकर पूजाएँ बनाने का प्रयास किया है। इन पूजा को बनाने में **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव** का आशीर्वाद तथा **आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव** की प्रेरणा व आशीर्वाद है। पूज्य **आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव** और **आर्यिका क्षमाश्री** जी ने मुझे इस कार्य में सहयोग दिया। इन पूजाओं को बनाते समय अगाध आनंद की प्राप्ति हुई। वे क्षण हमारे लिए चिरस्मरणीय हैं।

इस पुस्तक के द्रव्यदाता ने अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग किया है, इसके लिए भी वे साधुवाद के पात्र हैं। इस पुस्तक में जो कुछ गलतियाँ हुई हैं, उसे विज्ञजन यथायोग्य सुधारकर पढ़ें। पूजक पूज्यता को प्राप्त करें, इसी महती भावना के साथ।

–गणिनी आर्यिका राजश्री

आद्य पठनीय

भौतिकता और विलासिता का अंधकार जितना अधिक बढ़ता जा रहा है उतना ही अधिक मानव आलस्य की गोद में अंगड़ाइयाँ ले रहा है। अपवित्रता और अज्ञानता के दामन में बेसुध सो रहा है, कर्त्तव्यच्युत हो रहा है और स्वयं को खो रहा है। पूजा, अर्चना, स्तुति, वंदना और विधान स्वयं को पाने का एक साधन है, इसीलिए श्रावक के षटावश्यक हैं। यथा–

देवपूजा गुरुपास्ति स्वाध्याय संयमस्तपः।
दानश्चेति गृहस्थाणां षट् कर्माणि दिने-दिने॥

श्रावक को भावना करना चाहिए कि मैं भी श्रम करके श्रमण पद को प्राप्त करूँ। यह श्रमण परंपरा ही मुक्ति का करण है। श्रमण हो या श्रावक हर किसी को आत्मतत्त्व की प्राप्ति के लिए श्रम करना पड़ता है। इस श्रमसाध्य मार्ग में कंकड़–पत्थर, उबड़–खाबड़ कष्ट साध्य गड्ढे और पहाड़ मिलेंगे, जिस पर बिना हिम्मत हारे आगे बढ़ना है, पार करना है। जीव शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक कष्टों के समय भगवान का स्मरण करता है। मंदिर में जाकर हाथ पसारता है, मनौती माँगता है। संकट हटते ही भगवान को भूल जाता है अपनी भोगोपभोग सामग्री के संचय में जुट जाता है। चिंतन, मनन करने का विषय है कि भगवान ने उसे क्या दिया? कुछ भी नहीं; क्योंकि भगवान स्वयं ज्ञाता दृष्टा हैं, वे तो स्वयं की आत्मा में लीन हैं। फिर किसने दिया? हमे हमारे स्वयं के शुभभावों का फल मिला। इन शुभ भावों को प्राप्त करने का माध्यम है भक्ति।

भक्ति की शक्ति भक्त को भगवान बना देती है। भक्ति की सरिता में गोते लगाने वाला ही अपने परमात्मा का दर्शन कर पाता है। भक्ति करने वाला शब्दों पर छन्दों पर ध्यान नहीं देता। कभी–कभी तो वह इतना आनंद–विभोर हो जाता है कि स्वयं को भी भूल जाता है और इसी आनंद

का नाम है भक्ति। भक्ति करने के लिए आराधक में मन–वचन–काय की समग्रता, एकता आवश्यक है। यह एकाग्रता सम्यग्दर्शन में कारण बनती है। सम्यग्दर्शनपूर्वक की गई आराधना ही पूजा है। आराधक आराध्य के गुणों को प्राप्त करने के लिए आराधना करता है। वह आराधना द्रव्य और भावपूर्वक होती है। मात्र द्रव्य आराधना पुण्य बंध का कारण नहीं है और पदानुसार मात्र भाव आराधना कर्म निर्जरा में कारण नहीं हो सकती है। अतएव हमने द्रव्य और भावों का सम्यक् समन्वयात्मक समायोजन करते हुए आधुनिक प्रणाली में, इतिहास आदि हर विषय को प्रधानता देते हुए आबाल/युवा/वृद्धों को लक्ष्य लेकर पूजा बनाई है; क्योंकि आज का युवा वर्ग संस्कृत की एवं प्राचीन पूजाओं को बोलने में तथा उसका अर्थ निकालने में असमर्थ हैं, जिससे पूजा आदि में उनकी रुचि घटती जा रही है। उनकी समस्या को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा शैली में लिखने का प्रयास किया है। मैंने सर्व प्रथम पूजा गुरुदेव **गणधराचार्य कुन्थुसागरजी** के आशीर्वाद से रोहतक के पार्श्वनाथ भगवान की बनाई थी। उसके पश्चात् अन्य पूजाएँ गुरु आशीष और **आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव** की प्रेरणा तथा **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** व **गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** के सहयोग से बनाई है। इन पूजाओं को प्रकाशित करने में द्रव्यदाता ने धन का जो सदुपयोग किया है, वह ज्ञान वृद्धि और सुख–शांति में कारण बने यह मेरी भावना है। अल्पमति होने के कारण इन पूजाओं में त्रुटि रह जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। विद्वानवर्ग आगमोक्त आज्ञानुसार यथायोग्य सुधार करके पढ़ें। हम सभी आराधक रत्नत्रय का पालन करके आराध्य बनें।

इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ...

-गणिनी आर्यिका क्षमाश्री

हमारे 24 तीर्थंकर

चउवीसं तित्थयरे उसहाइ-वीर-पच्छिमे वंदे।
सव्वे सगण-गण हरे सिद्धे सिरसा णमस्सामि ॥

इस वर्तमान काल में इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में 24 तीर्थंकर भगवान हुयोसभी तीर्थंकरों के पंच कल्याणक सौधर्म इंद्र के साथ सभी देव-देवियों ने बड़ी भक्ति से धरती पे आकर मनाये।

हमारे आचार्यों ने श्रावक और साधुओं के लिये षट् कर्त्तव्य बतायें हैं।

कुंदकुंद आचार्य ने षट् कर्त्तव्यों में भी श्रावकों के लिये दो मुख्य कर्त्तव्य उनके अनिवार्य चिन्ह अर्थात उनकी पहचान कहे हैं- "**दान और पूजा**"।

पंचमकाल मे प्रभु की भक्ति ही हमें दुःखों से बचा सकती है। एक जिनभक्ति ही दुर्गति से बचाने वाली हैं।

हर दिन छह अंग सहित पूजा करना चाहिए अभिषेक के साथ करने पर ही पूजा पूर्ण होती है। बिना अभिषेक के भगवान की पूजा अधूरी है।

1. अभिषेक	2. आह्वान	3. स्थापना
4. सन्निधिकरण	5. पूजन	6. विसर्जन

हर दिन नई-नई पूजा करके आप सभी भव्यजन भक्ति का आंनद लें। इसमें चौबीस तीर्थंकर, पँच परमेष्ठी की पूजाओं के साथ सभी पर्वो की पूजायें हैं। अनेक सिद्ध क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र और अनेक तीर्थ क्षेत्रों की पूजायें हैं। नवग्रह अरिष्ट निवारक नव तीर्थंकरों की पूजायें हैं।

पूरे संघ ने इस '**रत्नत्रय आराधना**' में अपनी अपनी लेखनी से प्रभू की पूजायें लिखी हैं।

हर एक साधु ने इन पूजाओं में द्रव्यों का महत्त्व व कारण समझाते हुए पूजा के भावों का भी सुंदरता से वर्णन किया है। सभी भक्त इसका लाभ लें पूजा करके पूज्य पद को प्राप्त करें।

-आर्यिका आस्था श्री माताजी

दो शब्द

भारत धर्मप्रधान देश है। प्राचीनकाल से ही यहाँ के प्रायः सभी धर्मों में पूजा, आराधना, अर्चना का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। सभी धर्मावलंबियों में अपने-अपने विधि-विधान अनुसार ईश्वरोपासना की परम्परा रही है। प्राचीन आर्य अग्नि की उपासना करने का प्रयत्न करते थे। व्याकरण की दृष्टि से **'यज्ञ'** शब्द **'इज्या'** से बना है। वैदिक ऋषियों ने इसका यज्ञ के अर्थ में ही प्रयोग किया है। महाकवि कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में भी यह यज्ञ के ही अर्थ में प्रयुक्त हुआ है-**'जगत प्रकाशं तदशेषमिज्या'** (3/48) **'सोऽहमिज्या विशुद्धात्मा'** (1/68)। यद्यपि वैदिक परम्परा के ही समानंतर पाई जाने वाले दूसरी प्रमुख धार्मिक परम्परा श्रमण जैन परम्परा में भी इज्या शब्द का प्रयोग पूजा-अर्चना के अर्थ में किया है।

आचार्य जिनसेन 'आदिपुराण' में पूजा के चार भेदों की चर्चा करते हुए कहते हैं- **पूजार्हता व मिज्या स चतुर्धा**।' (38/36) पं. आशाधारजी सागारजी धर्मामृत में पूजा के नित्यमह आदि भेद-प्रभेद बताते हुए श्रावक-गृहस्थ को यथाशक्ति जिनेन्द्र पूजा की सलाह देते हैं। **यथाशक्ति यजेतार्हद्देवं नित्यमहादिभिः** (2/24)। आचार्य रविषेण 'पदमचरित' में पूजा की महत्ता बताते हुए लिखते हैं-

जिनबिम्ब जिनागारं जिनपूजां जिनस्तुतिम्।
यः करोति जनस्तस्य न किंचित् दुर्लभं भवेत्।।

अर्थात् जो व्यक्ति जिनेन्द्र देव की पूजा करता है उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। आचार्य योगीन्द्रदेव तो परमात्मप्रकाश में यहाँ तक कहते हैं कि जिस व्यक्ति ने मुनिराजों को दान नहीं दिया, न जिनेन्द्र की पूजा की और ना ही जिसने पंच परमेष्ठियों की वंदना की उसे भला मोक्ष कैसे मिल सकता है?

दाण व दिण्णउ मुणिवरहं ण वि पुज्जिउ जिणणाहु
पंच ण वंदिउ परम गुरु किमु होसई सिव लाहु।।

वीरसेन स्वामी ने 'धवला' (6/1, 9/9, 22) में यह कहा है कि वज्र के आघात से जैसे पर्वत सैकड़ों टुकड़ों में बिखर जाता है, वैसे जिनेन्द्र देव के दर्शन में 'निधत्त और निकाचित' मिथ्यात्व तक का नाश हो जाता है। यही नहीं, बोध पाहुड़ की टीका 17 पर उद्धृत आचार्य सोमदेव की उक्ति में तो जिनेन्द्र की पूजा और मुनियों की उपचर्या किए बिना अन्न ग्रहण करने वाले को सातवें नरक के कुंभीपाक बिल में दुःख भोगने तक की बात कह दी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जैनधर्म में पूजा-आराधना का अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। तभी तो हमारे मनीषियों ने प्राकृत/संस्कृत/हिन्दी ही नहीं, विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में भी विपुल मात्रा में पूजा साहित्य का सृजन किया है।

हर्ष का विषय है कि आर्षमार्ग संरक्षक, ज्ञान दिवाकर, कविहृदय प्रज्ञायोगी **दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी**, चारित्र चंद्रिका, काव्य कुमुदनी वात्सल्यमूर्ति **गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** तथा **गणिनी आर्यिका क्षमाश्री** व **आस्थाश्री माताजी** ने अपने शुभोपयोग के क्षणों का सदुपयोग करते हुए **'श्री रत्नत्रय आराधना'** के रूप में हमें एक अनुपम धरोहर सौंपी है, जो हमारा जीवन पाथेय बनेगी। पुस्तक में रचनाकारों ने लोक रूचि को दृष्टि में रखते हुए, सरलभाषा तथा सरस शैली को ही अपनाया है। यही नहीं, पुस्तक में पद्यानुवाद के साथ-साथ संस्कृत के मूलपाठ देकर पाठक को उनका पूरा-पूरा आनंद उठाने की सुविधा दी है। इस कृति में जहाँ पहले से चले आ रहे छंदों का प्रयोग तो किया ही गया है, साथ ही उसे सरस बनाने के लिए उसमें आधुनिक शैली के छंदों का भी प्रयोग किया है। पुस्तक में भक्ति-रस का पूर्ण परिपाक है ही, रचनाकारों की अलंकार योजना भी उतनी ही सुंदर है।

पुस्तक में दीक्षा शिक्षा गुरु **गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी** एवं **आचार्यरत्न श्री कनकनंदी गुरुदेव** का आशीष लेकर एक स्वस्थ परम्परा का निर्वाह किया है। रचनाकारों ने अपने कथ्य में पूजा की महत्ता को बड़े अच्छे ढंग से प्रतिपादित किया है। **'भक्ति से बड़ी से बड़ी आपत्ति से मुक्ति मिल जाती है......'** आराध्य के गुण चिन्तवन से मन में शुभभाव, वचन में गुणगान तथा काय की शुभ

क्रिया में नियोजन हमारी चेतना शक्ति का स्फुरण करता है। साथ ही यदि हम आराध्य के आदर्श पर नहीं चले तो सब निरर्थक है। (आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव) गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी सीख देते हुए लिखती हैं कि पूजन से कषायों की मंदता, समता, धैर्य, स्वावलम्बन आदि सद्‌गुणों का विकास होता है। वहीं क्षमाश्री माताजी भक्ति में मन–वचन–काय की एकाग्रता पर जोर देती हैं। इस तरह यह अंश औपचारिकता न रहकर हमारा मार्ग प्रशस्त करता है। कृति के प्रथम संस्करण के संपादक श्री उपेन्द्र 'अणु' हैं, जो स्वयं एक कवि एवं विद्वान् है, पूज्य गुरुदेव ने मुझे भी इसे पढ़ने का सुयोग दिया। अतः 'दो शब्द' के रूप में अपनी विनय ज्ञापित कर रहा हूँ।

पूजा में उनके विभिन्न अंगों के साथ–साथ अनेक पाठ भी दिए हैं। रचनाकारों ने पुस्तक में कहीं–कहीं संतों के विशिष्ट क्रिया–कलापों का भी संकेत दिया है **'जग सारा जब सो....'** तब साधु क्या करता है? कहीं–कहीं हमारी वर्तमान दशा पर भी करारी चोट की है। **'स्वार्थ वश मैंने न जाने...', 'ढोंगी धर्माता पर जोर....'**। वे मुनियों पर भी चोट करने में नहीं चूके हैं– **'कोई वस्त्र छोड़ निर्ग्रंथ बना...**। समाज में व्याप्त रूढ़ियों पर रचनाकारों ने अच्छा प्रहार किया है। कुल मिलाकर पुस्तक अत्यंत उपयोगी और संग्रहणीय है।

–डॉ. प्रकाशचन्द जैन
तिलक नगर, इंदौर

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	रचियता	पृष्ठ संख्या
	प्रथम खण्ड : नित्य अभिषेक पूजा		
1.	मंगलाष्टकम् (संस्कृत)	संकलन	21
2.	अभिषेक पाठ	पूर्वाचार्य कृत	23
3.	लघु शांतिमंत्र	संकलन	34
4.	श्री वृहद् शांतिमत्र	संकलन	36
5.	अद्भुत मालामंत्र	-	49
6.	अभिषेक पाठ (हिन्दी)	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	50
7.	आलोचना पाठ	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	51
8.	प्रायश्चित्त पाठ	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	52
9.	विनय पाठ	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	53
10.	पूजा प्रारम्भ (हिन्दी)	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	54
11.	पूजा प्रारम्भ (संस्कृत)	संकलन-आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	58
12.	श्री नित्यमह पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	62
13.	श्री नवदेवता पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	66
14.	श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	69
15.	श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	73
16.	श्री पंच परमेष्ठी पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	77
17.	श्री पंच परमेष्ठी पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	80
18.	श्री अरिहंत परमेष्ठी पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	83
19.	श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	86
20.	श्री आचार्य परमेष्ठी पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	89
21.	श्री उपाध्याय परमेष्ठी पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	92
22.	श्री सर्वसाधु परमेष्ठी पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	95
23.	श्री देव-शास्त्र-गरु विद्यमान 20 तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	98
24.	श्री सर्वतीर्थंकर पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	101
25.	श्री सहस्त्र कूट पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	105

क्र.	विवरण	रचियता	पृष्ठ संख्या
	द्वितीय खण्ड : श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा		
26.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	109
27.	श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	112
28.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	115
29.	श्री पंचकल्याणक पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	118
30.	श्री आदिनाथ पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	121
31.	श्री अजितनाथ पूजा	मुनि श्री सुयशगुप्तजी	125
32.	श्री संभवनाथ पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	129
33.	श्री अभिनंदनाथ पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	134
34.	श्री सुमतिनाथ पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	139
35.	श्री पद्मप्रभु पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	144
36.	श्री सुपार्श्वनाथ पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	148
37.	श्री चन्द्रप्रभु पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	152
38.	श्री पुष्पदन्त पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	156
39.	श्री शीतलनाथ (सुगंध दशमी) पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	160
40.	श्री श्रेयांसनाथ पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	164
41.	श्री वासुपूज्य पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	168
42.	श्री विमलनाथ पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	172
43.	श्री अनंतनाथ पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	177
44.	श्री धर्मनाथ पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	182
45.	श्री शांतिनाथ पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	187
46.	श्री कुन्थुनाथ पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	191
47.	श्री अरहनाथ पूजा	मुनि श्री सुयशगुप्तजी	196
48.	श्री मल्लिनाथ पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	200
49.	श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	205
50.	श्री नमिनाथ पूजा	मुनि श्री सुयशगुप्तजी	210
51.	श्री नेमिनाथ पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	214
52.	श्री पार्श्वनाथ पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	218
53.	श्री पार्श्वनाथ पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	223

क्र.	विवरण	रचियता	पृष्ठ संख्या
54.	श्री महावीर पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	228
55.	श्री पंच बालयति पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	233

तृतीय खण्ड : श्री नवग्रह अरिष्ट शांति पूजा

56.	श्री नवग्रहारिष्ट निवारक समुच्चय पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	236
57.	श्री नवग्रहारिष्ट नव जिनेन्द्र पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	240
58.	रविग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	245
59.	चन्द्रग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	248
60.	मंगलग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	251
61.	बुधग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	255
62.	गुरुग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	259
63.	शुक्राग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	262
64.	शनिग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	265
65.	राहूग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	269
66.	केतुग्रहारिष्ट शांति पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	272

चतुर्थ खण्ड : तीर्थ क्षेत्र पूजा

67.	श्री तीर्थक्षेत्र पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	276
68.	श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	279
69.	श्री निर्वाणक्षेत्र पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	286
70.	श्री गजपंथा सिद्धक्षेत्र पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	289
71.	श्री गोम्मटेश बाहुबली पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	292
72.	श्री बाहुबली पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	295
73.	श्री विन्ध्यगिरी बाहुबली पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	298
74.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ (कचनेर) पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	302
75.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ (बाबानगर) पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	308
76.	श्री चन्द्रप्रभु पूजन (देहरा)	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	313
77.	श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	319
78.	श्री अंजनगिरी शांतिनाथ पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	325
79.	श्री धर्मतीर्थ आदिनाथ पूजन	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	331
80.	श्री जिनवाणी (सरस्वती) पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	336

क्र.	विवरण	रचियता	पृष्ठ संख्या
	पंचम खण्ड : व्रत एवं पर्व पूजा		
81.	श्री नंदीश्वर पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	339
82.	श्री सोलहकारण पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	342
83.	श्री पंचमेरु पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	345
84.	श्री दशलक्षण धर्म पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	348
85.	श्री रत्नत्रय पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	354
86.	श्री सम्यक्दर्शन पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	357
87.	श्री सम्यक्ज्ञान पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	360
88.	श्री सम्यक्चारित्र पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	363
89.	श्री क्षमावाणी पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	366
90.	श्री सर्व गणधर पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	370
91.	श्री गौतम गणधर पूजा (दीपावली पूजा)	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	373
92.	श्री केवलज्ञान लक्ष्मी (दीपावली पूजा)	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	377
93.	श्री ऋषिमंडल पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	381
94.	श्री अक्षय तृतीया पर्व पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	387
95.	श्री श्रुतपंचमी पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	390
96.	श्री रविव्रत पार्श्वनाथ पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	395
97.	श्री वीरशासन जयंती पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	399
98.	श्री रक्षाबंधन पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	403
	षष्टम् खण्ड : गुरु पूजा		
99.	श्री तीन कम नवकोटि मुनिराज पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	408
100.	समाधि सम्राट आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी गुरुदेव पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	411
101.	ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	415
102.	आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	419
103.	आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	422
104.	आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव पूजा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	425
105.	सर्व आर्यिका पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	430

क्र.	विवरण	रचियता	पृष्ठ संख्या
106.	ग.आर्यिका राजश्री माताजी पूजा	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	433
107.	ग.आर्यिका राजश्री माताजी पूजा	क्षुल्लक श्री सुलभगुप्तजी	436
108.	श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी यक्ष-यक्षिणी पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	441
109.	चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी छ्यानवे क्षेत्रपाल पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	444
110.	धमतीर्थ निवासिनी श्री भैरव-पद्मावती पूजा	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	448
111.	श्री पद्मावती पूजन	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	452
112.	श्री घंटाकर्ण यक्ष पूजन	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	456
113.	श्री मणिभद्र क्षेत्रपाल पूजा	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी	459

अष्टम खण्ड : पाठ व आरती संग्रह

114.	अर्घावली		462
115.	श्री निर्वाण काण्ड	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	478
116.	समुच्चय अर्घ	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	480
117.	शांतिपाठ (हिन्दी)	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	482
118.	विसर्जन पाठ (हिन्दी)	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	482
119.	शांतिपाठ (संस्कृत)	संकलन	483
120.	विसर्जन पाठ (संस्कृत)	संकलन	484
121.	आरती संग्रह	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी संघ	485
122.	श्री नवग्रह शांति स्तोत्र (संस्कृत)	श्रुतकेवली आचार्य श्री भद्रबाहू स्वामी	492
123.	श्री सरस्वती स्तोत्र	संकलन	493-494
124.	श्री महावीराष्टक स्तोत्र	भागेन्दु कवि	495
125.	श्री भक्तामर स्तोत्र	श्री मानतुंगाचार्य	497
126.	श्री तत्त्वार्थ सूत्र	आचार्य श्री उमास्वामी	506
127.	अभीष्ट सिद्धी स्तोत्र (पाइर्वनाथ स्तोत्र)	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	518
128.	सामायिक पाठ	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	519
129.	श्रावक प्रतिक्रमण (हिन्दी)	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	520
130.	श्री दीपावली पूजन विधि	संकलन	523

(पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें-)

3

2 卐 24

5

श्लोक- रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण-चरणं च सव्वदा वंदे॥

मंगलाष्टकम्

(नोट- ''कुर्वंतु ते मंगलम्'' बोलते हुए पुष्पांजलि क्षेपण करें)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिता: सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा:।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा: पूज्या उपाध्यायका:॥
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका:।
पञ्चैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

श्रीमन्नम्र - सुरा - सुरेन्द्र - मुकुट, प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दव: प्रवचनाम्भोधीन्दव: स्थायिन:।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठका: साधव:,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरव: कुर्वन्तु ते मंगलम्॥1॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रद:।
धर्म: सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम्॥2॥

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशति:,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधरा: सप्तोत्तरा विंशति:
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषा: कुर्वन्तु ते मंगलम्॥3॥

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणा: कुर्वन्तु ते मंगलम्॥4॥

ये सर्वौषधऋद्धय: सुतपसो वृद्धिंगता: पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला येऽष्टौ वियच्चारिण:।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वरा:,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृत: कुर्वन्तु ते मंगलम्॥5॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपते: सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणाऽवनय: प्रसिद्धविभवा: कुर्वन्तु ते मंगलम्॥6॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा: कुर्वन्तु ते मंगलम्॥7॥

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जात: परिनिष्क्रमेण विभवो य: केवलज्ञानभाक्।
य: कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावित: स्वर्गिभि:,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम्॥8॥

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुष:।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि॥9॥

॥ इति मंगलाष्टकम् ॥

अभिषेक पाठ

(पूर्वाचार्य कृत)

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्र देव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए।)

श्री मज्जिनेन्द्र मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायक - मनन्तचतुष्टयार्हम्
श्री मूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतु-
जैनेन्द्र यज्ञ-विधिरेष मयाभ्यधायि॥1॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

(अमृत स्नान मंत्र बोलते हुए डाभ या दोनों हाथों से स्वयं जलसिंचन करते हुए सर्वांग शुद्धि करें)

अमृत स्नान मंत्र : ॐ अमृतं अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय-स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय क्ष्वीं क्ष्वीं सं हं हं सः स्वाहा।

(आगे लिखे श्लोक को पढ़कर आभूषण और यज्ञोपवीत धारण करें।)

श्री मन्मन्दर-सुन्दरे शुचिजलैर्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिकरं निधाय रचितं त्वत् पादपद्मस्रजः।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे॥2॥

ॐ नमो परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए अनामिका अंगुली से नौ स्थानों मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, पहुचा और पीठ पर तिलक लगावें।)

सौगन्ध्यसंगत मधुव्रतझङ्कृतेन,
संवर्ण्यमानमिव गन्धमनिन्द्यमादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्यं-
पादारविन्दमभिवंद्य जिनोत्तमानाम्॥3॥

ॐ ह्रीं परमपवित्राय नमः आगमोक्त–नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा॥

(निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए भूमि प्रक्षालन करें)

ये सन्ति केचिदिह दिव्य–कुल–प्रसूता,
नागाः प्रभूतबलदर्पयुता–विबोधाः।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषाम्,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्॥4॥

ॐ ह्रीं निर्मल जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए पीठ (सिंहासन) प्रक्षालन करें)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम्।
अत्युद्धमुद्यतमहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसम्भवतापहारि॥5॥

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए सिंहासन पर श्रीकार लिखें)

श्री–शारदा–सुमुख–निर्गतबीजवर्णं,
श्रीमंगलीक वर सर्वजनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं,
श्रीकार–वर्ण–लिखितं जिन–भद्रपीठे॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए दीप प्रज्वलन करें)

दुरन्त मोहसन्तानकान्तार दहनक्षमम्।
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्निं ज्वालापल्लाविताम्बरम्॥7॥

ॐ ह्रीं अग्निं प्रज्वालयामि स्वाहा।

(दस दिक्पालों का सपरिवार आह्वान।)

इन्द्राग्नि-दण्डधर-नैऋत पाशपाणि,
वायुत्तरेश-शशिमौलि-फणीन्द्र-चन्द्राः।
आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिन्हाः,
स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके॥8॥

(नीचे लिखे मंत्रों का उच्चारण कर दस दिक्पालों को अर्घ समर्पित करें, यज्ञांश भेंट करें।)

1. ॐ आँ क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
2. ॐ आँ क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ-आगच्छ आग्नेय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
3. ॐ आँ क्रौं ह्रीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
4. ॐ आँ क्रौं ह्रीं नैऋत आगच्छ-आगच्छ नैऋताय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
5. ॐ आँ क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
6. ॐ आँ क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
7. ॐ आँ क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ-आगच्छ कुबेराय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
8. ॐ आँ क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
9. ॐ आँ क्रौं ह्रीं धरणेन्द्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।
10. ॐ आँ क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(दस दिक्पालों का यज्ञांश दान श्लोक।)

नाथ-त्रिलोक-महिताय दश प्रकार,
धर्माम्बु-वृष्टि परिषिक्त-जगत्त्रयाय।
अर्घं महार्घ-गुण-रत्न महार्णवाय,
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च॥9॥

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो इदं अर्घं पाद्यं गन्धं दीपं धूपं चरुं फलं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ

भो क्षेत्रपाल ! जिनपप्रतिमांकभाल,दष्ट्रांकराल जिनशासनरक्षपाल।
तैलाहिजन्मगुडचन्दनपुण्यधूपै-र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरयज्ञ काले॥
विमलसलिलधारामोदगन्धाक्षतौघैः,प्रसवकुलनैवेद्यैर्दीपधूपैः फलौघैः।
पटहपटुतरोघैः वस्त्रसद्भूषणौघैः,जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि॥10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अत्रस्थ विजयभद्र-वीरभद्र-माणिभद्र-भैरवापराजित पंच क्षेत्रपालाय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं फलं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

श्री पद्मावती अर्घ्यम्

वार्गंधशाल्याक्षतपुष्पमाला-नैवेद्यदीपैर्वरधूपधूम्रैः
फलैश्च शांत्यै वरसंनिधानं पद्मावतीं चात्र समर्चयामि..

ॐ आँ क्रौं ह्रीं पद्मावतीदेव्यै महार्घ्यम् समर्पयामि स्वाहा।

श्री पद्मावती का अर्घ

पार्श्व प्रभु को निज मस्तक पर, धारे पद्मावती माता।
पार्श्वभक्त की तुम सहयोगी, कष्ट मिटाती जगत्राता॥
जिनपूजा में यज्ञभाग दे, तुम्हें बुलाये आ जाओ।
पार्श्व प्रभो की यशोपताका, फिर जग में फहरा जाओ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ शासनसेविका श्री पद्मावती महादेव्यै इदं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

जन्मोत्सवादि-समयेषु यदीय कीर्तिः,
सेन्द्राः सुराः प्रमद-भारनताः स्तुवन्ति।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुध्द्या,
पुष्पांजलिं मलयजाद्रिमुपाक्षिपेऽहम्॥11॥

ॐह्रीं कमल गुलाब बसन्ती आदि नानाविध पवित्र सुगन्धित पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पुष्प-पल्लवों से सुशोभित मुख वाले स्वस्तिक सहित चार सुंदर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य,
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशाज्जिन वेदिकान्ते॥12॥

(नीचे लिखे मंत्र को बोलते हुए चारों कोनों पर स्थापित कलशों में जलधारा छोड़ें। पश्चात् पुष्प आदि क्षेपण करें।)

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हतेभगवते श्रीमतेपद्म-महापद्म-तिगिंच्छ-केशरी-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगा-सिन्धु-रोहित-रोहितास्या-हरित-हरिकांता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्णकूला-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-क्षीराम्भोनिधि शुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षिप्तं नवरत्न-गन्ध पुष्पाक्षताभ्यर्चितमा-मोदकं पवित्रं कुरु-कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं असिआउसा नमः स्वाहाः।

(अभिषेक के लिए प्रतिमाजी को अर्घ्य चढ़ायें)

उदक चंदन तंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुलै, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥13॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्-गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर श्रीवर्ण के ऊपर प्रतिमाजी को विराजमान करें, पश्चात् प्रतिमाजी के ऊपर जल, अक्षत और पुष्प क्षेपण करें।)

यं पाण्डुकामल-शिलागत-मादिदेव,
मस्नापयन् सुरवराः सुर-शैल मूर्ध्नि।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ ! भगवन्निह पाण्डुकशिला पीठे तिष्ठ-तिष्ठ स्वाहा जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर सिंहासन पर विराजमान प्रतिमाजी के समक्ष अर्घ चढ़ाएँ, घंटा, झालर आदि बजाएँ तथा उपस्थित जन समुदाय जय-जयकार करें।

आभिः पुण्याभिरद्भिः परिमल-बहुलेनामुना चन्देनन,
श्रीदृक पेयैरमीभिः शुचिसद्लचयैरुदगमैरेभिरूद्धैः।
हृद्यैरेभिर्निवेद्यैर्मख भवनमिमैदीपयद्भिः प्रदीपैः,
धूपैः प्रायोभिरेभिः पृथुभिरपि फलैरेभिरीशं यजामि॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमदेवाय श्री अर्हत् परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हाथों में पुष्पाञ्जलि लेकर नमस्कार मुद्रा में गुर्वावलि पढ़ें तत्पश्चात् जिनेन्द्र भगवान पर पुष्पाञ्जलि करें।)

श्री गुर्वावलिः

श्रेयः पद्मविकासवासरमणिः स्याद्वादरक्षामणिः,
संसारोरगदर्पगारुड़मणिः भव्योघचिन्तामणिः।
आश्रान्ताक्षयशान्तिमुक्तिमहिषीसीमन्तमुक्तामणिः,
श्रीमद्देवशिरोमणिः विजयते श्री शांतिनाथो जिनः॥

आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानदत्तावधानानां। खण्डस्फुटितजीर्णनूतन श्रीजिनचैत्यचैत्यालयोद्धारणैकधीराणां। यात्राप्रासाद प्रतिष्ठादि-सप्तक्षेत्रधनवितरणैकशीलानां। तर्कव्याकरणछंदालंकारसाहित्यकाव्य-नाटकाभिधाननिमित्तशास्त्रसिद्धान्तमहापुराणादिशास्त्रसरोजरसास्वाद-नमदोत्कटमधुकरायमानानां। निजकुलकमल विकासनैकमार्तण्डानाम्। आश्रितश्रीजिनकल्पवृक्षः श्रीजिनगन्धोदकेनपवित्रीकृतोत्तमाङ्ग शुद्धसम्यक्त्वादिद्वादशरत्नाकरः संघभार धुरंधरः राजसभाश्रृंगारसारः सदागुर्वाज्ञाप्रतिपालक इत्यादि अनेकगुणगणालंकृतानां श्रीमत् श्री........ नगरे/सिद्धक्षेत्रे/तीर्थक्षेत्रे... तीर्थंकर पदकमलाराधकानां प्रज्ञायोगी आचार्यश्री गुप्तिनन्दि गुरुदेव संघस्य, चतुर्विध संघानाम् पुण्यार्थं मंगलार्थं तुष्टिपुष्टयर्थं आरोग्यैश्वर्यसमृद्धयर्थं भव्यजनैः क्रियमाणे श्रीजिनेश्वराभिषेके सावधानाः भवन्तु सर्वे जनाः।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जल से अभिषेक करें।)

दूरावनम्र-सुरनाथ-किरीट-कोटि,
संलग्न-रत्न किरणच्छवि धूसराङ्घ्रिम्।
प्रस्वेद ताप मल मुक्तमपि प्रकृष्टै,
र्भक्त्या जलै-र्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे॥16॥

मंत्र : (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते जलाभिषेकं करोमि स्वाहा।

मंत्र : (2) ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खण्डे...भारतदेशे...प्रान्ते...नाम्नि नगरे... जिन चैत्यालय मध्ये वीर निर्वाण सं...मासोत्तम.... मासे..पक्षे.. तिथौ.. वासरे मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविका सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नमः।

(**नोट** : ऊपर लिखे दोनों मंत्रों में से एक मंत्र बोलना चाहिए।)

अर्घ : उदक चन्दन...जिननाथ महंयजे।

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः जलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(सर्व रसाभिषेक)

सुस्निग्धैर्नव नालिकेर-फलजै-रामादिजातैस्तथा,
पुण्ड्रेक्ष्वादि-समुद्भवैश्च गुरुभिः पापापहैरंजसा।
पीयूषद्रव सन्निभैर्वररसैः सज्ज्ञान-सम्प्राप्तये,
सुस्वादैरमलेरलं जिन विभुं भक्त्यानघं स्नापये॥17॥

मंत्र : (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमो अर्हते, भगवते श्रीमते सर्वरसाभिषेकं करोमि स्वाहा-3)

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः रसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(नारियल रस का अभिषेक)

नालिकेर जलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः।
स्नान क्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिनः॥18॥

मंत्र : ॐ ह्रीं... नालिकेर रसेनाभिषिंचे नमः।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः नालिकेर रसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(आम्ररस अभिषेक)

सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकारिभिः।
सहकाररसैः स्नानं कुर्मः शर्मैक-सद्मनः॥19॥

मंत्र : ॐ ह्रीं... आम्र रसेनाभिषिंचे नमः।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः आम्ररसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(शर्करा अभिषेक)

मुक्त्यंगनानर्मविकीर्यमाणैः, पिष्टार्थकर्पूररजोविलासैः।
माधुर्य धुर्यैर्वरशर्करौधै भक्त्या जिनस्य स्नपनं करोमि॥20॥

मंत्र : ॐ ह्रीं... शर्करा रसेनाभिषिंचे नमः।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः शर्करा रसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(इक्षुरस अभिषेक)

भक्त्या ललाट तट देश निवेशितोच्चैः,
हस्तैश्च्युताः सुर वरासुर मर्त्यनाथैः।
तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा,
सद्यः पुनातु जिनबिम्ब गतैव युष्मान्॥21॥

मंत्र : (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमो अर्हते, भगवते श्रीमते इक्षुरसाभिषेकं करोमि स्वाहा-3)

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः इक्षुरसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(घृत अभिषेक)

उत्कृष्ट वर्ण–नव–हेम–रसाभिराम,
देह प्रभावलय–संगम–लुप्त दीप्तिम्।
धारां घृतस्य शुभगन्ध गुणानुमेयां,
वन्देऽर्हतां सुरभि संस्नपनोपयुक्ताम्॥22॥

मंत्र : ॐ ह्रीं... घृतेनाभिषिंचे नमः।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः घृताभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(दुग्ध अभिषेक)

संपूर्ण शारद शशांक मरीचि जाल,
स्यन्दैरिवात्म–यशसामिव सुप्रवाहैः।
क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिंच्य मानः,
सम्पादयन्तु मम चित्त समीहितानि॥23॥

मंत्र : ॐ ह्रीं... क्षीरेणाभिषिंचे नमः।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः दुग्धाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(दधि अभिषेक)

दुग्धाब्धिवीचि पय संचित फेन राशि,
पाण्डुत्व कान्तिमवधीरयतामतीव।
दध्नांगता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा,
सम्पद्यतां सपदिवांछित सिद्धये नः॥24॥

मंत्र : (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते दध्नाभिषेकं करोमि स्वाहा।)

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः दध्नाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(सर्वौषधि अभिषेक)

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः,
सर्वाभिरौषधिभिरर्हतउज्ज्वलाभिः।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला-
कालेय कुंकुम रसोत्कटवारि पूरैः॥25॥

मंत्र : ॐ ह्रीं... सर्वौषधिभिषिंचे नमः।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः सर्वौषधिभिरभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(तन्दुल पिण्डादि का लेप)

कर्पूरधूलिमिलितैः घनसारपंक-,
सम्मिश्रिते कमलतन्दुलपिण्डपिण्डैः।
उद्वर्तनं भगवतो वितनोमि देह,
स्नेहोपलेपकलना परिलोपनाय॥26॥

मंत्र : ॐ ह्रीं ...... तण्दुलपिण्ड अनुलेपनं करोमि नमः स्वाहा।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः तण्दुलपिण्ड अनुलेपनं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(चतुःकोण कुंभ कलशाभिषेक)

इष्टैर्मनोरथ शतैरिव भव्यपुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण कलशै र्निखिलैर्वसाने।
संसार सागर विलंघन हेतु सेतु,
माप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम्॥27॥

मंत्र : (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते चतुष्कोणकलशाभिषेकं करोमि स्वाहा।)

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः चतुष्कोणकलशाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(चन्दन लेप)

संशुद्ध शुध्द्या परया विशुध्द्या, कर्पूर सम्मिश्रित चन्दनेन।
जिनेन्द्रदेहोपरि कुंकुमेन, विलेपनं चारू करोमि भक्त्या ॥28॥

मंत्र : ॐ ह्रीं... चन्दन अनुलेपनं करोमि नमः।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः चन्दनानुलेपनं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(पुष्पवृष्टि)

वासन्तिका जाति सुरेन्द्र वृन्दै, र्वधूकवृन्दैरपि चम्पकाद्यैः।
पुष्पैरनैकेरलिभिर्हुताग्रैः, श्रीमज्जिनेन्द्राङ्घ्रि युगं यजेऽहम् ॥29॥

ॐ ह्रीं सुमनः सुखप्रदाय पुष्पवृष्टि करोमि स्वाहा।

मंगल आरती

दध्युज्जवलाक्षत मनोहर पुष्प दीपैः, पात्रार्पितं प्रतिदिनं महदादरेण।
त्रैलोक्य मंगल सुखालय कामदाह, मारार्तिकं तव विभोरवतारयामि ॥30॥

इति मंगल आरती अवतरणं करोमि स्वाहा।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

(सुगंधित जल अभिषेक)

द्रव्यैरनल्पघनसार चतुः समाद्यै,
रामोदवासित समस्त दिगन्तरालैः।
मिश्री कृतेन पयसा जिनपुंगवानां,
त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि ॥31॥

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते सुगंधित जलाभिषेकं करोमि स्वाहा।

अर्घ : उदक चन्दन... जिननाथ महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः सुगन्धित जलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

***

अथ शांति मंत्र

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय, अनन्तसंसार-चक्रपरिमर्दनाय, अनन्तदर्शनाय, अनंतज्ञानाय, अनन्तवीर्याय, अनन्तसुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावकश्राविकाप्रमुखचतुस्संघोपसर्गविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय, अघातिकर्मविनाशनाय, अस्माकं (अपना नाम बोलें) अपवायं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। मृत्युं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। अतिकामं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। रतिकामं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। क्रोधं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। अग्निं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वशत्रुं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वोपसर्गं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वविघ्नं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वभयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वराजभयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वचौरभयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वदुष्टभयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वमृगभयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्व आत्मचक्रभयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वपरमन्त्रं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वशूलरोगं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वक्षयरोगं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वकुष्ठरोगं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वक्रूररोगं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वनरमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वगजमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वाश्वमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वगोमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वमहिषमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वधनधान्यमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्ववृक्षमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वगलमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वपत्रमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वपुष्पमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वफलमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि।

सर्वराष्ट्रमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वदेशमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वविषमारीं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्ववेतालडाकिनीशाकिनीभयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्ववेदनीयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वमोहनीयं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्वकर्माष्टकं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि। सर्व दुर्भगत्वं छिंदि-छिंदि भिंदि-भिंदि।

ॐ सुदर्शनमहाराज चक्र विक्रम तेजोबल शौर्यवीर्य शांतिं कुरु-कुरु। सर्वजनानन्दनं कुरु कुरु। सर्वभव्यानंदनं कुरु कुरु। सर्वगोकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-खर्वट-मटंब-पत्तन-द्रोणमुख संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वलोकानन्दनं कुरु कुरु। सर्वदेशानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वयजमानान्दनं कुरु कुरु। मम सर्व शारीरिकादिदुखं हन-हन, दह-दह, पच-पच, पाचय-पाचय, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं कुरु-कुरु सर्ववशमानय हूँ फट् स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनवर्जितं।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते॥

श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु। कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु। पद्मप्रभ-चन्द्रप्रभवासुपूज्य-मल्लिवर्द्धमान पुष्पदंत शीतल मुनिसुव्रत नेमिनाथ पार्श्वनाथ इत्येभ्यो जिनेभ्यो नमः। इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहशान्त्यर्थं गंधोदकधारा वर्षणम्।

संपूजकानांप्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः॥

***

अथ वृहद् शान्तिधारा

ॐ स्वस्ति श्रीमत् पञ्चपरमेष्ठि-पादपद्माराधकानां खण्ड-स्फुटित-जीर्ण-जिनचैत्य चैत्यालयोद्धारणैकधीराणां, आप्तागम-गुरुभक्ति युक्तानां, नित्य नियमानुष्ठान-तत्पराणां, सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्र देशपालन तत्पराणां, अणुव्रत-गुणव्रत-शिक्षाव्रत स्थापनानुष्ठान तत्पराणां, तर्क-व्याकरण-सिद्धान्तज्ञान प्रबलानां, परसमयवादीभसिंहानां, क्रोध-मान-माया-लोभकषाय रहितानां, पीतपद्म-शुक्ललेश्याभाव तत्पराणां, निश्चय-व्यवहारनय चिन्तन तत्पराणां, नित्यार्चन-चतुर्मुख-कल्पद्रुम-अष्टाह्निक, गणधर वलय, रत्नत्रय पूजा परायणानां, आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान शूराणां, मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थभावनातत्पराणां, सेनसंघ-सिंहसंघ-नन्दिसंघ-देवसंघाचार्य वैयावृत्य-तत्पराणां, चतुःसंघगुणानुराग तत्पराणां, अत्यत्र-ग्रामस्था (गाँव का नाम बोले) समस्त श्रावक-श्राविकाणां, आरोग्यायुरैश्वर्याभिवृद्धयर्थं वीतराग-सर्वज्ञ-देवाधिदेवानां, मङ्गलाभिषेकं कुर्महे वयम्।

श्री खण्डोद्भव-कर्दमैः सुरुचिरैः कर्पूर चूर्णेमितैः।
सम्मिश्रैरतिगन्धिभि-र्नद-नदी-कासार कूपादिभिः॥
पाथोभिः परिपूरितेन कलशैः, नान्तः स्थितैर्नात्मिनां।
शांत्यर्थं महाशान्ति मन्त्रपठनैर्देवं जिनं स्नापये॥1॥

ॐ कर्पूर-काश्मीरागुरु मलयजादिक्षोद्रव्यामिश्रैः निर्णिक्त-स्वर्ण रेणयमान कञ्ज किञ्जल्क पुञ्ज-पिञ्जरितैः, विजित विलसद्-विलासिनी विलोल लोचन नील-नीरज-जलद परिपूरितैः परिपूरित सकल जगद्घ्राण-विवर बन्धुर सौगंध्यैः।

अन्धीकृतालिभिरभिष्टुत हेमकुम्भ,
सन्धारितैर्विजित दिग्द्विपदान गन्धैः।

बन्धु प्रभुं भवभृतां हतघाति बन्धं,
गन्धोदकैर्जिनपतिं स्नपयामि शांत्यै ।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं, हं हं, सं सं, तं तं, पं पं, झं झं, झ्वीं झ्वीं, क्ष्वीं क्ष्वीं, द्रां द्रां, द्रीं द्रीं, द्रावय द्रावय नमोऽर्हतेभगवते श्रीमते ॐ ह्रीं क्रौं मम (देवदत्तस्य नामधेयस्य) पापं खण्ड खण्ड, हन हन, दह दह, पच पच, पाचय पाचय, कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं, कुरु कुरु। अर्हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षः क्षीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय, नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ ठ ठ (अमुक नामधेयस्य) मम श्रीरस्तु, सिद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, शान्तिरस्तु, कान्तिरस्तु, कल्याणमस्तु स्वाहा।

चातुर्जातक चन्दनागुरु-शटि-काश्मीर लाक्षाम्बुधैः,
सज्जासेव्यरुजा भयाम्बुफलिनि मां सीन्दु जाती फलैः।
सार्धं शर्कर-याखिलार्घ-मितया शैलारसेवान्वितो,
धूपो मुक्ति रमा विमोहनकरी स्याज्जैन पूजार्पितः ।।3 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नमोऽर्हतेनन्तचतुष्टयप्रभवाय मोक्षलक्ष्मी वशंकराय नमः स्वाहा।

ॐ निखिल-भुवन-भवन मंगली भूत जिनपति-स्नपन-समय-सम्प्राप्ताः। वर-नवमभिनव कर्पूर-कालागुरु-कुंकुम-हरिचन्दनाद्यनेक-सुगन्धि-बन्धुरगंधद्रव्य सम्भार सम्बंध बन्धुरमखिल दिगन्तराल व्याप्त-सौरभातिशय समाकृष्ट समद्-सामज कपोल-तल विगलित मद-मुदित मधुकर निकर मर्हत्परमेश्वर पवित्रतर-गात्र स्पर्शन-मात्र पवित्रीभूत भगवदमिदं गन्धोदक धारावर्षमशेष-हर्षनिबंधनं भवतु (देवदत्तस्य नाम धेयस्य) शान्तिं-करोतु कान्तिमाविष्करोतु, कल्याणं-प्रादुः करोतु, सौभाग्यं-सन्तनोतु, आरोग्यं मातनोतु, सम्पदं संपादयतु, विपद-मवसादयतु यशो-विकासयतु, मनः प्रसादयतु, आयुर्द्राघयतु, श्रियं श्लाघयतु, शुद्धिं विशुद्धयतु,

बुद्धिं विवर्द्धयतु, श्रेयः पुष्णातु, प्रत्यवायं मुष्णातु, अनभिमतं निवारयतु, मनोरथं परिपूरयतु, परमोत्सव कारणमिदं, परम-मङ्गलमिदं, परम-पावन-मिदं स्वस्त्यस्तु नः स्वस्त्यस्तु वः इवीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय, घातिकर्म विनाशनाय अष्ट महाप्रातिहार्य सहिताय, चतुस्त्रिंशत्-अतिशय-समेताय, अनन्तदर्शन-ज्ञान वीर्य सुखात्मकाय। अष्टादश-दोष-रहिताय, पञ्च-महाकल्याण-सम्पूर्णाय नवकेवललब्धि-समन्विताय, दशानेक-विशेषण-संयुक्ताय, देवाधिदेवाय, धर्म-चक्राधीश्वराय धर्मोपदेशन-कराय, चमर-वैरोचना-च्युतेन्द्र प्रभृतीन्द्र-शतेन मेरुगिरि शिखर-शेखरीभूत पाण्डुक शिला-तलेन गन्धोदक परि-पूरितानेक विचित्र-मणिमय मङ्गल-कलशै रभिषिक्तमिदानीमहं त्रैलोक्येश्वरमर्हत्परमेष्ठिन-मभिषेचयामि अर्हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः द्रां द्रीं ऐं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय स्वाहा।

(अत्राष्टद्रव्यार्पण कुर्यात्)

(यहाँ जिस भगवान् के साथ जो द्रव्य लिखा हो, उसे अर्पण करें।)

ॐ ह्रीं शीतोदक प्रदानेन शीतलो-भगवान प्रसीदतु वः। शीता आपः पान्तु शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः॥1॥ ॐ ह्रीं गन्धोदक प्रदानेन अभिनन्दनो भगवान प्रसीदतु वः। गंधाः पान्तु शिव मांगल्यन्तु श्री मदस्तु वः॥2॥ ॐ ह्रीं अक्षतोदक प्रदानेन अनन्तो भगवान प्रसीदतु वः। अक्षतः पान्तु शिव-माङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः॥3॥ ॐ ह्रीं पुष्पोदक प्रदानेन पुष्पदन्तो भगवान प्रसीदतु वः। पुष्पाणि पान्तु शिव-माङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः॥4॥ ॐ ह्रीं नैवेद्य प्रदानेन नेमिनाथो भगवान प्रसीदतु वः। पीयूष पिण्डः पान्तु शिव माङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः॥5॥ ॐ ह्रीं प्रदीप प्रदानेन चन्द्रप्रभो भगवान प्रसीदतु वः। कर्पूर-माणिक्य-दीपाः पान्तु शिव-माङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः॥6॥ ॐ ह्रीं धूप प्रदानेन धर्मनाथो भगवान प्रसीदतु वः। गुग्गुलादि दशाङ्ग धूपाः पान्तु शिव-माङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः॥7॥ ॐ ह्रीं फल प्रदानेन

पार्श्वनाथो भगवान प्रसीदतु वः। (अमुक फल का नाम) प्रभृति फलानि पान्तु शिव-माङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः॥8॥ ॐ ह्रीं अर्हतः पान्तु वः सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्या-भिवृद्धिरस्तु वः। ॐ ह्रीं सिद्धाः पान्तु वः हृदयं निर्वाणं प्रयच्छन्तु वः। ॐ ह्रीं आचार्यापान्तु वः शीलगुणाप्ति शीतल सौगंध्यमस्तु वः। ॐ ह्रीं उपाध्यायः पान्तु वः सौमनस्यं चास्तु वः॥ ॐ ह्रीं सर्व साधवः पान्तु वः अन्नदान-तपो-वीर्य-विज्ञान मस्तु वः॥

(यहाँ चौबीस तीर्थंकरों की जयकार लगाते हुए 24 बार पुष्प चढ़ावें।)

ॐ ह्रीं वृषभ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् अष्टविध कर्म विनाशनं चास्तु वः॥1॥ ॐ ह्रीं श्रीमदजितजिन स्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् अजेयशक्तिर्भवतु वः॥2॥ ॐ ह्रीं संभवजिन स्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् अनेक गुणगणाश्चास्तु वः॥3॥ ॐ ह्रीं अभिनंदनजिन स्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् अभिमत फलं प्रयच्छन्तु वः॥4॥ ॐ ह्रीं सुमतिजिन स्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् अमृत-पवित्रं प्रयच्छन्तु वः॥5॥ ॐ ह्रीं पद्मप्रभ स्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् दया प्रयच्छन्तु वः॥6॥ ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिन स्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् कर्मक्षयश्चास्तु वः॥7॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् चन्द्रार्कतेजोऽस्तु वः॥8॥ ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् पुष्प सायकातिशयोऽस्तु वः॥9॥ ॐ ह्रीं शीतलजिन स्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् अशुभकर्ममलं प्रक्षालनमस्तु वः॥10॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् श्रेयः करोऽस्तु वः॥11॥ ॐ ह्रीं वासुपूज्य जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् रत्नत्रयावासं करोऽस्तु वः॥12॥ ॐ ह्रीं विमलजिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् सर्द्धमवृद्धिर्वैर्माङ्गल्यं चास्तु वः॥13॥ ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् अनेक धन-धान्याभि वृद्धिरक्षणमस्तु वः॥14॥ ॐ ह्रीं धर्मनाथ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् शर्म प्रचयोऽस्तु वः॥15॥ ॐ ह्रीं श्रीमद् अर्हत्परमेश्वर सर्वज्ञ परमेष्ठी श्री

शान्तिनाथ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् शान्तिकरोऽस्तु वः ॥16॥ ॐ ह्रीं कुन्थुनाथ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् चारित्राभिवृद्धिरस्तु वः ॥17॥ ॐ ह्रीं अर जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् परम कल्याण परम्परास्तु वः ॥18॥ ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् छल्य विमोचनं करोऽस्तु वः ॥19॥ ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् सम्यग्दर्शनं चास्तु वः ॥20॥ ॐ ह्रीं नमिनाथ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् सम्यग्ज्ञानं चास्तु वः ॥21॥ ॐ ह्रीं अरिष्टनेमि जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् अक्षय-चारित्रं ददातु वः ॥22॥ ॐ ह्रीं श्रीमत्पार्श्वनाथ जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् सर्व विघ्न विनाशनमस्तु वः ॥23॥ ॐ ह्रीं वर्धमान जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात् सम्यग्दर्शनाद्यष्ट विशिष्ट गुणमस्तु वः ॥24॥

ॐ श्रीमद् भगवद् अर्हत्सर्वज्ञ परमेष्ठी परम पवित्र शान्ति भट्टारक जिनस्वामिनः श्री पाद-पद्म प्रसादात्-सद्धर्म बलायु-रारोग्यैश्वर्याभि वृद्धिरस्तु ॐ वृषभादयो-महति-महावीर-वर्द्धमान-पर्यंत परम तीर्थंकर देवाश्चतुर्विंशति अर्हंतो भगवंतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सकलवीर्याः सम्भिन्न मस्तकाः वीतराग-द्वेष मोहस्त्रिलोक नाथा-स्त्रिलोक महिता-स्त्रिलोक प्रद्योतन करा। जाति जरा मरण रोग विप्रमुक्ताः सकल भव्य सुहृत्जन समूह कमल वन सम्बोधन कराः। देवाधिदेवाः अनेक गुणगण शत सहस्रालंकृत दिव्यदेहधराः। पञ्चमहा-कल्याणाष्टमहाप्रातिहार्य, चतुस्त्रिंशत् अतिशय विशेष सम्प्राप्ताः सुरासुरोरगेन्द्र चक्रधर-बलदेव-वासुदेव प्रभृति दिव्य समान भव्यवर पुण्डरीक परम पुरुष मुकुट-तट-निविड निबद्ध-मणिगणकर निकर वारिधाराभिषिक्त चारु चञ्चचरण कमल युगलाः। स्वशिष्य-पर शिष्य वर्गाः प्रसीदन्तु वः परममाङ्गल्य नामधेयाः (अपना नाम कहें) सर्द्धम कार्येष्विहामुत्रं च सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छन्तु वः।

ॐ नृपतिशत सहस्रालंकृत सार्वभौम राजाधिराज परमेश्वर सकल चक्रवर्ति बलदेव वासुदेव मण्डलीक-महामण्डलीक महामात्य सेनानाथ राजश्रेष्ठि

पुरोहितादि शिरस्कराञ्जलि नमित करतल-कमल मुकुलालंकृत पाद पद्मयुगलाः विद्याधरराजकिरीट कोटि रुचिर-रुचिग्वृष्टि चञ्चच्चरण कमलाः। कुलिशनाल रंजत मृणाल मन्दार-कर्णिका राति कुलगिरि शिखर-शेखर गगन गमन मन्दाकिनी महाहृद नद-नदी शत-सहस्र-दल कमल वासिन्यादि सर्वाभरण भूषितांग सकल सुरसुन्दरी वृन्द वन्दित चारु-चरण-कमल युगलाः। देवाधिदेवा सशिष्य-प्रतिशिष्यानुवर्गाः प्रसीदतु वः। ॐ परम निर्वाण मार्ग सम्प्राप्ताः परम मंगल (नामधेयानां) सद्धर्मकार्येष्विहामुत्रं च सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छन्तु वः॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं स्वाहा॥1॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सिरोरोग विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥2॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं नाशिका रोग विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥3॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं अक्षि रोग विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥4॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं कर्ण रोग विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥5॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ-बुद्धीणं ममात्मनि विवेक ज्ञानं कुरु-कुरु शूल उदर गड गुमड विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥6॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं मम सर्व ज्ञानं कुरु-कुरु श्वास हेडकी रोग विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥7॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादानु-सारीणं परस्पर वैर-विरोधनं विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥8॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं श्वास-कास रोग विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥9॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं कवित्वंपाण्डित्यं च कुरु-कुरु स्वाहा॥10॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं प्रतिवादी-विद्या विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥11॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धीणं अन्य-गृहीण श्रुतज्ञानं कुरु-कुरु स्वाहा॥12॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजु-मदीणं बहुश्रुत ज्ञानं कुरु-कुरु स्वाहा॥13॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं सर्वशांतिं कुरु-कुरु स्वाहा॥14॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दश पुव्वीणं सर्व वेदिनो भवतु-भवतु॥15॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस-पुव्वीणं स्वसमय-परसमय वेदिनो

भवतु भवतु ॥16॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठाङ्ग-महाणिमित्त-कुसलाणं जीवित मरणादि ज्ञानं कुरु-कुरु स्वाहा॥17॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं कामित वस्तु प्राप्तिर्भवतु भवतु॥18॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं उपदेश-प्रदेशमात्र ज्ञानं कुरु-कुरु स्वाहा॥19॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्ट पदार्थ चिंता ज्ञानं कुरु-कुरु स्वाहा॥20॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण-समणाणं आयुष्यावसान ज्ञानं कुरु-कुरु स्वाहा॥21॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास-गामीणं अंतरिक्ष गमनं कुरु-कुरु स्वाहा॥22॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी-विसाणं विद्वेष प्रतिहतं भवतु-भवतु॥23॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं स्थावर-जङ्गमकृत विघ्न विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥24॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वचस्तम्भनं कुरु-कुरु स्वाहा॥25॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त-तवाणं सेनास्तंभनं कुरु-कुरु स्वाहा॥26॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्निस्तंभनं कुरु-कुरु स्वाहा॥27॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं जलस्तंभनं कुरु-कुरु स्वाहा॥28॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादि विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥29॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं दुष्ट मृगादि भय विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥30॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण परक्कमाणं लतागर्भादि भय विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥31॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर-गुण-बंभ-यारीणं भूत-प्रेतादि भय विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥32॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं जन्मान्तर देव वैर विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥33॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहि-पत्ताणं सर्वापमत्युविनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥34॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि-पत्ताणं अपस्मार रोग विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥35॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि-पत्ताणं गजमारि विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥36॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि-पत्ताणं मनुष्य अमरोपसर्ग विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥37॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण-बलीणं गो अश्व मारि विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥38॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि-बलीणं अजमारि विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥39॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बलीणं महिष-गोमारि विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर-सवीणं सर्पभय विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा ॥41॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि-सवीणं युद्धभय विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा ॥42॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर-सवीणं मम सर्व सौख्यं कुरु-कुरु स्वाहा ॥43॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं मम सर्व राजभय विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा ॥44॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण-महाणसाणं कुष्ठ-गंड-मालादि विनाशनं कुरु-कुरु स्वाहा ॥45॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं बंधन विमोचनं कुरु-कुरु स्वाहा ॥46॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं अस्त्र शस्त्रादि शक्ति निरोधनं कुरु-कुरु स्वाहा ॥47॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं सर्व सिद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा ॥48॥

ॐ आमौषधयः क्ष्वेडौषडयः जल्लौषडयः विडौषडयश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ मति-स्मृति-संज्ञा चिंताभिनिबोध ज्ञानिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ कोष्ठ-बीज-पादानुसारि संभिन्नश्रोत्र श्रवणाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ जल-जंघा-तंतु-भूमि पुष्प श्रेणि-फल चतुरङ्गुल-आकाश चारणाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ मनोबली, वचोबली, कायबलिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ उग्रतपोदीप्ततपोमहातपोघोरतपो-ऽनुतपोमहोग्रतपोश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ मति श्रुतावधि मनःपर्यय केवलज्ञानिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ वास्तु वायु अग्नि मेघ नाग पंचकुमार देवाश्चः वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ यम वरूण कुबेर वासवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ असुर नाग विद्युत सुपर्णाग्नि वातस्तनितोदधिद्वीप दिक्कुमारादि दशविध भवन वासिकाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ अनंत वासुकी तक्षक-कर्कोटक-पद्म महापद्म-शंखपाल, कुलिश-जय-विजय महोरगाश्चः वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ इन्द्राग्नि-नैऋत्य-यम वरुण कुबेर ईशान् धरणेन्द्र सोमाश्चेति दशदिक्पालकाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ सुरा सुरोरगेन्द्र चमर चामर सिद्ध विद्याधर किन्नर किम्पुरुष गरुड़ गंधर्व यक्ष राक्षस भूतप्रेत पिशाचाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ बुध शुक्र-बृहस्पत्यर्केन्दु-शनैश्वरांगारक-राहु केतु तारकादि-महा ज्योतिष्क देवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ चमर वैरोचन-धरणानन्द भूतानन्द-वेणुदेव-

वेणुधारी–पूर्णवशिष्ट–जलकान्त–जलप्रभ घोष महाघोष हरिषेण–हरिकान्त–अमितगति, अमितवाहन वेलाञ्जन प्रभञ्जन अग्निशिखि–अग्निवाहनाश्चेति विंशति भवनेन्द्राश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ गीतरति–गीतकान्त, सत्पुरुष, महापुरुष सरूप, प्रतिरूप, घोष महाघोष पूर्णभद्र–मणिभद्र–पुष्पचूल–महाचूल–भीम–महाभीम काल महाकालाश्चेति षोडश व्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ नाभिराय–जितशत्रु–जितारी–संवर–मेघराज–धरणराज–सुप्रतिष्ठ महासेन–सुग्रीव–दृढ़रथ–विष्णुराज–वसुपूज्य–कृतवर्मा–सिंहसेन–भानुराज–विश्वसेन–सूरसेन–सुदर्शन–कुंभराज–सुमित्र–विजय–समुद्र विजय–अश्वसेन–सिद्धार्थाश्चेति चतुर्विंशति जिन जनकाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ मरुदेवी विजया–सेना, सुषेणा, सिद्धार्था, मङ्गला, सुसीमा, पृथ्वीषेणा, लक्ष्मणा, जयरामा, सुनन्दा, विष्णुश्री, जयावती, जयश्यामा, सर्वयशा, सुव्रता, ऐरावती, श्रीकान्ता, मित्रसेना, प्रभावती, पद्मावती, वप्रा, शिवादेवी, वामा, प्रियकारिण्यभिधानाश्चेति चतुर्विंशति जिन मातृकाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ गोमुख, महायक्ष, त्रिमुख, यक्षेश्वर, तुंबुरव, कुसुम, विजय, श्याम, अजित, ब्रह्म, ईश्वर, कुमार, षण्मुख, पाताल, किन्नर, गरुड़, गंधर्व, महेन्द्र, कुबेर, वरुण, भृकुटी, सर्वाण्ह, धरणेन्द्र, मातंग नामाश्चेति चतुर्विंशति जिन यक्षेन्द्राश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ चक्रेश्वरी, रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृंखला, पुरुषदत्ता, मनोवेगा, काली, ज्वालामालिनी, महाकाली, मानवी, गौरी, गांधारी, वैरोटी, अनन्तमती, मानसी, महामानसी, जया, विजया, अपराजिता, बहुरूपिणी, चामुण्डी (कुसुमालिनी), कुष्माण्डी, पद्मावती, सिद्धायनिति चतुर्विंशति यक्षी जिनशासन देवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ कुलगिरि शिखर–शेखरीभूत महाह्रदादि सरोवर मध्यस्थित सहस्रदल–कमल वासिन्यो मानिन्यः सकलसुर–सुंदरी वृन्दवन्दित पादकमलाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ सौधर्मैशान्–सानतकुमार–माहेन्द्र–ब्रह्म–ब्रह्मोत्तर लांतव–कापिष्ठ शुक्र–महाशुक्र शतार–सहस्रार–आनत–प्राणत–आरणाच्युतेन्द्रादि

षोडश कल्पवासिकाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ हिट्ठिम-हिट्ठिम-हिट्ठिम-मज्झिम हिट्ठिम-उवरिम, मज्झिम-हिट्ठिम, मज्झिम-मज्झिम, मज्झिम-उवरिम उवरिम-हिट्ठिम उवरिम-मज्झिम उवरिम-उवरिमोपरिमाश्चेति नवग्रैवेयक वासिनोऽहमिन्द्र देवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ अर्च्च अर्च्चमालिनी वैरोचन सोमरूपाङ्कास्फटिकादि नवानुदिश वासिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां, ॐ विजय वैजयन्त जयंत अपराजित सर्वार्थसिद्धि नामधेय पञ्चानुत्तर-विमान विकल्पानेक विविध गुण सम्पूर्णाष्ट गुणसंयुक्ताः सकल सिद्ध समूहाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां।

सर्वकालमपि (नामधेय) सम्पत्तिरस्तु, सिद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, शान्तिरस्तु, कांतिरस्तु, कल्याणमस्तु, शुभमस्तु, शिवमस्तु, स्वस्तिरस्तु, मंगलमस्तु, क्षेममस्तु, कुशलमस्तु, समृद्धिरस्तु, मनःसमाधिरस्तु, इष्ट सम्पदस्तु, श्रेयोभिवृद्धिरस्तु, शास्त्र समृद्धिरस्तु, अविघ्नमस्तु, अरिष्ट-निरसनमस्तु, सत्कार्य सिद्धिरस्तु, ऐश्वर्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, दान-तपोवीर्य-धर्मानुष्ठानादि नित्यमेवास्तु-धनधान्य समृद्धिरस्तु, सामोदो-प्रमोदो भवतु, काम माङ्गल्योत्सवासन्तु॥

ॐ वृषभादि वर्धमानान्ताः शांतिकराः सकल कर्म रिपु कान्तार दुर्ग विषयेषु रक्षतु मे जिनेन्द्रः। आदित्यसोमाङ्गारकबुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु नाम नवग्रहाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां। अत्र.... तिथि.... करण...नक्षत्र...वार.... लग्न देवाश्च इहान्यत्र ग्राम नगराधिदेवताश्च ते सर्वे गुरु भक्ता अक्षीण कोश-कोष्ठागार भवेयुर्दान-तपो-वीर्य-धर्मानुष्ठानादि नित्यमेवास्तु। मातृ-पितृ-भ्रातृ-पुत्र-पौत्र-कलत्र-गुरु-सुहृद-स्वजन-परिजन सम्बन्धि बन्धुवर्ग सहितस्य (नामधेयस्य) धन धान्य ऐश्वर्य द्युति-बल-यशः कीर्ति-बुद्धिवर्धनं भवतु।

चातुर्वर्ण संघाः प्रसीदन्तु, दीक्षा-शिक्षा-विद्यागुरवश्च-प्रसीदन्तु, ग्राम कुल गृह नगरादि देवताश्च प्रसीदन्तु, शाम्यन्तु घोराणि, शाम्यन्तु पापानि।

पुण्यं वर्धताम्, धर्मोवर्धतां, आयुवर्धतां, श्रीवर्धतां, यशोवर्धतां, शांतिवर्धतां, कांतिवर्धतां, मतिवर्धतां, बुद्धि-विशुद्धिवर्धतां, रत्नत्रयं-वर्धतां, सम्यक्त्वंवर्धतां, सम्यग्ज्ञानंवर्धतां, सम्यक्चारित्रंवर्धतां, श्रेयोवर्धतां, मंगलवर्धतां, आरोग्यवर्धतां, कुल, गोत्रं, जातिचाभिर्वर्धतां स्वस्ति भद्रं चास्तु वः ततो भूयो भूयः श्रेयसे। ॐ ह्रीं ड्वीं क्ष्वीं हं सः स्वस्त्यस्तु ते मे स्वाहा। ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां। अर्हन्तो भगवन्तो सर्वज्ञः सकल सर्वदर्शिनः सकलवीर्य सुखास्त्रिलोक प्रद्योतनकरा जाति-जरा-मरण विप्रमुक्ता सर्वविदश्च ॐ श्री ह्रीं धृति-कीर्ति बुद्धि लक्ष्म्यश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय, रत्नत्रया-लङ्कृताय, द्वादश गणपरिवेष्टिताय प्रभामंडलमंडिताय शुक्लध्यान-पवित्राय, अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय, धर्मचक्राधीश्वराय, नवकेवललब्धिसमन्विताय, धर्मोपदेशनकराय घोरोपसर्गविनाशनाय, धरणेन्द्रफणामंडलमण्डिताय, त्रैलोक्यवशंकराय, घातियाघातिकर्म क्षयंकराय त्रैलोक्य मही-व्याप्ताय, दिव्यतेजोमूर्तयेनमः त्रैलोक्यहिताय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, अनन्त ज्ञान-दर्शन सुख वीर्याश्च, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय मुनि-आर्यिका श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुः संघोपसर्ग विनाशनाय अजराय, अमराय, अभवाय (अमुक नामधेयस्य) अस्माकं (मम) जन्म-जरा-मरणं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। हन्तुकामं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। हास्यरत्यरति कामं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। क्रोधमानमायालोभं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। शोकभय जुगुप्सां च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। पाप वैरं वायुधारणं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। अग्नि शत्रु जलादिभयं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। पुन्नपुंस्त्रीवेदं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। मिथ्यात्व-राग-द्वेष मत्सरं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वविघ्नं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व चोर दुष्ट मृगराज भयं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व दोष रोग शोक भय व्याधिं च छिंदि-छिंदि,

भिंदि-भिंदि। सर्व विकार विषाद प्रमादं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व सर्प वृश्चिक सिंहादि भयं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वाशा स्नेह लोभ विषाद-निद्रा विकथां च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व तृष्णामूर्च्छार्त्तरौद्र ध्यानं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वपरमंत्रं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वात्मपरघातं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वाधि-व्याधि उपव्याधिश्च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वाकुल-व्याकुलं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व अक्षि-कुक्षि शिरो-ज्वर रोगं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वक्रूर कुष्ठ रोगं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वाहंकार ममकारं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्वसङ्कल्प-विकल्प जालं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व नर गजाश्व गो महिषमारिं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व सस्य धन धान्य मारिं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व वृक्ष गुल्म-गल पत्र पुष्प फल लता मारिं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व राष्ट्र देश नगर ग्राम मारिं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व वेताल डाकिनी शाकिनी भयं च छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व वेदनीयं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व मोहनीयं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व कर्माष्टकं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि। सर्व दुर्भगत्वं छिंदि-छिंदि, भिंदि-भिंदि।

ॐ सुदर्शन जिनराज मम चक्र विक्रम तेजो-बल-वीर्य-शौर्य-औदार्यं-गाम्भीर्यं शान्तिं च कुरु कुरु। दर्शन विशुद्ध्यादि षोडशकारण भावनां कुरु-कुरु। सर्व गुणिजन प्रमोदं कुरु-कुरु। क्लिष्ट जीवेषुकृपां कुरु-कुरु। विपरीत वृत्तौ माध्यस्थं कुरु-कुरु। सर्वक्षमादि धर्मं कुरु-कुरु। मस्तकादि सर्वरोग विनाशनं कुरु-कुरु। सर्वोदर रोग विनाशनं कुरु-कुरु। पादादि सर्व रोग विनाशनं कुरु-कुरु। बोधिलाभं कुरु-कुरु। स्वात्मोपलब्धिं कुरु-कुरु। शिवसौख्यं सिद्धिं कुरु-कुरु। वीतराग विज्ञानत्वं कुरु-कुरु। उत्तम धर्म शुक्ल ध्यानं कुरु-कुरु। व्यवहार निश्चय रत्नत्रयं च कुरु-कुरु। अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शन ज्ञानं च कुरु-कुरु। त्रयोदशविध चारित्रं कुरु-कुरु। सामायिकादि पञ्च संयमलाभं च कुरु-कुरु। दर्शनादि पञ्चाचार लाभं च कुरु-कुरु। स्वपर

जनानंदनं कुरु-कुरु। सर्व भव्यानंदनं कुरु-कुरु। सर्वगोकुलानंदन कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-खर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानंदनं कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व राजानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानानंदनं कुरु-कुरु। सर्व शारीरिकादि दुःखं हन-हन, दह-दह, पच-पच, पाचय-पाचय, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं सर्व वशमानय, हूं फट् नमः स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषुलोकेषु, व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्ति रस्तु विधीयते।।

श्री शांतिरस्तु, शिवमस्तु, जयोस्तु, नित्यमारोग्यस्तु, दीर्घायुरस्तु, कुल गोत्रं धन-धान्यं सदास्तु। पद्मप्रभ, चंद्रप्रभ, वासुपूज्य, मल्लि, वर्धमान, पुष्पदंत, शीतल, मुनिसुव्रत, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ इत्येभ्यो जिनेभ्यो नमः। इत्यनेन मंत्रेण नवग्रह शांत्यर्थं गन्धोदक धारावर्षणम्।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेवाय सर्वोपद्रव विनाशनाय सर्वापमृत्युञ्जय करणाय सर्वमन्त्र सिद्धिं ॐ क्रौं क्रौं ठः ठः झं वं ह्वः पः क्षीं अ सि आ उ सा सर्व शांतिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री वृषभशांति पार्श्ववीर नाथाय सर्वाकृष्ट कराय, सर्वपाप विघ्न-रोगोपसर्ग विनाशनाय, सर्व परकृत क्षुद्रोपसर्गं विनाशनाय, सर्व क्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा (अमुकनामधेयस्य) सर्व शांतिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्याए णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्व शांतिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु वषट् स्वाहा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

***

अद्भुत मालामंत्र

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय, धरणेंद्र पद्मावती सहिताय, कलिकुंडदंडाधीश्वराय, वज्रदंडाय, राजचौरारिमारि भय विनाशनाय, माटकूट चौडि-क्षुद्र-व्याधि-कुचेष्टा कुंचिभाय परमंत्रानुच्चाट्य छिंद-छिंद, भिंद-भिंद, स्फोटय-स्फोटय, घातय-घातय ह्म्ल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धनु-धनु, कंप-कंप, शीघ्रं-शीघ्रं, अवतर-अवतर, आगच्छ-आगच्छ, एहि-एहि, त्रैलोक्य-वार्तास्वरूपं कथय-कथय, य्म्ल्व्र्यूं,रम्ल्व्र्यूं, लम्ल्व्र्यूं, व्म्ल्व्र्यूं, श्म्ल्व्र्यूं-ष्मल्व्र्यूं-स्मल्वर्यूं-ह्म्ल्व्र्यूं सहस्रकोटि देवराजग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, नवकोटि गंधर्व राजग्रहान उच्चाटय-उच्चाटय, अष्ट कोटि यक्ष ग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, सप्तकोटि भूतग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, षट् कोटि प्रेत ग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, पंचकोटि पिशाचग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, चतुष्कोटिब्रह्म राक्षसग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, त्रिकोटि अपस्मारग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, द्विकोटि अष्टकुल नागग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, एककोटि हरिहर ब्रह्मादि ग्रहान् उच्चाटय-उच्चाटय, पूर्व द्वारं बंध-बंध, अग्नि द्वारं बंध-बंध, यमद्वारं बंध-बंध, नैऋत्यद्वारं बंध-बंध, वरुणद्वारं बंध-बंध, वायव्य द्वारं बंध-बंध, कुबेरद्वारं बंध-बंध, ईशान्यद्वारं बंध-बंध, ब्रह्मद्वारं बंध-बंध, अधोद्वारं बंध-बंध, ऊर्ध्व द्वारं बंध-बंध, शत्रु गतिमाति प्राण बंध-बंध, अनंतकोटि परविद्यां छेदय-छेदय, आत्मविद्यां पूजय-पूजय, एकाहिक, द्वयाहिक, त्रयाहिक, चातुर्थिक, नित्य ज्वरं, रात्रिज्वरं-मध्याह्न ज्वरं-वेलाज्वरं-छिंद-छिंद, भूतज्वरं छिंद-छिंद, प्रेतज्वरं छिंद-छिंद, पिशाच ज्वरं छिंद-छिंद, ब्रह्मराक्षसज्वरं छिंद-छिंद, वातज्वरं छिंद-छिंद, पित्तज्वरं छिंद-छिंद श्लेष्मज्वरं छिंद-छिंद, मोहिनीज्वरं छिंद-छिंद, सर्वविषमज्वरं छिंद छिंद।

मंत्र- ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं क्ष्म्ल्वर्यूं हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्म्ल्व्र्यूं अभिमुखं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भ्म्ल्वर्यूं शिखां रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं म्म्ल्व्र्यूं वज्र कवचं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं इम्ल्वर्यूं (..नामदेवतस्य) सर्वदुष्टग्रहं निवारय-निवारय श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्र-पद्मावती आज्ञापयति स्वस्थाने गच्छ-2 जः जः जः स्वाहा।

विधि – इस मंत्र को प्रातः एक बार स्मरण करके अपने सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श करें। फिर घर से निकलें। व्यापार आदि अनेक शुभ कार्य के लिए तो सुरक्षा कार्य करेगा। मंत्रित जल पिलाने से बाधायें भी दूर हो जाती हैं।

अभिषेक पाठ भाषा

(नरेन्द्र छंद)

इन्द्रों ने अभिषेक किया था पांडुक गिरि पे ले जाकर।
मैं भी भाव सहित करता हूँ तव अभिषेक यही जिनवर॥
क्षीरोदधि का नीर लिए थे देव-देवियाँ हर्ष भरे।
गायन-वादन धूमधाम से भक्ति सहित वे नृत्य करें॥1॥

तीन लोक के ईश तुम्हीं हो स्याद्वाद नीति नायक।
ज्ञान चतुष्टय श्री से शोभित हो जन-जन मंगलदायक॥
भद्रपीठ पर श्री लिखकर मैं जिनवर का करता थापन।
पीठ सहित मम हृदय विराजो कर दो निर्मल तन औ मन॥2॥

(पीठ पर श्री लिखकर श्री जी को विराजमान करें)

कर्म कालिमा रहित प्रभु तव यश है पूर्ण विमल निर्मल।
स्वर्ण रजत रत्नों से निर्मित कलश भरे हैं पूर्ण विमल॥
जिन अभिषेक करूँ भावों से तीन लोक के स्वामी का।
स्वेद ताप मल रहित जिनेश्वर जग के अन्तर्यामी का॥3॥

दूध दही घृत के शुभ घट ले श्री जिन का अभिषेक करें।
पुष्पवृष्टि से पूर्व गंध ले, प्रभुवर पर अवलेप करें॥
सर्वौषधि इक्षुरस लेकर निर्मल तव गुण गाते हैं।
मंत्र सहित पंचामृत करके अतिशय पुण्य कमाते है॥4॥

जन्म-मरण से मुक्त प्रभो अतएव जगत यशगान करे।
कर्म कालिमा अपनी धोने चार कलश से न्हवन करें॥

चतुष्कर्म नश जाने से सुरभित परमौदारिक प्रभु तन।
गंध चढ़ाकर प्रभु चरणों में सुरभित हो जाते जन-जन॥5॥

जिन प्रतिमा की कोटि रश्मियाँ मोह तिमिर विनशाती हैं।
शांति मंत्र की उज्ज्वल धारा अतिशय प्रखर बनाती है॥
अर्घ सहित आरती उतारे जीवन अपना धन्य करें।
निर्मल मन को शक्ति दो प्रभु मुक्ति रमा का वरण करें॥6॥

अभिषेक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते जलाभिषेकं करोमि स्वाहा।

अर्घ - उदक चंदन.......

***

आलोचना पाठ

(प्रभु पतित पावन......)

हे नाथ ! मैंने प्रमादवश हो दोष भारी जो किए।
इसी कारण पाप ने है दुःख मुझको बहु दिए॥1॥

अब शरण आया हूँ तुम्हारी दोष मेरे दूर हो।
करके दरश प्रभु आपका मिथ्यात्व मेरा चूर हो॥
संकट सहूँ निर्भय बनूँ आशीष यदि हो आपका।
दे दो चरण रज आपकी तो नाश होवे पाप का॥2॥

गृह कार्य संबंधी क्रिया में मुझसे हुई हिंसा महा।
मन-वचन अरु काय से ना की दया मैंने अहा॥

स्वार्थ वश मैंने न जाने पाप कितने हैं किए।
खुद बचाया आपको और कष्ट दूजे को दिए॥3॥

इन्द्रियों का दास बन मैं हूँ गया इनसे ठगा।
इसलिए यह पाप मुझको दे रहा क्षण-क्षण दगा॥
देव जिनवाणी गुरु की भक्ति नित करता रहूँ।
शक्ति दो हे नाथ ! मुझको मैं दिगम्बर व्रत लहूँ॥4॥

***

प्रायश्चित्त पाठ

(तर्ज- दिन रात मेरे....)

शत-शत प्रणाम करते, आशीष हमको देना।
दोषों को दूर करने, अपराध क्षम्य करना॥1॥

मन से वचन से तन से, अपराध पाप करते।
कृत-कारितानुमत से, दुःख-शोक-क्लेश सहते॥2॥

चारों कषाय करके, निज रूप को भुलाया।
आलस्य भाव करके, बहु जीव को सताया॥3॥

भोजनशयन गमन में, पापों का बंध बाँधा।
अज्ञान भाव द्वारा, अज्ञात पाप बाँधा॥4॥

दिन-रात और क्षण-क्षण, अपराध हो रहे हैं।
इस बोझ से दबे हम, पापों को ढो रहे हैं॥5॥

गुरुदेव की शरण में, प्रायश्चित लेने आए।
मुक्ति का 'राज' पाने, भव रोग को नशाए॥6॥

***

विनय पाठ

(दोहा)

कर्मजाल में हूँ फँसा पाया है बहु त्रास।
जग स्वारथ से है भरा किस पर हो विश्वास॥1॥

भक्ति-श्रद्धा-विनय सहित आया जिनवर पास।
धन्य हुआ है भाग्य मम मिट गई मन की प्यास॥2॥

प्रभुवर ने तो कर दिए कर्म ये आठों नाश।
केवलज्ञान उदित हुआ जग को दिया प्रकाश॥3॥

नमन करूँ जिनदेव को करके निर्मल भाव।
खेवटिया जिन नाथ मम पार लगा दो नाव॥4॥

भव्यजनों को तारते भवसागर से आप।
शरण आपकी पा प्रभु नश जाते सब पाप॥5॥

गुण अनंत हैं आपके कर न सकूँ विस्तार।
अजर-अमर जिननाथ तुम हो त्रिभुवन आधार॥6॥

अरिहंत-सिद्धाचार्य का ले मंगल शुभ नाम।
उपाध्याय साधू-चरण सफल करें सब काम॥7॥

जिनवाणी माता मुझे देना सम्यक् ज्ञान।
कृपा करो जिस पर वही बन जाता भगवान्॥8॥

***

पूजा आरंभ (हिन्दी)

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

***श्लोक*– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 **24**

5

ॐ जय–जय–जय – नमोस्तु–नमोस्तु–नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पांजलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते शरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलीपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पांजलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र माहात्म्य

(नरेन्द्र छन्द)

पवित्र हो या अपवित्र प्राणी चाहे भी हो कैसा।
बुरी अवस्था हो या अच्छी या ना हो उसपे पैसा।।
णमोकार का ध्यान करे जो वह पावन बन जाता है।
परमातम का सुमरण ही जीवन को शुद्ध बनाता है।।

महाभयानक विघ्नों से यह महामंत्र छुड़वाता है।
जग जीवों को शांतिकारक मुक्ति जो दिलवाता है॥1॥

सब पापों का क्षयकारक जो सबमें पहला मंगल है।
विश्वशांति का महाविधायक हरे अनिष्ट अमंगल है॥
अर्हं का उच्चारण करके परम ब्रह्म को नमता हूँ।
सिद्धचक्र के बीजाक्षर को नमस्कार नित करता हूँ॥2॥

कर्म अष्ट से मुक्त हुए जो मुक्ति निकेतन के वासी।
सम्यक्त्वादि गुणों से भूषित नमस्कार हो अविनाशी॥
जिनवर की पूजन करने से प्रलय-विघ्न नश जाते हैं।
भूत शाकिनी सर्प शांत हो विष-निर्विष हो जाते हैं॥3॥

(पुष्पांजलि क्षिपामि)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥
ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥
ॐ ह्रीं श्री अर्हंतसिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

स्वस्ति वाचन

(नरेन्द्र छन्द)

अनंत चतुष्टय के तुम धारक स्याद्वाद के हो दायक।
अंतर भौतिक लक्ष्मी शोभित वंदनीय त्रिभुवन नायक॥
मूलसंघ के भव्य प्रवर को पुण्य दिलाते हो बिन हेत।
करें जिनेश्वर की विधि पूजा धन्य भाग्य मम भक्ति समेत॥1॥

तीन लोक में श्रेष्ठ व सुंदर प्रभु की महिमा उदित हुई।
स्वतः प्रकाशमयी दृग्ज्योति भव्यों के हित मुदित हुई॥
निर्मल ज्ञानामृत है प्रगटा मंगल स्व-पर प्रकाशक हार।
तीन लोक में फैल गया वह त्रिजग वस्तु का जाननहार॥2॥

द्रव्यशुद्धि औ भावशुद्धि दोनों विधि का आलम्बन ले।
करूँ यथार्थ पुरुष की पूजा भाव सहित मैं द्रव्य लिए॥
सर्व वस्तु का ज्ञान कराते अर्हत पुरुषोत्तम पावन।
उनकी केवलज्ञान अग्नि में करूँ विसर्जित पुण्यार्जन॥3॥

(ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चौबीस तीर्थंकर स्तुति

(यहाँ प्रत्येक भगवान के नाम के साथ पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

(नरेन्द्र छन्द)

मंगल वृषभदेव जिनवर हैं, अजितदेव भी हैं मंगल।
मंगल संभव श्री जिनस्वामी, अभिनंदन करते मंगल॥
मंगल कर्ता सुमतिप्रभु हैं, पद्मप्रभु मंगलदायक।
श्री सुपार्श्व करते हैं मंगल, चंद्रप्रभु हैं सुखकारक॥1॥

पुष्पदंत अमंगल हर्ता, शीतल शीतलता दाता।
श्री श्रेयांस सुमंगल भूषण, वासुपूज्य सब सुख दाता॥
विमल कष्ट हर मंगल करते, अनंतजिन सब सुख कर्ता।
धर्मप्रभु मंगल स्वरूप बन, शांतिप्रभु शांति कर्ता॥2॥

कुंथुनाथ मंगलधर स्वामी, अरहनाथ अरि के हर्ता।
श्री मल्लि मंगल जिन स्वामी, मुनिसुव्रत मुनि के भर्ता॥
नमिजिनेश मंगल की मूरत, नेमिनाथ प्रभु हितकारी।
पार्श्वप्रभो उपसर्ग विजेता, वर्द्धमान मंगलकारी॥3॥

(पुष्पांजलि क्षिपामि)

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

पूजा प्रारंभ (संस्कृत)

ॐ जय जय जय – नमोस्तु–नमोस्तु–नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि–मूल–मंत्रेभ्यो नमः (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं–अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलीपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते शरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलीपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

णमोकार मंत्र माहात्म्य

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच–नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥2॥
अपराजित–मंत्रोऽयं सर्व–विघ्न–विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः॥3॥
एसो पंच–णमोयारो सव्व–पावपप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म–वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥5॥
कर्माष्टक–विनिर्मुक्तं मोक्ष–लक्ष्मी–निकेतनं।
सम्यक्त्वादि–गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी–भूत–पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

(यदि अवकाश हो, तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दस अर्घ्य देना चाहिए। नहीं तो आगे लिखा श्लोक पढ़कर अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

स्वस्ति वाचन

श्री मज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद- नायक- मनंत- चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ- सुदृशां सुकृतैकहेतु-
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥1॥

स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति-प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय॥2॥

स्वस्त्युच्छलद्विमल- बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥3॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ- पुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥4॥

अर्हत्पुराण पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री चतुर्विंशति स्तव

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान के नाम के पश्चात् पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चंद्रप्रभः।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनंतः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्रस्वस्तिमङ्गलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्याप्रकंपाद्भुत्-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय- शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥3॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥4॥

जंघानलः-श्रेणि-फलांबु तंतु प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥5॥

अणिम्नि दक्षाः-कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनोः गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥6॥

सकामरूपित्व वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथा प्रतिघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो-घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषा-दृष्टिविषं विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥10॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधान)

(एक कायोत्सर्ग करें)

श्री नित्यमह पूजा

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरूओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।**
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री नवदेवता पूजन

(शंभु छन्द)

अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू परमेष्ठी गुणधारी।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय सबके मन को सुखकारी॥
इन नवदेवों का आह्वानन कर ग्रह अरिष्ट का नाश करें।
तव गुण मन में धारण करके हम मोक्षपुरी में वास करें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पावन चरणों में हे प्रभुवर ! पावन जल भर कर लाया हूँ।
तव वीतराग मुद्रा लखकर मैं मन में अति हर्षाया हूँ॥
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

भव-भाव अभाव हमारा हो यह भाव संजोकर लाया हूँ।
चंदन सम शीतलता पाने मैं चंदन घिसकर लाया हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... भवआतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

अक्षयपद की अभिलाषा से अक्षत का पुंज चढ़ाता हूँ।
भौतिकपद शिवपद मिलता है यह जान शरण में आता हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

अध्यात्म सुमन की सुरभि से जीवन उपवन बन जाता है।
जल-भूमिज सुमन लिए पूजक आगम युत भक्ति रचाता है॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

इस क्षुधा-तृषा की बाधा से जीवन में मैं अति अकुलाया।
अतएव सरस प्रासुक व्यंजन भक्तिरस से भरकर लाया॥
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अज्ञानभाव ही प्राणी को गति चार भ्रमण करवाता है।
सुज्ञान दीप की आरति से मिथ्यात्व मोह भग जाता है॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

तन-मन के रोग नशाने को कृष्णागुरु धूप चढ़ाता हूँ।
मैं कर्म बेड़ियाँ तोड़ सकूँ आशीष आपसे पाता हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

ताजे मीठे रसयुक्त सुफल जिनपूजन से अतिफल देते।
वटवृक्ष बीज सम पुण्य सहित शिवलक्ष्मी सा प्रतिफल देते॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

जल-चंदन आदिक अर्घ मिला पूजन की थाली लाया हूँ।
मैं पद अनर्घ को प्राप्त करूँ यह भाव हृदय भर लाया हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : त्रय धारा जल की करूँ, आत्म शांति के हेत।
श्री जिनवर का दास बन, पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : नवदेवों की अर्चना, करो भक्त त्रयकाल।
गुण निधि पाने के लिए, गाओ प्रभु जयमाल।।

चौपाई

चार घातिया नाश किया है, गुणअनंत में वास किया है।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, परमौदारिक तन के वेषी।।1।।

समोशरण की महिमा न्यारी, आये देव-पशु नर-नारी।
अरिहंतों के गुण हम गायें, भक्तिभाव से शीश झुकायें।।2।।

अष्टकर्म बंधन को तोड़ा, निज स्वरूप से नाता जोड़ा।
तीन लोक के हो परमेश्वर, राजे लोक शिखर के ऊपर ।।3।।

सिद्धप्रभु की पूजन कर लो, आधि-व्याधि विपदायें हर लो।
पंचाचारी आत्म विहारी, शिष्यगणों के संकटहारी।।4।।

दीक्षा देते पार लगाते, आत्मगुणों को जो विकसाते।
गुप्तित्रय का पालन करते, क्षमाभाव जो मन में धरते।।5।।

पठन और पाठन करवाते, उपाध्याय गुरुवर कहलाते।
रत्नत्रय को धारण करते, ज्ञान-ध्यान में रत जो रहते।।6।।

आठ बीस गुण पालन करते, विष समान विषयों को तजते।
प्राणी मात्र की रक्षा करता, जैनधर्म सबका दु:ख हरता।।7।।

श्री जिनवर ने इसे बताया, जैनधर्म जिससे कहलाया।
श्री जिनमुख से वाणी खिरती, द्वादशांग का रूप जो धरती।।8।।

अनेकांतमय रूप निराला, स्याद्वाद है जग में आला।
वीतराग प्रतिमा सुखकारी, नासादृष्टि लगती प्यारी।।9।।

पद्मासन खड्गासन धारी, जिनप्रतिमायें मंगलकारी।
कोटा-कोटी अशन समाना, जिनदर्शन का सुफल बखाना।।10।।

समोशरण की याद दिलाता, वो चैत्यालय है कहलाता।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय हैं, भक्त भक्ति में होते लय हैं॥11॥

नवदेवों का पूजन-दर्शन, हर लेता नवग्रह का बंधन।
'राजश्री' नित इनको ध्याये, ध्याते-ध्याते शिवपुर जाये॥12॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा : तारण-तरण जिहाज, इनकी भक्ति मैं करूँ।
पाऊँ शिवपुर 'राज', अक्षयसुख निश्चय वरूँ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा

शंभु छन्द

हे चिदानंद ! चैतन्य जिनेश्वर वंदूँ हे ! त्रैलोक्यपती।
माँ जिनवाणी ऐ सरस्वती ! करता अर्चन पाने सुमती॥
हे मुक्ति पथिक ! श्रुत उपदेशक गुरुवर को करता मैं वंदन।
भावों से आह्वानन करता कट जाएँ सब भव के बंधन॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हे जन्म-जरा-मृत नाशक जिन निर्मल जल सम प्रक्षालक हो।
हे जिनवाणी ! निर्मल गंगा तुम कर्म कलंक विनाशक हो॥
निर्मल मन के धारक गुरुवर निर्मल पद को पाने वाले।
भवि निर्मल सलिल चढ़ाकर के निज जन्म-जरा-मृत धो डाले॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं अति संतप्त हुआ जिनवर इस मोह–द्वेष की ज्वाला से।
हे श्रुतदेवी ! मैं त्रस्त हुआ इस पाप कर्म की माला से।।
भव दाह अरि गुरुवर तुमको मैं शीतल चंदन भेंट करूँ।
निज श्रद्धायुत चंदन लाया मैं भव आताप विनष्ट करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अनंत पद धारक हैं अक्षय अनंत जिनवर ज्ञानी।
अक्षयपद दायक जिनवाणी हे गुरुवर ! अक्षयपद गामी।।
उज्ज्वल अक्षयपद का स्वामी मैं भटक रहा था भव वन में।
मैं अक्षत पुंज चढ़ाता हूँ अर्चा का भाव लिए मन में।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम काम पंक से पृथक्–पृथक् जिन पुष्पों से अति सुरभित हो।
ऐ मदन अरि माँ ब्रह्माणी तुम ज्ञान सुमन से गुन्थित हो।।
हे मन्मथ गिरि भेदक ऋषिवर तुम ब्रह्मलीन निज ध्यानी हो।
श्रद्धायुत सुमन सुअर्पित हो तुम ब्रह्मविजय के ज्ञानी हो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे क्षुधाकर्म हारक जिनवर ज्ञानामृत भोजी सुखकारी।
सत्ज्ञान चरूँ मैं भी पाऊँ हे कृपाशील ! माँ जिनवाणी।।
सत्ज्ञान मिष्ट भोजी गुरुवर हे क्षुधारोग हरने वाले।
नाना विधि व्यंजन चढ़ा चरण निज क्षुधावेदनी को टाले।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घन मोहतमो भेदी जिनवर तुमने सब कर्म कलंक हरें।
मम मोह हटाओ हे श्रुतवर ! हम हंस समान विवेक धरें।।

ये भेदविज्ञ मुनि बतलाते हैं देह अलग और जीव अलग।
शुभ दीप भेंट मैं कर पाऊँ निज जीव अलग और मोह अलग।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे कर्ममैल प्रक्षालक जिन तुम ज्ञानधूप से युक्त विभो।
शुद्धात्मज्ञान मुझको दे दो मैं कर्मधूप से युक्त प्रभो।।
सद्ज्ञान धूप पाकर यतिवर कर्मों की धूल उड़ाओगे।
मैं अगर-तगर लाया मुझको क्या सम्यक्पथ दिखलाओगे।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमान स्वयंभू परमातम हे मोक्ष सुफल चखने वाले।
हे जगजननी ! माँ जिनवाणी तव पूजा से शिवपथ पा लें।।
हे यतिवर ! ऋषिवर हे मुनिवर ! हे मोक्ष सुफल पाने वाले।
श्रद्धायुत दाड़िम द्राक्ष चढ़ा मैं आया मोक्ष सुफल पाने।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अनर्घ्यपद अविनाशी पाने वाले जिन जगभासी।
अविचलपद दात्री हे माता ! जिनवाणी हे जिनमुखवासी।।
हे तीर्थंकर ! के लघुनंदन तुम हो अनर्घपद अधिकारी।
मैं अष्टद्रव्य का अर्घ चढ़ा पाऊँ अनर्घपद अविकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **देव-शास्त्र-गुरु रत्न शुभ शिव सुख के आधार।**
पुष्पांजलि अर्पण करूँ करता हूँ जलधार।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : तीन लोक के नाथ हैं, देव-शास्त्र-गुरुदेव।
इनकी जयमाला पढ़ूँ, बनूँ सिद्ध स्वयमेव॥

(शंभु छन्द)

हे जिनवर ! वृषभ श्रेष्ठ भगवन्, हे महापुरुष ! जगदीश्वर हो।
हे जगनायक ! आदर्श तुम्हीं, मानव जीवन के ईश्वर हो॥
तव हृदय सुकोमल है इतना, कि फूल भी उसको कह न सकें।
तव वचन अर्थयुत मधुर अहो, हम उनकी तुलना कर न सकें॥1॥

तव क्रिया मौन होने पर भी, भव्यों को राह बताती है।
वह राह बताए स्वर्गों की, अपवर्ग शीघ्र दिलवाती है॥
माँ जिनवाणी ज्ञानी तरणी, भवसागर से तिरवाती है।
है जैनधर्म का मूल-स्रोत, यह अनेकांत बतलाती है॥2॥

सब जीवों में भगवंत शक्ति, यह शास्त्र हमें बतलाता है।
रत्नत्रय पाकर हर प्राणी, अरहंत सिद्ध बन जाता है॥
तुम भक्तों से भगवान बनो, जिनवाणी यह बतलाती है।
माँ सरस्वती हर पूजक को, निश्चय से शुद्ध बनाती है॥3॥

हे मोक्ष पंथगामी गुरुवर, तुम जग के सच्चे हितकारी।
है लक्ष्य तुम्हारा आत्मतीर्थ, और धर्मतीर्थ जग उपकारी॥
जग सारा जब सो जाता है, तब निजचैतन्य जगाते हो।
जब लोग भोग में रचे-पचे, तुम निज आतम को ध्याते हो॥4॥

हर चर्या तुम उपदेश करे, हो मौन-ध्यान-व्रत में तत्पर।
यह शिवमारग बतलाती है, जो इस करनी में हो तत्पर॥
हे जिनवर ! तुमको करूँ नमन, माँ जिनवाणी ! तुमको वंदन।
हे सत्पथगामी ! ऋषिनायक, आतमहित हेतु करूँ नमन॥5॥

हे नाथ ! करो भवदु:ख भंजन, नाशो मेरा कर्मज क्रंदन।
हो जाये मम आतममंजन, इस कारण मैं करता वंदन॥
प्रभु क्या तेरा गुणगान करूँ, नतमस्तक तेरी शरण खड़ा।
'गुप्ति' का क्षय हो मोहजाल, इस हेतु तेरे चरण पड़ा॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : देव-शास्त्र-गुरु की शरण, आया हूँ मैं आज।
गुप्तित्रय को धारकर, पाऊँ मुक्तिराज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा

नरेन्द्र छन्द

प्रथम देव अरहंत शास्त्र, निर्ग्रन्थ गुरु को ध्याता हूँ।
त्रय रत्नों की भक्ति करके, शिवपथ को अपनाता हूँ॥
परमौदारिक तन से भूषित, समोशरण के तुम स्वामी।
जिनवाणी जिनमुख से निकली, श्रमण मिले सत्पथगामी॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शंभु छन्द

निज जन्म-जरा-मृत नाश किया, प्रभु आप हुए अन्तर्यामी।
समता के जल से कर्म कालिमा, नष्ट हुई है जिन स्वामी॥
अतएव जगत के प्राणी भी, जल से जिन अर्चा करते हैं।
वे सम्यक्भाव सहित जल ले, सम्यक्भक्ति को वरते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो सौम्य शांत प्रतिमाधारी, और पारदर्शी तन अति सुन्दर।
संगति आपकी पा करके, मोहित हो जाते भव्यभ्रमर॥
भक्ति का राग भरा हममें, हम चंदन से अर्चा करते।
जग में संताप भरा भारी, प्रभु चरण सदा रक्षा करते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयनिधि के स्वामी बन तुम, जग को अक्षयपद देते हो।
जो भक्ति आपकी करता है, उसको निज सम कर लेते हो॥
निर्मल भावों से ही प्राणी, भववारिधि से तिर जाते हैं।
प्रभुवर की अर्चा करने से, दुर्गुण उनके खिर जाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वश कामदेव के हुए हरि, ब्रह्मा-सुर-नर-नारद हारे।
वो कामदेव याचक बनकर, प्रभु चरण भक्ति को स्वीकारे॥
जूही गुलाब गेंदा चम्पा, चरणों में पुष्प चढ़ाते हैं।
हम कामबाण से मुक्ति पा, हे नाथ ! शरण में आते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधावेदनी के वश हो, नर सब कुछ ही खो देता है।
इनके चंगुल में फँसकर वह, आतम से च्युत हो लेता है॥
इस क्षुधावेदनी के नाशक, प्रभु चरणों को जो ध्याता है।
नानाविधि व्यंजन चढ़ा चरण, वो अजर-अमर हो जाता है॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़-चेतन की ममता में फँस, सबको अपना ही मान रहा।
प्रभु भव वर्तन का जाल रचा, इसको सच्चा सुख जान रहा॥
मोहान्ध भरा प्रभु मन मेरा, इसमें भी दिव्यप्रकाश भरो।
पावन दीपक सम हे प्रभुवर !, मेरा सद्ज्ञान विकास करो॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरपति भी समोशरण में आ, धूपों के घट बनवाता है।
शुभ धूप धूपायन में खेकर, सुरभि उसकी फैलाता है।।
कर्मों की धूप जला प्रभु ने, निजगुण की सुरभि महकाई।
ये अष्टकर्म मैं नाश करूँ, दो शक्ति हे त्रिभुवन राई।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अनार सरस फल ले, मैं देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
शिवनारी के शिवराही की, मैं अर्चा कर शिवपुर जाऊँ।।
गुरुवाणी व जिनवाणी पर, बिन श्रद्धा के था भटक रहा।
क्यों अब तक तुमसे दूर रहा, ये भाव हृदय में खटक रहा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन-आगम-गुरु की पूजा में, हो जा रे मन तू मतवाला।
यह धर्म ही तेरा चिर साथी, बाकी जग है धोखेवाला।।
जल-चंदन आदि द्रव्य मिला, मैं अर्घ बनाता हूँ प्यारा।
अरहंत-शास्त्र-गुरु चरण चढ़ा, मैं करूँ कर्म का निस्तारा।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : समोशरण में शोभते, श्री अरहंत महान।
स्याद्वाद वाणी खिरे, गणधर दे श्रुतज्ञान।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला प्रभु की पढ़ें, हो जायें भवपार।
प्रभु बिना ना जगत में, दूजा तारणहार।।

(शंभु छन्द)

इस जग में जगह-जगह भटका, पर मन ना मेरा कहीं भरा।
कोई एकांत लिए बैठा, कोई विनयी मिथ्यात्व भरा।।
संशय करता कोई आगम में, या फिर उससे विपरीत खड़ा।
अज्ञान भरे झूठे जग में, कर्मों से मैं था खूब लड़ा।।1।।

देखे मैंने कई देव मगर, पर मन ना मेरा कहीं लगा।
वैराग्य छवि देखी प्रभू की, मन में अद्भुत उल्लास जगा।।
सेवा में इंद्र खड़ा जिनकी, नाना प्रकार की सभा लगा।
है ऐसा मानस्तम्भ रचा, हर मानी का अभिमान भगा।।2।।

मिथ्यात्व दूर हो जाता है, कर दर्शन केवलज्ञानी का।
निर्ग्रंथ अस्त्र औ शस्त्र रहित, जिनवर त्रिभुवन जगनामी का।
जिनके मुख से ओंकार ध्वनी, जग को उपदेश सुनाती है।
भव्यों के कर्णपुटों में जा, जो नाना रूप बनाती है।।3।।

जिनकी वाणी पा गणधर भी, श्रुत रचना आगम की करते।
गुरुओं के हृदय पटल में जा, अध्यात्म सुमन मुख से झरते।।
ये गुरु तपस्या करके ही, अरहंत सिद्ध बन जाते हैं।
अतएव भव्यजन प्रतिदिन ही, जिन-आगम-गुरु को ध्याते हैं।।4।।

वह शक्ति हमें दो हे भगवन् !, बन जाएँ तुम समगुणधारी।
हम सिद्ध जिनेश्वर बन जायें, पा जाऐं शिव सुख अविकारी।।
हे नाथ ! 'क्षमा' को क्षमा करो, प्रभु अपना अतिशय दर्शाओ।
हम तुम सम आठो कर्म नशें, वह प्रज्ञा दीपक प्रगटाओ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : जिन-आगम-गुरु को नमें, करें भक्ति निष्काम।
'क्षमा' मुक्ति पाए प्रभु, हो पूरण अभियान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पंच परमेष्ठी पूजा

(तर्ज : नशे घातिया...)

अरहंत सिद्धों को नमन हमारा, आचार्य पाठक करें भव किनारा।
यथाजात धारी हैं साधु ये न्यारे, पहुँचेंगे जो शिवपुर द्वारे॥
द्रव्यभाव से मैं पाँचों को ध्याऊँ, कर्म काटकर के शिवसुख पाऊँ।
आह्वानन स्थापन करता, पंचप्रभु का ध्यान मैं धरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

समता से जिसने निज को ध्याया, रत्नत्रय को उसने पाया।
भाव सहित समता जल लाया, पाँचों प्रभु के चरण चढ़ाया॥
अरिहंत सिद्धाचार्य हमारे, पाठक ऋषि भव-वन से तारें।
प्रतिदिन करता इनकी पूजा, इनके बिना ना कोई दूजा॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

जीव दुःखों से पीड़ित होता, बहु दुःख पाता पर में खोता।
संतप्त मन को शांति देते, चंदन से हम पूजा करते॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

विषयाशा में निज को भुलाया, आतम सुख में न मन को लगाया।
अक्षत चढ़ाकर तव पद पाऊँ, विषयों में ना मन को लगाऊँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

पाँचों इन्द्रियाँ सुख न देती, समता सुख संयम हर लेती।
पुष्प चढ़ाकर मन वश कर लूँ, मुक्तिरमा को वश में कर लूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

पीड़ा क्षुधा की हमको सताती, भव के भ्रमण का पाप कराती।
नाना विध नैवेद्य चढ़ाऊँ, क्षुधा-तृषा को दूर भगाऊँ॥
अरिहंत सिद्धाचार्य हमारे, पाठक ऋषि भव-वन से तारें।
प्रतिदिन करता इनकी पूजा, इनके बिना ना कोई दूजा॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अज्ञानता से महापाप होता, जिससे हिताहित अपना खोता।
सत्ज्ञान पाकर तम को भगाऊँ, स्व-पर प्रकाशी दीप चढ़ाऊँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

घाति अघाति कर्म हैं बाँधे, इससे रिश्ते-नाते बाँधे।
ध्यानाग्नि से कर्म जलाऊँ, धूप चढ़ाकर भक्ति रचाऊँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण से, निजपद मिलता इनके मिलन से।
जिन सुख पाने व्रत अपनाऊँ, मनहर फल प्रभु चरण चढ़ाऊँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

वैराग्य पा निर्ग्रन्थ बने जो, सब दोष नाशे ज्ञानी बने वो।
जल-फल आदि द्रव्य चढ़ाता, अनर्घपद मैं उससे पाता॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : **पंचप्रभु के पाद में, जल की कर त्रयधार।**
पुष्पांजलि अर्पण करें, करने निज उद्धार॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **पंच परम भगवंत का, करता मैं नित ध्यान।**
नमूँ-नमूँ उनके चरण, बन जाऊँ भगवान॥

नरेन्द्र छन्द

सिद्ध महंत महागुणधारी, तीन लोक के ज्ञाता हैं।
आत्मगुणों को पाने वाले, भव्यों के हित दाता हैं॥
श्री अरहंत सकल परमातम, सुर-असुरों से पूजित हैं।
दोष अठारह नाश किए जो, केवलज्ञान विभूषित हैं॥
श्रमण शिरोमणि मंगल मूरत, आचारज गुणशाली हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ गुरु की, महिमा बहुत निराली है॥1॥

वैरागी बहुश्रुत के ज्ञानी, उपाध्याय पाठकगण हैं।
सकल संघ को ज्ञान कराते, पढ़ते सारे मुनिगण हैं॥
ऋषि-यती-अनगार-श्रमण ये, साधु पद की शान हैं।
सौम्य-शांतमुद्रा के धारक, मूलगुणों की खान हैं॥2॥

पाँचों परमेष्ठी हैं पावन, ये ही तीरथधाम हैं।
इनके चरणों में ही मेरा, शत-शत बार प्रणाम है॥
ध्यान धरे जो इनका प्राणी, बनता महिमावान है।
ऋद्धि-सिद्धियाँ पा जाता और, बन जाता भगवान है॥3॥

इनके गुण अक्षय अनंत हैं, महिमा अपरंपार है।
भक्ति से मुक्ति पाने का, उत्तम ये आधार है॥
पंचप्रभु की महिमा गाकर, पाते प्राणी त्राण हैं।
'राजश्री' शरणा में आई, करने निज कल्याण है॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सम्यक्चारित के धनी, पाते केवलज्ञान।
'राज' पावे मुक्तिपुर, होवे सिद्ध समान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पंच परमेष्ठी पूजा

स्थापना (गीता छंद)

अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक साधु त्रय जग वंद्य हैं।
त्रय लोक के सब जीव से त्रयकाल जो अभिवंद्य हैं॥
वे पंच परमेष्ठी प्रभो मम आत्म में निश्चय बसे।
आह्वान करते पुष्प से यह चित्त प्रभु पद में बसे॥

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठी समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

मृणमय व कंचन के मंगल कुंभ लें।
पाँचों गुरु पर मंगल जलधारा करें॥
पाँचों परमेष्ठी की करते अर्चना।
पंच परम पद पाने करते वन्दना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस-घिस चन्दन भव क्रन्दन का ताप हर।
प्रभु के पद में चर्चें पावन जाप कर॥ पाँचों...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता अक्षत तन्दुल मुट्ठी में सजा।
पाँचों प्रभु को भेंट करें बाजे बजा॥ पाँचों...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पंचरंग के विविध पुष्प हम ला रहे।
पंच परम परमेष्ठी जिन को ध्या रहे॥ पाँचों...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे मनहर प्रासुक सब व्यंजन लिये।
थाल अनेकों सजा शीघ्र अर्पण किये।।
पाँचों परमेष्ठी की करते अर्चना।
पंच परम पद पाने करते वन्दना।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के व घृत के जलते दीप से।
करें आरती मोह तिमिर अपना नशे।। पाँचों...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप चढ़ाकर महकायें दरबार को।
नहीं सहेंगे अब कर्मों की मार को।। पाँचों...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम सेव केला आदिक ले श्रेष्ठ फल।
चढ़ा प्रभु को हम पायेंगे मोक्ष फल।। पाँचों...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्य मिलाकर लाये अर्घ में।
पाँचों पद पा पहुँचे हम अपवर्ग में।। पाँचों...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पाँचों प्रभु के पाद में करें सलिल की धार।
करें भव्य सुमनावली पाने शिव उपहार।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

सोरठा- पंच परम पद जान, सर्व पदों में श्रेष्ठतम।
पायें मोक्ष महान्, उनकी हम जयमाल पढ़।।

दोहा

छियालीस गुण के धनी, अर्हत् देव प्रधान।
पूजें उनको अर्घ ले, पाने केवलज्ञान॥1॥

अष्ट मूलगुण के धनी, सर्वसिद्ध जिनदेव।
सर्वकार्य सिद्धी करें, सिद्धी प्रदाता देव॥2॥

छत्तिस गुण को धारते, श्री आचार्य महान्।
शरणागत हर जीव का, करें सतत् उत्थान॥3॥

गुण जिनके पच्चीस हैं, उपाध्याय कहलाय।
ज्ञानदीप बन भव्य में, प्रज्ञा ज्योत जलाय॥4॥

आठ बीस गुण को धरें, सर्वसाधु मुनिराज।
शरणागत हर भव्य को, देते शिव साम्राज॥5॥

मंगल उत्तम शरण हैं, पंच परम पद देव।
उन सम बनने के लिए, पूजें उन्हें सदैव॥6॥

निज सम जिनगुण सम्पदा, हमको करो प्रदान।
'गुप्तिनंदी' की कामना, पूर्ण करो भगवान॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पाँचों परम पद की सदा जो भक्ति से पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अरिहंत परमेष्ठी पूजा

(हरिगीता छन्द)

अरिहंत प्रभु हैं वीतरागी, लोकत्रय को जानते।
सुर-नारकी-तिर्यंच आदिक, श्रेष्ठ मंगल मानते।।
जो काम-क्रोधादिक विनाशक, दे रहे हित देशना।
हम कर रहें आह्वान् उनका, है जहाँ छल लेश ना।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिन् ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल सुखद शीतल सलिल जो, देह को निर्मल करे।
जिन भक्ति गंगा का सलिल ही, आत्म को निर्मल करे।।
अरिहंत मंगल-शरण-उत्तम, सुखद प्रभु की अर्चना।
निर्मल परम जिनराज अर्चा, से मिटे अघ वंचना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित गंध चंदन, तव चरण अर्पण करें।
जिनवर प्रभो का ध्यान कर, निज आत्म का तर्पण करें।। अरिहंत..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम धवल अक्षत मनोहर, पुँज हम लाये प्रभो।
अक्षय सुखामृत पान करने, चरण में आये विभो।। अरिहंत..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गेंदा चमेली मोगरा श्री, सुमन सुन्दर ले लिये।
मदनारि जेता नाथ के, हम चरण अमृत को पिये।। अरिहंत..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक सरस व्यंजन चढ़ायें, श्री प्रभु के सामने।
जो है महावैरी क्षुधा, उसको नशाया आपने।। अरिहंत..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जगमगाती दीपमाला, से करें प्रभु आरती।
जिनभानु की अध्यात्म दीप्ति, मोहतम संहारती॥
अरिहंत मंगल-शरण-उत्तम, सुखद प्रभु की अर्चना।
निर्मल परम जिनराज अर्चा, से मिटे अघ वंचना॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध चन्दन तगर मिश्रित, धूप से पूजा करें।
ध्यानाग्नि में वसुकर्म नाशे, आत्म में झूला करें॥ अरिहंत..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम संतरा श्रीफल छुहारा, आदि फल के थाल ले।
शिवफल प्रदाता श्री प्रभो को, भेंट कर नतभाल हैं॥ अरिहंत..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-गंध-तंदुल-सुमन-व्यंजन, दीप आदिक अर्घ से।
जिनराज की पूजा करें हम, तब परम शिवसुख मिले॥ अरिहंत..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हेम पात्र में नीर ले, कर त्रय शांतिधार।
कुसुम पुंज अर्पण करें, पायें सौख्य अपार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- वीतराग सर्वज्ञ वा, हित उपदेशी महान।
उनके छ्यालिस मूलगुण, बोधि समाधि निधान॥

(शंभु छन्द)

जय-जय तीर्थंकर गुण आकर, अर्हंत केवली जिनस्वामी।
छ्यालीस सुगुण मंडित जिनवर, अठदश निर्दोष त्रिजगनामी॥

धनु पाँच सहस्र अधर ऊपर, तीर्थंकर समवशरण राजे।
उपसर्ग मूक केवली आदि, निज-निज की गंधकुटी राजे॥1॥
जीवंत जिनेश्वर का दर्शन, भव-भव का पुण्य कराता है।
पर उनकी प्रतिमा का दर्शन, त्रयकाल सुलभ हो जाता है॥
अर्हंत देव की पूजा के, छह भेद श्रेष्ठ बतलाये हैं।
नामादिक छह निक्षेपों से, अरिहंत पूज्य बतलायें॥2॥
अतिशयकारी जिन प्रतिमायें, पूजक के पाप नशाती हैं।
बिन मांगे हर आराधक के, सब विघ्न कष्ट विनशाती हैं॥
प्रभु की अति पावन पूजा से, सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।
धनहीन भक्त धनवान बने, सब सुख धन वैभव पाते हैं॥3॥
कन्यार्थी को अनुकूल श्रेष्ठ, सुन्दर कन्या लक्ष्मी मिलती।
सन्तानहीन को सुन्दर सुत, अज्ञानी को प्रज्ञा मिलती॥
अर्हंत देव की पूजन से, सब रोग-शोक मिट जाते हैं।
शशि और शुक्रग्रह संबंधी, सारे कुयोग मिट जाते हैं॥4॥
अर्हन्त नाम गुणगान सदा, त्रयकालिक कर्म विनाश करें।
श्रद्धायुत सम्यक् चिन्तन भी, क्षायिक सद्ज्ञान प्रकाश करें॥
ऐसे गुणपूर्ण जिनाधिप की, गुणमाल मुनीश सुनाते हैं।
कर 'गुप्ति' पूर्ण शिवराज वरें, ऐसे शुभभाव बनाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पाँचों परम पद की सदा जो भक्ति से पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजा

(शंभु छन्द)

सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सुवीर्य, सूक्ष्मत्व शुद्ध अवगाहन हो।
हो अगुरुलघू गुणधारी वा, अव्याबाधी को वन्दन हो॥
लोकाग्रवास करने वाले, सब सिद्धों का आह्वानन है।
अविराम सिद्धपद पाने को, अभिनन्दन गुणगण थापन है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छन्द)

मंत्रपूत प्रासुक निर्मल जल ले लिया।
जन्मादिक त्रय नाशन हित अर्पण किया॥
लोककाल त्रयवर्ती सिद्धसमूह को।
पूजूँ नशने निज वसु कर्म समूह को॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन देहताप पीड़ा हरे।
उनको अर्पित जो निज में क्रीड़ा करें॥ लोक...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय सुखदाता सिद्धों को पूजता।
तव पूजक पाये तुम जैसी पूज्यता॥ लोक...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन्मथ दर्प दलन सब सिद्धों ने किया।
इसविध मैंने पद्म सद्य अर्पण किया॥ लोक...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

गुझिया पूड़ी व्यंजन से अर्चा करूँ।
क्षुधा दमन हित सिद्धन् गुण चर्चा करूँ॥ लोक...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृण्मय घृत दीपक से जिन आराधना।
सिद्ध शरण देने वाली यह साधना।।
लोक-काल त्रयवर्ती सिद्धसमूह को।
पूजूँ नशने निज वसु कर्म समूह को।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर-तगर मय सुरभित धूपों के घड़े।
कर्म दहन हित सर्व सिद्ध जिन को चढ़े।। लोक...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताल खजूर कपित्थ आदि फल से भजूँ।
शिवफल पाऊँ स्वयं सिद्धपद को जजूँ।। लोक...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदिक मिश्रित अर्पित अर्घ में।
पद अनर्घ पा वरू सिद्ध का वर्ग में।। लोक...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- निर्मल शांति धार, कंचन घट जल से भरा।
पुष्प मनोज्ञ अपार, पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- सिद्ध शिवालय में बसे, उनको करूँ प्रणाम।
जयमाला प्रभु नाम की, मंगलमय सुख धाम।।

(शेर छन्द)

जय-जय अनंत सिद्ध अग्रलोक विराजे।
जय-जय अनंत सिद्ध तीन लोक में साजे।।
प्रभु ध्यान अग्नि में प्रवीण कर्म हने थे।
जिन अष्टकर्म नाश श्रेष्ठ सिद्ध बने थे।।1।।

जिन दशवें गुणस्थान मोहकर्म नशाया।
छद्मस्थ वीतराग नाम बारवें पाया।।
फिर बारवें उपान्त तीन घाति नशायें।
त्रैलोक्य भासमान ज्ञानसूर्य को पायें।।2।।

जिनवर अनंतज्ञान से त्रिलोक देखते।
निज आत्म के अनंतगुण अशोक लेखते।।
जय अंत में अघाति कर्म भी विनाशते।
अरहंत रूप छोड़ सिद्धलोक वासते।।3।।

उपसर्ग चारविध सहें उपसर्गकेवली।
कितने अयोग बन गये थे मूककेवली।।
कोई सयोगकेवली अंतर्मूहूर्त में।
जिन अंतःकृत बने अशेष कर्म को हने।।4।।

सिद्धों की अर्चना समस्त कार्य सिद्धी दें।
सब ऋद्धि संपदा दिला के मोक्ष सिद्धी दें।।
रवि और भौम ग्रह के सर्व रिष्ट भी हरे।
जो नाम जपे आपका वो इष्ट सुख वरें।।5।।

उन सर्व सिद्ध की यहाँ उपासना करें।
सम्पूर्ण सिद्धि हेतु नित आराधना करें।।
मैं सिद्धभक्ति कर समाधिभाव को वरूँ।
त्रय 'गुप्ति' पूर्ण पाल मुक्तिराज को वरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों परम पद की सदा, जो भक्ति ऐसे पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो, सुर-नर उसे वंदन करें।।
फिर धर क्षमादिक् धर्म को, शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर, भवदुःख कभी ना पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री आचार्य परमेष्ठी पूजा

(शंभु छन्द)

हे ऋषिनायक ! गुणमणिदायक, तव पद में शीश झुकाता हूँ।
तुम सम निज रूप बनाने को, तव गुण में ध्यान लगाता हूँ॥
दीक्षा-शिक्षा अनुग्रह दाता, छत्तीस गुणों को पाया है।
आह्वानन वा थापन करने, यह भक्त शरण में आया है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिन् ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चौपाई (आंचली बद्ध)

निर्मल जल के कलश भराय, गुरु पद में त्रय धार कराय।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो॥
छत्तिस गुणधारी ऋषिराज, उनको पूजे भव्य समाज।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन संग कपूर घिसाय, ऋषिनायक के पद अर्चाय।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो॥ छत्तिस गुणधारी..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता तंदुल भर-भर लाय, गुरु सम्मुख त्रय पुंज चढ़ाय।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो॥ छत्तिस गुणधारी..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

नीरज भूमिज पुष्प मनोज्ञ, यतिपद भज हर मन्मथरोग।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो॥ छत्तिस गुणधारी..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन लिये हजार, ऋषिपद पूज करूँ जयकार।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो॥ छत्तिस गुणधारी..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक ले बहुत प्रकार, आरति करूँ तिमिर क्षयकार।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो।।
छत्तिस गुणधारी ऋषिराज, उनको पूजे भव्य समाज।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर सुमिश्रित धूप, अग्निपात्र धर खेऊँ अनूप।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो।। छत्तिस गुणधारी..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला आम फनस जंबीर, फल से पूज वरूँ जगतीर।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो।। छत्तिस गुणधारी..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ चढ़ाय भविक हर्षाय, पद अनर्घ जिससे मिल जाय।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो।। छत्तिस गुणधारी..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हेम कुम्भ मणि खचित लें, करें भव्य त्रय धार।
पुष्पांजलि अर्पण करें, करने निज उद्धार।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- शिष्य करे यह प्रार्थना, झुका-झुका कर शीश।
जयमाला हम गा रहे, दो गुरुवर आशीष।।

(शेर छन्द)

जैवंत श्रेष्ठ संत श्री आचार्य महंता,
जय मूलगुण छत्तीस के हि आप धरंता।

जय पाँच हि आचार आप नित्य आचरैं,
जय शिष्य वर्ग में भी वो हि प्रेरणा भरें॥1॥
उत्तम क्षमादि धर्म को जो पालते सदा,
द्वादश तपों से आत्मा को तापते सदा।
समतादि षडावश्यकों में लीन वो रहे,
त्रय गुप्तियों को पाल कर्म क्षीण कर रहे॥2॥
शुचि देश-जाति-गोत्र-कुल में जन्म पावते,
निज आचरण उपदेश से सत्पथ दिखावते।
आगम स्वपर को जानकर वे सत्य शोधते,
आगम प्रमाण सूत्र से शिष्यों को बोधते॥3॥
कर बाल-गुरु-वृद्ध-शिष्य-साधु की सेवा,
वात्सल्य हृदय मातृ सदृश हो गुरु देवा।
शासनपति तुम्ही हो सर्वसंघ के पिता,
संसारी जीव को बतायें मोक्ष का पता॥4॥
तव नाम नाशे गुरु आदि ग्रह की आपदा,
दिलवाये आत्मसौख्य वा अखंड सम्पदा।
हे नाथ ! प्रार्थना है तीन रत्न दीजिये,
मुझ 'गुप्ति' सूरि को भी मोक्षराज दीजिये॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पाँचों परम पद की सदा जो भक्ति से पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री उपाध्याय परमेष्ठी पूजा

(शंभु छन्द)

हे ऋषि पाठक ! यति अध्यापक, मुनि शिक्षक ज्ञान प्रदाता हो।
हे ज्ञानमूर्ति ! हे उपाध्याय !, रत्नत्रय मार्ग प्रदाता हो।।
श्रुत रूप आप मुनिभूप आप, हम द्वार तिहारे आये हैं।
आह्वानन थापन सन्निधिहित, बहु सुमन पुँज भी लाये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिन ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(बसंततिलका छंद)

ये नीर के घट लिये तुम पास आये।
रोगादि को लय करें शिववास पाये।।
हे पूज्य पाठक ! सदा हम शीश नाये।
पूजा करें तम हरें सद्ज्ञान पाये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लाये सुचन्दन विभो मम आत्म राजो।
संताप हारक प्रभो भव ताप नाशो।। हे पूज्य पाठक !.....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

थाली जिनाक्षत भरी हम आज लाये।
तेरे पुनीत वर से निज राज पाये।। हे पूज्य पाठक !.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब वसु ले गुरुपाद पूजें।
कामादि को हम हरें सन्मार्ग सूझे।। हे पूज्य पाठक !.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

पेड़ादि नेवज भरे बहु थाल लायें।
पीड़ा क्षुधा क्षय करें जग भाल पाये।
हे पूज्य पाठक ! सदा हम शीश नाये।
पूजा करें तम हरें सद्ज्ञान पाये॥5॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना सुरत्न घृत के बहुदीप लाये।
ले आरती हम करें तम को नशायें॥ हे पूज्य पाठक !...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! धूप घट ले हमने चढ़ाये।
नाशे अशेष अघ को तव रूप ध्याये॥ हे पूज्य पाठक !...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार फल की हम लाय थाली।
पाये कृपा तव सदा सद्भाग्यशाली॥ हे पूज्य पाठक !.....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि द्रव्य गुरु को हमने भी भेंटे।
पाये अनर्घ्य पद को सब कष्ट मेंटे॥ हे पूज्य पाठक !.....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **तीन धार कर नीर की, मेटूँ निज भव पीर।**
पुष्पांजलि की भेंट दे, नशूँ काम के तीर॥

शांतये शांतिधारा......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **द्वादश अंग प्रवीण हैं, उपाध्याय गुरुदेव।**
उनकी जय गुणमाल का, कीर्तन करूँ सदैव॥

(पंच चामर छन्द)

जयो-जयो मुनीश आप द्वादशांग धारते।
जयो सुयोग्य शिल्पकार शिष्य को सुधारते॥
नयो-प्रमाण भंग में प्रवीण आप संत हो।
मुनीश आप शर्ण में ममात्म मोह अंत हो॥1॥

ऋषीश अंग बाह्य वा प्रविष्ट में प्रवीण हैं।
अशेष द्रव्य नौ पदार्थ शोध में सुलीन हैं।
गवेषणा करें जिनेश सप्त तत्त्व की सदा।
विशोधना करें विशेष आत्म तत्त्व सर्वदा॥2॥

विशुद्ध चित्त आप मात भारती सुपुत्र हो।
प्रकाण्ड ज्ञान वान मान हीन हो पवित्र हो।
जिनेन्द्र का विशाल ज्ञान आप में सुशोभता।
अभव्य के अगम्य सर्व जीव चित्त लोभता॥3॥

मुनीश आप भक्त पूर्ण अर्घ थाल ला रहा।
अशुद्ध आत्म शोधने सुभक्ति गान गा रहा॥
दया करो दया करो, सुशिष्य पे दया करो।
त्रिलोक अग्रवास हेत, 'गुप्ति' पे दया करो॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पाँचों परम पद की सदा जो भक्ति से पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री साधु परमेष्ठी पूजा

(शंभु छन्द)

जो रत्नत्रय संस्कारों से, आत्मिक विकार परिहार करें।
श्रमणोक्त शील शुचि चर्या से, शुद्धात्म भाव साकार करें॥
अठबीस मूलगुण के धारी, आह्वान तुम्हारा करता हूँ।
सुमनावली से स्थापन कर, तव सम रत्नत्रय वरता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिन्! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शेर छन्द (तर्ज : हे दीनबन्धु....)

मैं नीर कुंभ ले प्रभु के पाद धुलाऊँ।
गुरु पाद धुला करके, रोग तीन नशाऊँ॥
ये ज्ञान-ध्यान लीन साधुओं की अर्चना।
शिवपद प्रदान करती हरके कर्म वंचना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं चंदनादि लाय, साधु चर्ण चर्चता।
संतप्त चित्त शांति हेतु, नित्य अर्चता॥ ये ज्ञान...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल सुअक्षतों के, पुँज तीन मैं धरूँ।
अक्षय अखण्ड सिद्धियों के, सौख्य को वरूँ॥ ये ज्ञान...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले केवड़ादि गंधवान, पुष्प चढ़ाऊँ।
मन्मथ नशूँ मुनि योग, साधना को बढ़ाऊँ॥ ये ज्ञान...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे सुपक्व मिष्ट, नेवजों की थाल ले।
हे नाथ ! आप संग पहुँचूँ, लोक भाल पे॥ ये ज्ञान...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत रत्न दीप लेय मैं, सजाऊँ आरती।
मोहान्ध नाश मैं लहूँ, श्रुतज्ञान भारती।।
ये ज्ञान-ध्यान लीन साधुओं की अर्चना।
शिवपद प्रदान करती हरके कर्म वंचना।।6।।

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुनीत धूप खेऊँ, अग्निपात्र में।
आठों करम विनाश पाऊँ, ज्ञान गात्र मैं।। ये ज्ञान...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार आदि फल के, ढेर चढ़ाऊँ।
मैं मोक्ष फल के लाभ योग्य, भाव बढ़ाऊँ।। ये ज्ञान...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-गंध आदि द्रव्य लेय, अर्घ बनाया।
पाने अनर्घ सौख्य हेतु, भक्ति से लाया।। ये ज्ञान...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- रत्न हेम रजताभ घट, उनमें नीर अपार।
पुष्पांजलि चढ़ाय के, पाऊँ शिवपुर द्वार।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- ज्ञान ध्यान तप में लगे, विषय विरक्त महंत।
कर्म काटकर ये मुनि, बन जाते भगवंत।।

(पद्धरि छन्द)

जय-जय निर्ग्रन्थ मंहत संत, जय करने आठों कर्म अन्त।
जय श्रमण धर्म पाले महान, प्रगटावे निज में आत्मध्यान।।1।।
यति गुण धारें शुचि आठबीस, ध्यावें तीर्थंकर चारबीस।
सुर-नर-पशु कृत उपसर्ग घोर, चौथा निसर्ग उपसर्ग और।।2।।

इस बेला में धर साम्यभाव, वे करने निज अघ का अभाव।
संयम के होवे पाँच भेद मुनिवर उसको पाले अखेद॥3॥
द्वादश तप पालें निर्विकार, द्वादश अनुप्रेक्षायें विचार।
श्रुत द्वादश अंग प्रमाण रूप, मुनि पारायण करते अनूप॥4॥
अध्ययन-अध्यापन लीन आप, शरणागत को करते विपाप।
केवली श्रुतकेवली पाद पाय, मुनि षोडशकारण भाव भाय॥5॥
परभव में धारे धर्मचक्र, नाशे निज का भव भ्रमणचक्र।
जीते बाईस परिषह विशेष, जिससे पालें मुनि सिद्धवेश॥6॥
चौसठ ऋद्धी धारें मुनीश, पाये निश्चय लोकाग्र शीश।
कुल नौ करोड़ में न्यून तीन, मुनिवर होते परमात्म लीन॥7॥
वे धर्म-शुक्ल दो ध्यान ध्याय, वे सिद्ध बने या स्वर्ग जाय।
जिनको शनि की बाधा सताय, वह श्रमण संघ की शरण आय॥8॥
राहू-केतू कृत कष्ट और, तब जपो श्रमण का नाम घोर।
देवो मुनि को आहार दान, हो जाये तब सब कष्ट म्लान॥9॥
वे मुनिवर मुझको लेय शर्ण, नाशे मेरा अघ जन्म-मर्ण।
मैं 'गुप्ति' व्रतों को पूर्ण पाल, काटूँ अपना भव भ्रमण जाल॥10॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पाँचों परम पद की सदा जो भक्ति से पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री देव-शास्त्र-गुरु, विदेह क्षेत्रस्थ विद्यमान बीस तीर्थंकर तथा अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी की समुच्चय पूजा

दोहा : **कर्म घातिया नाश कर, हो अर्हन्त महान।**
द्वादशांग के ध्यान से, होता केवलज्ञान॥1॥

वीतराग पावन गुरु, आया शरणे आज।
क्षेत्र विदेह के नमूँ, विंशति जिन महाराज॥2॥

सिद्धप्रभु त्रैलोक्य के, हैं भगवंत महंत।
इन सबके आह्वान से, करें भवार्णव अंत॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु ! श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर ! श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शंभु छंद

इस नर तन को अब तक मैंने, अपना सब कुछ ही भेंट किया।
तन-मन की शुचिता पाने अब, जल पावन चरणों भेंट किया॥
श्री देव गुरु जिनवाणी माँ, और सिद्ध अनंतानंत महा।
ये बीस जिनेश्वर अविनाशी, की करता पूजन ध्यान अहा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमानविंशति तीर्थंकर, अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

धन-दौलत वैभव नश्वर है, दुःखदायी है इसकी चर्चा।
इस आत्मदाह को शांत करूँ, करता चंदन से मैं अर्चा॥ श्री देव..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अविनाशी आतम का, अब तक दर्शन भी ना पाया।
क्षत-विक्षत बंधन करने को, शुभ अक्षत प्रासुक मैं लाया॥ श्री देव..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मुद्रा का अवलोकन कर, आतम स्वरूप को पूज रहा।
सुरभित सुमनों की माल चढ़ा, प्रभु चरणों को मैं पूज रहा॥
श्री देव गुरु जिनवाणी माँ, और सिद्ध अनंतानंत महा।
ये बीस जिनेश्वर अविनाशी, की करता पूजन ध्यान अहा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव....कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर शरीर का पोषण कर, चारों गतियों में घूम लिया।
आहार रहित बनने को जिन, यह षट्रस व्यंजन भेंट किया॥ श्री देव..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्य ज्योति का बीज दीप, यह प्रभु दर्शन से भान हुआ।
मैं जगमग दीप चढ़ाता हूँ, अब निज भगवन् का ज्ञान हुआ॥ श्री देव..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना गंधों की धूप चढ़ा, जिनवर की पूजा करता हूँ।
मैं कर्म कालिमा धो करके, आतम को निर्मल करता हूँ॥ श्री देव..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन-पूजन से फल मिलता, निज आतम अनुभव अवलोकन।
शुभ फल की इच्छा लेकर मैं, करता सुफलों से जिन पूजन॥ श्री देव..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आधीन हुआ कर्मों के मैं, परद्रव्यों से था जूझ रहा।
पाने मुक्ति वसुकर्मों से, मैं अष्टद्रव्य से पूज रहा॥ श्री देव..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव....अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **हेम कुंभ में नीर भर, करते हैं त्रय धार।**
पुष्प पुँज अर्पण करें, पायें शिवपुर द्वार॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा (9, 27 या 108 बार जाप करें)।

जयमाला

दोहा : देव-शास्त्र-गुरु सिद्ध जी, बीस जिनेश्वर देव।
नमन करूँ इनके चरण, तीन काल शुभ मेव॥

तर्ज- नशे घातिया....

अरिहंत प्रभु ने कर्म हैं नाशे, सर्वज्ञेय जिनके ज्ञान में भासे।
छ्यालीस गुण के तुम हो धारी, इच्छा रहित है तेरी वाणी॥1॥
समवशरण में हम भी जाएँ, प्रभुदर्शन कर सम सुख पाएँ।
दिव्यध्वनि सर्वभाषामयी है, भव्यों के हेतु हितकर भयी है॥2॥
वाणी तुम्हारी गणधर झेलें, भव्यों की शंकाएँ ले लें।
आगम श्रुत की रचना करते, माँ जिनवाणी को हम नमते॥3॥
आचारज-पाठक गुरु ज्ञानी, वीतकलुष मुनिवर निजध्यानी।
समतारस का पान जो करते, निज कर्मों का बंधन हरते॥4॥
इनकी निधि से युक्त गुरु हैं, चरणों में झुककर वंदन है।
रत्नत्रय को मैं भी पाऊँ, मुक्तिरमा से ब्याह रचाऊँ॥5॥
क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश्वर, धर्म प्रवर्त्तन करते हितकर।
कम से कम हो बीस तीर्थंकर, अरु सर्वाधिक इक सौ सत्तर॥6॥
इनको नित प्रति शीश नवाऊँ, ज्ञान सुधा चख मुक्ति पाऊँ।
काल त्रय के सिद्ध जिनेश्वर, अंत रहित हैं वे परमेश्वर॥7॥
अनंतगुण युत अगम अपारा, जिनका कोई थाह न पारा।
इनके गुण मैं कैसे गाऊँ, भक्ति विनय से नृत्य रचाऊँ॥8॥
सकल कर्म से रहित प्रभुजी, करते वंदन हम सब प्रभुजी।
'राज' मुक्ति का पथ मैं चाहूँ, कर्म विनाशूँ शिवपुर जाऊँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमानविंशतितीर्थंकर अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सकल निकल परमात्मा, जिनवाणी-श्रुत-संत।
आत्मगुणों को पा सकें, हम सब बने महंत॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ढाई द्वीप संबंधी 170 कर्म भूमिस्थ सर्वतीर्थंकरों की पूजा

(हरिगीता छन्द)

तीर्थेश ढाई द्वीप के सब मोक्ष पथ बतला रहे।
दृग्भ्रान्त शिवपथ के पथिक को श्रेयपथ दिखला रहे॥
परमार्थ वत्सल तीर्थंकर की कर रहे हम अर्चना।
प्रभु के सकल गुण लाभ हित हम कर रहे शुभ वंदना॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ढाई द्वीप संबंधी शत सप्तति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कंचन कलश में नीर निर्मल पाप क्षालन हित लिया।
निर्मल गुणी अर्हंत जिन को भक्ति से अर्पित किया॥
सत्तर अधिक सौ कर्म भू के तीर्थंकर पूजें यहाँ।
अरिहंत के गुण लाभ पाने हो सुखद अर्चन महा॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ढाई द्वीप संबंधी शत सप्तति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनचरण में चन्दन चढ़ायें यह शरण उत्तम प्रभो।
हे तीर्थंकर ! तारण-तरण भव का भ्रमण मेटो विभो॥ सत्तर....॥2॥

ॐ ह्रीं .... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल तंदुल चढ़ायें आज हमने चाव से।
संसार सागर से तिरेंगे जिन चरण की नाव से॥ सत्तर....॥3॥

ॐ ह्रीं .... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु पुष्प अर्पण नित करें हम काम जेतानाथ को।
कामारि भंजन जिन निरंजन हम झुकायें माथ को॥ सत्तर....॥4॥

ॐ ह्रीं .... कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बर्फी इमरती आदि व्यंजन सरस प्रासुक ला रहे।
अर्पण करें जिनराज सम्मुख आज हम हर्षा रहे॥
सत्तर अधिक सौ कर्म भू के तीर्थकर पूजें यहाँ।
अरिहंत के गुण लाभ पाने हो सुखद अर्चन महा॥5॥

ॐ ह्रीं ...... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृण्मय व मणिमय रत्नदीपों से करें हम आरती।
अज्ञानतम विनशे हमारा प्रकट हो माँ भारती॥ सत्तर....॥6॥

ॐ ह्रीं .... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन अगर[1] कर्पूर मिश्रित धूप निर्मल लाइए।
विनशे करम जिनराज जैसा यह सुयोग बनाइये॥ सत्तर....॥7॥

ॐ ह्रीं .... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आम सीता रामफल वा जाम कमरख दाख ला।
प्रभु चरण में अर्पण करें नाशें सकल अघ श्रृंखला॥ सत्तर....॥8॥

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुद्रव्य के शुभ अर्घ लाये हम करें जिन अर्चना।
त्रैलोक्यपति पावन जिनेश्वर नाशते अघ वंचना॥ सत्तर....॥9॥

ॐ ह्रीं .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

तीर्थेश पर तीर्थाम्बु से नित शांतिधारा हम करें।
शास्त्रोक्त पुष्पांजलि चढ़ा प्रभु का चरण संगम वरें॥
सुन्दर अढाई द्वीप के तीर्थंकरों की अर्चना।
कर जोड़ कर हम कर रहे अभिवन्दना-अभिवन्दना॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्री शत सप्तति कर्म भूमिस्थ सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

दोहा : ढाई द्वीप त्रय लोक में, संयम का आधार।
इक सौ सत्तर कर्म भू, तीर्थंकर दातार।।
उनकी जयमाला पढ़ें, करें नमन त्रय बार।
तीर्थंकर की चरण रज, करे सकल उद्धार।।

(शंभु छन्द)

जय तीर्थभूत जय तीर्थराज, तीर्थंकर तीर्थ प्रणेता हो।
तीर्थेश तीर्थवित्[1] तीर्थात्मा, तुम मोक्ष महापथ नेता हो।।
सर्वज्ञ सर्वसुख के दाता, जिन धर्म धीर त्रिभुवन स्वामी।
तव गुण जयमाल बनाता हूँ, स्वीकार करो अंतर्यामी।।1।।

इक जंबूद्वीप धातकी खण्ड, पुष्करवर को आधा लेकर।
ये ढाई द्वीप कहलाते हैं, इसमें होते हैं तीर्थंकर।।
इन ढाई द्वीप में पाँच भरत, ऐरावत पाँच विदेह कहे।
उनमें भी भरतैरावत में, इक-इक जिनवर का तीर्थ रहे।।2।।

जम्बू में एक विदेह कहा, अग्रिम द्वीपों में दो-दो हैं।
बस ढाई द्वीप तक पाँच सुने, तीर्थंकर जिन के शब्दों में।।
इक-इक विदेह की आगम में, बत्तीस नगरियाँ बतलायी।
कुल इक सौ साठ नगरियाँ सब, पाँचों विदेह की कहलायी।।3।।

इनयुत दस भरतैरावत की, कुल इक सौ सत्तर नगरी हैं।
ये धर्म अर्थ वा काम मोक्ष, सब पुरुषार्थों की मगरी हैं।।
इनमें सब भरतैरावत में, चौथे युग तीर्थंकर होते।
उनमें पाँचों कल्याणक में, भवि धर्म मोक्ष अंकुर बोते।।4।।

1. तीर्थ के जानकार।

लेकिन विदेह के नगरों में, षट्काल भ्रमण ना होता है।
उनमें इक चौथा काल रहे, वा जिन दर्शन नित होता है॥
उनमें जन्मे कुछ जिनवर के, कल्याण पाँच भी होते हैं।
कुछ दो या त्रय कल्याणकधर, तीर्थंकर जिन भी होते हैं॥5॥

पाँचों विदेह में कम से कम, तीर्थंकर बीस सदा होते।
पन्द्रह भू में सर्वाधिक कुल, इक सौ सत्तर जिन हो सकते॥
तीर्थेश अजित जिन के युग में, ऐसा सुयोग बन आया था।
इक सौ सत्तर तीर्थेशों का, देवों ने दर्शन पाया था॥6॥

हम यही भावना भाते हैं, सब क्षेत्रों में तीर्थंकर हो।
मिथ्यात्व मिटे त्रय लोकों से, सम्यक्त्व सुनय हर घर-घर हो॥
हम रत्नत्रय गुण पूर्ण करें, ऐसा पावन अवसर आये।
शिवराज हेतु त्रय गुप्ति सधे, 'गुप्तिनंदी' जिन पद पाये॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्वयार्द्ध द्वीप संबंधी पंचदशकर्मभूमिस्थ शतसप्तति आर्यखण्डेषु भूतवर्तमानभविष्यतकाल संबंधी तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से जिननाथ की पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पावें सदा सुर नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री सहस्रकूट पूजा

स्थापना (शेर छंद)

जिनदेव का प्रशांत सौम्य दिव्य रूप है।
जिनबिम्ब सहस से बना सहस्रकूट है।।
हम पूजते सहस्र जिनवरों के पद कमल।
प्रभु को पुकार मन से बसाते हैं मन महल।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

स्वर्णिम सहस अठोत्तरी कलश सजा दिये।
पावन सहस्रकूट पे हमने ढुरा दिये।।
सुन्दर सहस्रकूट में सहस्र मूर्तियाँ।
अर्चा रचा के उनकी हमने पाप हर लिया।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करलो हजार मूर्ति की हजार वंदना।
चंदन चढ़ा मिटे समस्त पाप वर्गणा।। सुंदर....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कूट को अटूट अक्षतों से हम भजे।
अक्षय अटूट श्रेष्ठ सिद्ध रूप से सजे।। सुंदर....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु इक हजार उनके दो हजार पद कमल।
उनको चढ़ाये आज हम सहस्रदल कमल।। सुंदर....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान को पकवान्न व मिष्ठान्न से भजे।
जिनभक्ति से क्षुधापिशाचिनी से हम बचे।।
सुन्दर सहस्रकूट में सहस्र मूर्तियाँ।
अर्चा रचा के उनकी हमने पाप हर लिया।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आरती में आज रोम रोम नाचता।
फिर कर्मराज मोहकर्म दूर भागता।। सुंदर....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपके अनूप रूप मन में हैं बसे।
हम धूप चढ़ा कर्म के चंगुल में ना फसें।। सुंदर....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम द्वार खड़े थाल फल के गुच्छ की लिए।
प्रभु मोक्षफल से आज फलीभूत कीजिए।। सुंदर....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अष्टद्रव्य की सहस्र थालियाँ सजा।
हम अर्चना करें सहस्रकूट की सदा।। सुंदर....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सहस रत्नयुत कुंभ ले, करते शांतिधार।
सहस पुष्प बरसा रहे, सहसकूट के द्वार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- इक हजार अठनाथ का सहसकूट में वास।
जयमाला पढ़ जय मिले, यही अटल विश्वास॥

(नरेन्द्र छन्द)

सहसकूट में सहस अठोत्तर, सुंदर सुंदर प्रतिमाएँ।
जिनकी नग्न दिगम्बर मुद्रा, निरख-निरख मन हर्षायें॥
पद्मासन से शोभित प्रभु का, अंग-अंग मन मोहक है।।
सुंदरता की सरिता मानो, मस्तक से चरणों तक है॥1॥

इन प्रतिमाओं के दर्शन का, चिंतन मात्र बड़ा फलता।
इक हजार उपवासों का फल, केवल चिंतन से मिलता॥
दर्शन हित घर से निकले, तो लाखों उपवासों का फल।
जिन दर्शन साक्षात् मिले तब, हो अनंत अनशन का फल॥2॥

जो भक्ति से आगम सम्मत, सहसकूट अभिषेक करे।
इन्द्रादिक बन मेरू पर वो, तीर्थंकर अभिषेक करे॥
हे प्रभु ! तेरी अष्ट द्रव्य से, पूजन है अतिशयकारी।
मनवांछित फल देकर हरती, अष्टकर्म अति दुःखकारी॥3॥

सहसकूट की सहसदीप से, करके मंगल आरतियाँ।
रोग शोक अज्ञान मिटाकर, हमने मंगलाचार किया॥
गाननृत्य युत वाद्य बजाकर, प्रभु का कीर्तन करने से।
जीवन में खुशहाली छाये, पानी सम लक्ष्मी बरसे॥4॥

रत्न धातु आदि से निर्मित, सहसकूट जो बनवाये।
चौदह रत्नाधिप चक्री बन, वो रत्नत्रय निधि पाये।।
प्रभु का दर्शन पूजन कीर्त्तन, पहले भवसुख देता है।
फिर अनुक्रम से अक्षय अनुपम, क्षायिक शिवसुख देता है।।5।।

मैनापति श्रीपाल राज ने, सहसकूट दर्शन करके।
रयणमंजूसा सी रानी को, पाया था परणा करके।।
छोटे-छोटे से ये प्रभुवर, लेकिन काम बड़े उनके।
भक्तों को इतना देते कि, थक जाते वो गिन-गिन के।।6।।

एक बार में यहाँ हो रही, भक्ति हजारों भगवन की।
बिन माँगे पूरी हो जाती, सब अभिलाषाएँ मन की।।
सहसकूट की सहस मूर्तियाँ, अतिपावन मनभावन हैं।
जिनकी दिव्य सहस्र रश्मियाँ, हर लेती सबका मन हैं।।7।।

कुंथुगुरु ने कुंथुगिरी में, सहसकूट बनवाया है।
मैना सती की चित्रकथा को, मंदिर में जड़वाया है।।
गुप्तिनंदी गुरु संघ सहित जब, सहसकूट दर्शन पाये।
ऐसी अनुपम रचना उनके, हृदय पटल पर छा जाये।।8।।

सहसकूट के सहस नाथ की, जयमाला हम सब गाये।
'चंद्रगुप्त' के मन की कुटिया, सहसकूट से सज जाये।।

ॐ ह्रीं श्री सहस्रकूट स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भगवन् हम भगवन् बने, ऐसा दो आशीष।
जब तक मोक्ष मिले नहीं, रहे चरण में शीश।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना॥
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा, हम दु:ख मिटायें आपना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें॥
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे॥ जिन शासन...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये॥ जिन शासन...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजें निज मन्मथ नशे॥ जिन शासन...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट्ऋतु के आमादिक फल हम ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनायें भाव से।
पद अनर्घ हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चौबिस जिन के चरण में, मिलती शांति अपार।
शांतिधार देकर करें, पुष्पाञ्जलि सुखकार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र : ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये॥1॥
सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे॥2॥
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता॥3॥
विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें॥4॥
कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते॥5॥
नमि को नमें सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे॥6॥
चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से, 'चौबीस जिन' पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो, सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर, भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा

स्थापना (गीता छन्द)

जिनवर वृषभ से वीर तक, चौबीस तीर्थंकर हुए।
वे पूज्य सुर नर यक्ष वा, शुभ क्षेत्रपालों से हुए॥
प्रभु के चरण अनुराग से, सब विघ्न बाधा दुःख टले।
उनको बसाने हृदय हम, आह्वान करते पुष्प ले॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

झटपट झटपट पयघट[1] हम सब ला रहे।
तीर्थंकर प्रतिमा पर आज ढुरा रहे॥
चौबीसों तीर्थंकर के पावन चरण।
उन चरणों में सुधरे ये जीवन मरण॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णवर्णी चंदन की स्वर्ण कटोरियाँ।
गंध चढ़ा दुःख हरे भक्त की टोलियाँ॥ चौबीसों....॥2॥

ॐ ह्रीं श्री .... संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नजड़ित थाली ये रत्नों से भरी।
हमने अर्चा आज अक्षतों से करी॥ चौबीसों....॥3॥

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बागों में पुष्पों से सज्जित डालियाँ।
उन पुष्पों को चढ़ा काम विनशा दिया॥ चौबीसों....॥4॥

ॐ ह्रीं श्री .... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. जल के घड़े।

पुड़ी पराठा खीर बताशा लायकै।
आतम रस हम पाये क्षुधा नशायकै।।
चौबीसों तीर्थंकर के पावन चरण।
उन चरणों में सुधरे ये जीवन मरण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर पर दीप सजा आरतियाँ गावते।
पग में घुँघरुँ बाँध छमा छम नाचते।। चौबीसों....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री .... महामोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमुख के घट में दशगंध चढ़ाइये।
दशों दिशा महकाकर पुण्य बढ़ाइये।। चौबीसों....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री .... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के वृक्षों पर शिवफल लगे।
सुफल चढ़ा रत्नत्रय गुण हम में जगे।। चौबीसों....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब अर्घ चढ़ायें भगवन आपको।
हर लो भगवन हम भक्तों के पाप को।। चौबीसों....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : शांतिधार हम कर रहे मंत्रनाद के साथ।
चौबीसों प्रभु पर करें, पुष्पों की बरसात।।

शांतये शांतिधारा.......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : चौबीसों प्रभु के लिए, जयमाला चौबीस।
जयमाला हम गा रहे, जय जिनवर चौबीस॥

त्रोटक छंद

जय आद्य[1] जिनेश्वर आदि प्रभो, जय कर्म जयी अजितेश विभो।
समभाव धनी जिन संभव है, अभिनंदन से सुख संभव है॥1॥

सुमतीश सुकेवलज्ञान वरें, जय पद्म प्रभो शिव थान वरें।
जिनदेव सुपारस पार करें, जय चंद्रप्रभो भव भार हरें॥2॥

सुविधि सुख की विधि दान करें, शिव का थल शीतल दान करें।
जय श्रेय धनी प्रभु श्रेयस हैं, जय वासुपूज्य सुख के रस हैं॥3॥

विपदा भव की विमलेश हरें, दुःख अंत अनंत जिनेश करें।
जय धर्म जिनेश अधर्म हरें, जय शांति प्रभो जग शांति करें॥4॥

जय कुंथु प्रभो व्रत कुंत[2] धनी, अरनाथ बने अरिहंत गुणी।
प्रभु मल्लि सुमल्ल बने सच में, व्रत दान किया मुनिसुव्रत ने॥5॥

नमि को नमते नर देव सदा, तज राजुल नेम बने सुखदा॥
जय ज्ञानरसी प्रभु पारस हैं, जय वीर जिनागम का यश हैं॥6॥

जयमाल पढ़ो जयमाल सुनो, प्रभु से प्रभु की गुणमाल चुनो।
नित जो प्रभु की जयमाल पढ़े, उसका यश 'चंद्र' समान बढ़े॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चौबीसों प्रभु के चरण मनहर अड़तालीस।
'चंद्रगुप्त' प्रभु को करें, वंदन अड़तालीस॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. प्रथम, 2. भाला।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन को नित वंदन है मेरा।
सुमति, पद्म, सुपार्श्व, चंद्र से मिटता है भव का फेरा॥
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांस, जिन वासुपूज्य जगत्राता हैं।
विमल, अनंत, धर्म, शांतिजिन जग के शांतिदाता हैं॥
कुन्थु, अरह, मल्लि, मुनिसुव्रत नमिनाथ को नित ध्याऊँ।
नेमि, पार्श्व, श्री वीर प्रभु की पूजा कर शिवफल पाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छन्द)

निज हाथों से जल प्रासुक ला, प्रभु चरणों का करता अर्चन।
शीतल सलिलामृत पूजन से, नश जाता है भव का बंधन॥
चौबीस जिनेश्वर सुखकारक, सबका दुःख हर लेने वाले।
भक्तों को मुक्ति देते हो, हे शिवपुर में बसने वाले॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चंदन घिसकर जो नर, जिनवर की पूजा करता है।
सुंदर तन वह पा करके भी, संसार तपन से बचता है॥ चौबीस..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनुपम अनियारे ले, मैं भाव सहित नित आता हूँ।
प्रभु चरणों से ही प्रीत लगा, जग वालों से घबराता हूँ॥ चौबीस..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित विकसित नूतन अनुपम, मैं रंग-बिरंगे पुष्प लिए।
भावों में भक्ति रंग चढ़ा, प्रभु चरणों को नितधार हिए॥
चौबीस जिनेश्वर सुखकारक, सबका दुःख हर लेने वाले।
भक्तों को मुक्ति देते हो, हे शिवपुर में बसने वाले॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बर्फी, लड्डू, घेवर, फैनी, नाना व्यंजन हैं मनहारे।
अर्पण करते जो जिनवर को, वे क्षुधावेदनी को मारे॥ चौबीस..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की जगमग ज्योति संग, यह घृत भी जलता जाता है।
भक्तिमय प्रज्ञा ज्योति संग, यह कर्मरिपू जल जाता है॥ चौबीस..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं अगर-तगर की धूप बना, पावक में निशदिन खेता हूँ।
ये अष्टकर्म जल जायें मेरे, नित यही हृदय से कहता हूँ॥ चौबीस..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं मोक्ष महाफल अभिलाषी, अभिलाषा लेकर आता हूँ।
भक्तिरस से प्रेरित होकर, महाफल सरस चरण में लाता हूँ॥ चौबीस..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों अन्तर्यामी तुम, अष्टम वसुधा के स्वामी हो।
ज्ञाता दृष्टा तुम हो प्रभुवर, जग जीवों के हित कामी हो॥ चौबीस..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **चौबीसों जिनराज हैं, तीन जगत हितकार।**
शांतिधार करके करूँ, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : आदि प्रभु से वीर तक, करता नित गुणगान।
जयमाला उनकी पढ़ूँ, पाने निज भगवान॥

पद्धरि छन्द

जय चौबीसों जिनवर महान, करता जग जिनका महाध्यान।
उपदेश आपका सुनत आन, बन जाते प्रभुवर तुम समान॥1॥

जय तीर्थों की रचना करंत, पाए जिनवर तुम गुण अनंत।
अष्टादश दोष रहित जिनेश, तव गुण गाते ब्रह्मा महेश॥2॥

जय केवलभानु प्रकाशमान, सारे जग को आलोकवान।
जय त्रिजग वस्तु को लिया जान, जय पाया क्षायिक विशदज्ञान॥3॥

तुम हो अनंत शक्तिनिधान, यह जग माने तुमको प्रमाण।
बहिअन्तर लक्ष्मी पा महान, हो धर्मसभा में शोभमान॥4॥

दुःखियों के सारे दुःख निवार, शरणागत की सुनते पुकार।
तवशरणागत सम्यक्त्ववान, बन जाते पूर्ण समर्थवान॥5॥

नहीं रहता आपस में विरोध, सत्ज्ञानी करते सत्यशोध।
नहीं क्षुधा-तृषा का रंच ताप, यह तीर्थंकर का है प्रताप॥6॥

है वीर्य अतुल अनुपम अनूप, हो तीन जगत के आप भूप।
वादी न कर सकते अलाप, चाहे कैसा भी हो प्रलाप॥7॥

है स्याद्वाद तुम आभूषण, प्रभु दूर करो जग का दूषण।
सुर-नर-मुनि करते तुम वंदन, भावों से 'क्षमा' करे अर्चन॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चौबीसों जिनराज का, करता हर क्षण ध्यान।
आतमगुण विकसित करूँ, पाने मुक्ति थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पंचकल्याणक पूजा

(शंभु छन्द)

श्री गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष पाँचों कल्याणक के धारी।
इनके गुण कीर्तन वंदन से बनते अतिशय सुख भंडारी।।
मनहर छवि लख मन कुमुद खिला इनका आह्वानन करते हैं।
इनके सम गुण पाने को हम पुष्पांजलि अर्पण करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पंचकल्याणक समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक) तर्ज : हे दीनबन्धु...

जल के घड़ों से नाथ पे त्रयधार हम करें।
त्रय काल नमन करें तीन रोग को हरें।।
श्री पंचकल्याणक प्रभु का भक्ति से करें।
हम गान-नृत्य-वंदना से मुक्ति को वरें।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

त्रैलोक्यनाथ दर्श से क्रंदन भगा रहे।
भवदाह मिटाने उन्हें चंदन चढ़ा रहे।। श्री पंच....

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

भर पुँज अक्षतों के चढ़ा मोद मनायें।
अक्षय अनंत गुण निधि को आपसे पायें।। श्री पंच....

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

बेला गुलाब चंपकादी पुष्प सजायें।
श्री कामजेता नाथ को भक्ति से चढ़ायें।। श्री पंच....

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

तीर्थेश धर्मवैद्य सर्व रोग को हरें।
नैवेद्य चढ़ा हम क्षुधादि कष्ट को हरें।। श्री पंच...

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

मोहान्ध को हरें प्रभो कैवल्यज्योति से।
निजमोह नाश हेतु पूजें दीपज्योति से।।
श्री पंचकल्याणक प्रभु का भक्ति से करें।
हम गान-नृत्य-वंदना से मुक्ति को वरें।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

ध्यानाग्नि में प्रभु ने आठों कर्म नशाये।
सुरभित मनोज्ञ धूप उन्हें रोज चढ़ायें।। श्री पंच...

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

मीठे सरस फलों के श्रेष्ठ थाल चढ़ायें।
शिवराह के पथिक बने यह भाव बनायें।। श्री पंच...

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

कल्याणवान ईश को हम अर्घ चढ़ायें।
कल्याण भाव से सदा ही शीश झुकायें।। श्री पंच...

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा : प्रमुदित मन से कर रहे, पावन शांतिधार।
प्रभु सम पावन बन सकें, हो जायें भवपार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा : पुष्पांजलि अर्पण करें, प्रभु चरणों के पास।
पुष्प चढ़ा शुभ भाव से, करें मोक्ष में वास।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मन्त्र : ॐ ह्रीं श्री पंचकल्याणकेभ्यो चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला तीर्थेश की, जयकारों के साथ।
पंचकल्याणक ईश को, झुका रहे हम माथ।।

(तर्ज – धीरे-धीरे बोल कोई...)

आओ मिलकर सब आयें, प्रभु की जयमाला गायें।
हम भक्ति-नृत्य रचा रहे, शुभ मंगल वाद्य बजा रहे।।
जिनमाता का अतिशय पुण्य महान, गर्भ में आये तीर्थंकर भगवान,
नगरी में बरसे हैं रत्न अपार, तीन लोक में शांति अपरम्पार।
वंदन करें, कीर्तन करें-2, ... हम भक्ति....
जब जन्मे थे जग के तारणहार, सबके मन में खुशियों की भरमार,
पांडुक गिरी पर न्हवन हुआ मनहार, जन्म महोत्सव प्रभु का मंगलकार।
तबला बजा, ढोलक बजा-2,... हम भक्ति....
बन वैरागी चले स्वयंभूनाथ, पँचमुष्टि से लोंच करें निज हाथ,
बने दिगम्बर सारे अम्बर त्याग, पँचमहाव्रत से करते अनुराग।
गरबा रचा, बाजे बजा-2,.... हम भक्ति....
शुक्ल ध्यान धर पायें केवलज्ञान, दिव्यध्वनि झेलें गणधर भगवान,
समोशरण में आये पशु नर-नार, पायें व्रत संयम का शुभ उपहार।
अर्चन करें, पूजन करें-2,.... हम भक्ति....
केवलज्ञानी नाशे कर्मन् आठ, शिवनगरी के बने प्रभु सम्राट,
नख-केशों का कर अंतिम संस्कार, देव मनायें मोक्ष दिवस त्यौहार।
झांझर बजा, घुंघरुँ बजा-2
'गुप्तिनंदी' गुप्ति धरें, यह अरज प्रभु तुम से करे।। आओ...

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

श्री पंचकल्याणक महोत्सव भक्ति से हम सब करें।
कल्याण की शुभभावना से नृत्य वंदन हम करें।।
तीर्थंकरों की चरण रज मिलती रहे यह भावना।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की रहे शिवराज की शुभकामना।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री आदिनाथ पूजा

(शंभु छन्द)

इस युग के आदि प्रभु का मैं, नित पूजन करने आता हूँ।
धन–वैभव से यह मन ऊबा, चरणों में ध्यान लगाता हूँ॥
अपनी चरणाम्बुज सुरभि से, मम मन पंकज को विकसाओ।
हे जग मण्डल के मनहारी, प्रभु भक्तहृदय में आ जाओ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

देवों से पूजित ईश, तुमको ध्याता हूँ।
ले प्रासुक नीर जिनेश, चरण चढ़ाता हूँ॥
हे जिनवर ! आदिनाथ, मैं भवव्याधि हरूँ।
कर लो निज सम हे नाथ !, साम्य समाधि वरूँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि विहीन धनहीन, तुमको ध्याता हूँ।
ले सुरभित गंध नवीन, अति हर्षाता हूँ॥ हे जिनवर...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पदधारी नाथ, त्रिभुवन नायक हो।
अक्षत लाए हम हाथ, जगसुख दायक हो॥ हे जिनवर...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मदनांकुश आप कहाय, मदन अरि मारा।
चरणों में पुष्प चढ़ाय, जग तुमसे हारा॥ हे जिनवर...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षटरस व्यंजन के थाल, चरण चढ़ाता हूँ।
हो प्रभु सन्मुख मम भाल, क्षुधा नशाता हूँ॥ हे जिनवर...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख पारदर्शी तव काय, सुरपति नृत्य करे।
दीपों के थाल चढ़ाय, भव मिथ्यात्व हरे।।
हे जिनवर ! आदिनाथ, मैं भवव्याधि हरूँ।
कर लो निज सम हे नाथ !, साम्य समाधि वरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर सकल कर्म का नाश, त्रिभुवन अर्चित हो।
अर्पण कर धूप सुवास, तन-मन अर्पित हो।। हे जिनवर...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारंगी आम बादाम, श्रीफल मैं लाऊँ।
चरणों में सुफल चढ़ाय, प्रभु के गुण गाऊँ।। हे जिनवर...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा के नाथ, को मैं ध्याता हूँ।
ले अष्टद्रव्य को साथ, भक्ति रचाता हूँ।। हे जिनवर...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (नव सखी छन्द)

स्वर्गों से प्रभुजी आए, मरूदेवी भी हर्षाए।
आषाढ़ वदी द्वितीया को, हम खुशियाँ खूब मनाएँ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगल मंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

शुभ चैत्र वदी नौमी को, जिन अवधपुरी जन्मे थे।
सौधर्म महोत्सव करता, हर घर में रत्न गिरे थे।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

धन-वैभव नश्वर माना, प्रभु ने वन में तप धारा।
शुभ चैत वदी नवमी को, पा आतम अनुभव प्यारा।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

शुभ फागुन ग्यारस कृष्णा, प्रभु केवलज्ञान उपाया।
जग जीवों को उपदेश दे, तत्वों का ज्ञान कराया॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

शुभ माघ वदी चौदश को, जिनवर पहुँचे शिवपुर को।
तब इन्द्र हुआ अतिहर्षित, आया पूजन करने को॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : **आदिनाथ भगवान के, चरण कमल सुखकार।**
शांतिधारा मैं करूँ, पाऊँ मुक्तिद्वार॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **कृत युग का उपदेश दे, बने आप हितकार।**
स्त्री शिक्षा से किया, इस जग का उद्धार॥

पद्धरि छन्द

जय-जय-जय-जय श्री वृषभदेव, जय तीन लोक करता सुसेव।
तुम त्रिभुवन यामी हो जिनेश, दर्शन से कट जाते कलेश॥1॥

ब्रह्मा-विष्णु हो या महेश, सब नमन करें तुमको हमेश।
सर्वार्थसिद्धि से आप आय, सब अवधपुरी में हर्ष छाय॥2॥

धनपति भी नाना रत्न लाय, प्रभुवर का जन्मोत्सव मनाय।
बचपन तज धार लिया यौवन, आरंभ किया लौकिक जीवन॥3॥

संकुचित हुए जब कल्पवृक्ष, सब दौड़ आय प्रभु के समक्ष।
है कैसा यह आश्चर्य प्रभु ?, अब मार्ग दिखाओ हमें विभु॥4॥

तब अवधिज्ञान से लिया जान, अब भोगभूमि हो गई म्लान।
चलता विदेह में जो विधान, वैसा प्रभुवर ने दिया ज्ञान॥5॥

उपदेश दिया असिमसि आदि, आदि प्रभु ने हर ली व्याधि।
नारी शिक्षा थी प्रथम सीख, ब्राह्मी-सुंदरी ने पाई सीख॥6॥

दाएँ कर से दें शब्दज्ञान, अरु बाएँ कर से अंकज्ञान।
बाहुबली आदि शतक पुत्र, नाना विध उनको दिए सूत्र॥7॥

शासन उनका सबसे महान, धन-वैभव में सुख लिया मान।
देखा जब नीलांजना मरण, वैराग्य हुआ प्रभु को तत्क्षण॥8॥

मुनिपद धारा उनने महान, षट्मास योग तक किया ध्यान।
इक दिन निकले करने अहार, छःमास किया उनने विहार॥9॥

है आया भारी अंतराय, श्रावक विधि को न जान पाय।
इक दिन देखे श्रेयांस सपन, प्रभुवर आए मेरे आँगन॥10॥

जब पूर्व भवों का हुआ ज्ञान, अहार विधि का हुआ भान।
जब प्रभो बने नृप वज्रजंघ, रानी श्री मति थी संग-संग॥11॥

नवधा भक्ति से दे अहार, उसका ही अब आया विचार।
श्रेयांस ने तब दीना अहार, आश्चर्य हुए पाँचों प्रकार॥12॥

नरभव है अपना सफल मान, मुनि बनकर पाया परम ज्ञान।
आदिप्रभु ने धर शुक्ल ध्यान, पाई बोधि क्षायिक महान॥13॥

अरिहंत रूप उनका अनूप, वे मुनिसंघ के श्रेष्ठ भूप।
प्रभु समोशरण में शोभमान, सब पाएँ दिव्यध्वनि महान॥14॥

पूजा करते सब भक्ति भाव, जहँ क्षुधा-तृषा का है अभाव।
कैलाशगिरि पहुँचे जिनेश, नाशें वसु कर्मों को जिनेश॥15॥

जिनवर ने धारा सिद्धरूप, त्रिभुवन करता पूजा अनूप।
तव शरणा आई 'क्षमा' आज, पाए शिव सुख का पूर्ण राज॥16॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : आदिनाथ भगवान का, करें सतत हम ध्यान।
रोग-भोग से मुक्त हों, बन जाएँ भगवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अजितनाथ पूजा

(हरिगीता-छंद)

जिनवर अजित अघ जीतकर, त्रय जग विजेता बन गए।
जग को बता जिनधर्म वे, त्रय लोक नेता बन गए॥
आह्वान पुष्पों से करूँ, प्रभु मन कुटी में आइए।
जिनधर्म सूरज अजितजिन, जिनधर्म दीप जलाइए॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चिरकाल से हम व्यथित हैं, त्रय रोग पीड़ा से प्रभो।
शीतल सलिल से पूजते, पाने परम औषध विभो॥
हे अजितनाथ ! प्रभो हमें, ऐसा अटल वरदान दो।
जब तक न जीते कर्म को, जिनधर्म पर श्रद्धान हो॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जितशत्रु के नंदन तुम्हें, चंदन चढ़ा वंदन करें।
पद धूल वह प्रभु आपकी, भवताप का क्रंदन हरें॥ हे अजितनाथ !.. ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयरमा लब्धीपती, यह विश्व माने आपको।
अक्षय निधी का लक्ष्य ले, अक्षत चढ़ाऐं आपको॥ हे अजितनाथ. !. ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर कमल जैसा खिला, प्रभु आपका ये मुखकमल।
कामारि क्षय हित कमल ले, अर्चें तिहारे पदकमल॥ हे अजितनाथ !.. ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीव की वैरी क्षुधा, तुमने उसी पर जय किया।
लेकर जलेबी थाल भर, हमने प्रभो अर्चन किया॥ हे अजितनाथ !.. ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान-तम चहुँ ओर है, प्रभु ज्ञान दीपक आप हो।
दीपक चढ़ा वर माँगते, हमसे कभी ना पाप हो।।
हे अजितनाथ ! प्रभो हमें, ऐसा अटल वरदान दो।
जब तक न जीते कर्म को, जिनधर्म पर श्रद्धान हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप के घट में प्रभो, खेते सुगंधित धूप को।
झटपट खुले पट मुक्ति का, तिरलें विकट भव-कूप को।। हे अजितनाथ !.. ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व विषफल को तजें, पायें सुफल सम्यक्त्व को।
इस हित प्रभो अर्पण करें, केलादि बहुविध गुच्छ को।। हे अजितनाथ !.. ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य इक कर में सजा, करताल इक कर से बजा।
हम छम-छमा-छम नाचते, प्रभु अर्घ ये तुमको चढ़ा।। हे अजितनाथ !.. ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक *(अवतार छंद)*

श्री नगर अयोध्या श्रेष्ठ, त्रिभुवन-पूज्य मही-2
शुभ श्याम अमावस ज्येष्ठ, काली रात नहीं-2
प्रभु अजित गर्भ में आय, इस पावन बेला-2
माँ विजया के दर छाय, देवों का मेला-2

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाअमावस्यायां गर्भमंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

जब हुआ अजित अवतार, मंगल वाद्य बजे-2
जय अवधपुरी मनहार, स्वर्ग समान सजे-2
है धन्य सुदी दश माघ, श्रुत उल्लेख करें-2
देवों का जागा भाग, जो अभिषेक करें-2

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

जब देखा उल्कापात, प्रभु वैराग्य धरें-2
फिर राजलक्ष्मी को त्याग, संयम लक्ष्मी वरें-2
सित दशमी माघ महान, तप कल्याण तिथि-2
हम पायें प्रभो समान, निज कल्याण निधि-2

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3 ।।

प्रभु लोकालोक प्रमाण, युगपत् जान रहे-2
बन तीर्थंकर भगवान, हित उपदेश कहे-2
शुभ ग्यारस शुक्ला पौष, पर्व लगे सुंदर-2
हम बन जायें निर्दोष, दिव्यध्वनि सुनकर-2

[1]ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4 ।।

प्रभु करके योग-निरोध, कर्म अघाति हने-2
सब गुणस्थान को छोड़, रूपातीत बने-2
शुभ चैत्र शुक्ल की पाँच, मुक्ति लक्ष्मी वरें-2
हम झूमें-गायें आज, लाडू थाल भरें-2

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5 ।।

दोहा : सर्व अशांति शांति हित, करते शांतिधार।
पुष्पांजलि अर्पण करें, पाने शिवपुर द्वार ।।

शांतये शांतिधारा ....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : अजितनाथ प्रभुवर करें, भक्तों को खुशहाल।
जिनगुणमाला लाभ हित, गायें हम जयमाल ।।

1, पौष शुक्ला चौदस, हरिवंश पुराण- फागुन कृष्णा ग्यारस।
नोट-चौबीस तीर्थंकरों की पंचकल्याणक की तिथियाँ तिलोय पण्णत्ति, हरिवंश पुराण व महापुराण के अनुसार दी गयी हैं।

शंभु छन्द

हे अजितनाथ ! अजितेश प्रभो, जग में गज चिह्न सुशोभित हो।
दूजे तीर्थंकर तीर्थनाथ, श्रीवत्स सुलक्षण सुशोभित हो॥
प्रभु पूर्व विदेह सुसीमा में, तुम बने विमलवाहन राजा।
दीक्षा लेकर निर्ग्रंथ बने, तीर्थेश प्रकृति को बाँधा॥1॥
फिर भव्य समाधिमरण किया, अहमिन्द्र बने दिवसुख पायें।
उस विजय अनुत्तर से चयकर, विजया माता के उर आये॥
जय अजितनाथ मेरुगिरी पर, सुरपति ने नाद कराया है।
पर सार्थक नाम अजित तुमने, कर्मों को जीत बनाया है॥2॥
ज्ञानावरणी को जीत प्रभु, केवलज्ञानी अरिहंत हुए।
प्रभु कर्म दर्शनावरण जीत, क्षायिक दर्शन गुणवंत हुए॥
जीते प्रभु दुष्कर मोहनीय, जिससे अनंत-सुख युक्त हुए।
गुण श्रेष्ठ अनंत वीर्य पाया, जब अंतराय से मुक्त हुए॥3॥
प्रभु कर्म वेदनी को जीता, गुण अव्याबाध रतन पाया।
चउ आयु कर्म को जय करके, अवगाहन गुण को प्रगटाया॥
प्रभु गुण सूक्ष्मत्व निधि पायें, जब नामकर्म पर विजय करें।
द्वय गोत्रकर्म पर जय पाकर, गुण अगुरुलघु दुर्जेय वरें॥4॥
प्रभु तुम अनंतगुणधारी हो, हम क्या तुम गुण उल्लेख करें।
इन आठ गुणों को गाकर के, जिन से जिनगुण की भेंट वरें॥
जैसे सागर की सीमा को, बालक हाथों से बतलायें।
हे गुणसागर ! वैसे ही हम, तेरे गुण बालक बन गायें॥5॥
हे नाथ ! तिहारी पूजा का, फल हमको तुम दर्शन देना।
ना सिद्ध बने बिन दर्श मिले, इसलिए सिद्धपद वर देना॥
गुप्तिनंदी गुरु के नंदन, तुमको वंदन कर हर्षायें।
यह 'सुयश-चन्द्र' शिवयश पाने, शिवराज सुलभता से पायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अजितनाथ भगवान का, मिले यही आशीष।
जब तक मोक्ष नहीं मिले, रहे चरण में शीश॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री संभवनाथ पूजा

(गीता छन्द)

भव भय हरो संभव प्रभु, चरणों में शीश झुका रहा।
चंपा चमेली सुमन ले, जिनदेव के गुण गा रहा।।
आओ प्रभु मन में मेरे, सूना हृदय है तुम बिना।
आह्वान कर हर्षित हैं मन, सुख पा गया मैं अनगिना।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल के कलश शुभ शुद्ध भर, प्रभु के चरण अर्पण करूँ।
पावन प्रभा चरणों की पा, निज आत्मप्रक्षालन करूँ।।
संभव प्रभु की अर्चना, संभव करे सब काम को।
मैं भक्ति रस में झूमकर, भक्ति करूँ निष्काम हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन चरण चंदन चढ़ा, मन की सुधारूँ भावना।
संताप जग का मेट कर, संग हो प्रभु यह कामना।। संभव.....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताक्षतों के पुँज ले, हर्षित हृदय मैं आ रहा।
अक्षय निधी सम्यक्त्व की, पाने प्रभु गुण गा रहा।। संभव.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक, बकुल, मचकुंद वा, जूही से करता अर्चना।
मन्मथ विजेता नाथ की, अर्चा हरे भव वंचना।। संभव.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक सरस व्यंजन बना, लाऊँ मैं हर दिन भाव से।
भक्ति के रस में मैं रंगा, पूजा करूँ नित चाव से।। संभव.....।।5।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं जगमगाते दीप की, थाली सजाऊँ हाथ में।
झांझर-मंजीरा-ढोल संग, नाचूँ मैं गाऊँ साथ में।।
संभव प्रभु की अर्चना, संभव करे सब काम को।
मैं भक्ति रस में झूमकर, भक्ति करूँ निष्काम हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागरू चन्द्रक व अम्बर, धूप धूपायन जला।
कर्माष्ट से मुक्ति मिले, पूजे जो जिनवर को भला।। संभव..... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अनार ले, जिनवर के दर नित आऊँगा।
जब तक न मुक्ति फल मिले, तेरे ही गुण मैं गाऊँगा।। संभव..... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दनादि अर्घ सब, लाऊँ मिलाकर थाल में।
प्रभु के चरण में हो मगन, गाऊँ मैं लय व ताल में।। संभव..... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (चौपाई)

पंचकल्याणक भव्य मनाये, झूमें-गायें पुण्य कमाये।
श्रावस्ती नगरी है न्यारी, देवों को भी लगती प्यारी।।
प्रथम ग्रैवेयक से प्रभु आये, माता का उर धन्य बनाये।।
फाल्गुन शुक्ला अष्टम न्यारी, हर्षित मात-पिता नर-नारी।।

ॐ ह्रीं फागुनशुक्लाअष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

कार्तिक सुद पूनम तिथि आई, श्रावस्ती नगरी हर्षाई।
दृढ़रथ राजा मात सुषेणा, जिनको नमन करें सुर सेना।।
सुर प्रभु को पाण्डुक वन लाये, बालप्रभु का न्वहन कराये।
जन्मकल्याणक भक्त मनायें, अपना नरभव सफल बनायें।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मेघों की देखें प्रभु माया, देख हृदय वैराग्य समाया।
दीक्षा धर तप को अपनाया, सौंपी सुत को सारी माया॥
तपकर प्रभुवर कर्म नशाये, मगसिर पूनम तिथि कहलाये।
हम भी तप कल्याण मनायें, प्रभु की पूजा-भक्ति रचायें॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लापूर्णिमायां तपकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

संभव प्रभु ने ध्यान लगाया, शाल्मलि तरुवर धन्य बनाया।
कार्तिक कृष्ण चौथ दिन आया, प्रभु ने घाति कर्म विनशाया॥
दिव्यदेशना भविजन पायें, ज्ञानकल्याणक श्रेष्ठ मनायें।
हम भी प्रभुवर के गुण गायें, भक्तिभाव से अर्घ्य चढ़ायें॥

[1] ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

शिखर सम्मेद महाप्रभु आये, योग निरोध सभा विघटाये।
शेष अघाति कर्म विनशाये, मुक्ति महोत्सव देव मनाये॥
चैतमास सुद षष्ठी आई, प्रभुवर ने पंचम गति पाई।
मोक्षकल्याणक भव्य मनायें, धवल कूट पर अर्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : **संभव श्री जिनराज के, चरण करें उपकार।**
शांतिधार करता सदा, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

1. का.कृ. 5 ति.प., का. कृ. 5 ह. पु.

जयमाला

दोहा : संभव श्री जिनराज की, जयमाला गुणखान।
पढ़े भव्य जो भाव से, हो उसका कल्याण॥

शेर छन्द

संभव प्रभु का रोज हम तो ध्यान करेंगे।
जयमाल इनकी गा के मुक्तिमाल वरेंगे॥
तीजे बने तीर्थेश आप स्वर्ग से आये।
माता सुषेणा धन्य-धन्य हर्ष मनाये॥1॥

दृढ़रथ पितु नगर में बहुरत्न लुटाये।
कुबेर पन्द्रह मास रत्नवृष्टि कराये॥
ये क्षेत्र भरत जम्बूद्वीप धन्य हो गया।
श्रावस्ती नगर में प्रभु का जन्म हो गया॥2॥

नक्षत्र मृगशिरा था सोम योग भी प्यारा।
अहमिन्द्र पद को छोड़ चमके भू पे सितारा॥
सुमेरू पे अभिषेक करें देव-देवियाँ।
आनंद नाट्य इन्द्र करें चित्त मोहिया॥3॥

इन्द्राणी बालप्रभु का श्रृंगार करे है।
सम्यक्त्व पाके आत्म का उद्धार करे है॥
संभव रखा प्रभु का नाम मोद मनायें।
माता-पिता को बाल सौंप स्वर्ग को जायें॥4॥

नन्हा सा बाल खेल रहा धूम मचाये।
असीम पुण्यवान स्वर्ग अवनी हिलाये॥
स्वर्गों से देव भोजनादि नित्य ला रहे।
प्रभुवर के संग खेल दिव्य पुण्य पा रहे॥5॥

बचपन तजा यौवन धरा सुख राज का लिया।
मेघों की दशा देख के वैराग्य हो गया॥
बेटे को सौंपा राज्य वन विहार कर गये।
राजा हजार भी प्रभु के संग हो गये॥6॥

श्रावस्ती नगर में प्रथम आहार है हुआ।
सुरेन्द्र दत्त भूप का सौभाग्य है जगा॥
अचरज हुए थे पाँच जय-जयकार हुआ था।
राजा का जगा भाग्य चमत्कार हुआ था॥7॥

प्रभु केवली बने महान श्रेष्ठ योग था।
जन्मावतार ज्ञान का नक्षत्र एक था॥
बारह सभा में चार दिशा चार मुख दिखे।
लख पारदर्शी तन सभी के मन कुमुद खिले॥8॥

वसुकर्म नाश श्री प्रभुजी सिद्ध हो गये।
अविरुद्ध बुद्ध शुद्ध जग प्रसिद्ध हो गये॥
संभवप्रभु की भक्ति नित्य 'क्षमाश्री' करे।
काटे करम की बेडियाँ चरणों में नित रमे॥9॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : संभव भव भय दूर कर, पहुँचे मुक्तिद्वार।
'क्षमा' प्रभु का ध्यान कर, पाये भवदधि पार॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अभिनंदननाथ पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

सिद्धार्था माता के नंदन, संवर राजदुलारे।
श्री अभिनंदन प्रभु को वंदन, आये शरण तिहारे॥
हृदय कमल में आन विराजो, मन में भक्ति जगाये।
आह्वानन करते पुष्पों से, पूजन करने आये॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

काव्य छंद (तर्ज - रोम रोम से निकले...)

हेम कुंभ में नीर प्रासुक भर कर लाया।
करूँ चरण प्रक्षाल मेरा मन हर्षाया॥
नाश करूँ त्रय रोग ऐसी शक्ति जगाऊँ।
हो रत्नत्रय प्राप्त ऐसी भक्ति रचाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर के पाय लेपन करता चंदन।
अभिनंदन भगवान करता तुमको वंदन॥
प्रभु चरणों की गंध लेकर शीश लगाऊँ।
नाशूँ भव संताप शीतलता पा जाऊँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद के नाथ अक्षय दान लुटाते।
जो भी आये पास प्रभु की निधियाँ पाते॥
उत्तम तंदुल श्वेत धवलाक्षत भर लाऊँ।
चरण चढ़ाऊँ पुँज क्षायिक पदवी पाऊँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलासन के मध्य प्रभुवर आप विराजे।
कमल चढ़ाऊँ नित्य चरणों में नित ताजे॥

पुष्पों वही है श्रेष्ठ जो प्रभु पद में चढ़ता
सदा मिले प्रभु पद यही प्रार्थना करता॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी लाडु सेव फैनी गुजियाँ लाऊँ।
मिष्ट मधुर पकवान ताजे रोज बनाऊँ॥
आया प्रभु के द्वार करने प्रभु की पूजन।
करो क्षुधा मम नाश तुम्हें चढ़ाऊँ व्यंजन॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान बिना यह जीव चतुर्गति दुःख पाता।
पाने सम्यक्ज्ञान प्रभु को भजने आता॥
चम-चम चमके दीप जैसे चाँद-सितारे।
ले दीपों की थाल आया द्वार तिहारे॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घटों के मध्य चन्द्रक धूप जलाऊँ।
खेकर अंबर गंध आठों कर्म नशाऊँ॥
भक्ति के ले भाव कालागुरु से अर्चन।
तीन लोक के भूप नाशो दुर्गति बंधन॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम जामुन सेव तेंदू जाम सरसफल।
नारंगी अंगूर पनस बिजौरा श्रीफल॥
हरे-भरे फल लाय प्रभु की पूजा करने।
श्री प्रभुवर के पाद आया मुक्ति वरने॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमुक्ता जल-गंध दीप धूप फल लाया।
लेकर मंगल वाद्य प्रभू के दर मैं आया॥
वसुविधी द्रव्य मिलाय करता प्रभु का अर्चन।
पद अनर्घ मिल जाय बनूँ प्रभु का नंदन॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (सखी छंद)

(तर्ज- ना कजरे की धार...)

लेकर पूजन की थाल, हम पूजें पंचकल्याण।
प्रभु अभिनंदन भगवान, कर दो हम सबका कल्याण-2 कर दो....

वैशाख सुदी षष्ठी को, प्रभु माता के उर आये।
धनपति रत्नों से पूजे, साकेता स्वर्ग बनाये।।
आई थी अष्टकुमारी, माता की सेवा करने।
जिन गर्भकल्याण मनाने, हम आये पूजा करने।।

भक्ति करते, नृत्य करते-2, हम पूजें गर्भ कल्याण... लेकर पूजन का...

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

शुभ माघ सुदी बारस को, अवतार लिया जिनवर ने।
स्वर्गों में छाया उत्सव, आनंद दिया प्रभुवर ने।।
सौधर्म शची सुर आदि, दर्शन कर प्रभु को नमते।
पांडुक वन में ले जाकर, अभिषेक प्रभु का करते।।

दे दी खुशियाँ, जन्म लेकर-2, श्री अभिनंदन भगवान...लेकर पूजन का...

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

प्रभु मेघ विलय जब देखे, चिंतन करते वे मन में।
शुभ माघ सुदी बारस को, तब दीक्षा ले ली वन में।।
चर्या हित महाश्रमण जिन, शुभ नगर अयोध्या आये।
नवधा भक्ति से राजा, विधिवत आहार कराये।।

रत्न बरसे, वाद्य बजते-2, आश्चर्य हुये थे पाँच...लेकर पूजन का...

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

प्रभु पौष सुदी चौदस को, चऊघाति कर्म नशाये।
जिनवर के समवशरण में, सुरनर-किन्नर-पशु आये।।

द्वादश कोठे के प्राणी, प्रभुवर की सुनते वाणी।
मुनि-गणधर भक्ति करते, भजते त्रिभुवन के प्राणी ॥
दीप लेके, भक्ति करते-2, हम पाने सम्यक्ज्ञान.....लेकर पूजन का...

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

सिद्धों की शाश्वत भूमि, सम्मेदशिखर कहलाये।
जिन समवशरण विघटा के, प्रभु सिद्ध भूमि पे आये।।
प्रभु आनंद कूट पे आकर, निज आतम आनंद पाये।
वैशाख सुदी षष्ठी को, सुर मोक्षकल्याण मनाये।।
अभिनंदन, को है वंदन-2, करें बारम्बार प्रणाम.....लेकर पूजन का...

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दोहा : **कनक कलश में नीर ले, करते शांतिधार।**
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, अभिनंदन के द्वार।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **अभिनंदन भगवान की, गाते हम जयमाल।**
जो धारे जयमाल को, पाये शिवसुख माल।।

चौपाई

साकेता के राजदुलारे, संवर नृप के नयन सितारे।
माँ सिद्धार्था गोद खिलाये, जन्मत दश अतिशय प्रभु पाये।।1।।

प्रभु सुंदर तन महके काया, स्वेद रहित प्रभु ने तन पाया।
ना निहार हित-मित-प्रिय वाणी, अतिबल श्वेत रुधिर के स्वामी।।2।।

समचौरस संस्थान कहाये, पहला संहनन मुक्ति दिलाये।
लक्षण सहस अठोत्तर धारे, ये दश अतिशय सहज तुम्हारे।।3।।

1. तिलोयपण्णत्ति- का. शु. 5, हरिवंशपुराण- पौ.शु. 15

केवलज्ञान प्रभुवर पावे, दश अतिशय की महिमा गावे।
शत योजन सुकाल दिशा में, गगन गमन मुख चार दिशा में॥4॥

पूर्ण दया उपसर्ग न होता, प्रभु को कवलाहार न होता।
सब विद्या के नाथ कहावे, नाखुन केश नहीं बढ़ पावे॥5॥

अनिमिष दृग ना तन की छाया, चौदह अतिशय सुरकृत माया।
अर्द्धमागधी प्रभु की भाषा, सबने मैत्री भाव विकासा॥6॥

निर्मल हो गई दशों दिशायें, नील गगन निर्मल हो जाये।
छह ऋतुयें इक संग खिल जाये, पृथ्वी दर्पणवत् हो जाये॥7॥

स्वर्ण कमल सुर चरण रचाते, जब विहार प्रभु करते जाते।
सुर प्रभु का जयघोष लगायें, मंद सुगंधित हवा चलायें॥8॥

गंधोदक की वृष्टि होती, पृथ्वी निष्कंटक तब होती।
सब जीवों में मैत्री जागे, धर्मचक्र चलता है आगे॥9॥

अष्टद्रव्य है मंगलकारी, लेकर चलती अष्टकुमारी।
तरू अशोक सिंहासन प्यारा, तीन छत्र भामंडल न्यारा॥10॥

दिव्यध्वनि सुनते समदृष्टि, देव करें पुष्पों की वृष्टि।
चमर ढुराते हर्ष मनाते, दिव्यदुंदुभि देव बजाते॥11॥

दर्शन-ज्ञान-वीर्य-सुख पाते, चार चतुष्टय पूजे जाते।
ये अतिशय तीर्थंकर पाते, शत इन्द्रों से पूजे जाते॥12॥

गुण अनंत के प्रभुवर स्वामी, वरली प्रभु ने मुक्ति रानी।
'आस्था' से हम शीश झुकायें, लघुनंदन प्रभु के बन जाये॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अभिवादन प्रभु आपका, वंदन जिन अभिनंद्य।
'आस्था' श्री भक्ति करे, काटो भव का बंध॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सुमतिनाथ पूजा

(गीता छन्द)

हे सुमति ! शुभ वर दो हमें, प्रभु सुमतिमति दातार हैं।
मुनिनाथ-सुर-पति नरपति के, सुमति जिन आधार हैं॥
इस हृदय मंडप का सिंहासन, आप बिन शोभित नहीं।
आह्वान करता सुमन ले, हे नाथ ! अब आओ यहीं॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

बीजाक्षरों को बोल प्रभु का न्हवन किया।
संसार बीज जन्म-मृत्यु नाश कर दिया॥
सुमति प्रभो हरो हमारी सारी दुर्मति।
हे पाँचवे ! तीर्थेश दे दो पाँचवी गति॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संशुद्ध शुद्ध चंदनादि हमने चढ़ाया।
संक्लेश क्लेश पाप-ताप हमने भगाया॥ सुमति प्रभो....॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ये रत्न रूप अक्षतों को थाल में भरे।
जिनवर तुम्हें चढ़ा अखंड सिद्धपद वरे॥ सुमति प्रभो....॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर सरोवरों के मनोहर कमल लिये।
मदनारि नाश हित प्रभो तुम्हें चढ़ा दिये॥ सुमति प्रभो....॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये आमपाक रसमलाई काजू कतलियाँ।
हे नाथ ! आपको चढ़ा क्षुधा पे जय किया॥
सुमति प्रभो हरो हमारी सारी दुर्मति।
हे पाँचवे ! तीर्थेश दे दो पाँचवी गति॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज व शशि जैसे चमचमाते दीप ले।
हम आरती करें जो मोह शत्रु जीत ले॥ सुमति प्रभो....॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को हमारे नाथ आप रूप लुभायें।
हम धूप चढ़ाके करम की धूप नशायें॥ सुमति प्रभो....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर पे सजा फलों के गुच्छ नृत्य हम करें।
फल अर्चना हमारे पुण्य कोष को भरें॥ सुमति प्रभो....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति प्रभो को हमने आज अर्घ चढ़ाया।
लड़ने करम से दिव्य बिगुल आज बजाया॥ सुमति प्रभो....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (नरेन्द्र छंद)

(तर्ज- स्याद्वाद के इस झरने में...)

जय-जय सुमतिनाथ जिनेश्वर हमको सुमति प्रदान करो।
पंचकल्याणक मना रहे हम, हम सबका कल्याण करो॥
मंगल रात्रि में श्री मंगला, माँ को मंगल स्वप्न दिखे। माँ को..
श्रावण सुद द्वितीया को जागे, भाग्य अयोध्या नगरी के॥ भाग्य..
अर्घ गर्भकल्याणक का ये, उसको प्रभु स्वीकार करो-2 पंचकल्याणक..

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

धन्य मेघरथ राजा के घर, खुशियों के मेघा बरसे। खुशियों...
सुमति प्रभो की जन्म तिथि बन, चैत सुदी ग्यारस हर्षे।। चैत...
अर्घ जन्मकल्याणक का ये, उसको प्रभु स्वीकार करो-2 पंचकल्याणक..

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2 ।।

सुमति प्रभो ने सुमति जगाकर, वेष दिगंबर धार लिया। वेष...
सुदी वैशाख नवम शुभ दिन को, तप तिथि का उपहार दिया।। तप...
अर्घ निष्क्रमणकल्याणक का, उसको प्रभु स्वीकार करो-2 पंचकल्याणक..

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3 ।।

चैत्र शुक्ल की ग्यारस के दिन, प्रभुवर शुक्ल ध्यान ध्यायें। प्रभुवर..
णमोकार का पद है पहला, वह पद सुमति प्रभो पाये।। वह...
अर्घ ज्ञानकल्याणक का ये, उसको प्रभु स्वीकार करो-2 पंचकल्याणक..

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4 ।।

कर्म अष्ट का कष्ट मिटाने, प्रभु सम्मेदाचल आये। प्रभु....
चैत सुदी ग्यारस को अविचल, गिरी से पद अविचल पाये।। गिरी..
अर्घ मोक्षकल्याणक का ये, उसको प्रभु स्वीकार करो-2 पंचकल्याणक..

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां[2] मोक्षमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5 ।।

दोहा : सुमति प्रभु से सुमति मिले, इस हित शांतीधार।
सुमतिनाथ पद सुमन में, सुमनाञ्जलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

1. ति. प. पौ. शु-15 / ह.पु. चै. शु. 10, 2. ति. प. चै. शु. 10

जयमाला

दोहा : पुष्पमाल ले हाथ में, गायें हम जयमाल।
प्रभुवर की जयमाल ही, करती सर्व कमाल॥

शंभु छन्द

प्रभु सुमति-सुमति के दाता हैं, दुर्मति से हमें बचाते हैं।
सुमति पाने सुमति प्रभु से, हम सब जयमाला गाते हैं॥
सर्वाधिक गणधर प्रभुवर के, इस वर्तमान चौबीसी में।
संपूर्ण जिनागम समा रहा, इक सौ सोलह गणधर ऋषि में॥1॥

ये द्वादशांग गंगा निकली, प्रभु आप स्वरूप हिमाचल से।
गणधर प्रभु का मुख कुंडरूप, जो शोभे इस गंगाजल से॥
सागार और अनगार धर्म, दर्पणवत् झलके इस जल में।
अनगार महाव्रत महा कठिन, हर जीव इसे कैसे वर ले॥2॥

इस हित प्रभु ने सागारों को, षट्कर्त्तव्यों का ज्ञान दिया।
जल-फल आदिक् वसु द्रव्यों से, जिनपूजा का व्याख्यान किया॥
जो झिलमिल करती झारी ले, प्रभु सन्मुख धार करें जल से।
वो महापुण्यशाली श्रावक, बचता पापों के दलदल से॥3॥

जो जिनपद में चंदन लेपन, कुमकुम कर्पूर मिला करते।
वो ऐसा सुरभित तनु पाते, जिससे मन कुमुद खिला करते॥
जो चंद्रतुल्य धवलाक्षत वा, मोती के पूँज चढ़ाते हैं।
वे नौ निधिपति चक्रेश बने, क्रम से अक्षय सुख पाते हैं॥4॥

जो कमल मोगरा चंपादिक, जल-भूमिज पुष्प चढ़ाते हैं।
बन कामदेव वो महापुरुष, फिर कामसुभट बन जाते हैं॥

जो गोरस आदिक षट्रस के, व्यंजन से पूजन-भजन करें।
अति सुंदर देह मिले उसको, जिसको शिवरमणी वरण करें॥5॥

चमचम जगमग झिलमिल दीपक, लेकर जो आरती नृत्य करें।
वह केवलज्ञान महालक्ष्मी, पाकर खुद को कृतकृत्य करें॥
जो धूपघटों में धूप जला, शिवभूप प्रभु को भजता है।
बन वो शशि सम यश कीर्तिवान, सिद्धों के गुण से सजता है॥6॥

सुंदर रसदार मधुर फल से, अर्चे जो शिवफलदानी को।
वह सर्वमनोरथ सफल करे, क्रम से पाये शिवरानी को॥
ये जिनपूजन इहभव परभव, दोनों भव में हितकारी है।
इह भव में भव सुखकारी है, पर भव में शिवसुखकारी है॥7॥

ये पूजन आगम सम्मत है, हर तीर्थंकर की वाणी है।
जो भव्य करे श्रद्धा इस पर, वो ही सम्यक्श्रद्धानी है॥
जो द्रव्य अर्चना गौण बता, बस भाव मुख्य है कहते हैं।
वो जिनवाणी की निंदा कर, नरकादिक् के दुःख सहते हैं॥8॥

इस विध पूजादिक कर्म सिखा, प्रभु शिवरानी से पूज्य बनें।
हम भी सम्यक् जिन पूजन कर, उस पूजा से जग पूज्य बनें॥
हे सुमति प्रभो ! जग हितकारी, हम सबका भी कल्याण करो।
यह 'चन्द्रगुप्त' नित अरज करें, हे सुमति ! सुमति का दान करो॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : जय जय जय जय सुमति प्रभु, समिति गुप्ति व्रत खान।
प्रभु हमको शिवराज दो, बन जाये गुणवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पद्मप्रभु पूजा

(गीता छन्द)

हे पद्मप्रभ ! पद्मेश पद्माकर त्रिजग से वंद्य हो।
सुर-नर-पशु गणधरमुनि शत इन्द्र से अभिनंद्य हो॥
हे पद्म ! तव गुण पद्म की करते हृदय में थापना।
सुमनावलि अर्पण करें जीवन सुधारें आपना॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चामर छंद)

सर्व तीर्थ का पवित्र नीर झारि में लिया।
जन्म-मृत्यु नाश हेतु तीन धार दे दिया॥
सर्वलोक पद्म में सुपद्म आप शोभते।
आपके समीप भक्त सर्वपाप खोवते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्ध चन्दनादि में कपूर को मिलाय के।
पाप-ताप को नशाय आपको चढ़ाय के॥ सर्वलोक .... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण तंदुलों का पुंज मुष्ठि में भरा प्रभो।
आपको समर्प सर्व सौख्य पा लिया विभो॥ सर्वलोक .... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म पाद पद्म में सुपद्म भेंट आज है।
आप भक्त ही जिनेश काम दर्प राज है॥ सर्वलोक....... ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ मिष्ट व नवीन व्यंजनादि ला रहें।
वेदनी क्षुधा क्षयार्थ भक्ति से चढ़ा रहे॥ सर्वलोक .... ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान संग दीप से करें जिनेश आरती।
मोहनी विलीन हो जगे सुज्ञान भारती॥
सर्वलोक पद्म में सुपद्म आप शोभते।
आपके समीप भक्त सर्वपाप खोवते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सर्वरोग हारि खेय अग्निपात्र में।
आज जीत होय नाथ कर्म के विपाक पे॥ सर्वलोक .... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ पक्व आम्र आदि थाल हाथ में लिये।
मोक्ष लाभ हित चढ़ाय आज नाथ के लिये॥ सर्वलोक .... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनेश ! अर्घ से करें विशेष अर्चना।
आत्म सौख्य लाभ हेत है पदाब्ज वंदना॥ सर्वलोक .... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभु भगवान के पंचकल्याणक

(चौपाई)

पद्मप्रभुजी गर्भ में आए, मात सुसीमा हर्ष मनाए।
माघ वदि छठ का दिन प्यारा, कौशाम्बी लगता मनहारा॥
धनपति आये नगर सजाये, पन्द्रह मास रत्न बरसाये।
प्रभुवर को हम अर्घ चढ़ाएँ, गर्भोत्सव का मंगल गाएँ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

कार्तिक श्याम सुतेरस आई, कौशाम्बी में खुशियाँ छाई।
प्रथम इन्द्र मेरु पर जाये, बाल प्रभु का न्हवन कराये॥
इन्द्र प्रभु का नाम बताये, ये जिन पद्मप्रभु कहलाये।
त्रिभुवन आये मंगल गाये, धरण पिता बहु रत्न लुटाये॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

जाति स्मरण हुआ स्वामी को, पद्मनाथ अन्तरयामी को।
श्री जिनवर ने दीक्षा धारी, प्रगटी सर्व ऋद्धि मनहारी॥
कार्तिक श्याम सुतेरस भायी, वो ही धन तेरस कहलायी।
भव्यों ने मिल अर्घ चढ़ाया, प्रभु का तप कल्याण मनाया॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

चैत सुदी पूनम उपकारी, जिन सर्वज्ञ बने सुखकारी।
सब स्वर्गों से सुरगण आये, ज्ञान कल्याणक भव्य मनाये।
प्रभू का समवशरण अति भारी, धनद कुबेर रचे मनहारी।
तीनों लोक उमड़कर आये, अर्घ चढ़ाये भक्ति रचाये।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापूर्णिमायां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

फाल्गुन श्याम चतुर्थी आई, प्रभु ने धर्म सभा बिसराई।
चौथे शुक्ल ध्यान को धारा, सर्व कर्म का किया निवारा॥
प्रभु तुमने सन्मार्ग दिखाया, सबको शिवपुर मार्ग दिखाया।
अर्घ समर्पण तुम्हें हमारा, देना हमें शिवांत सहारा॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

सोरठा : दे जल की त्रय धार, पाऊँ निर्मल शांति को।
जीवन सुमन सँवार, पुष्पांजलि अर्पण करूँ॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : पद्म प्रभु पद पद्म को, हृदय पद्म में धार।
धर्मतीर्थ में शर्म प्रद, प्रभु का नाम पुकार॥

1. ति.प. वैशाख शुक्ला 10, ह. पु. वैशाख शु. 10

गीता छन्द

जय पद्‌म तीर्थंकर प्रभु, तुम नाम जग में ख्यात है।
तुम नाम रवि पीड़ा हरे, अतएव जग विख्यात है।।
हे नाथ ! मैं भवसिंधु में, भटका फिरा बहुकाल तक।
तिर्यंच-सुर-नर-नारकी के, दुःख सहे बहु काल तक।।1।।

माता सुसीमा नृप धरण, जननी-जनक प्रभु के हुए।
त्रैलोक्य प्रभु की भक्तिवश, आकर चरण उनके छुए।।
प्रभु के जनम से देवगण आकर करें सेवा यहाँ।
भोजन-वसन-भूषण चढ़ा, लभते सभी मेवा महा।।2।।

ढाई शतक धनु देह ऊँची, आपने पाई प्रभो।
रक्ताभ कमलाकर सी उज्ज्वल, आप वर्णाभा प्रभो।।
जाति-स्मरण ही आपके, वैराग्य का हेतु बना।
संयम व केवलज्ञान में, वो ही परम सेतु बना।।3।।

श्री वज्रचामर आदि इक, सौ दस गणाधिप आपके।
त्रय लाख तीस हजार मुनि, त्रय लाख श्रावक आपके।।
चतु लाख बीस हजार, श्रमणी भक्ति करती आपकी।
पण लक्ष उत्तम श्राविका, माला जपे नित आपकी।।4।।

रवि आदि नवग्रह से दुखित जन, नाम जपते आपका।
इस लोक में तव शरण ही, भंजन करें सब पाप का।।
जिनवर तुम्हीं तारण-तरण, करता हूँ तव आराधना।
'गुप्ति' विनत यह माँगता, मम पूर्ण हो शिव साधना।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पद्‌मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : पद्‌म प्रभु जिनराज को, 'गुप्ति' करे प्रणाम।
करें आप सम साधना, पाएँ मुक्तिधाम।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सुपार्श्वनाथ पूजा

(शंभु छन्द)

प्रभु हितकारी सुपार्श्वनाथ, गुण भंडारी शिव सुखकारी।
आनंदकंद तुम हो जिनंद, भक्तों के सब संकटहारी॥
हम भक्ति से आह्वानन कर, अंतर्मन में तिष्ठाते हैं।
पापों के बंध कटें सारे, गुणगान तुम्हारा गाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

प्रासुक जल की झारी लाये, चरणों में नाथ चढ़ाने को।
निर्मलता भावों की होवे, अनुपम सत्पथ सुख पाने को॥
जो श्री सुपार्श्व प्रभु की पूजा, भक्ति से नितप्रति करते हैं।
जग के सारे वैभव पाकर, अनुक्रम से मुक्ति वरते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन सम शीतल हो, शीतल जो भाव बनाते हैं।
चंदन श्री जिन चरणों में ला, सुरभित तन वो पा जाते हैं॥ जो श्री सुपार्श्व..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल अखंडित हैं, भावों को धवल बनाते हैं।
अक्षयपद पाने के हेतू, हम नाथ शरण में आते हैं॥ जो श्री सुपार्श्व..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पंकज, गुलाब औ सेवंती, जिन पर भँवरे गुंजार करें।
प्रभु चरणों की पूजा करके, हम कामशत्रु संहार करें॥ जो श्री सुपार्श्व..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये क्षुधावेदनी दुखकारी, नानाविध नाच नचाती है।
व्यंजन के थाल समर्पित हों, इससे मुक्ति मिल जाती है॥ जो श्री सुपार्श्व..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों के थालों से, जो प्रभु को वंदन करते हैं।
वो मिथ्यातम का नाश करे, आतम आलोकित करते हैं॥
जो श्री सुपार्श्व प्रभु की पूजा, भक्ति से नितप्रति करते हैं।
जग के सारे वैभव पाकर, अनुक्रम से मुक्ति वरते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप जलाने से वायु सुरभित हो जाती है।
जो धूप चढ़ा अर्चा करते, कीर्ति उसकी बढ़ जाती है॥ जो श्री सुपार्श्व..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मधुर सरस शुभफल लाये, जो सबके मन का हरण करे।
उत्तम फल से अर्चा करके, हम मुक्तिरमा का वरण करें॥ जो श्री सुपार्श्व.. ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों को एक बना, प्रभु चरणन् भेंट चढ़ाते हैं।
हम अष्ट गुणों को प्राप्त करें, बस यही भावना भाते हैं॥ जो श्री सुपार्श्व.. ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (चौपाई)

भादो शुक्ला षष्ठी प्यारी, आए उर में तब त्रिपुरारी।
रत्नों की वृष्टि सुखकारी, हर्षित होते सब नर-नारी॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

शंभु छन्द

पृथ्वीषेणा माता के घर, प्रभुवर ने था जब जन्म लिया।
शुभ ज्येष्ठ सुदी बारस के दिन, देवों ने भी था नृत्य किया॥
मुद्रा लख बाल सुपारस की, सौधर्म आदि सब प्रमुदित हैं।
नर-नारी जय-जयकार करें, इंद्राणी भी अतिहर्षित है॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

नरेन्द्र छन्द

जेठ सुदी बारस सुपार्श्व जिन हुए दिगंबर व्रतधारी।
दीक्षा ले सहेतुक वन में, करी तपस्या अतिभारी॥
उत्तम मूलगुणों के धारी, सर्वसिद्धि के दाता।
भाव सहित हम अर्घ चढ़ाएँ, हरो जिनेश असाता॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

शंभु छन्द

फाल्गुन कृष्णा षष्ठी को प्रभु, कैवल्य परम पद प्राप्त किया।
प्रभुवर की वाणी पाकर के, भव्यों ने बोधि लाभ लिया॥
जिनवर की धर्मसभा प्यारी, आते नर-देव-पशु भारी।
भावों से अर्घ चढ़ाकर हम, प्रभुवर पर जाएँ बलिहारी॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठम्यां[1] ज्ञानमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

दोहा : **शिखर सम्मेद विहारकर कीना योग निरोध।**
फाल्गुन कृष्णा सात को हुआ कर्म अवरोध॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

दोहा : **चरण सुपारस नाथ के, करते भवदधि पार।**
सांसारिक सब दुःख मिटे, हो आतम उद्धार॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

1. ह. पु. फा. कृ. 7, ति. प. फा. कृ. 7

जयमाला

दोहा : प्रभु गुण की जयमाल का, करते नित प्रति पाठ।
सकल कर्म से मुक्त हो, पावें गुणनिधि आठ॥

(नरेन्द्र छंद)

घुँघरू छम-छमा छम-छन नन-नन बाजे रे बाजे रे।
सुपार्श्व प्रभु की पूजा में सब झूमें-नाचे रे॥

पृथ्वीषेणा माता ने जब तुमसा बाल है पाया।
जीवन अपना सफल बनाया सबने है यश गाया॥ घुँघरू....॥1॥

काशी में जन्मे थे प्रभुवर देवे इंद्र बधाई।
सुप्रतिष्ठजी हर्ष मनाएँ माता लेत बलाई॥ घुँघरू...॥2॥

क्षणभंगुरता बसंत ऋतु की प्रभु नयनों में छाई।
चले सहेतुक वन को जिनवर बनने शिवपुर रायी॥ घुँघरू....॥3॥

नाश किया कर्मों का तप से केवलज्योति पाई।
ज्ञानामृत इस जग को देकर सम्यक् राह बताई॥ घुँघरू....॥4॥

तुमको क्या भक्ति से स्वामी हम निज को पायेंगे।
भक्तिमय औषध को पीकर शिवपुर को जायेंगे॥ घुँघरू....॥5॥

यह जग स्वारथ का जंगल है इसमें धोखा भाई।
मुक्तिपथ की ओर बढ़ें दो शक्ति हे जिनराई॥ घुँघरू....॥6॥

तुम ही मात-पिता हो सच्चे तुम ही भगिनी भाई।
नहीं हमें कुछ चाह प्रभुजी 'क्षमा' शरण में आई॥ घुँघरू....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग जिनदेव की, शरणे आये आज।
'क्षमा' शील मम भाव हो, पायें मुक्ति राज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री चन्द्रप्रभु पूजा

(शंभु छन्द)

हे चन्द्रप्रभो ! गुण चन्द्रमणि, चन्द्राकर शीतल भास रहे।
हे दुःखहर ! सुखकर चन्द्रप्रभो गणधर मुनिवर तव पास रहे॥
पुष्पांजलि हाथों में लेकर, आह्वानन करने आये हैं।
मम हृदयकमल में आ तिष्ठो, हम वंदन करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कर्मों की चंचल कल्लोलें, भवसागर में भटकाती हैं।
उदधि समान लख चन्द्रप्रभु, सब शीघ्र शांत हो जाती हैं॥
हे चन्द्रप्रभो ! गुणचंद्रपुंज, मम जरा मरण का नाश करो।
जल निर्मल तव चरणन् लाया मम हृदय कमल में वास करो॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की दाह बड़ी भारी, हर क्षण संताप कराती है।
वह राग-द्वेष में जला-जला, मम हृदय व्यथित कर जाती है॥
हे चन्द्रप्रभो ! गुण चन्द्रमणी, मम पाप-ताप सब नाश करो।
शीतल चंदन चरणन् लाया, मम मनमंदिर में वास करो॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं राग-द्वेष से क्षत-विक्षत, अक्षय सुख का कुछ भान नहीं।
भौतिक पदवी में उलझ गया, अक्षय पद का भी ज्ञान नहीं॥
हे चन्द्रप्रभो ! गुणचंद्रपुंज, मम भौतिक पद को विनशाओ।
मैं अक्षत पुंज चढ़ाता हूँ, निज अक्षय सुख को दर्शाओ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

है काम अरि एक पाप पंक, जग जीवन को भरमाता है।
इसके चंगुल में फँस प्राणी, निज संयम रत्न गंवाता है॥

हे चन्द्रप्रभो ! गुणचंद्रपुंज, मम काम अरि का त्रास हरो।
बहुभांति सुमन चढ़ाता हूँ, मम अन्तर मन में वास करो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा रोग जग में भारी, सब पापों को करवाता है।
इसके वश हो जग में प्राणी, नाना विध कष्ट उठाता है।।
हे चन्द्रप्रभो ! गुणचंद्रपुंज, इस जग वैरी का नाश करो।
बरफी आदि मैं भेंट करूँ, मम आत्म भुवन में वास करो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोहमहातम जग वैरी, यह उल्टी रीति चलाता है।
बहुभाँति के मत सम्प्रदाय, यह मोह अरि चलवाता है।।
हे चन्द्रप्रभो ! गुणचंद्रपुंज, जग मिथ्यातम का नाश करो।
घृत दीपक चरणों में लाया, मेरा सद्ज्ञान विकास करो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं कर्म सभी नाटक कर्त्ता, ये जग में नाच नचाते हैं।
नाना गतियों में कष्ट दिला, सब प्राणी को भटकाते हैं।।
हे चन्द्रप्रभो ! गुणचंद्रपुंज, इन जग दुःखों का नाश करो।
मैं धूप दशांग चढ़ाता हूँ, मम अशुभ कर्म का नाश करो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

समता फल मोक्ष सुफल जग में, अध्यातम ज्योति जगाता है।
समता रस को पाने वाला, ऋषियों से पूजा जाता है।।
हे चन्द्रप्रभो ! गुणचंद्रपुंज, मैं मोक्ष महल में वास करूँ।
मैं आम अनार चढ़ाता हूँ, निज मोहकर्म का त्रास हरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य, धूप, फल लाया हूँ।
मैं अष्टद्रव्य का थाल सजा, निज भाव संजोकर आया हूँ।।
हे चन्द्रप्रभो ! गुणचंद्रपुंज, मेरी पूजा स्वीकार करो।
मैं पद अनर्घ्य को प्राप्त करूँ, मम विनय अर्घ स्वीकार करो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रा प्रभु के पंचकल्याणक *(चौपाई)*

चन्द्रप्रभुजी गर्भ में आये, सुर नर मिलकर नृत्य रचाये।
चैत वदी पंचम मनहारी, माता उर आये त्रिपुरारी॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदि एकादश प्यारी, जन्मे चन्द्रप्रभु सुखकारी।
अमरपुरी से सुरगण आये, मेरू पर अभिषेक करायें॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोड़ा राज-पाट संसारा, प्रभु ने रूप दिगम्बर धारा।
पौष वदि एकादश भाये, सर्व ऋद्धियाँ जिनवर पायें॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर शुक्ल ध्यान को धारें, चार घातियाँ कर्म निवारें।
फाल्गुन श्याम सप्तमी आये, चन्द्रनाथ तीर्थेश कहाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललितकूट पर जिनवर आयें, योग निरोधें कर्म नशायें।
प्रभू कर्मों की आग जलायें, हम भक्ति की फाग रचायें॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **मुक्तामणि युत कुंभ ले, करें सलिल की धार।**
चन्द्र कुसुम अर्पण करें, वरें चन्द्र दरबार॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार पढ़ें)

जयमाला

दोहा : **चन्द्रप्रभु जिननाथ को, बारम्बार प्रणाम।**
गाऊँ जय गुणमालिका, सफल होय मम काम॥

(त्रोटक)

जय चन्द्रप्रभु जय-जय स्वामी, वंदन करते मुनि शिवगामी।
जय तीन लोक के भरतारी, जय तुम दर्शन संकटहारी॥1॥
तुम चन्द्रपुरी अवतार लिया, माँ लक्ष्मणा को धन्य किया।
तव जननी हो वह धन्य हुई, जग जननी पद के योग्य हुई॥2॥
स्वर्गों में तब विक्षोभ हुआ, देवों ने कारण शोध लिया।
सौधर्म शचि संग आन खड़े, जिन मात-पिता के शरण पड़े॥3॥
मेरु पर तव अभिषेक हुआ, भव्यों को दर्शन लाभ हुआ।
राजा का पद स्वीकार किया, सुख-शांति का विस्तार किया॥4॥
दोषों का ताप हरा उनने, सत् न्याय प्रचार करा उनने।
फिर जगसुख नश्वर भान हुआ, और आतमसुख का ज्ञान हुआ॥5॥
तब मुनिपद उनने धार लिया, संसार सलिल को पार किया।
तीर्थंकर बनकर प्रभुवर ने, जिन तीर्थ बताया फिर तिरने॥6॥
गिरि सम्मेदाचल गये प्रभो, सब दूर भगायें कर्म विभो।
प्रभु योग निरोध किया वन में, अरु सिद्ध बने वे कुछ क्षण में॥7॥
जिनवर की अनुपम है महिमा, तब शरणागत पाये गरिमा।
गुरु समन्तभद्र ने नाम लिया, भूमण्डल पर यशगान किया॥8॥
सोनागिरी देहरा आदि में, श्री धर्मतीर्थ मांडल जी में।
सब क्षेत्र बड़े मनहारी हैं, दुखियों के संकटहारी हैं॥9॥
प्रभु मेरा संकट त्रास हरो, मम हृदय-कमल में वास करो।
कुछ भौतिक सुख की चाह नहीं, मैं चाहूँ भव की राह नहीं॥10॥
मैं साम्यभाव को प्राप्त करूँ, मम ज्ञानसूर्य को व्याप्त करूँ।
यह 'गुप्तिनन्दी' जिनभक्ति करें, जिनपद में रह शिवशक्ति वरे॥11॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता : जिन प्रभुवरचंदा, नाथ जिनन्दा, विनय सहित तुम शरण खड़े।
दुःख भंजनकारी, संकटहारी, हे त्रिपुरारि ! भक्ति करें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पुष्पदंत पूजा

(गीता छंद)

श्री पुष्पदंत जिनेश की, शत इन्द्र करते वंदना।
ऋषिवर मुनीश-गणेश भी, करते प्रभु की अर्चना॥
श्री पुष्पदंत जिनेश का, आह्वान पुष्पों से करूँ।
हे नाथ ! तुमको पूजकर, मैं पुण्य की गागर भरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

पुष्पदंत के द्वार पे, लाया निर्मल नीर।
जन्म-जरा-मृत नाश हो, हरो हमारी पीर॥
मंगलमय आराधना, अष्टद्रव्य के साथ।
भक्तिभावना से नमूँ, जय हो सुविधिनाथ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरणों में करूँ, लेपन गंध सुगंध।
धीर-वीर-गंभीर जिन, हरो कर्म का बंध॥ मंगलमय...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक पद पाने प्रभु, धवलाक्षत ले श्वेत।
पूजन कर हर्षा रहा, पाने मुक्ति निकेत॥ मंगलमय...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भाग्यवान वे पुष्प हैं, जो चढ़ते प्रभु पाय।
पुष्पदंत को पूजकर, कामबाण नश जाय॥ मंगलमय...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधाकर्म भटका रहा, चारों गति के बीच।
षट्‌रस व्यंजन भेंटकर, नाशूँ भव की कीच॥ मंगलमय...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपक ले चला, पुष्पदंत के पास।

श्री जिनवर की आरती, करती मोह विनाश॥ मंगलमय...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में खे रहा, गंध सुगंधित धूप।

अष्टकर्म को नाश कर, बन जाऊँ चिद्रूप॥ मंगलमय...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मौसंबी चीकू पनस, दाड़िम केला जाम।

हरे-भरे फल से भजूँ, पाने मुक्तिधाम॥ मंगलमय...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत चरू, दीप धूप फल फूल।

वसुविधि द्रव्यों से जजूँ, करूँ कर्म निर्मूल॥ मंगलमय...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक *(अवतार छन्द)*

(तर्ज- यह अर्घ कियो.... नंदीश्वर पूजा...)

श्री जयरामा जिनमात, देखे शुभ सपने।
करे देव-देवियाँ सेव, भाग्य जगे अपने॥
फागुन वदि नवमी जान, माँ के उर आये।
रत्नों से पूजे देव, धनपति हर्षाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

जब जन्म लिये जिनराज, आसन कम्पाये।
स्वर्गों से सुरगण आय, शचि प्रभु को लाये॥
पांडुकवन में ले जाय, प्रभु का न्हवन करे।
सुग्रीव पिता हर्षाय, सबको दान करे॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

जब देखा उल्कापात, वन प्रस्थान करें।
आये लौकान्तिक देव, प्रभु को नमन करें॥
सिद्धों को शीश नवाय, प्रभु दीक्षा लेते।
बन गये स्वयंभू आप, सबको सुख देते॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

कार्तिक शुक्ला की दोज, अर्हत् पद पाये।
श्री पुष्पदंत भगवान, अमृत बरसाये॥
झेले वाणी गणनाथ, सबको तृप्त करें।
सुर-नर पशुगण सब आय, प्रभु की भक्ति करें॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

सम्मेदशिखर पे आय, प्रभु जी कर्म हने।
श्री सुप्रभकूट मनोज्ञ, प्रभु के चरण बने॥
भादों सुदी अष्टम पूज्य, अष्टम भूमि वरें।
ले हम लाडू के थाल, पूजन-भजन करें॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाअष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : सुख शांति पाने भविक, लेते प्रभु का नाम।
शांतिधारा हम करें, पाने शांति धाम॥

शांतये शांतिधारा।

कर्णकार तिलका तगर, जपा कुसुम कचनार।
पुष्पदंत के चरण में, पुष्पांजलि उपहार॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : पुष्पदंत भगवान की, जयमाला सुखमाल।
पुष्पों की माला लिये, गायें हम जयमाल॥

1. ति. प. - का. शु. 3, ह.पु. - का. शु. 3

चौपाई

प्रभु भक्ति से मन हर्षावें, पुष्पदंत के दर्शन पावे।
सुविधिनाथ के गुण हम गायें, प्रभु के चरण कमल नित पायें॥1॥

माता के उर प्रभुवर आये, देवों ने तब रत्न गिराये।
काकन्दी के भाग्य जगे थे, राजमहल में वाद्य बजे थे॥2॥

अष्टदेवियाँ पुण्य कमाये, जिनमाता का मन बहलाये।
जन्म महोत्सव मंगलकारी, दश अतिशय के प्रभु थे धारी॥3॥

इन्द्र सुरों की सेना लाया, जन्मोत्सव का ठाठ सजाया।
इन्द्र कहे इन्द्राणी जाओ, प्रभु को लाकर दर्श कराओ॥4॥

सुरपति प्रभु को कर में लेके, नयन हजार बनाकर देखे।
ऐरावत गज पर बैठाये, मेरू शिखर पे न्हवन कराये॥5॥

घर-घर मंगल दीप जलाये, सुविधिराज सबके मन भाये।
तप संयम की बेला आई, छोड़ी प्रभु ने प्रीत पराई॥6॥

घन-घाति कर्मों को नाशे, जिनवर केवलज्ञान प्रकाशे।
सिंहासन पे अधर विराजे, तीन छत्र प्रभुवर पर साजे॥7॥

तरु अशोक ने शोक मिटाया, दिव्यध्वनि ने धर्म बताया।
भामंडल भव सात दिखाये, दुंदुभि बाजे देव बजाये॥8॥

सुरगण चौसठ चँवर ढुराते, पुष्पवृष्टि कर पुण्य कमाते।
जिन शतेन्द्र से पूजे जाते, गणधर ऋषिगण शीश झुकाते॥9॥

धर्मतीर्थ में हम नित आये, पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें।
कर्म काट प्रभु शिवपद पावे, राज मुक्ति का 'आस्था' पावे॥10॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : त्रय गुप्ति का दान दो, पुष्पदंत भगवान।
क्षमा धर्म धारण करें, माँगे यह वरदान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री शीतलनाथ पूजा (सुगंध दशमी पूजा)

(नरेन्द्र छंद)

शीतलप्रभु शीतलता दायक, दसवें श्री जिनवर हो।
मार्ग दिखाया दसधर्मों का, भव्यों के हितकर हो॥
पुष्पांजलि हाथों में लेकर, आह्वानन् हित आया।
तव चरणों की पूजा करने, अष्ट द्रव्य ले आया॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

स्वर्ण कलश में जल भर लाऊँ, प्रभु चरणों में धार करूँ।
जन्म-जरा-मृत नाशो भगवन्, त्रय रत्नों को प्राप्त करूँ॥
अन्तर्मन को शीतल करते, श्री शीतल जिन स्वामी।
पूजा करके नाथ तुम्हारी, बन जाऊँ शिव गामी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन घिसकर लाया, प्रभु पद लेपन करने।
प्रभु पूजा करने को आया, प्रभु सम शीतल बनने॥ अन्तर्मन को..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल सुगंधित अक्षत, मोती थाल सजाया।
अविनाशी अक्षयसुख पाने, मनहर पुंज चढ़ाया॥ अन्तर्मन को..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग बिरंगे कमल केवड़ा, पारिजात मनहारे।
श्री चरणों में माल चढ़ाकर, काम मदन को मारे॥ अन्तर्मन को..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर व्यंजन की थाली, बरफी पेड़ा लाऊँ।
श्री जिनवर को अर्पण करके, अपनी क्षुधा नशाऊँ॥ अन्तर्मन को..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर प्रकाशी घृत का दीपक, हर लेता अंधियारा।
आरति करके पाऊँ स्वामी, मैं भी ज्ञान उजारा॥ अन्तर्मन को..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित धूप मनोहर प्यारी, श्री चरणों में लाऊँ।
धूप घटों में धूप जलाकर, कर्म समूह जलाऊँ॥ अन्तर्मन को..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

आम, जाम, अंगूर, फलों से, श्री जिनवर को भजता।
परमानंद परम सुख पाने, फल से अर्चा करता॥ अन्तर्मन को..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ जिनेश्वर हमको, शीतल शिव सुख देना।
वसु द्रव्यों की थाल चढ़ायें, अष्ट करम हर लेना॥ अन्तर्मन को..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ भगवान के पंचकल्याणक

(गीता छंद)

माता सुनंदा धन्य हैं, जो उर धरे भगवान को।
शुभ चैत्र कृष्णा अष्टमी, सब पूजते पितु मात को॥
आओं भजे उस मात को, जिसका सुनंदा नाम है।
भगवान शीतलनाथ को, मेरा अनंत प्रणाम है॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवतार लेके नाथ ने, जिनधर्म फिर से ला दिया।
सोते जगत को आपने, सन्मार्ग फिर दिखला दिया॥
सब देव देवी हर्ष से, छम छम छमा छम नाचतें।
जिन जन्म के उत्सव समय, बाजे करोड़ों बाजतें॥2॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख बादलों की लुप्तता, वैराग्य भाव जगा रहे।
द्वादश सुमंगल भावना, शीतल प्रभु वर भा रहे॥
शुभ माघ कृष्णा द्वादशी, वो ही तिथि तप की बनी।
दीक्षा महोत्सव देख के, भव्यात्मा बनते मुनी॥3॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौषठ चँवर प्रभु पे ढुरे, औ पुष्पवृष्टि हो रही।
शीतल प्रभु की देशना, हर भव्य जन को मिल रही॥

शत इन्द्र पूजे आपको, ऋषिगण मुनि भक्ति करें।
पाकर प्रभु की देशना, हर भव्य उत्तम सुख वरें।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

अश्विन सुदी अष्टम तिथि प्रभु, कर्म आठों ही नशे।
सम्मेदगिरी से जा प्रभू, शिवलोक में शाश्वत बसे।।
सौधर्म आया स्वर्ग से, नख केश को वंदन करें।
हम पूजकर प्रभु आपको, निज भावना निर्मल करें।।5।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाअष्टम्यां[1] मोक्षमंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दोहा : **जल से शीतल आप हैं, शीतल चरणन् नीर।**
खिले पुष्प अर्पण करूँ, जग जाये तकदीर।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : आप गुणों की खान हैं, कैसे करूँ बखान।
मुनियों के गुरु गणपति, कर न सके गुणगान।।

(शंभु छन्द)

माता के उर जब प्रभु आये, छः मास पूर्व खुशियाँ छाई।
सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से, धनपति ने जिन महिमा गाई।।
रत्नों की वृष्टि से उसने, गर्भोत्सव का अभियान किया।
जिन मात-पिता की अर्चा कर, भरपूर उन्हें सम्मान दिया।।1।।
जब जन्म हुआ था प्रभुवर का, देवों के आसन कम्पाये।
घंटे की ध्वनि कहीं शंख ध्वनि, कुछ क्षण नरकों में सुख छाये।।
सौधर्म इन्द्र ऐरावत पर, परिजन संघ शची को लाया था।
शची ने प्रभु के दर्शन करके, सम्यक्दर्शन को पाया था।।2।।

1. ति. प. – का. शु. 5, ह. पु. – आ. शु. 5

इन्द्राणी ने जिन बालक को, सौधर्म इन्द्र को सौंप दिया।
भव भ्रमण मिटाने फिर उसने, प्रभु सन्मुख सुन्दर नृत्य किया॥
सुरपति प्रभु के दर्शन करने, निज नयन हजार बनाता है।
ऐरावत गज पे हो सवार, पांडुक वन में ले जाता है॥3॥
क्षीरोदधि सागर के जल से, सुर देव-देवी अभिषेक करे।
होली खेलें गन्धोदक से, श्री जिनवर का जयघोष करे॥
इन्द्राणी बाल जिनेश्वर का, श्रृंगार हर्ष से करती है।
प्रभु को वस्त्राभूषण पहना, निज भव का दूषण हरती है॥4॥
जब पुष्पदंत को मोक्ष हुआ, तब धर्म सूर्य भी अस्त हुआ।
युग पाव पल्य जब बीत गया, तब शीतल जिन का जन्म हुआ॥
प्रभुवर ने राज-पाट त्यागा, फिर वन की ओर प्रयाण किया।
केशों का लोचन कर प्रभु ने, निज आतम का उत्थान किया॥5॥
सर्वोच्च ध्यान धर स्वामी ने, केवलज्ञानामृत प्राप्त किया।
उपदेश दिया सब भव्यों को, फिर मोक्ष धाम को प्राप्त किया॥
श्री सुगंध दशमी के व्रत में, शीतल जिन पूजे जाते हैं।
अति घोर भयंकर पापों से, शीतल जिन हमें बचाते हैं॥6॥
जो व्रत सुगंध दशमी करता, वो तन सुगंध मय पाता है।
दस वर्षों तक व्रत पालन कर, अपने दुःख कष्ट मिटाता है॥
दुर्गंधा ने कुछ भव पहले, मुनि को कुत्सित आहार दिया।
इस घोर पाप के कारण ही, तन उसका व्याधि ग्रस्त हुआ॥7॥
मुनि दर्शन पा व्रत ग्रहण किया, दस वर्षों तक उपवास किया।
फिर तिलकवती बन लिंग छेद, क्रम से उत्तम सुख प्राप्त किया॥
तव चरण कमल मम हृदय बसे, बस यही भावना करता हूँ।
जब तक न मुक्ति मिले मुझको, प्रभु नाम निरन्तर जपता हूँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अर्चा शीतलनाथ की, करती पाप विनाश।
'आस्था' से वंदन करूँ, पाने ज्ञान प्रकाश॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री श्रेयांसनाथ पूजा

(गीता छन्द)

हे श्रेयजिन ! श्रेयस प्रभो, श्रेयांस जिन शिवश्रेय हो।
हे लाल नंदा मातके, सुत विष्णुराज अजेय हो।।
आह्वानमुद्रायुत कमल ले, हस्त कमल खिले-खिले।
बस जाइये प्रभु जो हृदय, तो आज हृदय कमल खिले।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

श्रीफल शिखर जिसका बना, ऐसा कलश जल का लिया।
त्रयरोग हरने भक्ति से, अभिषेक प्रभुवर का किया।।
श्रेयांसनाथ प्रभु तेरी, प्रतिमा हमें मन भा रही।
प्रभु वंदना अरू अर्चना, वैराग्य भाव जगा रही।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तपकर हरा भवताप को, आतापनादिक योग से।
चंदन चढ़ा बच जाय हम, भवताप के दुर्योग से।। श्रेयांसनाथ....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम ही चिंतामणी, चिंता हमारी क्षय करें।
मुक्ताक्षतों को हम चढ़ा, हे नाथ ! पद अक्षय वरें।। श्रेयांसनाथ....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभि प्रभो पद पुष्प की, सुरभित करें भवि पुष्प को।
कामारिक्षयहित हम प्रभो, अर्पण करें बहु पुष्प को।। श्रेयांसनाथ....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसे क्षुधा को क्षय किया, समझाइये प्रभु वो विधि।
बर्फी, पुड़ी, पकवान से, अर्चें तुम्हें हे गुणनिधि।। श्रेयांसनाथ....।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपावली जगमग सजा, हम लक्ष दीपोत्सव करें।
प्रभु आप सम बन केवली, हम मोक्ष का उत्सव वरें।। श्रेयांसनाथ....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप उपमातीत हो, उपमा करें क्या आपकी।
शिवभूप तुमको धूप से, भज छोड़ दे मति पाप की।।
श्रेयांसनाथ प्रभु तेरी, प्रतिमा हमें मन भा रही।
प्रभु वंदना अरू अर्चना, वैराग्य भाव जगा रही।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवराज के राजा तुम्हें, फलराज आम चढ़ा रहे।
तुमको निरख शिवराज के, शुभ श्रेष्ठ भाव बढ़ा रहे।। श्रेयांसनाथ....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आये शरण तारण-तरण, वसु कर्म से हम डर प्रभो।
थाली अनेक चढ़ा रहे, वसु द्रव्य से हम भर विभो।। श्रेयांसनाथ....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक *(मत्तगयंद छंद)*

श्रेय जिनेश्वर का गरभागम आगम में गणनायक गायें।
सिंहपुरी नगरी जिसको मणि माणिक से धननाथ[1] सजाये।।
जेठ वदी छठ दिव्य छटा बन पाप घटाकर पुण्य बढ़ाये।
विष्णु नृपेश्वर भी खुश होकर दो कर[2] भर-भर रत्न लुटायें।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

लोकशिला पति पांडुशिला पर राज रहे सबके मन भावे।
सुन्दर-सुन्दर गीत रचा सुर-सुंदरियाँ[3] तब नृत्य रचावे।।
फागुन में प्रभु को नहलाकर फागुन उत्सव देव मनावे।
जन्म महोत्सव की महिमा हम गावत गावत अंत न पावे।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

श्री जगदीश्वर जी जग के जग वैभव त्याग बने जग त्यागी।
साधन थे सुख के सब ही फिर भी प्रभु आप महान विरागी।।
जन्म लिया जिस कारण से, वह कारण साध लिया बड़भागी।
फाल्गुन ग्यारस कृष्ण तिथि पर कालिख[4] रूप कंलिकनी भागी।।

---

1. धनपुति कुबेर, 2. हाथ, 3. देवियाँ, 4. अर्थात् कृष्ण पक्ष भी काले से उजियारा कहलाया।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

साहस है किसका यह जो कह दे यह माघ अमावस काली।
अर्हत् श्रेय जिनेश बने वह माघ अमावस है उजियाली।।
अक्षर और अनक्षर रूपक दिव्य ध्वनि प्रभु की हितकारी।
दिव्य ध्वनि सुनके भवि की शठ निर्दय कर्म पिशाचिनि हारी।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा अमावस्यायां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

प्रकृति उत्तर मूल सभी वसु कर्मन् की प्रभु ने विनशाई।
मुक्तिरमा[1] गुणमाल लिए जिन जी तुमको तब ब्याहन[2] आई।।
आज भई इक ओर विदाई व बाजत हैं इक ओर बधाई।
वत्सलपूनम[3] पे हमने प्रभु लडुअन की शुभ थाल चढ़ाई।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दोहा : **हरित पत्र युत कलश ले, करते शांतिधार।**
षट् ऋतुओं के पुष्प ले, पुष्पांजलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **प्रभु हमको आशीष दो, गायें तुम जयमाल।**
मुक्ति रमा हमको वरें, पहनाकर जयमाल।।

(शंभु छन्द)

हे नाथ ! सुनंदा के नंदन, श्रेयांस प्रभो जग के त्राता।
निज जीवन धन्य बनाने को, हम गायें प्रभु जीवन गाथा।।
श्री पुष्करार्द्ध पूरब विदेह, जहँ देश सुकच्छ मनोहारी।
वह राज नलिनप्रभ राज्य करें, वो नगरी क्षेमपुरी न्यारी।।1।।

1. मोक्षलक्ष्मी, 2. विवाह करने, 3. रक्षाबंधन।

इक दिन उस पावन नगरी में, अरिहंत अनंत पधारे थे।
तब वैरागी बन राजा ने, व्रत श्रेष्ठ महाव्रत धारे थे॥
तीर्थेश प्रकृति को पाया, फिर भव्य समाधिमरण किया।
बनकर के अच्युत स्वर्ग इन्द्र, सब देवों का मनहरण किया॥2॥

फिर अच्युत से च्युत हो प्रभुवर, आये जिनधर्म बढ़ाने को।
धनपति आया छः मास पूर्व, रत्नों से नगर सजाने को॥
जिन जन्मोत्सव पर देव सभी, संगीत बधाई के गायें।
जन्माभिषेक प्रभु का करने, प्रमुदित हो पांडुक वन जायें॥3॥

श्रेयांसराज ने राजा बन, जिस राजपाट से राग किया।
ऋतुओं का परिवर्तन लखकर, उस राज पाट को त्याग दिया॥
धारणकर वेष दिगंबर को, कर्मों का आडंबर तोड़ा।
केवलज्ञानी के अतिशय ने, धरती से अंबर को जोड़ा॥4॥

प्रभुवर ने योग निरोध किया, पावन सम्मेदशिखर जाकर।
श्री श्रेयनाथ निज श्रेय करें, शाश्वत लोकाग्रशिखर पाकर॥
रक्षाबंधन के पावन दिन, प्रभु कर्मनशा शिवपुर जायें।
हम भी रक्षाबंधन के दिन, लाडू ले प्रभु के गुण गायें॥5॥

हे श्रेयनाथ ! श्रेयांस विभो, हमको यह श्रेय प्रदान करो।
जो श्रेय हमारा श्रेय करें, वैसा वरदान प्रदान करो॥
श्रेयस के श्रेयस मंदिर की, ज्योति भव्यों को चमकायें।
यह 'चन्द्रगुप्त' प्रभु अरज करें, त्रयगुप्ति सुलभता से पायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : गुणगाथा हम क्या पढ़ें, हमको ना कुछ ज्ञान।
प्रभु हमको शिवराज दो, देकर केवलज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री वासुपूज्य पूजा

दोहा

वासुपूज्य भगवान को, निरखत मन हरषाय।
प्रभुवर के गुणगान से, पाप ताप नश जाय॥
हृदय-कमल पुलकित हुआ, जिनभक्ति से आज।
मन को पावन हम करें, आह्वानन से आज॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

निर्मल जल भरकर लायें, प्रभुवर की पूजा गायें।
त्रयधारा चरण चढ़ायें, कर्मों का मैल छुड़ायें॥
श्री वासुपूज्य जगनामी, आशीष हमें दो स्वामी।
भवसागर से तिर जायें, हम जीवन धन्य बनायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर घिस लायें, प्रभुवर को रोज चढ़ायें।
तन-मन की दाह मिटायें, रागादिक दोष हटायें॥ श्री वासुपूज्य..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत पुंज चढ़ायें, भावों को धवल बनायें।
हम प्रभुवर के गुण गायें, निज आतम को पा जायें॥ श्री वासुपूज्य..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कमल केतकी लायें, मनमोहक पुष्प चढ़ायें।
हो मदन अरि के जेता, तुम धर्म तीर्थ के नेता॥ श्री वासुपूज्य..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये क्षुधा तृषा की बाधा, देती है रोग असाता।
नैवेद्य समर्पित करते, प्रभु क्षुधा वेदनी हरते॥ श्री वासुपूज्य..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के दीपक लाये, हम आरती करने आये।
जिन ज्ञान रवि हम पायें, निज भेद ज्ञान प्रगटायें॥
श्री वासुपूज्य जगनामी, आशीष हमें दो स्वामी।
भवसागर से तिर जायें, हम जीवन धन्य बनायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पाप महादुःख दाता, जीवों को नाच नचाता।
अग्नि में धूप जलायें, कर्मों की धूल उड़ायें॥ श्री वासुपूज्य..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल लाते, प्रभुवर के चरण चढ़ाते।
अनुपम उत्तम फल लाये, जिनवर का कीर्तन गायें॥ श्री वासुपूज्य..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि लायें, जिनवर को अर्घ चढ़ायें।
तुम पद अनर्घ के स्वामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी॥ श्री वासुपूज्य..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान के पंचकल्याणक

(जोगीरासा छंद)

सुर नर मिलकर मंगल गाते, माता देखे स्वप्ने।
जयावती माता हर्षाती, प्रभु जन्मेंगे अपने॥
वदि आषाढ़ षष्ठमी आई, माता उर प्रभु आये।
सुर बालायें सेवा करती, धनपति धन बरसाये॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

फागुन कृष्णा चतुर्दशी को, नौबत बाजे बाजे।
श्री जिनवर के जन्मोत्सव पे, सुर-नर किन्नर नाचें॥
दर्शन करने वासुपूज्य का, स्वर्ग धरा पर आये।
मेरु शिखर पे पाण्डुक वन में, प्रभु का न्हवन कराये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

प्रथम बालयति आप कहाये, यौवन में वैरागी।
मात पिता भी रोक न पाये, बने नाथ जब त्यागी॥
संयम का अनुमोदन करने, लौकान्तिक सुर आये।
फाल्गुन कृष्णा चौदस को, हम तप कल्याण मनाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

अतिशय केवलज्ञानी प्रभु का, प्राणी मात्र पे छाया।
पशुओं ने भी पशुता छोड़ी, अणुव्रत को अपनाया॥
माघ सुदी द्वितीया को हम सब, ज्ञान कल्याण मनाये।
ज्ञान रश्मियाँ पाने प्रभू से, मंगल दीप चढ़ाये॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञान मंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

योग निरोध किया प्रभुवर ने, चंपापुर में आके।
सिद्ध शिला पे पहुँचे भगवन, आठों कर्म नशाके॥
मोक्ष महोत्सव वासुपूज्य का, दशलक्षण में आये।
भादो शुक्ला चौदस के दिन, लाडू भव्य चढ़ाये॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : त्रय धारा जल की करें, शांति करो जिनराज।
जल-थल के लेकर सुमन, अर्पित करते आज॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : बाल ब्रह्मचारी प्रभु, वासुपूज्य भगवान।
वंदन हम सब कर रहे, गाते तव यशगान॥

(अडिल्ल छंद)

स्वर्ग सोलवें से आये जिनवर प्रभो।
जयावती माता के उर आये विभो॥

सोलह सपने देखे माता रात में।
उनका फल बतलाये पिता प्रभात में।।1।।
अवधिज्ञान से वसु राजा बतला रहे।
मेरे घर को पावन प्रभु बना रहे।।
चंपापुर में जन्म लिया भगवान ने।
वहीं नाथ के पाँचों कल्याणक मने।।2।।
बचपन बीता आया यौवन काल जब।
राजकुँवर के मन नहि भाया राज तब।।
हुई विरक्ति प्रभुवर को संसार से।
त्याग चले ममता बंधन परिवार से।।3।।
द्वादश अनुप्रेक्षायें करते भाव से।
उसी समय लौकान्तिक आये चाव से।।
धन्य-धन्य है प्रभुवर की शुभ भावना।
मुनि बन के वे धारे निर्मल भावना।।4।।
तरु कदम्ब के नीचे ध्यान लगा रहे।
निजस्वरूप को ध्याकर कर्म नशा रहे।।
घाति कर्म विनशाये केवली बन गये।
भव्यों को वे धर्मतीर्थ बतला गये।।5।।
नवजीवन विकसाने प्रभु अर्चन करें।
चम्पापुर से वासुपूज्य मुक्ति वरें।।
अर्घ समर्पण करके हम वंदन करें।
रखें 'आस्था' भव-भव का क्रंदन हरें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : मंगल होवे विश्व में, हरो अमंगल नाथ।
'आस्थाश्री' मस्तक नमें, पूर्ण भक्ति के साथ।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री विमलनाथ पूजा

(अडिल्ल छंद)

हे परमेश्वर ! हे विमलेश्वर ! वन्दना।
आज आपकी करूँ भक्ति से अर्चना ।।
मेरे हृदय कमल बस जाओ हे विभो।
पुष्पांजलि ले आह्वानन करता प्रभो ।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

सागर नदी का नीर कनक कलश में लाता।
द्वय पाद में प्रभु के तीन धार चढ़ाता।।
मम जन्म-जरा-मृत्यु तीन रोग नशाऊँ।
श्री विमलनाथ को भजूँ सौभाग्य जगाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर विमल के चरण सबको विमल बनाते।
संसार ताप के दुःखों से मुक्ति दिलाते।।
प्रभू के चरण कमल में नित्य गंध लगाऊँ। श्री विमलप्रभु... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंड तंदुलों के थाल चढ़ाऊँ।
अक्षय गुणों को पाने प्रभु द्वार पे आऊँ।।
शिव सौख्य संपदा मिले ये भावना भाऊँ। श्री विमलप्रभु... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हाथों से चुन के लाऊँगा मैं पुष्प ये प्यारे।
भौंरों से हैं गुंजायमान पुष्प ये सारे।।
मन्मथ मदन को मारने प्रभु पुष्प चढ़ाऊँ। श्री विमलप्रभु... ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान मिष्ट मधुर व सुस्वादु बनाऊँ।
रसगुल्ला इमरती जलेबी आदि भी लाऊँ॥
क्षुधादि रोग नाशने नैवेद्य चढ़ाऊँ।
श्री विमलनाथ को भजूँ सौभाग्य जगाऊँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व तिमिर ने मुझे संसार भ्रमाया।
प्रभु ज्ञान दीप पाने आज दीप जलाया॥
प्रभुवर की करके आरती तम दूर भगाऊँ। श्री विमलप्रभु... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध दिव्य धूप में कर्पूर मिलाया।
आठों करम से मुक्त होने शरण में आया॥
डालूँ ये धूप अग्नि में सब कर्म जलाऊँ। श्री विमलप्रभु... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसदार फलों से सदा प्रभुवर को पूजता।
तीर्थेश का त्रयलोक में जयकार गूँजता॥
मैं मोक्षफल को पाने फल से भक्ति रचाऊँ। श्री विमलप्रभु... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे विमलप्रभो आप मुझे विमल बनाओ।
संसार के दुःखों से मुझे मुक्त कराओ॥
वसु द्रव्य संजोके प्रभु को अर्घ चढ़ाऊँ। श्री विमलप्रभु... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(चौपाई)

ज्येष्ठ श्याम दशमी सुखकारी, जय श्यामा माता उपकारी।
स्वप्न देख माता हर्षावे, नृप कृतवर्मा फल बतलावे॥

पन्द्रह मास रत्न बरसाये, धनपति भारी पुण्य कमाये।
अष्ट देवियाँ करती सेवा, मात-पिता को पूजे देवा॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

जन्मत दश अतिशय प्रभु पाये, तीन लोक में शांति समाये।
मतिश्रुत अवधिज्ञान के धारी, जय-जय हो प्रभु सदा तुम्हारी॥
घंटा-ढोल-नगाड़ा बाजे, सुरपति ऐरावत पे साजे।
पांडुक वन में प्रभु को लाते, बालप्रभु का न्हवन कराते॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां[1] जन्ममंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

बर्फ पिघलती प्रभु ने देखी, आयु मिट जायेगी ऐसी।
राज-पाट से नाता तोड़ा, बांधव-वैभव सबको छोड़ा॥
लौकान्तिक सुरगण भी आये, प्रभु द्वादश अनुप्रेक्षा भायें।
सिद्ध प्रभु को शीश नवाते, दीक्षा ले प्रभु ध्यान लगाते॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां तपोमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

माघ सुदी षष्ठी को स्वामी, बने जिनेश्वर केवलज्ञानी।
समवशरण की रचना प्यारी, भक्ति करते सुर नर-नारी॥
गणधर झेले प्रभु की वाणी, क्षणभर में गूंथे जिनवाणी।
देव-देवियाँ नृत्य रचाते, घुँघरू-ढोल-मृंदग बजाते॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठम्यां[2] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

गिरी सम्मेद शिखर पे आये, प्रभुवर चौथा ध्यान लगाये।
तत्क्षण सारे कर्म नशाये, तन कर्पूर भाँति उड़ जाये॥

---

1. ति.प. ह. पु.- मा. शु. 14 2. पौ. शु.-10 ति. प. ह. पु.

नाखून-केश वहाँ रह जाये, उनको अग्निकुमार जलाये।
सुदी आषाढ़ अष्टमी आये, सुवीर कूट पे मोद चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा षष्ठम्यां[1] मोक्षमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : विश्व विलोकी विमल जिन, विमल प्रभु विश्वेश।
शांतिधारा से विभो, नश जाये सब क्लेश॥1॥

शांतये शांतिधारा।

उत्पल बेला मोगरा, कमल केवड़ा फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, पाऊँ चरणन् धूल॥2॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : गुण सागर प्रभु आप हो, विमलनाथ भगवान।
जयमाला प्रभु आपकी, देती सम्यक्ज्ञान॥

(गीता छंद)

धनि धन्य कृतवर्मा पिता, जयश्याम माता धन्य हैं।
छाई लहर आनंद की, वह जन्म नगरी धन्य है॥
शुभ स्वप्न देखे रात में, राजन कहो इनका सुफल।
श्री भूपति सुनकर कहे, आया बड़ा सौभाग्य पल॥1॥

रानी सुनो शुभ स्वप्न फल, यह पुत्र तीर्थंकर बने।
गजराज का फल पुत्र होगा, वृषभ से स्वामी बने॥
मृगराज गर्जन कह रहा, होगा प्रभु में दिव्यबल।
स्नान देखा लक्ष्मी का, होगा सुमेरू पर न्हवन॥2॥

1 आ. शु. 8- ति.प. ह. पु.

पुष्पों की मालाओं का फल, कहती युगल जिनधर्म को।
परिपूर्ण चंदा कह रहा, होंगे जगत के चंद्र वो॥
जगमग रवि यह कह रहा, तेजस्वी होंगे सूर्य से।
मछली युगल से सुख मिले, घट से निधि के स्वामी ये॥3॥

देखा सरोवर पद्म युत, गुण हैं प्रभु में अनगिने।
सागर का फल सर्वज्ञ हो, हम भक्त प्रभुवर के बने॥
सुंदर सिंहासन का सुफल, नर-नारी सुर पूजा करे।
विमान देवों का सुसज्जित, स्वर्ग से प्रभु अवतरे॥4॥

करती है सूचित रत्नराशि, वे प्रभु गुण खान हैं।
देखा भवन नागेन्द्र का, प्रभु के सहज त्रयज्ञान हैं॥
निर्धूम अग्नि अंत में, कहती नशे वे कर्म सब।
तीनों जगत की माँ कहाये, हे प्रभु ! की मात अब॥5॥

प्रभु जन्म ले दीक्षा धरें, अर्हंत हों सम्बोधते।
आये प्रभु सम्मेदगढ़, कर्मों की बेड़ी तोड़ते॥
बोधि-समाधि प्राप्त हो, शिवराज की विनती करें।
दर्शन करे, पूजन करे, 'आस्था' से जिनभक्ति करें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : हम बालक प्रभु आपके, क्षमा करो भगवान।
'आस्था' से अर्चा करे, दो ऐसा वरदान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अनंतनाथ पूजा

(गीता छंद)

प्रभुवर अनंत जिनेश की, करता हूँ मैं शुभ अर्चना।
चरणों में आया आज मैं, शत बार करता वंदना॥
नाना विधि के पुष्प ले, आह्वान गुण थापन करूँ।
गाऊँगा गुण प्रभु आपके, पूजन भजन कीर्तन करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज-रोम रोम से निकले भगवन्...)

निर्मल नीर भराय प्रभु के चरण चढ़ाऊँ।
त्रयधारा के साथ तीनों रोग नशाऊँ॥
हो अनंत गुणधाम, गुण अनंत को पाया।
झूम उठा मन आज, द्वार तिहारे आया॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित केशर लाय, चंदन चरण चढ़ाता।
मेटो भव संताप, चरणन् प्रीत बढ़ाता॥ हो अनंत...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गज मोती के थाल, अक्षत भर कर लाया।
अक्षय पद के हेत, पूजन करने आया॥ हो अनंत...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल मोगरा फूल, सुमन सुगंधित प्यारे।
प्रभु के निकट चढ़ाय, काम शत्रु को मारे॥ हो अनंत...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म क्षुधा बलवान, भव-भव भ्रमण कराता।
क्षुधा कर्म क्षय होय, षट्रस व्यंजन लाता॥
हो अनंत गुणधाम, गुण अनंत को पाया।
झूम उठा मन आज, द्वार तिहारे आया॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग मग दीप प्रजाल, प्रभु के सन्मुख लाया।
करूँ आरती नाथ, मन मेरा हर्षाया॥ हो अनंत...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि कर्म क्षयार्थ, धूप अग्नि में डालूँ।
कर्म काष्ठ जल जाय, जिनकी भक्ति रचालूँ॥ हो अनंत...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला सेव अनार, सरस मधुर फल लाऊँ।
मोक्ष सुफल के काज, फल के गुच्छ चढ़ाऊँ॥ हो अनंत...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य के साथ, प्रभु की पूजा करता।
तीन लोक के ईश, तुमको वंदन करता॥ हो अनंत...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्ज- हे दीन बन्धु श्री पति...)

कार्तिक वदी एकम को, प्रभु गर्भ में आये।
जिनमात की सेवा में, अष्ट देवियाँ आये॥
लाया था धनपति महान, स्वर्ग खजाना।
रत्नों की वृष्टि करके, आज अर्घ चढ़ाना॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

जिन जन्म के समय में हुई, लोक में हल-चल।
सौधर्म शची संघ लाया, स्वर्ग का दल-बल॥
प्रभुवर को देखने नयन, हजार बनाये।
मेरू पे बिठाके प्रभु का न्हवन कराये॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

बादल में चमक देख, हुये नाथ वैरागी।
संसार को असार जान, बन गये त्यागी॥
ब्रह्मर्षि देव भी बढ़ायें, त्याग भाव को।
शुभ अर्घ चढ़ा हम घटायें, राग भाव को॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

घनघाति कर्म नाश, प्रभु केवली बने।
शत इन्द्र के समूह से, वो पूज्यतम बने॥
समवशरण में सुर-असुर, तिर्यंच भी आते।
जिन भक्ति नृत्य करके, वो भी पुण्य कमाते॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाअमावस्यायां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

सम्मेद शिखर से प्रभु, शिवधाम को पाये।
अग्नि कुमार अन्त्य विधि, आन कराये॥
सौधर्म इन्द्र आके वहाँ, लड्डू चढ़ाता।
प्रभु के चरण बनाके, उन्हें शीश झुकाता॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

दोहा : स्वर्ण कुंभ मोती जड़ा, लाया निर्मल नीर।
त्रय धारा करता प्रभु, हरो हमारी पीर॥

शांतये शांतिधारा।

कमल केवड़ा मोगरा, कर्णकार मंदार।
प्रभु चरणन् क्षेपण करें, कर्णवीर कचनार॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : गुण अनंत के ईश को, वंदन बारम्बार।
जयमाला पढ़कर करें, प्रभुवर का जयकार॥

नरेन्द्र छंद

(तर्ज-सगला चालो रे भाया.. इंजन की सीटी..)

करलो-करलो रे, प्रभु की सब पूजा करलो-पूजा करलो
जयमाला गाकर, प्रभु की भक्ति कर लो-करलो रे...

साकेता में जन्मे स्वामी, विमला माँ हर्षाये।
सिंहसेन के राजमहल में, सुरपति नाचे-गाये॥
घननन घंटानाद बजाता, गज ऐरावत आया।
शची ने प्रभु के दर्शन करके, सम्यक्दर्शन पाया॥1॥ करलो...

इन्द्र-इन्द्राणी प्रभु को देखे, बाल प्रभु मन भाये।
इतना सुंदर रूप तुम्हारा, नजर हटा ना पाये॥
धन्य हुआ है भाग्य हमारा, तीन भुवनपति पाये।
करने को अभिषेक प्रभु का, पांडुक वन में लाये॥2॥ करलो...

अपने हाथों से इन्द्राणी, प्रभु को तिलक लगाती।
वस्त्रों से सुसज्जित करके, आभूषण पहनाती॥
बाल रूप धरकर सुरगण सब, प्रभु का मन बहलाये।
स्वर्गों से भोजन वस्त्रादि, प्रतिदिन लेकर आये॥3॥ करलो...

धन-वैभव ये माया झूठी, झूठे रिश्ते-नाते।
दीक्षा लेने चले प्रभुवर, तप संयम अपनाते॥
घातिकर्म क्षय करके भगवन्, बन गये केवलज्ञानी।
समवशरण के स्वामी की हम, सुनने आये वाणी॥4॥ करलो...

समवशरण विघटाके स्वामी, सम्मेदाचल आये।
गुण अनंत के धारी भगवन्, सिद्ध परम पद पाये॥
हे प्रभु ! भक्त बनालो अपना, चरण शरण हम आये।
पूजा करके प्रभुवर तेरी, सच्चा आनंद पायें॥5॥ करलो...

ये अनंत व्रत जो भवि प्राणी, भाव सहित अपनाये।
दुःख अनंत से मुक्ति पाकर, गुण अनंत को पाये॥
सदा रहें हम शरण तुम्हारी, यही भावना भाये।
'आस्था' सम्यक्दीप जलाकर, केवल-ज्योति जगाये॥6॥ करलो...

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सम्यक् पथ पर हम चलें, ये ही दो आशीष।
'आस्था' से हम झुका रहे, प्रभु चरणों में शीश॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री धर्मनाथ पूजा

(गीता छन्द)

जिन धर्मध्वज को धारते श्री धर्मजिन धर्मात्मा !
उन धर्मप्रहरी की शरण आये सभी धर्मात्मा।।
जिन धर्मनेता धर्मदाता धर्मनाथ महान हैं।
पुष्पांजलि ले भक्ति से उनका यहाँ आह्वान है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चामर छंद)

पत्र पुष्प से सजे, मनोज्ञ नीर कुंभ ले।
तीन धार दे त्रिरोग कर्म दंभ को दले।।
धर्मनाथ-धर्मनाथ, झूम-झूम गाइये।
ले मृदंग-ढोल-झाँझ, भक्ति से बजाइये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकवंद्य श्री जिनंद को सुगंध से भजें।
पाप-ताप नाश सर्व द्वंद-फंद से बचें।। धर्मनाथ.......... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत रत्न श्वेत शालिपुंज मुष्टि में भरे।
आपको चढ़ा अखंड दिव्य सौख्य को वरें।। धर्मनाथ.......... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम हो गया अकाम देख आप रूप को।
पद्म वा गुलाब से भजें त्रिलोक भूप को।। धर्मनाथ.......... ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियाँ, कचोरियाँ, मिठाइ थाल में भरे।
आप पाद पूज भक्त भूख-प्यास को हरे॥
धर्मनाथ-धर्मनाथ, झूम-झूम गाइये।
ले मृदंग-ढोल-झाँझ, भक्ति से बजाइये॥5॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप से करें जिनेश की विशाल आरती।
मोह नाश हो मिले, महान ज्ञान भारती॥ धर्मनाथ..........॥6॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खिरा, जपें जिनेश नाम को।
कर्मशत्रु नाश हेतु, आपको प्रणाम हो॥ धर्मनाथ..........॥7॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल पे अनेक थाल, दाड़िमादि से भरें।
आपको समर्प नाथ, सिद्धलोक को वरें॥ धर्मनाथ..........॥8॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य से भरी, सुवर्ण थालियाँ सजा।
आपको चढ़ा रहे, मृदंग तालियाँ बजा॥ धर्मनाथ..........॥9॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

चौपाई छंद - (तर्ज : जय जिनवाणी माता रख लाज...)

पंचकल्याण मनायें-हम धर्मनाथ के पंचकल्याण मनायें..2
सुदी वैशाख अष्टमी आये, धर्मनाथ प्रभु गर्भ में आये।
धन्य जनक-जननी कहलाये, सुर-नर गर्भकल्याण मनायें।
हम भी गर्भकल्याण मनाकर, मंगल अर्घ चढ़ायें॥ हम धर्मनाथ.....

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाअष्टम्यां[1] गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

धर्मनाथ का जन्म हुआ था, वो क्षण खुशियों में अगुआ था।
सुर प्रभु को मेरू पर लाये, कर अभिषेक सभी हर्षाये।।
हम भी जन्मकल्याण मनायें, मंगल अर्घ चढ़ायें। हम धर्मनाथ.....

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

जगसुख जब क्षणभंगुर जाना, प्रभु ने धरा दिगम्बर बाना।
माघ शुक्ल तेरस तिथि आई, प्रभु ने चौसठ ऋद्धि पाई।
हम भी तपकल्याण मनायें, मंगल अर्घ चढ़ायें। हम धर्मनाथ.....

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

त्रेसठ कर्म प्रकृति विनशाये, दोष अठारह पर जय पाये।
पौष शुक्ल पूनम जब आये, धर्मनाथ जिनधर्म बताये।।
हम भी ज्ञानकल्याण मनायें, मंगल अर्घ चढ़ायें। हम धर्मनाथ.....

ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

प्रभु सम्मेदशिखर पर आये, योग निरोध कर्म विनशायें।
जेठ शुक्ल की चौथ निराली, लाये हम लाडू की थाली।।
हम भी मोक्षकल्याण मनायें, मंगल अर्घ चढ़ायें। हम धर्मनाथ.....

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां[2] मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दोहा : **धर्मनाथ भगवान हैं, धर्मतीर्थ आधार।**
त्रयधारा जल की करूँ, पुष्पांजलि सुखकार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. वै. शु. 13 म. पु., 2. ज्येष्ठ कृ. 14 ति. प.

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : धर्मनाथ दशधर्म धर, धर्मतीर्थ आधार।
जयमाला जिनधर्म की, करे धर्म विस्तार॥

शंभु छंद

श्री धर्मनाथ की धर्मसभा, दशधर्म सार बतलाती है।
जिन धर्मप्रभु की धर्मध्वजा, सारा अधर्म विनशाती है॥
हे भानुराज के कुलभानु, हे मात सुप्रभा के नन्दन।
हे रत्नपुरी के भूप श्रेष्ठ, शतइन्द्र करें तुमको वन्दन॥1॥

प्रभु धर्म-शुक्ल दो ध्यान धार, घन घातिकर्म का नाश किया।
निजवाणी से जिनवाणी का, प्रभु तुमने दिव्य विकास किया॥
जिसमें प्रभु तुमने श्रमण धर्म, वा श्रावक धर्म बताया है।
श्रावक के कर्म विनाशन हित, षट् आवश्यक समझाया है॥2॥

जिनपूजा वा शुभ पात्रदान, आवश्यक प्रमुख बताये हैं।
अभिषेक सहित जिनपूजा के, छः अंग श्रेष्ठ समझाये हैं॥
जल-फल-इक्षुरस-दूध-दही, घृत-चंदन-सर्वौषधि द्वारा।
जिन प्रतिमा का अभिषेक करो, पाओगे निश्चय शिवद्वारा॥3॥

पावन अभिषेक महाविधि का, श्री जिनवाणी उल्लेख करे।
जो जल से जिन अभिषेक करे, वो निज का सुकृतकोष भरे॥
जो आम-द्राक्ष-इक्षु-दाड़िम, आदिक फल-रस से न्हवन करें।
फल रस पूजा के प्रतिफल में, वह भव्य मोक्षफल चयन करें॥4॥

जो कांतिमान घृत की धारा, जिन प्रतिमाओं पर करते हैं।
वो जग के सारे सुख पाकर, कैवल्यज्ञान को वरते हैं॥
जो दूध-दही के कलशों से, प्रभु का मंगल अभिषेक करे।
वो स्वर्गों में सुरपद पाये, सुरगण उसका अभिषेक करे॥5॥

सुरभित प्रासुक सर्वौषधि ले, जो मंत्रनाद कर धार करे।
वो उत्तम सुन्दर तन पाकर, सब रोगों का परिहार करे।।
तीर्थोदक ले चतु कलशों में, जिन प्रतिमा पर जो धार करे।
वो चारगति का भ्रमण मिटा, चउदिश में धर्म–प्रचार करे।।6।।

जिनप्रतिमा पर कर्पूर मिला, चंदन लेपन जो भव्य करे।
भवताप मिटाने के पहले, चंदन सम सुरभित देह वरे।।
लेकर षट्ऋतु के विविध पुष्प, निज हस्त पुष्प में खिले–खिले।
जो बरसाये प्रभु पर उसको, पुष्पक विमान सा यान मिले।।7।।

जो पुष्प–दधि–फल–अक्षत संग, दीपक से आरती करते हैं।
वो रति आरत को दूर भगा, श्रुत प्रज्ञाज्योति वरते हैं।।
जल में बहु सुरभित द्रव्य मिला, जो गंधोदक की धार करे।
वो महापुण्य वैभव पाये, निज पर सबका उद्धार करे।।8।।

फिर महाशांति मंत्राभिषेक, करते जो प्रभु पर मनहारी।
इस आगम सम्मत पूजा से, बनते वो शिवसुख अधिकारी।।
इत्यादि देशना दे प्रभु ने, निज मुक्ति राजश्री को पाया।
हमने भी वह शिवसुख पाने, प्रभु धर्म तुम्हारा अपनाया।।9।।
हे नाथ ! आपके दर्शन को, यह नैन मीन सम मचल रहे।
यह धर्मराजश्री तपोभूमि, नित आर्षमार्ग पर अटल रहे।।
हे नाथ ! आपका धर्म सुयश, हो सुलभ सदा हर प्राणी को।
वर गुप्तित्रय 'गुप्तिनंदी' पा जाये मुक्ति रानी को।।10।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : धर्मनाथ का धर्म ही सब धर्मों में सार।
'गुप्ति' पा इस धर्म को, करे भवार्णव पार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री शांतिनाथ पूजा

(शंभु छन्द)

हे विश्वसेन ऐरा नंदन, श्री शांतिनाथ तुमको वंदन।
हे कर्म विजेता ! सुखकारी, श्री शांतिनाथ हैं मनरंजन।।
निर्मल भावों से आये हैं, करने प्रभु का हम आह्वानन।
ये द्रव्य पुष्प ले बुला रहा, आ जाओ प्रभु है अभिवादन।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल उज्ज्वल जल से प्राणी, मन का प्रक्षालन करते हैं।
इस जन्म-जरा-मृत नाश हेतु, हम यह जल अर्पण करते हैं।।
तीर्थंकर-चक्री-कामदेव, हो तीन पदों के तुम धारी।
प्रभुवर की पूजा करने से, मिट जाती भव की बीमारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से घबराकर, प्रभु चरणों में दौड़े आये।
केशर चंदन का थाल लिये, हम शांतिपथ पाने आये।। तीर्थंकर...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत हमने शुद्ध लिये, करने जिनवर की शुभ अर्चा।
अक्षयपद की अभिलाषा ले, करते जिनगुण की शुभ चर्चा।। तीर्थंकर...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मन अतिचंचल है जिनवर, जो मदन अरि से हार रहा।
तुम कामदेव के नाशक हो, सुरभित पुष्पों से पूज रहा।। तीर्थंकर...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा-तृषा की बाधा से, जग के प्राणी दुःख सहते हैं।
नैवेद्य उन्हें हम भेंट करें, जिनको जगदीश्वर कहते हैं।। तीर्थंकर...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग ज्योति के पुंज प्रभू, केवल किरणों से द्योतित हो।
अज्ञान अंधेरा हट जाए, अतएव सुदीप समर्पित हो।।
तीर्थंकर-चक्री-कामदेव, हो तीन पदों के तुम धारी।
प्रभुवर की पूजा करने से, मिट जाती भव की बीमारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म सदा पीड़ित करते, और भव-भव में भटकाते हैं।
कर्मों से पिण्ड छुड़ाने हम, पावक में धूप चढ़ाते हैं।। तीर्थंकर...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश दोष विमुक्त विभो, हो दिव्य सुखों के भण्डारी।
अंगूर अनार सरस फल ले, हम चढ़ा रहे जग त्रिपुरारी।। तीर्थंकर...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम मोक्षमहाप्रद सुखकारी, हो शांतिनाथ शांतिकारी।
आठों द्रव्यों को साथ चढ़ा, बन जायें हम भी अविकारी।। तीर्थंकर...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (अडिल्ल छंद)

भादव सप्तमी श्याम शुभ दिन जानिये।
शांतिनाथ का गर्भ कल्याणक मानिये।।
सोलह सपने देख मात हर्षित हुई।
विश्वसेन के निकट गई प्रमुदित हुई।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

जन्मे श्री भगवान मंगल दिन महा।
इन्द्र महोत्सव करता सपरिवार यहाँ।।
ज्येष्ठ चतुर्दशी श्याम की पावन घड़ी।
सब पे छायी आज खुशियों की झड़ी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

देख दुनिया की दशा वे वन गये।
करने को कल्याण मुनिवर बन गये॥
ज्येष्ठ कृष्णा चौदस का दिन पावना।
सुर-नर-असुर सुधारे अपनी भावना॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

कर्मों से हो मुक्त जिनवर बन गये।
केवल ज्योति पा जगत वन्दन भये॥
पौष शुक्ला दशमी को शुभ जानकर।
ज्ञान की पूजा करो श्रद्धान कर॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

गिरी सम्मेद से मोक्ष गये जिनराजजी।
ज्येष्ठ चतुर्दशी श्याम शुभ दिन ध्यावजी॥
जन-जन के हितकारक हैं जो जिन सही।
इन्द्र मनायें मोक्षकल्याणक वहीं॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : **शांतिनाथ भगवान को, वन्दन बारम्बार।**
शांतिधार अर्पण करें, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत्शांतिकराय सर्वोपद्रव शांतिं कुरु-कुरु ह्रीं नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

धत्ता छंद : **श्री शांतिजिनेशं हे तीर्थेशं ! तुम्ही हो सर्वज्ञ प्रभु।**
भव्यन प्रियकारी जग सुखकारी हो त्रिलोकीनाथ विभु॥

1. पौ. शु. 11 ति. प. ह. पु.

(चौपाई)

व्याकुल मन कर्मों से मेरा, बनना है जिनवर का चेरा।
नहीं जगत में कोई सहायी, एक आप ने राह बतायी॥1॥

नाना मत हैं नाना पथ हैं, जीव सदा से चला कुपथ है।
शरण नाथ तेरी मिल जाये, भवबंधन उसका कट जाये॥2॥

मात-पिता हो भाई-बहना, है सब रिश्ता नकली गहना।
जिनवर ही हैं जग दुःखहर्त्ता, निज स्वरूपमय निज के कर्त्ता॥3॥

इनके गुण जो नितप्रति गाता, वो तीर्थंकर पदवी पाता।
चक्रीपद के तुम थे धारी, नवनिधि आदि के भण्डारी॥4॥

षट्खण्डों के आप विजेता, न्यायनीति के थे अभिनेता।
कामदेव का तन अतिप्यारा, भुवनत्रय में जन-मन हारा॥5॥

तीन पदों के प्रभु थे धारी, फिर भी त्यागी संपत्ति सारी।
वैभव में जब सुख नहीं पाया, सच्चापथ तुमने अपनाया॥6॥

ध्यान लगाकर कर्म जलाये, सच्ची शांति प्रभुवर पायें।
शांति पाने प्रभु को ध्याओ, धर्मतीर्थ नायक को ध्याओ॥7॥

भक्ति यथाविध जो नर करता, बिन माँगे उसका सब सरता।
जिनगुण से अनुराग जो करता, इक दिन वो मुक्ति को वरता॥8॥

'क्षमा' प्रभु के शरणे आयी, द्रव्य-भाव से भक्ति बनायी।
भौतिक सुख में कुछ ना चाहूँ, परलौकिक पद को ही पाऊँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : शांतिनाथ जगदीश के, चरणों में रख प्रीत।
'क्षमा' भवोदधि पार कर, बने मुक्ति की मीत॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री कुन्थुनाथ पूजा

(गीता छन्द)

हे सिद्ध ! बुद्ध प्रबुद्ध जिन गुणवंत उपमा युक्त हो।
जिन रूप के धारी स्वयंभू रागद्वेष विमुक्त हो॥
श्री कुन्थुनाथ जिनेश को सुमनावलि ले ध्या रहा।
प्रभु नाम सुमरण के लिए आह्वान करने आ रहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भव सिंधु से घबरा गया, प्रभु चरण में जल ला रहा।
निज जन्म-मृत्यु विनाश की, शुभ भावना मैं भा रहा॥
श्री कुन्थुनाथ जिनेश की, अर्चा हृदय से कर रहा।
प्रभु कल्पतरू के पाद में, माँगे बिना सब मिल रहा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बन जाऊँ लघुनंदन प्रभु का, वंदना इस भाव से।
मलयागिरी चंदन चढ़ाता, तुम चरण में चाव से॥ श्री कुन्थुनाथ..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अखण्डित अक्षतों के, पुँज भर-भर ला रहा।
अक्षय गुणों का लाभ हो, इस कामना से आ रहा॥ श्री कुन्थुनाथ..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

निज कामबाण विनाश हेतु, धर्मबाण चला रहा।
भूमिज-जलज बहु पुष्प मनहर, प्रभु चरण में ला रहा॥ श्री कुन्थुनाथ..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस भरे नैवेद्य की, थाली सजा अर्चा करूँ।
प्रभु आप सम्मुख इस क्षुधा के, नाश की चर्चा करूँ॥ श्री कुन्थुनाथ..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान तम को दूर करने, आरती करता सदा।
कैवल्यबोधि सुलाभ हित, पुरुषार्थ करता सर्वदा॥
श्री कुन्थुनाथ जिनेश की, अर्चा हृदय से कर रहा।
प्रभु कल्पतरू के पाद में, माँगे बिना सब मिल रहा॥6॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं धूप अग्नि में चढ़ा, मेटूँ करम के भार को।
प्रभु भक्ति में मन को लगा, तज दूँ सकल संसार को॥ श्री कुन्थुनाथ..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर लीची रसभरी, आम्रादि सुन्दर फल चढ़ा।
मैं मोक्ष फल की आश से, जिनराज पूजन हित खड़ा॥ श्री कुन्थुनाथ..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम धरा का राज पाने, अष्ट द्रव्य चढ़ा रहा।
पूजन-भजन-कीर्तन सहित, प्रभु के गुणों को गा रहा॥ श्री कुन्थुनाथ..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्ज- घुँघरू छम छमा छन नन-नन बाजे रे..)

कुन्थु प्रभु जी गर्भ में आये सब जन नाचे रे-घुँघरू...
श्रावण कृष्णा दशमी के दिन प्रभुजी गर्भ में आये।
कुरुवंश के आप शिरोमणी तीर्थंकर कहलाये॥ घुँघरू...
अष्ट देवियाँ सेवा करके माता को हर्षातीं।
सुर बालायें पुण्य कमाने इनके संग-संग आतीं॥ घुँघरू...

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

(तर्ज-सगला चालो रे...)

सगला चालो रे हस्तिनापुर में होले-होले-2
कुन्थुनाथ के जन्मोत्सव में मनवा डोले

सूरसेन के राजदुलारे-2 माँ श्रीकांता प्यारे।
इन्द्र शचि संग सुरगण मिलकर नाचे-गायें सारे॥ सगला...
जन्म समय देवों ने आकर-2 नाना वाद्य बजाये।
मंगल उत्सव की बेला में सुर-नर पुण्य कमायें॥ सगला...
शुभ वैशाख सुदी एकम को-2 प्रभुजी भू पर आये।
बाल मनोहर रूप देखकर मात-पिता हर्षायें॥ सगला...

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

(तर्ज-जरा सामने तो...)

प्रभु तप करने को जा रहे, वे स्वयंभूपद को पा रहे।
हम अर्चा करने आ रहे, सातिशय पुण्य कमा रहे॥
छहखण्डों का नश्वर वैभव, प्रभु के मन ना भाया था।
पंचमुष्ठि से लोचन करके, मुनिव्रत को अपनाया था।
हम झूम-झूम हर्षा रहे, वंदन करके सुख पा रहे॥ हम...

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

(तर्ज-सावन का महीना....)

ज्ञान महोत्सव प्रभु का, पावन मंगल आधार।
केवलज्ञानी प्रभु की, अर्चा करता संसार॥ केवलज्ञानी....
चउघाति कर्मों का नाश किया है, चार गुणों को प्रगट किया है।
समोशरण में आप विराजे, भविजन को उपदेश दिया है।
ज्ञान ज्योति को पाने, हम दीप जलायें द्वार॥ केवलज्ञानी...
दीपमालिका जगमग लाये, नर-नारी सब मिलकर आये।
ज्ञान सूर्य की किरणें पाये, मिथ्यातम को दूर भगाये।
कल्पतरू प्रभुवर की, महिमा है अपरम्पार॥ केवलज्ञानी....

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

(तर्ज- ऊँचे-ऊँचे....)

तीन पदों के धारी हैं, श्री जिनवर हमारे।
जिनवर हमारे, श्री कुन्थु हमारे, कल्पतरू कहलाये रे।
श्री जिनवर हमारे॥ तीन....
श्री सम्मेद शिखर में आये, शेष अघाति कर्म नशाये।
ज्ञानकूट से शिवपद पाया, देवों ने जयघोष लगाया।
लोक शिखर चढ़ जाये रे॥ श्री जिनवर हमारे....
सुदी वैशाख प्रतिपद आये, हम सब मोक्षकल्याण मनायें।
लाडू लाये भक्ति रचायें, कुन्थुनाथ को अर्घ चढ़ायें।
हम सबके मन भाये रे..... श्री जिनवर हमारे......

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : कुन्थुनाथ भगवान हैं, जग में मंगलकार।
पुष्पांजलि अर्पण करें, करके शांतिधार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : कुन्थुप्रभु के पाद में, गाते हम जयमाल।
वंदन-अर्चन-भजन से, जीवन बने निहाल॥

नरेन्द्र छंद (तर्ज- माइन माइन....)

कुन्थुनाथ की जयमाला को मिलकर हम सब गाये।
उनके पंचमहाउत्सव की गाथा सुन हर्षाये॥
षट्खण्डों के आप विजेता चक्रवर्ती कहलाये।
शुभ सुन्दर तन धारण करके कामदेव कहलाये॥
तीर्थंकर पदवी को पाकर तीर्थ प्रवर्तन करते।
त्रय पदधारी जिनवर को हम, तीन बार शिर नमते॥1॥

गर्भ समय का अतिशय न्यारा, तीन लोक सुखकारी।
जन्म महोत्सव मंगलदायक सब दुःख संकटहारी।।
द्वादश अनुप्रेक्षायें भाकर प्रभु वैराग्य जगायें।
अनुमोदन के भाव बनाकर सुर लौकांतिक आये।।2।।

स्वतः प्रभु ने दीक्षा लेकर रूप दिगम्बर धारा।
सबने मिलकर शुभ बेला में किया घोष जयकारा।।
तप करके जिनवर ने अपना घातिकर्म विनशाया।
तत्क्षण परमौदारिक तन पा केवलज्ञान जगाया।।3।।

गंध कुटी में प्रभु विराजे उनको नमन हमारा।
योग निरोध सहित जिनवर ने किया कर्म निस्तारा।।
ऐसे कल्याणक से भूषित नाथ हमारी सुनना।
भव-भव में भक्ति करने की शक्ति हमको देना।।4।।

रोग-शोक दुःख-संकट भारी जब जीवन में आये।
धन-वैभव और मात-पिता भी कोई काम ना आये।।
बुध ग्रह की बाधा ने हमको नानाकष्ट दिलाये।
कल्पतरू श्री कुन्थुनाथ की पूजा कष्ट मिटाये।।5।।

द्वार तिहारा पाकर भगवन् श्रद्धा दीप जलायें।
प्रभु की शुभ जयमाला गाकर भव-भव बंध छुड़ायें।।
रत्नत्रय धारी प्रभुवर को शत-शत शीश नवाये।
''राजश्री'' त्रय गुप्ति द्वारा शाश्वत शिवसुख पाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : त्रय पद धारी नाथ को, नमन करें त्रय बार।
तीन रत्न को धार कर, हो जायें भवपार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अरहनाथ पूजा

(दोहा)

अरहनाथ अरि को हरें, विश्व विजेता नाथ।
गणधर इन्द्र नरेन्द्र सब, जिन्हें झुकाते माथ॥
आह्वानन उनका करें, दिव्य पुष्प ले हाथ।
हृदय कमल मम खिल उठा, आन विराजो नाथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

पावन सलिल की धार प्रभु चरण चढ़ायें।
शुभ भाव जगा चित्त में त्रय रोग नशायें॥
तीर्थेश-चक्री-कामदेव अरहनाथ हो।
भवसिंधु पार तारने भक्तों को साथ दो॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिला गंध आज चरण लगायें।
संसार ताप नाश हेतु भक्ति रचायें॥ तीर्थेश चक्री......॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भर-भर मुठोड़ी अक्षतों के ढेर लगायें।
अक्षय रमा को पाने पुण्य कोष बढ़ायें॥ तीर्थेश चक्री......॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना सुगंध वर्ण के बहु पुष्प चढ़ायें।
हो कामबाण नाश ये ही भाव बनायें॥ तीर्थेश चक्री......॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर मलाई रसभरी नैवेद्य बनाये।
तृष्णा-क्षुधा के ध्वंस हेतु नित्य चढ़ायें॥ तीर्थेश चक्री......॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपों की पंक्तियाँ प्रभु के अग्र लगायें।
मोहारि जेता नाथ को हम आज मनायें॥
तीर्थेश-चक्री-कामदेव अरहनाथ हो।
भवसिंधु पार तारने भक्तों को साथ दो॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरु अगर-तगर की धूप बनायें।
ये धूप चढ़ा कर्मधूल आज उड़ायें॥ तीर्थेश चक्री...... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे रसीले आम्र आदि फल के थाल ले।
चढ़ायें नाथ के समीप मोक्षफल मिले॥ तीर्थेश चक्री...... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्टद्रव्य हम चले जिनेन्द्र पाद में।
पाने अनर्घ पद प्रभु की भक्ति में रमें॥ तीर्थेश चक्री...... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (सखी छंद)

मंगल सित फागुन तृतीया, पितु-मात मनाये खुशियाँ।
प्रभु स्वर्ग जयंत से आये, सुर मंगल वाद्य बजाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लातृतीयायां[1] गर्भमंगलमंडिताय श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

तर्ज : **झीनी-झीनी उड़ी रे गुलाल, चालो रे नगरिया में**
हस्तिनागपुर धन्य हुआ है, अरहनाथ का जन्म हुआ है॥
बजते वाद्य अपार, चालो रे....
मगसिर शुक्ला चौदस आई, देव-देवियाँ गाएँ बधाई।
अपना जन्म सुधार, चालो रे....

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

---

1 फा. कृ.-3 म.पु.

(शंभु छन्द)

जब शरद ऋतु के महा मनोहर मेघों का अवसान हुआ।
चक्री होकर भी प्रभुवर को जिनधर्म चक्र का भान हुआ।।
मगसिर सित दशमी को प्रभुवर शुभ वेष दिगम्बर धरते हैं।
तप कल्याणक की पूजा कर हम उन भावों को वरते हैं।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

(गीता छन्द)

कार्तिक सुदी की द्वादशी पाये प्रभु कैवल्य श्री।
आया सुभिक्ष दसों दिशा पाये भवि सौभाग्य श्री।।
सुर-नर-पशु सब आ रहे पाने यहाँ सम्यक्त्व श्री।
शुभ अर्घ हम अर्पण करें पाने प्रभु सम ज्ञान श्री।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

(सखी छन्द)

शुभ चैत्र अमावस प्यारी, प्रभु बने सिद्धपद धारी।
वो गुण अनंत को पायें, हम भी उन सम बन जायें।।
प्रभु अरहनाथ को ध्यायें, निर्वाण कल्याण मनायें।
बूंदी का मोदक लाते, भविजन मिल मोद मनाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दोहा : **शांतिधारा हम करें, पुष्पांजलि मनहार।**
अरहनाथ जिन को भजो, पाओ शिव सुखद्वार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **प्राणिमात्र के मित्र हैं, अरहनाथ भगवान।**
जयमाला की माल ले, करें प्रभु का ध्यान।।

(नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर-चक्री-मनसिज श्री अरहनाथ को हम ध्यायें।
गुणमाला की माल सजाकर चरण कमल में झुक जायें॥
भरत क्षेत्र के आर्य खण्ड में नगर हस्तिनापुर प्यारा।
उत्तम सुन्दर नर-नारी व हरियाली से मनहारा॥1॥
जन्म भूमि वह अरहनाथ की जन-जन के मन को भाये।
मात सुमित्रा पिता सुदर्शन हर्षित हो मंगल गायें॥
भूषण-भोजन-वसन प्रभु के प्रतिदिन स्वर्गों से आयें।
कामदेव का रूप निरखकर मोहित हो सब हर्षायें॥2॥
स्वर्ण कांति तन की थी उत्तम तीस धनुष ऊँची काया।
षट्खण्डों पर विजय प्राप्त कर चक्रवर्ती का पद पाया॥
पूर्व भवों में सोलह कारण चिंतन कर पुरुषार्थ किया।
जग में सर्वश्रेष्ठ सर्वोत्तम तीर्थंकर पद प्राप्त किया॥3॥
चक्र रत्न संग रत्न चतुर्दश छोड़ी प्रभु ने नौ निधियाँ।
षट्खंडों का मोह खंड कर पाईं अद्भुत गुण निधियाँ॥
अरहराज ने राजपाट को क्षणभंगुर जब जान लिया।
इक हजार राजाओं के संग महाव्रतों को धार लिया॥4॥
श्रेष्ठ प्रथम संहनन के बल से तपकर मोहबली जीता।
श्री अर्हंत अरह के मुख से प्रगटी द्वादशांग गीता॥
कर्म महानट पर जय पाने नाटक कूट गये जिनवर।
शेष अघाति कर्म नशा कर पाया उत्तम लोक शिखर॥5॥
अरहनाथ के गुण अनंत का चिंतन भविजन नित्य करे।
कर्म दु:खों का क्षय करके वो बोधि लाभ को शीघ्र वरे॥
फूलों की जयमाला लेकर, जिनगुण जयमाला गाये।
'सुयशगुप्त' जिनभक्ति का फल जिनगुण संपत्ति पाये॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : संजीवनी त्रि रोग की, अरहनाथ का नाम।
'सुयश' भजे त्रय गुप्ति से सर्व सुलभ हो काम॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री मल्लिनाथ पूजा

(गीता छन्द)

श्री मल्लि जिनवर मोहमल्ल, व कर्ममल्ल विजय करें।
जिन चरण अंबुज पूज हम, मुक्ति महल अक्षय वरें॥
आओ प्रभु मम मन महल, जँह भक्ति रंगोली सजी।
सुमनावली कर में सजी, अध्यात्म शहनाई बजी॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

फल-पत्र-पुष्प-माला शोभित, घट से जल चरण चढ़ाता हूँ।
त्रय रोग मिटे त्रय रत्न मिले, इस हेतु भक्ति रचाता हूँ॥
हे मल्लिनाथ ! तुम पूजा से, मुझको ऐसा वरदान मिले।
सब पाप नशे शिवशर्म मिले, अविराम धर्म श्रद्धान बढ़े॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परमात्म आपको भूला जो, उसको पापों ने झुलसाया।
भवताप मिटाने चंदन ले, प्रभु चरण लगा मैं हर्षाया॥ हे मल्लिनाथ..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भवसागर दुःख का सागर है, इसमें अक्षय सुख रंच नहीं।
मैं प्रभु को अक्षत भेंट करूँ, क्योंकि अक्षय सुख मिले यहीं॥ हे मल्लिनाथ..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वह कामदेव निष्काम हुआ, जग में प्रभु ! नाम तुम्हारा सुन।
मैं प्रभु के चरण चढ़ाऊँगा, सुरभित मनहर पुष्पों को चुन॥ हे मल्लिनाथ..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! क्षुधा हारी तुमसे, तुम हो अनंत सुख के धारी।
निज क्षुधा नशाने तुम सन्मुख, अर्पित है व्यंजन मनहारी॥ हे मल्लिनाथ..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्य ज्योति का बीजभूत, घृत का शुभ दीप समर्पित हो।
मैं भक्ति रचाऊँ नृत्य करूँ, मम मिथ्यामोह विसर्जित हो॥
हे मल्लिनाथ ! तुम पूजा से, मुझको ऐसा वरदान मिले।
सब पाप नशे शिवशर्म मिले, अविराम धर्म श्रद्धान बढ़े॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मरूप प्रगटाने को, मैं धूप अनल में खेता हूँ।
वसु कर्मक्लेश विनशाने को, प्रभु तेरा शरणा लेता हूँ॥ हे मल्लिनाथ..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरा जीवन अब सफल हुआ, जिस क्षण प्रभु का दर्शन पाया।
शाश्वत् फलदाता के सन्मुख, अति मधुर सरस फल ले आया॥ हे मल्लिनाथ..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ जिन को ध्याकर, शुभ धर्मध्यान अपनाता हूँ।
अक्षय अनर्घपद दाता को शुभ मंगल अर्घ चढ़ाता हूँ॥ हे मल्लिनाथ..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्ज– मेरे सिर पर रख दो..)

हे मल्लिनाथ ! तीर्थंकर, करना सबका कल्याण।
हम सब मिलकर मना रहे, प्रभु का पंचकल्याण॥
पुण्य प्रभा माँ प्रभावती को, सोलह सपने दिखलाए।
कुंभ चिह्न युत कुंभराज सुत, जिनमाता के उर आए॥
चैत सुदी एकम् मिथिला ने, मिथ्या निद्रा को त्यागा।
गर्भ कल्याणक प्रभु का पाकर, सबका पुण्य उदय जागा॥
हम अर्घ चढ़ाएं मिलकर, जय-जय हो गर्भकल्याण। हम सब...

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

प्रभु का जन्म हुआ धरती पर, सुर सिंहासन डोल उठा।
सात पैंड आगे जा सुरपति, जय मल्लि जिन बोल उठा॥

देव भवन में अनायास ही, घंटा-बाजे शंख बजे।
मगसिर सुदी ग्यारस की बेला, ऐरावत गज भव्य सजे।।
हम अर्घ चढ़ाऐं मिलकर, जय-जय हो जन्मकल्याण। हम सब...

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मिथिला नगरी सजी दुल्हन सम दृश्य भव्य मनहरण हुआ।
देख ब्याह का अनुपम वैभव, प्रभु को जाति स्मरण हुआ।।
दूजा जन्म नहीं लूँगा अब, दूजे बालयति सोचे।
जन्म तिथि को बनकर मुनिवर, अपने केशों को लोंचे।
हम अर्घ चढ़ाऐं मिलकर, जय-जय हो तपकल्याण। हम सब...

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

गुणस्थान का शिखर त्रयोदश, गुणस्थान प्रभु ने पाया।
सुरपति ने धनपति के द्वारा, समवशरण शुभ रचवाया।।
पुण्य समुच्चय से भवि प्राणी, प्रभु की दिव्यध्वनि पायें।
पौष कृष्ण द्वितीया को त्रिभुवन, नभ से जय-जय गुंजाये।।
हम अर्घ चढ़ाऐं मिलकर, जय-जय हो ज्ञानकल्याण। हम सब...

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

समवशरण विघटाकर जिनवर, गिरी सम्मेदशिखर आये।
चौथे शुक्ल ध्यान के द्वारा, कर्म अघाति विनशाये।।
धन्य-धन्य मल्लि जिन, जिनने पंडित-पंडित मरण किया।
फागुन सुदी पंचम को प्रभु ने, मुक्ति वधू का चयन किया।।
हम अर्घ चढ़ाऐं मिलकर, जय-जय हो मोक्षकल्याण। हम सब...

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां[2] मोक्षमंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

---

1. फा. कृ. 12 ति. प. ह.पु. मार्गशीर्ष शु. ।। म.पु., 2. फा. कृ.-5 ति.प., फा.कृ.-7 म.पु.

दोहा : कर्म मल्ल को जीतने करता शांतिधार।
मल्लिकादि बहु पुष्प की पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : बालयति नररत्न हैं, मल्लिनाथ भगवान।
आप नाम जयमाल है, शाश्वत सौख्य निधान॥

(शंभु छंद)

हम मल्लिनाथ तीर्थंकर के, चरणों में चित्त लगाते हैं।
चित की चिंता हरने वाले, चिंतामणि प्रभु को ध्याते हैं॥
प्रभु आप कहायें बालयति, पाये मुनि बन कैवल्यमति।
निज दिव्यदेशना में देते, भव्यों को सम्यग्ज्ञानमति॥1॥

रत्नत्रय व्रत साधा प्रभु ने, जिससे तीर्थंकर पद पाया।
रत्नत्रय का तेला करके, त्रिभुवन पूजित जिनपद पाया॥
प्रभु का जीवन यह बतलाता, जो रत्नत्रय व्रत करता है।
वो निश्चय रत्नत्रय पाकर, त्रय छत्रपति पद वरता है॥2॥

प्रभु द्वादश धर्म सभाओं को, शुभ द्वादशांग उपदेश कहे।
उसमें उपासकाध्ययन अंग, श्रावक आचार विशेष कहे॥
जिनवर की जिनपूजा विशेष, शुभ दान महान बताया है।
इक्कीस प्रकार पूजा विधि से, जीवन कल्याण सिखाया है॥3॥

जो जिन प्रतिमा बनवाता है, जिनबिम्ब प्रतिष्ठा करता है।
वो जिन तीर्थंकर पद को पा, क्षायिक नव लब्धी वरता है॥
जिन मंदिर बनवाने वाला, निश्चय मुक्ति पद पाता है।
जो जिनगृह धवल कराता है, उसका यश बढ़ता जाता है॥4॥

जो श्रेष्ठ सिंहासन दान करे, वो चक्री पद को पाता है।
जो मानस्तंभ बनाता है, वो जग में नाम कमाता है॥

मंदिर में शिखर बनाये जो, वो पुण्य शिखर को वरता है।
कलशारोहण जो स्वयं करे, वो निधिपति हो जिन बनता है॥5॥

जो करें भव्य ध्वज आरोहण, नव निधियाँ उसकी शरणा लें।
वो षट् खंडों का स्वामी हो, त्रिभुवन में यशकीर्ति फैले॥
तोरण रंगावली आदिक से, जो जिनमंदिर शोभित करता।
वो अतिशय कारक लक्ष्मी पा, श्री तीर्थंकर का पद वरता॥6॥

जो मंगल दर्पण भेंट करे, वो दर्पणवत निर्मल होवे।
मंगल झारी को चढ़ा भव्य, कमनीय सुभग सुन्दर होवे॥
जो कलश जिनालय में देवे, वो क्लेश कषायें हर लेवे।
जो थाली मंगल भेंट करे, वो शत्रु का मद हर लेवे॥7॥

जो तुरही मंगल भेंट करे, उसकी कीर्ति त्रिभुवन गाये।
जो श्रेष्ठ चंदोबा दान करे, वो ऋद्धिधर ऋषि बन जावे॥
जो छत्र सुमंगल भेंट करे, वो छत्र त्रयपति होता है।
जो घंटा मंगल भेंट करे, वो दिव्यध्वनिपति होता है॥8॥

जो सुन्दर आठों प्रातिहार्य, तीर्थंकर प्रभु को भेंट करें।
सब ऋद्धि सिद्धियाँ उसे मिले, षट् ऋतुओं के फल-फूल खिले॥
इस विध तुमने हे मल्लि प्रभो ! जिन पूजा का फल बतलाया।
फिर संवलकूट में पहुँच प्रभो, निर्वाण धाम को अपनाया॥9॥

हे नाथ ! हमें वह शक्ति दो, हम भी ऐसा शुभ दान करे।
जब तक ना मुक्ति मिले हमको, अविराम आपका ध्यान करे॥
प्रभु के पाँचों कल्याणक ध्या, हम अपना भी कल्याण करें।
त्रय 'गुप्ति' से निज कर्म नशा, हम मुक्तिराज अविराम वरें॥10॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : मल्लिनाथ भगवान से मिले यही वरदान।
प्रभु दर्शन होवे सदा पाऊँ पद निर्वाण॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा

(गीता छन्द)

श्री वीतरागी हे विरागी ! नमन हम तुमको करें।
मुनिनाथ मुनिसुव्रत प्रभु शुभ अर्चना तेरी करें।।
हम हैं प्रभु अल्पज्ञ सेवक गुण तेरे जाने नहीं।
आह्वान करते हैं विनय से अर्चना जाने नहीं।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

जन्म-जरा औ मरण विनाशे मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
निर्मल जल सा जीवन पाकर निज को पावन किया विभो।।
भाव बने तुम सम ही निर्मल ऐसी शक्ति जगा देना।
रत्नत्रय पा जायें हम भी मुक्तिद्वार दिखा देना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप विनाशक हो तुम मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
समता अमृत चंदन देते कर्म दाह से मुक्त विभो।।
चंदन चरण चढ़ाते स्वामी शीतल हमें बना देना। रत्नत्रय...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद के धारी हो तुम मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
अक्षय पद के दाता हो तुम अक्षय सुख से युक्त विभो।।
उज्ज्वल तंदुल चरण चढ़ाते निज सम हमें बना लेना। रत्नत्रय...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामबाण विध्वंसक हो तुम मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
मुक्ति रमापति हो जिनवर मन्मथ किंकर स्वयमेव विभो।।
चम्पा सुमन चढ़ायें प्रभुवर मन्मथ रोग मिटा देना। रत्नत्रय...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा वेदनी रोग निवारक मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
तुम सम सुख को पाने तरसे भविजन सब स्वयमेव विभो॥
सरस मधुर नैवेद्य चढ़ायें क्षुधा-तृषा विनशा देना।
रत्नत्रय पा जायें हम भी मुक्ति द्वार दिखा देना॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानरवि हे संतशिरोमणि ! मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
मोह तिमिर को दूर भगाता ज्ञानदीप स्वयमेव विभो॥
भक्ति भाव से दीप चढ़ायें रागद्वेष भगा देना। रत्नत्रय...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म के दाहक स्वामी मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
शुक्ल ध्यान की अग्नि में ये कर्म जले स्वयमेव विभो॥
श्रेष्ठ सुगंधित धूप खिरायें ध्यानाग्नि प्रगटा देना। रत्नत्रय...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष सुफल को पाने वाले मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
रत्नत्रय का बीज लगाकर मोक्ष लहा स्वयमेव विभो॥
केला आम सरस फल लायें तुम सम हमें बना देना। रत्नत्रय...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म रहित पद के स्वामी हो मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
आप गुणों को हम क्या जानें हो विशाल स्वयमेव विभो॥
भाव सहित हम अर्घ चढ़ायें तुम सम भाव जगा देना। रत्नत्रय...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत भगवान के पंचकल्याणक

(जोगीरासा छंद)

श्रावण कृष्णा द्वितीया के दिन, प्रभु माँ के उर आये।
रत्नवृष्टियाँ हुई मनोहर, सारा जग हर्षायें॥

मंगलकारी सोलह स्वप्ने, पद्मा माता देखें।
परम हर्ष पाया माता ने, जिनवाणी उल्लेखे।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायाम् गर्भमंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

वदि वैशाख दशम को सुरगण, जन्म कल्याण मनायें।
सुरगण आये प्रभु को लेकर, पांडुकवन ले जायें।।
न्हवन कराके बाल प्रभु का, तांडव नृत्य रचाये।
छाई खुशियाँ सुमित्र नृपघर, भव्य सभी हर्षायें।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

तप करने मुनिसुव्रत जिनवर, राज तजे वन जायें।
सर्व परिग्रह तजकर स्वामी, महाव्रती कहलाये।।
वदि वैशाख दशम को स्वामी, चौथा ज्ञान जगाये।
तप कल्याण मनाकर हम सब, प्रभु सम तप अपनाये।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

(नरेन्द्र छंद)

चार घातिया कर्म जलाकर केवलज्ञानी हुए थे।
वदी वैशाख नवम के शुभ दिन जिन सर्वज्ञ हुए थे।।
मुनिसुव्रत जिनवर का लगता समोशरण मनहारी।
धर्मसभा में प्रथम इंद्र भी बना वहाँ प्रतिहारी।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

---

1. फा. कृ. 6, मा. शु. 5, चै. कृ. 10 (ति. प.), (ह. पु.), (म. पु.)

छंद : जोगीरासा

फागुन कृष्णा बारस के दिन, अष्ट कर्म विनशाया।
सकल करम को नाश जिनेश्वर, सिद्ध रूप को पाया॥
मोक्ष गमन का उत्सव करने, सुर धरती पर आयें।
सर्व विघ्न परिहारक प्रभु को, लाडू अर्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : सर्वदोष की शांतिहित, करें नीर की धार।
जीवन सुमन विकास हित, सुमनावली मनहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : मुनिसुव्रत जिनदेव जी, धर्मतीर्थ आधार।
गायें हम जयमालिका, होवे बेड़ा पार॥

(शंभु छंद)

वह राजगृही धन भाग हुई, जहाँ मुनिसुव्रत अवतार लिया।
खुशियाँ छाई इस भूतल पर, अरु दुखियों का उद्धार हुआ।
तव प्रथम दर्श पा इंद्राणी. सम्यग्दर्शन से युक्त हुई।
जिन बालरूप अवलोकन कर, वह नारी वेद से मुक्त हुई॥1॥

बाहर तरसे देवेन्द्र मचल, पा जाऊँ शुभ दर्शन इक क्षण।
मनहर सुंदर छवि पर तेरी, कर लिए सहस्र नयन तत्क्षण॥
अभिषेक हुआ जो मेरु पर, हम उसको कैसे व्यक्त करें।
मुनि आदि वहाँ अभिषेक देख, निज शुद्ध भाव अभिव्यक्त करें॥2॥

आभा है नीलमणि जैसी, जो शांति सुपथ दर्शाती थी।
धनु बीस प्रमित सुन्दर काया, लख जगती सब हर्षाती थी॥
जब मोह वेग अति प्रबल रहा, बहुकाल गँवाया भोगों में।
स्वर्गों में नर तन को तरसे, वो भूल गए सब भोगों में॥3॥

इक दिन जब हाथी दुखित हुआ, तब कारण उसका जान लिया।
तब उसको शांत चित्त करने, आतमहित का सद्ज्ञान दिया॥
प्रभु को वैराग्य हुआ तत्क्षण, धन-वैभव नश्वर भान हुआ।
निज देह उन्हें एक जेल लगी, जग के स्वारथ का ज्ञान हुआ॥4॥

सुत साँकल है जग बंधन में, पत्नी निज दुःख की खानि है।
बंधु बंधन के मूल सभी, आयु भी चपल सयानी है॥
यह जान छोड़ सब जग वैभव, आतमहित हेतु विहार किया।
अरु छोड़ दिया सब राग-द्वेष, कर्मों पर प्रबल प्रहार किया॥5॥

चऊ घाति कर्म का नाश किया, तब उनने त्रिभुवन जान लिया।
प्रभु धर्मतीर्थ अमृत बांटे, सबने ज्ञानामृत पान किया॥
सब द्वेष भाव को भूल गए, करुणा ने हर घर वास किया।
श्री रामचंद्र और वज्रकर्ण ने, सम्यक् ज्ञान विकास किया॥6॥

सम्मेदाचल से जिनवर ने, मुक्ति पथ पर अभियान किया।
निज में निज को निज से पाकर, निज आतम का सम्मान किया॥
हम क्या तेरा गुणगान करें, इससे अपना उत्थान करें।
'गुप्तिनंदी' को मुक्ति मिले, हम धर्मतीर्थ में ध्यान धरें॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : मुनिसुव्रत भगवंत के, गुण गायें दिन-रात।
वंदन पूजन भक्ति कर, तुम्हें नमायें माथ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री नमिनाथ पूजा

(गीता छंद)

नरनाथ मुनि नागेन्द्र नित, नमते प्रभो नमिनाथ को।
सुरभित सुमन ले पूजते, साधें परम पुरुषार्थ को।।
द्वय हाथ जोड़ अनाथ हम, तव पाद में नतमाथ हैं।
मन में वचन में श्वास में, नमिनाथ ही नमिनाथ है।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

मंत्रों से मंत्रित जल लेकर, श्री जिन का अभिषेक करें।
शुभ भावों से अर्चन करके, जन्म जरादिक रोग हरें।।
समोशरण लक्ष्मी के स्वामी, नमि जिनेश का शुभ अर्चन।
हाथ जोड़ हम द्रव्य चढ़ायें, करते बारम्बार नमन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में सबसे शीतल, जिनमत शाश्वत सुख दाता।
जिन चरणों में चंदन लेपन, सर्व ताप को विनशाता।। समोशरण..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दुःखों ने घेरा भगवन्, भव-भव में भटकाया है।
अक्षय सुख की अभिलाषा से, अक्षत आज चढ़ाया है।। समोशरण..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम विजेता भगवन् सन्मुख, काम नशाने आये हैं।
पुष्पों सा सुरभित जीवन हो, पुष्प चढ़ाने आये हैं।। समोशरण..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बूँदी वा श्रीखण्ड जलेबी, भर-भर थाल चढ़ाते हैं।
ले नैवेद्य क्षुधा के जेता, परम वैद्य को ध्याते हैं।। समोशरण..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगह मिले ना कोटी सूर्य को, केवलज्ञान सूर्य आगे।
ज्ञान सूर्य को दीप चढ़ायें, हममें ज्ञान कला जागे॥
समोशरण लक्ष्मी के स्वामी, नमि जिनेश का शुभ अर्चन।
हाथ जोड़कर द्रव्य चढ़ायें, करते बारम्बार नमन॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मनाश हित धूप पात्र में, सुरभित धूप चढ़ाते हैं।
प्रभु भक्ति कर जिनगुण सौरभ, हम जग में फैलाते हैं॥ समोशरण..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का फल है शिवफल, उसको लेने आये हैं।
इस विध हमने आमादिक् बहुफल के थाल सजाये हैं॥ समोशरण..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्मों को नमा नमिजिन, पद अनर्घ्य के योग्य बने।
उनको अर्घ्य मनोज्ञ चढ़ा हम, पद अनर्घ्य के योग्य बने॥ समोशरण..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्ज- धन्य-धन्य आज घड़ी)

आओ-आओ सभी नमिनाथ गुण गाऐं।
कल्याणक मनाऐं पंचकल्याणक मनाऐं॥
वप्रिला माँ जगमात कहाई, गर्भ में आये नमिनाथ जिनराई।
तिथि अश्विन वद द्वितीया आई, स्वर्गपुरी गाये गीत बधाई॥
अर्घ्य चढ़ा गर्भ कल्याणक मनाऐं.....
कल्याणक मनाऐं पंच कल्याणक मनाऐं॥

ॐ ह्रीं अश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

जिस नगरी मल्लि प्रभु जन्मे थे, उस मिथिला नमिनाथ जन्मे थे।
दशमी वद आषाढ़ निराली, जन्म कल्याणक दे खुशहाली॥
अर्घ्य चढ़ा जन्मकल्याणक मनाऐं.....

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

आई दशमी आषाढ़ कृष्णा, श्रमण बने प्रभु तज भोग तृष्णा।
नमिजिन अब मुनिराज कहाये, आतापनादिक योग लगाये।।
अर्घ्य चढ़ा तपकल्याणक मनाऐं.....

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

मगसिर सुद ग्यारस तिथि न्यारी, बन गये प्रभु छ्यालीस गुणधारी।
तप-तप कर नव वर्ष बिताये, फिर अक्षय नव लब्धि वे पाये।।
अर्घ्य चढ़ा ज्ञानकल्याणक मनाऐं.....

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

वैशाख कृष्णा चौदस आई, तब जिनवर ने मुक्ति श्री पाई।
कूट मित्रधर पावन धरा है, जिसने सबको पावन करा है।।
अर्घ्य चढ़ा मोक्षकल्याणक मनाऐं.....

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दोहा : **नमिजिन के पद युगल में, शांतिधार सुखकार।**
पुष्पहार से अर्चना, दुःखहारी सुखकार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **नमिजिन के दरबार में, नित हो दान अनंत।**
जयमाला पढ़कर सभी, बनें मुक्ति के कंत।।

(शंभु छंद)

जिनके गुण की हम भव्यकमल, गुणमाल निरंतर गाते हैं।
ऐसे जिनवर नमिनाथ प्रभो, भक्तों का भाग्य जगाते हैं।।

1. चै. शु. 3 ति.प. ह. पु.

नृपराज विजय के कुल दीपक, बनकर सारा कुल चमकाये।
केवलज्ञानी बन ज्ञान सूर्य, प्रभु धर्मसार को बतलाये॥1॥

जिनवर वाणी से प्रकटा है, शुभ दान चार विध होते हैं।
शुभ शास्त्र-अभय-औषध-अहार, दे भव्य पाप को खोते हैं॥
सब दानों में भी श्रेष्ठ दान, आहार दान कहलाता है।
श्रद्धादि सात गुण युत श्रावक, उत्तम दाता कहलाता है॥2॥

सम्यक्दृष्टि व्रत शीलवान, सत्पात्र श्रेष्ठ कहलाते हैं।
मुनिवर, श्रमणी, क्षुल्लक, आदि त्रय विध सत्पात्र कहाते हैं॥
श्रावकगण नवधा भक्ति सहित, इनका आहार कराते हैं।
अपने घर के द्वारे प्रतिदिन द्वाराप्रेक्षण हित आते हैं॥3॥

मुनि मुद्रा लखते ही श्रावक, पड़गाहन हित यह विनय करें।
हे नाथ ! नमोस्तु अत्र-अत्र, तिष्ठो-तिष्ठो यह अरज करें॥
त्रय प्रदक्षिणा दे शुद्धि कहे, गुरु को कुटिया में ले जाऐं।
हे नाथ ! विराजो उच्चासन, कहकर मन ही मन हर्षाऐं॥4॥

पद प्रक्षालन जल आदिक से, करके गंधोदक ग्रहण करें।
आठों द्रव्यों से पूजन कर, वंदन कर निज भव भ्रमण हरें॥
शुचि सरस मनोहर भोजन की, सुन्दर सी थाल दिखाते हैं।
मन-वच-तन भोजन की शुद्धी, कह वे आहार कराते हैं॥5॥

आहार दान देने वाले, नरकों में नहीं भटकते हैं।
जिसको नरकों में जाना वो, आहार देख नहीं सकते हैं॥
कर्मान्तराय का क्षय उपशम, इस श्रेष्ठ दान से बढ़ता है।
निर्धन भी धन-वैभव पाता, सुखकोष निरंतर बढ़ता है॥6॥

नृप वज्रजंघ ने दान दिया, जो आदिनाथ तीर्थेश बने।
श्रीमति श्रेयांस राज बनकर, आहार दान तीर्थेश बने॥
श्रीषेणराज ने दान दिया, वो शांतिनाथ जिनराज बने।
अनुमोदन करके पापक भी, श्री धन्य कुँवर मुनिराज बने॥7॥

जो सम्यक्‌दृष्टि दान करे, वो स्वर्गों के सुख पाता है।
मिथ्यात्वी भी पा भोगभूमि, दुर्गतियों से बच जाता है॥
जो पंथवाद तज निश्छल हो, इस दानमार्ग को अपनाये।
उसका यह भव तो सुधरे ही, परभव स्वयमेव सुधर जाये॥8॥

इस विध नमिजिन जिनधर्म ध्वजा, हर नगर-डगर फहराते हैं।
फिर शेष अघाति कर्म नशा, शाश्वत सुख शिव सुख पाते हैं॥
प्रभु तुम यशगाथा गाने से, सारा अपयश मिट जाता है।
यह 'सुयशगुप्त' शिव यश पाने, यशगान तुम्हारा गाता है॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : तीन गुप्ति को धर सकें, नमि जिनेश दो साथ।
मोक्ष महापथ हो सुलभ, यही विनय है नाथ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री नेमिनाथ पूजा

(गीता छन्द)

नेमि प्रभु के चरण को करता सदा वंदन यहाँ।
जिन धर्म जिन आगम प्रवर्तक का करें अर्चन यहाँ॥
समुद्रजय के पुत्र तुम माता शिवा के लाल हो।
आह्वान करता मैं तिहारा ब्रह्मचारी बाल हो॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

शुचि नीर से होती प्रभु काया मेरी शुचियामयी।
यह शौच जल ले तज रहा मैं जिन्दगी संकटमयी॥
नेमिप्रभु की अर्चना मैं भाव से करता रहूँ।
मेरे करम का नाश हो मैं आत्म गुण वरता रहूँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संतापहारी सौख्यकारी भक्तिमय चंदन अहा।
चंदन चरण अर्पित करूँ मेटो जगत बंधन महा॥
नेमिप्रभु की अर्चना मैं भाव से करता रहूँ।
मेरे करम का नाश हो मैं आत्म गुण वरता रहूँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख का कभी क्षय हो नहीं ऐसा मुझे वरदान दो।
अक्षत चढ़ाऊँ भाव से अक्षय महासुख दान दो॥ नेमिप्रभु की..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं काम भोगों में फँसा पाया चतुर्गति वास को।
मैं भी चढ़ाऊँ पुष्प जिन मुक्ति महल में वास को॥ नेमिप्रभु की..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय रसन के वश हुआ जीवन सभी निष्फल गया।
नैवेद्य प्रभु चरणों चढ़ा जीवन मेरा निश्छल भया॥ नेमिप्रभु की..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान नाशक सुख प्रदाता ज्ञान ज्योति महान् है।
दीपों से करता आरति मिट जाये मम अज्ञान है॥ नेमिप्रभु की..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यानाग्नि से जिसने किया है दग्ध कर्म समूह को।
मैं भी चढ़ाऊँ धूप नशने पाप कर्म समूह को॥ नेमिप्रभु की..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल क्रियाओं से सदा ही पाप का विध्वंस हो।
पूजा करूँ फल से प्रभो निज मोह-माया ध्वंस हो॥ नेमिप्रभु की..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं जल फलादिक द्रव्य लेकर पूजता प्रभु चरण को।
मम कर्म सारे नाश हो पाऊँ महापद शरण को॥ नेमिप्रभु की..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक *(नवसखी छंद)*

कार्तिक शुक्ला षष्ठी को, जब नाथ गर्भ में आये।
सारा भूमंडल हर्षा, सुर रत्नों को बरसाए।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। 1 ।।

(शंभु छन्द)

जन्मे थे श्रावण शुक्ला छठ, प्रभु नेमि ने अवतार लिया।
सारा भूमंडल हर्षित था, देवों ने जय-जयकार किया।।
माँ शिवादेवी धनभाग हुई, शिशु निरख-निरख मन हर्षाए।
बालक की मधुर हँसी लखकर, इंद्राणी माँ के गुण गाये।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठम्यां[1] जन्ममंगलमंडिताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2 ।।

(सखी छन्द)

श्रावण शुक्ला षष्ठी को, वैराग्य हुआ प्रभुवर को।
धारा उनने मुनि पद को, और छोड़ दिया राजुल को।।
नेमीश्वर को सब ध्याए, सुर तप कल्याण मनाएँ।
मनहर विमान ले आए, सब गिरनारी पर जाएँ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

(पद्धरी छन्द)

कैवल्य ज्ञान प्रभु का महान, है तीन लोक का विशद ज्ञान।
पूजा करते सब बार-बार, पाने वो भी अध्यात्म सार।।

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लाप्रतिपदायां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4 ।।

(सखी छन्द)

सितषाढ़ सप्तमी प्यारी, बन गए प्रभु त्रिपुरारी।
निर्वाण कल्याण मनाए, हम पूजें ध्यान लगाएँ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां[2] मोक्षमंगलमंडिताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5 ।।

---

1. वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, ति.प. ह. पु., 2. आ.शु. 8, ह.पु., आ. कृ.8 ति.पु.

दोहा : प्रभुपद में जलधार कर, पाऊँ शांति अपार।
जिनपद में अर्पण करूँ, सर्वपुष्प के हार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : श्याम वर्ण सुंदर सुखद, हो मनोज्ञ तन धार।
जयमाला प्रभु की पढ़ूँ, होने भवदधि पार।।

चौपाई

नेमि प्रभुजी गर्भ में आए, जीव जगत के शांति पाए।
मात शिवा से जन्म लिया है, उनको जग में धन्य किया है।।1।।
अतिशय रूप गंध तन धारा, जिसमें नाहि पसेव निहारा।
प्रिय-हित वचन अतुल बलधारी, लक्षण सहस अष्ट तनधारी।।2।।
बाल प्रभु का न्हवन जो करता, वह पापों का क्षय है करता।
प्रभुवर का जब यौवन आया, मात-पिता ने ब्याह रचाया।।3।।
शौरीपुर में ब्याहन आए, देख पशु बंधन घबराए।
त्याग दिया माया ममता को, धार लिया संयम समता को।।4।।
त्यागी राजुल जैसी रानी, तप करने की मन में ठानी।
ध्यानानल से कर्म जलाए, प्रभुजी केवलज्ञान उपाए।।5।।
इनकी महिमा अद्भुत न्यारी, गगन गमन दिखता सुखकारी।
सुभिक्षता शत योजन तक है, धन निर्धन में नहीं फरक है।।6।।
हित उपदेश दिया जिनवर ने, षड् द्रव्यों का सप्तभंग में।
योग निरोध किया प्रभुवर ने, पाया आत्मसुखों को उनने।।7।।
शेष अघाति कर्म विनाशा, पाया मोक्षमहल में वासा।
ऐसे प्रभु को वंदन करता, जिससे कर्मों का क्षय करता।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अरिष्ट नेमि अरहंत के, गुण हैं अपरंपार।
तव गुण 'राज' भी पा सके, कर ले निज उद्धार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ पूजा (शंभु छन्द)

हे पार्श्वनाथ ! आनंदधाम, महिमा महान दुःख क्षयकारी।
गुण रत्नपुंज करुणा निकुंज, दुःख द्वेष मुक्त संकटहारी।।
मैं भाव सहित द्रव्यों को ले, जिनवर की अर्चा करता हूँ।
मन मंदिर में थापन कर मैं, प्रभु गुण की चर्चा करता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल निर्मल लेकर आया मैं, निर्मल भावों को साथ लिए।
मैं निर्मल दृष्टि पा जाऊँ, भवि निर्मलता के साथ जिएँ।।
निर्मल गुणधारक पार्श्वप्रभु, मम दृष्टि निर्मल कर देना।
मैं जन्म-जरा-मृत नाश करूँ, ऐसी वह शक्ति भर देना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध मनोहर सुरभित सी, चंदन केसर शुभ ले आए।
जिन भक्ति से मन शीतल हो, सब भव्य कमल सम खिल जाएँ।।
शीतलतादायक पार्श्वप्रभु, मेरी भव दाह मिटा देना।
मैं उत्तम चंदन भेंट करूँ, मम भव आताप मिटा देना।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शालि सुगंधित अक्षत के, मैं अक्षत पुंज चढ़ाता हूँ।
अक्षय गुणधारी जिनवर की, पूजा से चिर सुख पाता हूँ।।
अक्षयपद धारक पार्श्व प्रभु, मैं भी निजपद में आ जाऊँ।
क्षत-विक्षत पद का मोह छोड़, निज अक्षयपद को पा जाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जूही पंकज सेवंती ले, मैं सुमन सुगंधित चढ़ा रहा।
निज हृदय कमल को चढ़ा चरण, खुद को पापों से छुड़ा रहा।।
हे कामविजेता ! पार्श्वप्रभु, मैं चिर व्याधि को दूर करूँ।
मम ज्ञान सुमन झट खिल जाएँ, मैं मोहभाव को चूर करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी बरफी मोदक आदिक, नैवेद्य सुगंधित सरस लिए।
संग निज श्रद्धा को चरु बना, प्रभु के चरणों में परस दिए॥
हे क्षुधाविजेता ! पार्श्व प्रभु, मैं इस व्याधि से क्षुब्ध हुआ।
सत्ज्ञान चरु पाया मैंने, तब क्षुधाकर्म अवरुद्ध हुआ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतबाती औ बहुरत्नों के, शुभ दीप मनोहर ले आया।
निज आतम दीप जलाकर के, जिन पूजा कर अति हर्षाया॥
हे मोहविनाशक ! पार्श्व प्रभु, मैं अंधकार में भटक रहा।
मैं मोह महातम नाश करूँ, अब तक क्यों इसमें अटक रहा॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध मनोहर अगर-तगर, अग्नि में धूप चढ़ाता हूँ।
जिन भक्ति कर ज्ञानाग्नि में, कर्मों की धूल उड़ाता हूँ॥
वसु कर्मविनाशक पार्श्व प्रभु, मैं कर्मों से अति त्रस्त हुआ।
वह ज्ञान सुधा मैं माँग रहा, जिसके बिन जग में व्यस्त हुआ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अनार सरस फल ले, मैं प्रभु चरणों में आता हूँ।
भक्ति करता अंतर्मन से, जिन चरणों को मैं ध्याता हूँ॥
हे शिवफलधारक ! पार्श्व प्रभु, अब तक पापों का बोझ सहा।
मैं भी शिवफल को पा जाऊँ, वह श्रुत ज्ञानांकुर खोज रहा॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-चंदन आदि द्रव्य लिए, मैं हर्षित हो नित आता हूँ।
ये अष्टद्रव्य संग भाव मिला, जिनवर को अर्घ चढ़ाता हूँ॥
अविचल पदधारी पार्श्व प्रभु, मैं भी वह शक्ति जगाऊँगा।
जिस पद की अब तक चाह रही, उस पद अनर्घ्य को पाऊँगा॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (सखी छंद)

वैशाख कृष्ण द्वितीया में, प्रभु आये वामा उर में।
पितु अश्वसेन हर्षाये, काशी में खुशियाँ छाये॥

बहु देवी सुर बालायें, माँ की सेवा में आयें।
उत्तम द्रव्यों को लाये, भक्ति से गोद भरायें॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

जहँ जन्मे थे प्रभु पारस, वह उत्तम नगर बनारस।
शुभ पौष कृष्ण एकादश, त्रिभुवन बोले जय पारस॥
सौधर्म कहे हे माता !, मैं तुमको शीश झुकाता।
हमको निज लाल दिखा दो, पारस के दर्श करादो॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

वह जन्म तिथि सुखदायी, जो तप तिथि बनकर आयी।
वैराग्य भाव जिन भायें, जग वैभव तजके जाये॥
आहार हुआ जिस घर में, आश्चर्य हुये तत्क्षण में।
जो दाता प्रथम कहाये, वो प्रभु संग शिवपुर जाये॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

भीमावन में प्रभु आये, वे अविचल ध्यान लगाये।
कमठासुर सम्बर आया, दुःसह उपसर्ग रचाया॥
धरणेन्द्र प्रिया संग आये, प्रभु का उपसर्ग मिटाये।
वदी चैत चतुर्थी आयी, अर्हंत बने जिनरायी॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

प्रभु ने वसु कर्म नशाए, निज आतम ध्यान लगाए।
सम्मेदगिरि पर जाये, मुक्तिश्री को अपनाएँ॥
निज समोशरण विघटाये, प्रभु सिद्ध लोक में जाये।
श्रावण सुदी सप्तमी आये, हम मोक्ष महोत्सव ध्यायें॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

---

1 चै.कृ. 14 म.पु.।

दोहा : अखिल विघ्न की शांतिहित, करूँ विनत जलधार।
नील कृष्ण बहु पद्म की, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : पार्श्व प्रभु को नमन कर, जिनभक्ति मन धार।
जयमाला मैं पढ़ रहा, करूँ कर्म पर वार॥

(शंभु छंद)

वाराणसी नगरी धन्य हुई, जहाँ पारस रवि था उदित हुआ।
पितु अश्वसेन नृप हर्षाए, माँ वामा का मन मुदित हुआ॥
सौधर्म आदि वसु इंद्रों के, तत्क्षण ही आसन कम्पाए।
शुभ धन्य घड़ी वह आई है, मन ही मन सब जन हर्षाए॥1॥

शचि जिन बालक को निरख-निरख, निर्मल सम्यक्त्व बनाती है।
मुक्तिपथ के अनुगामी की, सेवा से चिर सुख पाती है॥
शचि संग सुमेरु पर जाकर, सौधर्म वहाँ अभिषेक करे।
इन्द्राणी भी क्षीरोदधि ले, जिन बालक का अभिषेक करे॥2॥

सब देवों ने उद्घोष किया, ये पार्श्व प्रभु कहलाएँगे।
इनके चरणों में आकर के, कई जन कुंदन बन जाएँगे॥
इक दिन हाथी पर हो सवार, पारस प्रभु वन को निकल गए।
जग की जड़ता चंचलता लख, वे मन ही मन में विकल भए॥3॥

वन में इक मूरख तापस जो, अग्नि में खुद को जला रहा।
निज पर बहु जीवों को दुःख दे, संसार भ्रमण में भुला रहा॥
प्रभु ने उसको संकेत दिया, अज्ञान मान को भंग किया।
अति त्रस्त दुखित थे नागयुगल, उनको भक्ति का रंग दिया॥4॥

इक दिन प्रभु को वैराग्य हुआ, संसार अथिर यह जान लिया।
द्वादश अनुप्रेक्षाएँ भाकर, मुक्तिपथ पर अभियान किया॥
विंध्यावली में आकर ऋषिवर, भीमा अटवी में ध्यान धरा।
तत्क्षण दस भव का वैरी वह, कालासुर शम्बर आन मरा॥5॥

बिन कारण ही बहु क्रोधित हो, उपसर्ग वहाँ प्रारम्भ किया।
ओले गिरी शोले फेंक-फेंक, संकट देना आरंभ किया॥
प्रभु पर संकट हो रहा जान, पदमावती व अहिपति आये।
पदमावती प्रभु को शीश धरे, धरणेन्द्र देव फण फैलाये॥6॥

तत्क्षण ही केवलज्ञान हुआ, रेवा सरिता के शुभ तट पर।
विंध्यावली पावन धन्य हुआ, सद्ज्ञान दिवाकर को पाकर॥
जिनवर तुमरी महिमा न्यारी, अतिशय शक्ति अद्भुत भारी।
इस भरत क्षेत्र में सर्वाधिक, पारस प्रतिमाएँ सुखकारी॥7॥

चापानेरी और पार्श्वगिरि, जिन्तूर, चूलगिरि, नैनागिर।
अहिक्षेत्र नागफणी कुन्थुगिरी, अंदेश्वर औ सम्मेदशिखर॥
चिंतामणि नवग्रह धर्म तीर्थ, चँवलेश्वर रोहतक मुक्तागिर।
कचनेर बनारस मक्सी जी, सहस्रफणी हे पद्मेश्वर॥8॥

हे प्रभु ! अणिन्दा आदि में, तेरी शोभा महिमा भारी।
कलिकुंड रविव्रत आदि से, दुःख मेट रहे सब नर-नारी॥
जिनवर तुम गुण महिमा भारी, मैं कह न सकूँ हे त्रिपुरारी।
'गुप्ति' तुम गुणवंदन करके, बन जाए बस समताधारी॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता : हे तिखाल वाले ! हे अंकेश्वर ! हे विन्ध्येश्वर ! पार्श्व प्रभु !
कल्याणों के घर, दो गुप्ति वर, भाव सहित मैं नमन करूँ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

कमठ विजेता पार्श्व प्रभुवर बन गए केवलज्ञानी।
गणधर ने सुन दिव्य ध्वनि को गूँथी फिर जिनवाणी॥
वचनों से आह्वानन करते मन-मंदिर में आओ।
हृदय-कमल में आकर मेरे पारस मुझे बनाओ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छन्द)

त्रय लोकों में परिभ्रमण किया, पर निज स्वरूप ना पहचाना।
जल प्रासुक चरणों में लाया, मैं बना मुक्ति का दीवाना॥
पारसमणि में वह गुण है जो, लोहे को स्वर्ण बनाता है।
पारस की पारसमणि पाकर, वह नर पारस बन जाता है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संतप्त हृदय मिथ्यात्व भरा, प्रभु का स्वरूप ना पहचाना।
चंदन ले चरणों में आया, दुःखहर तुमको मैंने जाना॥ पारसमणि में..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयनिधि के स्वामी हो तुम, अक्षय पद तुमने है पाया।
अक्षय सुख से है जो वंचित, उनको सत्पथ है बतलाया॥ पारसमणि में..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों सा कोमल हृदय लिए, जो भक्त शरण में आता है।
प्रभु चरणों में वो पुष्प चढ़ा, निज आत्मब्रह्म को पाता है॥ पारसमणि में..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं दास बना था रसना का, नहीं प्रभु को मैंने पहचाना।
नैवेद्य समर्पण कर प्रभुवर, बन जाऊँ तेरा दीवाना॥ पारसमणि में..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दिखता जिसको यह जग, वह ही बनता है अज्ञानी।
सम्यक् श्रद्धा युत दीप चढ़ा, बन जाते नर सम्यक्ज्ञानी।।
पारसमणि में वह गुण है जो, लोहे को स्वर्ण बनाता है।
पारस की पारसमणि पाकर, वह नर पारस बन जाता है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों ने कष्ट दिया, नाना जन्मों में खूब ठगा।
प्रभु के चरणों में धूप चढ़ा, दूँगा कर्मों को रोज दगा।। पारसमणि में..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

समता मूरत प्रभु पारस के, चरणों में सुफल चढ़ाता हूँ।
मैं मुक्ति निकेतन का वासी, बन उत्तम शिवफल पाता हूँ।। पारसमणि में..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का थाल सजा, मैं द्वार तेरे नित आऊँगा।
भक्ति करके जिनलिंग धरूँ, मैं सीधा शिवपुर जाऊँगा।। पारसमणि में..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

सखी छंद (तर्ज : मन भजले...)

प्रभु प्राणत स्वर्ग से आए सुर-नर सब मिल हर्षाए।
वैशाख कृष्ण द्वितीया को वाराणसी नाचे गाए।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

(तर्ज : छोटी-छोटी गैया...)

वाराणसी नगरी में छाई है बहार, भक्तों के-3 मन में हर्ष अपार
पार्श्व प्रभु ने जन्म लिया, मात-पिता को धन्य किया।।
वाराणसी नगरी....

धन्य-धन्य वह दिन धन्य भगवान, पौष वदी ग्यारस दिन जान।।
वाराणसी नगरी....

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

(तर्ज : इतनी शक्ति..)

जब विरक्ति हुई थी प्रभु को, वेष मुनिपद का उनने है धारा।
तज दिया मोह-माया का बंधन, त्याग वैराग्य उनका सहारा।।
सर्व सिद्धों को भावों से वंदन, पँचमुष्टि से केशों का लोचन।
पौष कृष्णा की एकादशी को, कर दिया सर्वबंधन का मोचन।।
सर्व ऋद्धि के धारी प्रभू को, पूर्ण भक्ति से वंदन हमारा।।
तज दिया.....

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

सगला चालो रे समोशरण में होले-होले।
पारस की भक्ति में म्हारो मन डोले।।
चैत वदी चतुर्थी के दिन केवलज्योति पाई।
धर्मसभा में बैठ प्रभुजी ज्ञान सुधा बरसाई।। सगला...

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां[1] ज्ञानमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

(तर्ज : ऐ मालिक....)

श्री पार्श्वप्रभु को नमन, जो करते हैं मोक्ष गमन।
हम इन्हें ध्याएँगे, इनके गुण गाएँगे, मुक्ति पथ का करें हम चयन।
शुक्ल सावन की साते महा, कर्म बंधन सभी कट रहा-2
मोक्ष इनको मिला, सौख्य इनको मिला, भक्त भक्ति के हित आ रहा।
तेरी भक्ति से मिट जाएँ गम, मेरे नश जाएँ सारे करम।। हम...

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

---

1. चै.कृ. - 14 म.पु.।

दोहा : पार्श्वनाथ भगवान को, वंदन बारंबार।
गुण अनंत के तुम धनी, हो त्रिभुवन आधार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : चिंतामणि प्रभु पार्श्व के, गाऊँ गुण मनहार।
जयमाला नित जो पढ़े, पावे सुख भंडार॥

(शंभु छंद)

पारस जब प्राणत से आए, काशी नगरी के भाग्य जगे।
इंद्रों का आसन भी कम्पा, औ तीनलोक के भाग्य जगे॥
वामा माता अति धन्य हुई, पितु अश्वसेन भी मुदित हुए।
त्रिभुवन के स्वामी जन्मे जब, सब मन ही मन में मुदित हुए॥
ऐरावत गज पर हो सवार, अमरों की शुभ सेना आई।
शचि मायावी शिशु को लेटा, प्रभु को गोदी में ले आई॥1॥

प्रभु मिल जाते हैं जब उसको, हर्षित हो गिरि ले जाता है।
क्षीरोदधि का जल ले निर्मल, प्रभु का अभिषेक कराता है॥
हँसते-गाते वे देव सभी, बालक को वापस लाते हैं।
सौंपा जब मात-पिता को तब, वे फूले नहीं समाते हैं॥2॥

बीता बचपन बनकर कुमार, प्रभु गज पर सैर को जाते हैं।
था एक ऋषि वहाँ तप करता, प्रभु उसको यह समझाते हैं॥
जिंदा नागों को जला रहे, क्यों मिथ्या तप अपनाते हो।
तापस क्रोधित हो गया तभी, बोला क्या मुझे बताते हो॥3॥

मेरे तप का फल है कितना, मैं अभी तुझे समझाता हूँ।
यह लकड़ी चीरूँ देख अभी, कहाँ नाग तुझे बतलाता हूँ॥

अधमरे नाग-नागिन निकले, तापस का मद तब चूर हुआ।
नवकार सुनाया प्रभुवर ने, सुख उनको तब भरपूर हुआ॥4॥

वे पद्मावती धरणेन्द्र हुए, वह साधु असुर तन पाया है।
इक दिन प्रभु को वैराग्य हुआ, औ आतम ध्यान लगाया है॥
ध्यानस्थ प्रभु की शक्ति से, अरि का विमान अवरुद्ध हुआ।
मुद्रा लख अपने वैरी की, शठ कमठ व्यर्थ अतिक्रुद्ध हुआ॥5॥

पानी पत्थर अति बरसाए, डाकिन व्यन्तर से डरवाए।
तन में रहकर तन में न रहे, प्रभुवर केवल प्रज्ञा पायें॥
धरणेन्द्रासन था कम्पाया, तत्क्षण ही वह दौड़ा आया।
मम हितकारी प्रभु पारस पर, है भारी संकट की छाया॥6॥

धरणेन्द्र प्रिया संग आते हैं, और प्रभु पर छत्र बनाते हैं।
पद्मावती ने सिर उठा लिया, भक्ति गाथा हम गाते हैं॥
पारस की पावन धर्मसभा, सारे भूमंडल में विचरे।
जो शरणागत हो पारस का, उसका अंतस अतिशय निखरे॥7॥

सम्मेदशिखर आ जिनवर ने, सारे कर्मों का नाश किया।
परमौदारिक तन को तज कर, लोकाग्र क्षेत्र में वास किया॥
मेरा जीवन पारस सम हो, यह भाव हृदय में लाता हूँ।
पारस के पावन जीवन की, जयमाल विनय से गाता हूँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : पार्श्वनाथ भगवान का, करूँ सदा मैं ध्यान।
'क्षमा' भाव धारण करूँ, पाऊँ केवलज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री महावीर पूजा

शंभु छंद

श्री वीर जिनेश्वर ! हे जगदीश्वर ! हम तेरा यशगान करें।
हम करें वंदना रोज तेरी, जिनवर तेरा गुणगान करें।।
अंतर्मन में गुणथापन कर, हम तेरी महिमा गाएँगे।
है वाँछा मेरी ऐ जिनवर, तुम जैसा शिवपद पाएँगे।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

भक्ति गंगा का नीर, चरणन् ले आया।
हरूँ जन्म-जरा-मृत पीर, मन मेरे भाया।।
यह निर्मल जल ले वीर, तेरा ध्यान धरूँ।
श्री वीरप्रभु अतिवीर, तव यशगान करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदाह मिटाओ नाथ, चंदन अर्पित हो।
शुचि चंदन श्रद्धा साथ, आज समर्पित हो।।
भव ताप विजेता वीर, तेरा ध्यान धरूँ।। श्री वीर प्रभु....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत तंदुल हम लाय, श्रद्धा युक्त प्रभो।
अक्षय सुख हम पा जाय, कर्म विमुक्त विभो।।
अक्षय सुखकारी वीर, तेरा ध्यान धरूँ।। श्री वीर प्रभु....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे काम विजेता वीर, कमल चढ़ाता हूँ।
ले भक्ति कुसुम महावीर, चरण चढ़ाता हूँ।।
मैं हरूँ काम की पीर, तेरा ध्यान धरूँ।। श्री वीर प्रभु....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ले ज्ञान चरू मैं आज, प्रभु तुम गुण गाऊँ।
कर क्षुधा कर्म पर राज, तुम सम गुण पाऊँ।।
हे क्षुधा विजयी महावीर, तेरा ध्यान धरूँ।
श्री वीरप्रभु अतिवीर, तव यशगान करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम मोह तिमिर विनशाय, त्रिभुवन नाथ हुए।
तुमको शुभ दीप चढ़ाय, भक्त सनाथ हुए।।
हे मोह विजेता वीर, तेरा ध्यान धरूँ।। श्री वीर प्रभु....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मधुर सुगंधित धूप, तुमको अर्पित हो।
घट अगर-तगर के भूप, तुम्हें समर्पित हो।।
हे सिद्ध सन्मति वीर, तेरा ध्यान धरूँ।। श्री वीर प्रभु....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम शिवफल दायक नाथ, भव दुःख मेट लिया।
फल लेकर हो नत माथ, तुमको भेंट किया।।
दो मोक्ष सुफल हे वीर !, तेरा ध्यान धरूँ।। श्री वीर प्रभु....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद देव, तुम सन्मुख मिलता।
जो करे आपकी सेव, ज्ञान सुमन खिलता।।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ वीर, तेरा ध्यान धरूँ।। वीर प्रभु....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

चौपाई

सिद्धारथ घर खुशियाँ छाई, गर्भ में आए त्रिभुवन राई।
त्रिशला उर महावीरजी आए, देव-देवियाँ हर्ष मनाएँ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री वीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

त्रिशला माँ के भाग्य जगे थे, सिद्धारथ घर वाद्य बजे थे।
चैत सुदी तेरस का दिन था, वीर प्रभु ने जन्म लिया था॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अतिवीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

मगसिर कृष्णा दशमी आई, मुनि दीक्षा प्रभु के मन भाई।
मात-पिता जग वैभव छोड़ा, निज काया से नाता तोड़ा॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री सन्मतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

सुद वैशाख दशम सुखकारी, जिन सर्वज्ञ बने हितकारी।
प्रभु ने तीर्थंकर पद धारा, सत्य धर्म का किया प्रचारा॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

(तर्ज : ऐ मेरे वतन के लोगों....)

चले वीर प्रभु इस जग से, हुए मोक्ष सुपथ शिवगामी।
कैसे हम रोकें इनको, मिल जाए अमृतवाणी॥
पावापुर आए जिनवर, भक्ति से नत सुर गणधर।
कार्तिक था अमावस का दिन, वसुकर्म नशाए तत्छिन।
परमौदारिक तन तजकर, वे हुए सिद्ध अविनाशी॥ कैसे...

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

दोहा : **सहस अठोत्तर कुंभ ले, करें शांतिहित धार।**
वीर प्रभु के पाद में, पुष्पांजलि सुखकार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

धत्ता : प्रियकारिणी नंदन, हे जगवंदन ! हे परमातम ! वीर प्रभु।
शिवपुर के वासी, मुक्ति रमापति, अष्टकर्म जयी सिद्ध प्रभु॥

नरेन्द्र छंद *(आओ बच्चों तुम्हें दिखाये...)*

आओ गाएँ हम शुभ गाथा सन्मति सरल सुजान की।
सिद्धारथ सुत त्रिशलानंदन, महावीर भगवान की॥ वंदे जिनवरम्....

वीर प्रभु ने जन्म लिया जब जग का सारा पाप मिटा।
शांति हुई तीनों लोकों में जग का दुःख संताप हटा॥
सिद्धारथ घर खुशियाँ छाईं भव्यों ने स्तवन किया।
देवों ने आ मेरु शिखर श्री वीर प्रभु का न्हवन किया॥
आज बधाई सुरगण गाएँ मध्य लोक के शान की। सिद्धारथ......॥1॥

नागदमन करने से जग में नाम पड़ा था 'वीर' प्रभु।
मुनियों की शंका मिटते ही नाम 'सन्मति' हुआ विभु॥
हाथी का जब मान गलाया 'अतिवीर' वे कहलाए।
कर्मयुद्ध को निकल पड़े तब 'महावीर' बन हर्षाए॥
सुरगण आए खुशी मनाने जिनके तप कल्याण की। सिद्धारथ......॥2॥

प्राणिमात्र की हिंसा का श्री जिनवर ने प्रतिकार किया।
हिंसा रूढ़ी पाखंडों का समता से निस्तार किया॥
नारी मुक्ति का वीरा ने जमकर बिगुल बजाया था।
ले भिक्षा अबला नारी से जैन धरम बतलाया था॥
चंदनबाला पात्र बनी महिमामय पावनदान की। सिद्धारथ......॥3॥

सात्यिकि रुद्र बड़ा दम्भी उपसर्ग किया जिनवर पर था।
उतने क्षण कर्मों को काटा मित्र बना तन नश्वर था॥

देह मात्र उनकी भव्यों को संयम राह बताती थी।
दर्शन करके सब जीवों की कली-कली खिल जाती थी॥
मौनदशा में सारी किरिया कर दी जग उत्थान की॥ सिद्धारथ......॥4॥

ऋजुकूला सरिता के तट पर आकर चौथा ध्यान धरा।
शुद्ध ध्यान की अग्नि से अपने कर्मों को स्वयं हरा॥
चार घातिया नाश किए तब प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
गौतम गणधर के आते जिनवाणी का यशगान हुआ॥
अनेकांत वाणी फैलाई उनने जन-कल्याण की। सिद्धारथ......॥5॥

श्रेणिक जैसे मानी का भी उनने जन्म सुधार दिया।
जम्बू, सुदर्शन, सती चेलना का उनने उद्धार किया॥
तीस वर्ष उपदेश दिया फिर पावापुरी प्रस्थान किया।
योग निरोध किया जिनवर ने शिवपुर को अभियान किया॥
पूजा करने आए सुरनर वर्द्धमान भगवान की। सिद्धारथ......॥6॥

चले स्वयं शिवपथ पर भगवन् वह पथ सबको दिखलाया।
सत्य शांति समता करुणा ये मानव भूषण बतलाया॥
निश्चय औ व्यवहार मार्ग अरु स्याद्वाद नय समझाया।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है अनुभव यह मन को भाया॥
'गुप्ति' भी समता के हेतु शरणा ली गुणखान की।
सिद्धारथ सुत त्रिशलानंदन महावीर भगवान की॥ वंदे जिनवरम्...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वर्द्धमान अतिवीर तुम, हो सन्मति सुखकार।
महावीर व वीर बन, किया स्वयं उद्धार॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पंच बालयति पूजा

(तर्ज : जय जिनेन्द्र-जय जिनेन्द्र-जय जिनेन्द्र बोलिये-2)

वासुपूज्य मल्लिनेम पार्श्व वीर ध्याइये।
पंच बाल तीर्थ नाथ को हृदय बुलाइये।।
आइये-आइये नाथ पास आइये।
चित्त में विराज आप पाप सब नशाइये।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनराज समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

धार स्वच्छ नीर की प्रभु चरण चढ़ाइये।
पाप नाश मोक्षवास का प्रमाण पाइये।।
पंच बालतीर्थ नाथ की करें सुअर्चना।
स्याद्वाद धर्मतीर्थ हरें कर्म वंचना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध चंदनादि लाय आपको चढ़ायेंगे।
प्रीत आपसे लगा सुभक्ति गीत गायेंगे।। पंच बाल...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षतों के पुँज ले करें जिनेश अर्चना।
दृढ़ प्रतिज्ञ हो लहें सुमुक्तिश्रेष्ठ अंगना।। पंच बाल...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प प्यारे न्यारे-न्यारे रोज हम चढ़ायेंगे।
नाथ को चढ़ा के आज काम को नशायेंगे।। पंच बाल...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनी क्षुधा अधीन हो विवेक खो दिया।
व्यंजनों से पूजनाथ आज बोध पा लिया।। पंच बाल...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप से करें मुनीश आज आरती।
मोह का विनाश होय पाय ज्ञान भारती॥
पंच बालतीर्थ नाथ की करें सुअर्चना।
स्याद्वाद धर्म तीर्थ हरें कर्म वंचना॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में जला करें जिनेन्द्र अर्चना।
अष्टकर्म दूर हो मिले पदाब्ज वंदना॥ पंच बाल...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम, संतरा, अनार सर्वश्रेष्ठ ला रहे।
मोक्ष फल की कामना में भक्ति-गीत गा रहे॥ पंच बाल...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फलादि द्रव्य ले प्रभु समीप आयेंगे।
पद अनर्घ पूजकर पद अनर्घ पायेंगे॥ पंच बाल...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा : पंच मणियुत कुंभ ले, करता हूँ जलधार।
पंचवर्ण के पुष्प से, पुष्पांजलि सुखकार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : बाल ब्रह्मचारी हुए, पाँचों श्री जिनराज।
इनकी गुण जयमालिका, देती मुक्तिराज॥

शेर छंद *(तर्ज : पंछीडा....)*

वासुपूज्य मल्लि नेमिनाथ को ध्याओ।
श्री पार्श्व वीर के गुणों में ध्यान लगाओ॥
जय बाल ब्रह्मचारी पंच बालयति हैं।
पवित्र पूज्य श्रेष्ठ व त्रिलोक पति हैं॥1॥

पाँचों जिनेश स्वर्ग से भूलोक में आये।
नगरी सजाई इन्द्र ने व रत्न गिराये॥
पन्द्रह महीने तक हुई रत्नों की वृष्टियाँ।
वसुधा में नित्य हो रही थी सौख्य सृष्टियाँ॥2॥

श्री गर्भ कल्याणक सभी इन्द्रों ने मनाया।
पाँचों प्रभु के नाम का जयघोष लगाया॥
है धन्य-धन्य वह घड़ी पावन वो धाम है।
जहाँ-जहाँ पाँचों प्रभु के जन्म धाम हैं॥3॥

नाना निमित्त से उन्हें वैराग्य हुआ था।
अखण्ड बालयति नाम ख्यात हुआ था॥
सिद्धों का ध्यान धार महाव्रतों को धरा।
चउ घातिया को नाश पूर्ण ज्ञान को वरा॥4॥

बारह सभा के मध्य विराजे थे केवली।
उपदेश से खिली थी भव्य पुष्प की कली॥
अशेष कर्म नाश प्रभु मोक्ष को गये।
पाया अनंत सौख्य वे तो सिद्ध हो गये॥5॥

पाँचों प्रभु के मोक्ष धाम को नमन करें।
अध्यात्म सार धार मोक्ष को गमन करें॥
मनोज्ञ अर्घ से करें जिनेश अर्चना।
नित 'राजश्री' करें प्रभु को कोटि वंदना॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

वसुपूज्य मल्लि नेमि पारस वीर को ध्याओ सदा।
पुष्पांजलि क्षेपण करो पाओ परम सुखसंपदा॥
श्री पंच बालयति प्रभु की यह सुखद जयमाल है।
उत्तम सुखद शिवमार्ग हित प्रभु पाद में नतभाल है॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नवग्रहारिष्ट निवारक समुच्चय पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

मोह अरि के जेता भगवन धर्म चक्र के धारी हो।
सिद्ध बुद्ध सिद्धि के दाता भव-भव संकट हारी हो ॥
परमेष्ठी पाँचों श्री चौबीसों प्रभु का आह्वान करूँ।
नवग्रह की बाधा हरने को वंदन मैं शत बार करूँ॥

ॐ ह्रीं सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-राहु-केत्वादि नवग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्र ! श्री पंच परमेष्ठिन् ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गुण सागर की गुणनिधि पाकर निर्मल जीवन मैं पाऊँ।
त्रय धारा जल की अर्पण कर भवसागर से तिर जाऊँ॥
चौबीसों प्रभु पंच परम परमेष्ठी जिन को नमन करूँ।
नवग्रह की बाधा हरने को अर्चन-पूजन-भजन करूँ॥

ॐ ह्रीं सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि राहु केत्वादि नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्य: श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्य: पंच परमेष्ठिभ्य: जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चन्दन से शीतल प्रभु पद में चंदन लेपन मैं करता।
भवसंताप मिटाने हेतु जिनपूजा का श्रम करता॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं ..... भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मुक्ता अक्षत कर युग में ले अक्षत पुंज बनाया है।
दु:ख क्षय करने शिवसुख वरने अक्षयव्रत अपनाया है॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं ..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

कमलादिक सब ऋतु वर्णों का पुष्प समूह सजाया है।
जिनगुण से आकर्षित हमने वाद्य समूह बजाया है॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं ..... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

पुड़ी इमरती बरफी आदि भर-भर व्यञ्जन थाल भरूँ।
क्षुधा विजेता के चरणों में क्षुधाविजय का भाव वरूँ॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं ..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

हेम रत्न नव मणि से शोभित मंगल दीप सजाता हूँ।
भक्तिभाव मय नृत्य रचाकर हे जिन ! तुम्हें रिझाता हूँ॥
चौबीसों प्रभु पंच परम परमेष्ठी जिन को नमन करूँ।
नवग्रह की बाधा हरने को अर्चन-पूजन-भजन करूँ॥

ॐ ह्रीं ..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

नववर्णों के धूप घटों में सुरभित धूप खिरायी है।
उन्हें चढ़ाऊँ जिनने जग में गुणकीर्ति बिखराई है॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

आम जाम केला नारंगी श्री जिनवर को अर्पित हैं।
नववर्णों में षड्ऋतुओं के फल के गुच्छ समर्पित हैं॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

नीर गंध आदिक से मिश्रित अर्घ प्रभु के चरण धरूँ।
शिवसुख दायक कर्म विघातक पद अनर्घ का वरण करूँ॥चौबीसों...

ॐ ह्रीं ..... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

पंचकल्याणक

(तर्ज - धीरे-धीरे बोल...)

जिन कल्याणक की जय हो, पंच कल्याणक की जय हो-2
हम अर्घ चढ़ायें प्रभु चरण, जिन दर्शन जग तारण-तरण। जिन...

कूर्मोन्नत योनि में आये नाथ, मात-पिता पुलकित होते हैं साथ।
शत इन्द्रों ने आन झुकाया माथ, अष्ट कुमारी जोड़े दोनों हाथ॥
ढोलक बजा, झांझर बजा-2 जिनमाता को करते नमन,
माता जग की मंगलकरण, जिनकल्याणक की जय हो...॥1॥

जन्मोत्सव का पर्व मनायें आज, साढ़े बारह कोटि बजाकर साज।
इन्द्र करें मेरुगिरि पर अभिषेक, हर्षित होते मुनि ऋद्धिधर देख॥
नाटक रचा, बाजे बजा-2 सौधर्म करे शत दश नयन,
जयकारों से गूंजा गगन, जिन कल्याणक की जय हो...॥2॥

प्रभु के जीवन में आया वैराग्य, लौकांतिक करते प्रभु से अनुराग।
प्रभु ने तप धारा था अपरम्पार, अनुमोदन कर हो जाऊँ भवपार॥
मस्तक झुका, ताली बजा-2 कीर्तन करते हैं प्रभु चरण,
प्रभु पथ का करने अनुशरण, जिन कल्याणक की जय हो...॥3॥

चार घातिया नाश करें जिनराज, परमौदारिक तन से भूषित आप।
समोशरण में बैठे प्रभु मनहार, तीन जगत के तुम हो पालनहार॥
थाली सजा, दीपक जला-2 हम आरती करते प्रभु चरण,
केवलज्ञानी की ले शरण, जिन कल्याणक की जय हो... ॥4॥

योग निरोध किया प्रभु धारे ध्यान, कर्म नाश कर पहुँचे शिवपुर थान।
सिद्धक्षेत्र पर ले लाडू के थाल, अर्पण करके भक्त झुकायें भाल ॥
अर्चन करें, पूजन करें-2, सब सिद्धक्षेत्र को है नमन,
हो जाये पापों का वमन, जिन कल्याणक की जय हो... ॥5॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्तेभ्य: श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : कुम्भ लिया नवरत्न मय, करें विमल त्रय धार।
स्वागत मुद्रा में करें, पुष्पांजलि उपहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा नम: मम सर्व ग्रहारिष्ट निवारणं कुरु-कुरु स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : पाँचों परमेष्ठी प्रभो, चौबीसों तीर्थेश।
इनकी जयमाला हरें, सर्व पाप संक्लेश॥

(शंभु छन्द)

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, अष्टादश दोष विमुक्त हुए।
जय द्वादश धर्मसभा नायक, मेरुगिरि पर अभिषिक्त हुए ॥
गत जन्मों में सम्यक् तप कर, सातिशय पुण्य कमाया था।
निर्दोष श्रमण चर्या करके, षोडश कारण गुण पाया था॥1॥

फिर कल्याणक से पूजित हो, पावन तीर्थंकर रूप धरा।
आतम रिपु घाति-अघाति घात, अक्षय अनंत गुण लाभ वरा॥
उनके अनंत सुख वीर्य ज्ञान, नवलब्धि अक्षय दान करें।
पूजक के नवग्रह दोष हरें, भव्यों का आत्मोत्थान करें॥2॥

चौबीसों प्रभु का नाम मात्र, भक्तों के कर्मज क्लेश हरे।
जो द्रव्य सहित भक्ति करता, वो शाश्वत सुखमय वेष धरे॥
छ्यालीस मूलगुण के धारी, अरिहंत जिनेश कहाते हैं।
शशि-शुक्र जनित ग्रह बाधायें, तुम भक्त सहज विनशाते हैं॥3॥

हैं शुद्ध बुद्ध कृतकृत्य अमल, श्रीसिद्ध प्रभो सिद्धी दाता।
उनका पूजन शुचि गुण कीर्तन, रवि-भौम जनित दुःख विनशाता॥
गुण छत्तिस धर पंचाचारी, करुणाधर आगम विद सूरी।
गुरु ग्रह कृत पीड़ा आप हरें, करते सब आशायें पूरी॥4॥

आगम का अनुभव पूर्ण ज्ञान, देते मुनि शिक्षक कहलाते।
बुध ग्रह कृत रिष्ट विनाशक वे, मुनियों द्वारा पूजे जाते॥
निर्द्वन्द निराकुल निष्कलंक, साधु सेवा सुखकारी है।
राहु-केतु-शनि की माया, उनके सम्मुख ही हारी है॥5॥

त्रय चौबीसी अर्हंत् सिद्ध, ऋषिनायक पाठक ऋषियों की।
अर्चा में लीन हुआ मैं भी, आशायें तज जग विषयों की॥
जो भक्ति से जयमाल पढ़े, वो जिन गुणमाला पाते हैं।
यह भाव लिये 'गुप्तिनंदी', सुन्दर जयमाल बनाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं नव ग्रहारिष्ट निवारकेभ्य: पंच परमेष्ठिभ्य: चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्ति भावों से, सब जिनवर का ध्यान करे।
नव ग्रहरिष्ट विनाशे तत्क्षण, निजपर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये, निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर, अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वाद : दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री नवग्रहारिष्ट निवारक नव जिनेन्द्र पूजा

गीता छन्द *(तर्ज : प्रभु पतित पावन....)*

प्रभु वीतरागी शांत छवि, मेरे हृदय में बस रही।
पावन घड़ी शुभ थापना की, विघ्न संकट हर रही॥
मल से रहित जिनदेव पूजा, ग्रह निवारण के लिए।
आह्वान पुष्पों से करूँ, निज भाव शोधन के लिए॥1॥

ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारक श्री नव जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

त्रय धार सलिल चरण चढ़ाता, गुण निधि के ईश को।
बस कामना आशीष की, त्रय रत्न मुझको प्राप्त हो॥
नवग्रह निवारण के लिये, शांति वृषभ पारस प्रभू।
वसुपूज्य सुविधी पद्म नेमि, चंद्र मुनिसुव्रत विभू॥

ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

चंदन चढ़ा वंदन करूँ, भवक्लेश का क्रंदन हरूँ।
भवताप जेता नाथ का, शत बार अभिनंदन करूँ॥ नवग्रह.....

ॐ ह्रीं......संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

उज्ज्वल अखण्डित अक्षतों के, पुंज भर-भर ला रहा।
अक्षय परमपद प्राप्त हो यह, भाव मन से भा रहा॥ नवग्रह......

ॐ ह्रीं......अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

बहुवर्ण के सुरभित मनोहर, पुष्प अर्पण कर रहा।
जीवन खिले सुमनावलि सा, मन समर्पण कर रहा॥ नवग्रह......

ॐ ह्रीं......कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

षट्रसमयी पकवान ले, नैवेद्य से अर्चा करूँ।
निज भूख-तृष्णा नाश हित, जिनराज गुण चर्चा करूँ॥ नवग्रह......

ॐ ह्रीं......क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

मैं आरती करता प्रभु, अज्ञान तम का नाश हो।
अक्षय अखण्डित ज्ञानमय, कैवल्य ज्योति प्रकाश हो॥
नवग्रह निवारण के लिये, शांति वृषभ पारस प्रभू।
वसुपूज्य सुविधी पद्म नेमि, चंद्र मुनिसुव्रत विभू॥

ॐ ह्रीं......मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

सुरभित सुगंधित धूप अग्नि, में चढ़ा पूजन करूँ।
पुरुषार्थ से मैं श्रमण बन, सब पाप का भंजन करूँ॥ नवग्रह......

ॐ ह्रीं......अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

मैं मोक्षफल के राज हेतु, आज आया चाव से।
अंगूर आम अनार आदिक, फल चढ़ाता भाव से ॥ नवग्रह......

ॐ ह्रीं......महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

उपमा रहित अक्षय अखण्डित, पद प्रभु मम दीजिए।
मैं अर्घ अर्पण कर रहा, मुझको शरण में लीजिए॥ नवग्रह......

ॐ ह्रीं......अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

पंच कल्याणक

झीनी-झीनी उड़ी रे गुलाल चालो रे नगरियाँ में-2।

माता सोलह सपने देखे-2 मन ही मन हर्षाये। चालो रे.....।
सुरगण रत्न वृष्टि करते हैं-2 माँ की भक्ति रचाय। चालो रे.....।
गर्भ में प्रभुवर जिस क्षण आये-2 तीन लोक हर्षाये। चालो रे.....।
गर्भ दिवस की महिमा गाये-2 भव-भव भ्रमण मिटाय। चालो रे.....।

ॐ ह्रीं गर्भमंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

(तर्ज : ना कजरे की धार...)

हम आये प्रभु के द्वार, तीर्थंकर का अवतार ।
करें वंदन बारम्बार, जय-जय तीर्थंकर भगवान-2॥
तुम मात-पिता के प्यारे, हो जग में सबसे न्यारे-2।

जन्मत दश अतिशय धारें, प्रभु तीन ज्ञान को धारें-2।
नाचें-गायें, धूम मचायें-2, करें तेरी जय-जयकार॥हम आये...
सौधर्म शचि संग आये, मेरू पर न्हवन कराये-2।
छवि बालप्रभु की लखकर, निज नेत्र हजार बनाये-2।
दृश्य प्यारा, था निराला-2, प्रभु जन्म महोत्सव आज॥ हम आये...
ॐ ह्रीं जन्ममंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

(तर्ज : ईंजन की सीटी... सगला...)

आओ-आओ रे दीक्षा का दृश्य हम देखें-2
स्वयंभू प्रभू की दीक्षा देखें-2
धन-वैभव को नश्वर जाना, छोड़ी उनकी माया।
मन इन्द्रिय को वश में करना, प्रभु के मन को भाया॥
आओ-आओ रे...

केशों का लोचन करते हैं, पाप विमोचन करते।
पंच महाव्रत धारण करके, शिवरमणी को वरते॥
आओ-आओ रे...
ॐ ह्रीं तपोमंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

(तर्ज : ज्योति से ज्योति जलाते चलो...)

ज्ञान की ज्योति जलाते चलो, ज्ञान कल्याणक मनाते चलो।
ज्ञान सुधा का पान करो, ज्ञान रश्मि को पाते चलो॥
ज्ञान की ज्योति...

परमौदारिक तन से भूषित, समोशरण के स्वामी।
मोक्षमार्ग के तुम हो नेता, मोक्ष महल पथगामी॥ ज्ञान सुधा...
चार घातिया कर्म जलाकर, वीतरागी कहलाते।
हित उपदेशी बन कर प्रभुवर, शिवरमणी को पाते॥ ज्ञान सुधा...
ॐ ह्रीं ज्ञानमंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

(तर्ज : रेशमी सलवार...)

तीर्थंकर अष्टम वसुधा को गमन करें,
उनके चरणों में पापों का वमन करें।
हम प्रभुवर के गुण गायें, भावों से अर्घ चढ़ायें।
वे मोक्ष महल को पायें, सब उनका पर्व मनायें॥
आज हम नमन करें....

प्रभु आत्म गुणों को वरते, भक्तों का संकट हरते।
ये केवलज्ञान प्रकाशी, संसार भ्रमण के नाशी॥
भक्त गण भजन करें.... उनके चरणों.....

ॐ ह्रीं मोक्षमंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : समोशरण के ईश को, तन-मन अर्पण आज।
शांतिधारा से करें, शांति पथ पर राज॥

शांतये शांतिधारा।

सुमन-सुमन सम मम हृदय, सुमनाञ्जलि कर आज।
अर्चन-पूजन कर रहा, नाना विधि ले साज॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो नमः। (9,27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : नवग्रह की बाधा हरें, चौबीसों जिनराज।
उनकी जयमाला पढ़ूँ, मिले मोक्ष का राज॥

शंभु छन्द *(तर्ज : दिल लूटने वाले...)*

जय-जय ध्वनि की जयमाला से जिनवर के गुण मैं गाता हूँ।
नवग्रह की बाधा हरने को सब तीर्थंकर को ध्याता हूँ॥
रविग्रह की बाधा होने पर मैं पद्म प्रभु को ध्याऊँगा।
श्री सिद्ध प्रभु के मंत्रों से संकट को दूर भगाऊँगा॥1॥

चन्दाप्रभु के दर्शन करके मैं चन्द्रारिष्ट निवारूँगा।
अरिहन्तों का सुमरण करके सब विघ्न ताप विनशाऊँगा।।
जब मंगल ग्रह पीड़ा देता तब वासुपूज्य का नाम लिया।
अविचल अविनाशी सिद्धों की अर्चा ने अघ परिहार किया।।2।।

मैं विमल अनंत धर्म शांति श्री कुंथु अरह नमि वीर भजूँ।
इस बुधग्रह की बाधा हरने श्री उपाध्याय को नित्य जजूँ।।
ऋषभाजित संभव सुमति प्रभु, श्रेयांस सुपार्श्व अभिनंदन।
शीतल स्वामी आचार्य विभो, हरलो गुरुग्रह का दु:ख क्रंदन।।3।।

हाथों में पुष्पांजलि लेकर, श्री पुष्पदंत को ध्याऊँगा।
मैं शुक्र अरिष्ट निवारण हित, अरिहंत प्रभु गुण गाऊँगा।।
मुनियों के स्वामी मुनिसुव्रत, शनिग्रह की बाधा हरते हैं।
इस ग्रह की सारी पीड़ायें, निर्ग्रन्थ गुरु भी हरते हैं।।4।।

राहु ग्रह कृत संकट हरने, श्री नेमिनाथ को ध्याऊँगा।
चौसठ ऋद्धिधर यतियों की, इस हेतु भक्ति रचाऊँगा।।
केतु ग्रहरिष्ट मिटाने को, श्री मल्लि पार्श्वजिन को ध्याऊँ।
उपसर्ग विजेता मुनियों की, भक्ति पूर्वक शरणा पाऊँ।।5।।

चौबीसों प्रभु वैभव दाता, सुख समता शांति प्रदाता हैं।
नवग्रह अरिष्ट नाशक प्रभुवर, हरते सब रोग असाता हैं।।
जयमाला प्रभु की गा करके, इन्द्रिय जय पद को पाऊँगा।
मुक्ति का 'राज' मिले मुझको, श्रद्धा से शीश झुकाऊँगा।।6।।

ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्य: श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: पंच परमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : नव ग्रह की बाधा हरो, चौबीसों जिनराज।
आधि-व्याधियाँ मेटने, नमन करे नित'राज'।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु पूजा

(शंभु छन्द)

जय पद्मप्रभु भवि पद्मों को, तुम नाम पद्म विकसाता है।
राहु सम मोह तिमिर घन को, तुम ज्ञान भानु विनशाता है।।
मैं भक्तिभाव से द्रव्य लिये, तुम सन्मुख आज सजाता हूँ।
आरक्त कमल जसवंत लिए, आह्वानन करने आता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छन्द)

रक्ताभ कुम्भ कर लेय, नीर चढ़ाता हूँ।
त्रय रोग नशाने हेतु, भक्ति रचाता हूँ।।
रवि दोष हरें जिनपद्म, उनकी भक्ति करूँ।
जप-पूजन-कीर्त्तन पाठ, कर जिन शक्ति वरूँ।।

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

प्रभु हरते भवसंताप, भव के पाप हरें।
उनके पद में शुचि गंध, चंदन लेप करें।। रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मोती अक्षत भर लेय, पुंज सजाया है।
अक्षय मुनिव्रत हम पाय, भाव बनाया है।। रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

तुम ब्रह्मतेज को देख, काम स्वयं हारा।
इस हेतु चढ़ाऊँ पुष्प, करके जयकारा।। रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

बरफी पेड़ा पकवान, भर-भर थाल लिये।
कर भक्ति नृत्य अपार, प्रभु को भेंट किये।। रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

हे मोहविनाशक ! देव, तुम दर आता हूँ।
ले दीपक-ताल-मृदंग, आरती गाता हूँ॥
रवि दोष हरें जिनपद्म, उनकी भक्ति करूँ।
जप पूजन कीर्त्तन पाठ, कर जिन शक्ति वरूँ॥

ॐ ह्रीं ..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

औषधिमय सुरभित धूप, जग का ताप हरे।
मैं धूप चढ़ाऊँ भूप, कल्मष पाप हरे॥ रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

शुभ पुण्योदय से आज, षट्ऋतु फल लाया।
नाना विधि लेकर साज, चरणों में आया॥ रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

मैं अष्टद्रव्य का थाल, अर्पित करता हूँ।
चरणों में रखकर भाल, गुणनिधि वरता हूँ॥ रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : **त्रय धारा हरदम करूँ, पद्म प्रभु के द्वार।**
शुभ मन से सुमनावलि, अर्पित है अघहार॥

शांतये शांतिधारा......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः।
(एक माला जाप करें)

जयमाला

दोहा : **पद्म रखे पद पद्म में, भक्ति पद्म की थाल।**
आओ प्रभु मन पद्म में, गाता हूँ जयमाल॥

(नरेन्द्र छन्द)

जय जिन पद्म सुसीमा नंदन, धरण पिता के हो प्यारे।
कौशाम्बी के राजकुंवर तुम, पद्मवर्ण जन-मनहारे॥

पद्मराग सम आभा जिनकी, नाम पद्म कहलाया है।
मुक्तिमार्ग रत भव्य पद्मवन, तुमने ही विकसाया है॥1॥

गर्भ सुमंगल से भी पहले, धनपति रत्न गिराता है।
कोटि असंख्यों रत्न प्रतिदिन, पन्द्रह मास लुटाता है॥
जन्म हुआ जिस क्षण प्रभुवर का, तीन लोक में हर्ष हुआ।
भव्यों में चउविध सुरगण में, भावों का उत्कर्ष हुआ॥2॥

इन्द्रराज सौधर्म शची सुर, ऐरावत गज पर आये।
जन्मसदन में प्रभु दर्शन कर, इन्द्राणी अति हर्षाये॥
सर्वश्रेष्ठ जिन बाल रूप लख, उनके भाव विशुद्ध हुए।
तत्क्षण सम्यग्दर्शन पाकर, आत्मप्रदेश प्रशुद्ध हुये॥3॥

शचिपति प्रभु को गोदी में ले, ऐशानेन्द्र छत्र ताने।
सनत्कुंवर माहेन्द्र चंवर ले, जीवन धन्य सफल माने॥
एक हजार आठ कलशों से, मेरू पर अभिषेक करें।
तीर्थंकर प्रभु की सेवा कर, वे निज अक्षय कोष वरें॥4॥

युवावय में नृप हो प्रभु ने, जीवों को आनंद दिया।
फिर विरक्त हो नश्वर सुख से, मुनिमुद्रा का लाभ लिया॥
अल्पसमय में धर्मचक्र ले, जग का भ्रमणचक्र नाशा।
प्रभु निज कर्मचक्र का क्षय कर, वरा सिद्धसुख अविनाशा॥5॥

पुष्पयक्ष तुम शासनरक्षक, यक्षी बनी मनोवेगा।
प्रभु भक्तों के संकट नाशे, दत्तचित्त हो अतिवेगा॥
पद्मप्रभु का पूजन-कीर्त्तन, जाप रविगत दोष हरे।
गोचर-लग्न-भुवनगत रवि के, रिष्ट हरे सुख कोष वरे॥6॥

ज्योतिष देवों का रवि स्वामी, पद्मप्रभु की भक्ति करे।
पद्मप्रभु के भक्तों के अनुकूल, रहे शिव शक्ति वरे॥
चित्त पद्म को चैत्य बनाया, हे प्रभु ! इसमें आ जाओ।
'गुप्तिनंदी' के कर्म दोष हर, शिवसुखराज बता जाओ॥7॥

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से पद्मनाथ का ध्यान करे।
नवग्रहरिष्ट विनाशे तत्क्षण निजपर का उत्थान करे।।
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चंद्रप्रभु पूजा

(गीता छन्द)

जय चन्द्रजिन गुणचन्द्र धर, रवि-चन्द्र के प्रतिपाल हैं।
मुनिवृन्द मानव-देव-पशु तुम, द्वार पर नतभाल हैं।।
शशिकांत मणियुत पुष्प ले, आह्वान उनका मैं करूँ।
ग्रह सोम-तिथि-नक्षत्र कृत सब, विघ्न का भंजन करूँ।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छन्द)

चन्द्रकांत मणि युक्त, जल के कुंभ सजाऊँ।
तीन रोग क्षय हेत, धारा तीन कराऊँ।।
चन्द्रप्रभु को आज, निश्छल हो मैं ध्याऊँ।
चन्द क्षणों में सर्व, संकट विघ्न नशाऊँ।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्ट निवारकाय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चन्दन से भी शीत, श्री जिनचन्द्र कहायें।
घिस चन्दन कर्पूर, उनके चरण लगायें।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं ..... भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मुक्ता अक्षत श्वेत, अर्पित प्रभु के आगे।
अक्षयपद हो प्राप्त, क्षत-विक्षत सुख त्यागे ॥
चन्द्रप्रभु को आज, निश्छल हो मैं ध्याऊँ।
चन्द क्षणों में सर्व, संकट विघ्न नशाऊँ ॥

ॐ ह्रीं .... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

जूही-पद्म-गुलाब, श्वेत पुष्प ले आऊँ।
हाथ युगल में पुष्प, ले प्रभु चरण चढ़ाऊँ ॥ चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

श्वेत वर्ण के मिष्ठ, बहु पकवान चढ़ाऊँ ।
क्षुधारोग क्षय हेत, भक्ति नृत्य रचाऊँ ॥ चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

चन्द्रमणि घृत दीप, लेकर आरती गाऊँ।
प्रज्ञादीप जलाय, मोह तिमिर विनशाऊँ ॥ चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... महामोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

सर्वौषधि मय धूप, रोग प्रदूषण हारी।
अग्निपात्र में खेय, नाशूँ कर्म बिमारी ॥ चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

सरस सुवासित श्रेष्ठ, षट्ऋतु के फल लाऊँ।
नश्वर जग सुख छोड़, शाश्वत शिवफल पाऊँ॥ चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

जल आदिक वसु द्रव्य, मिश्रित अर्घ बनाया।
हो अनर्घपद लाभ, इसविध तुम गुण गाया ॥ चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा : चन्द्रमणि मय कुम्भ से, रजत वर्ण जलधार।
धवल वर्ण कुंदादि की, पुष्पांजलि मनहार ॥

शांतये शांतिधारा.......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।
(एक माला जाप करें)

जयमाला

दोहा : हे जिन ! तुम जयमाल से, हुए अपूर्व कमाल।
समंतभद्र मुनीश के, काटे संकट जाल।।

(शंभु छन्द)

जय चन्द्र कोटि रवि-चन्द्र वंद्य, जग श्रेष्ठ जगत के हित कर्त्ता।
जय सुलक्षणा माँ के नंदन, चिर सुन्दर शिवलक्ष्मी भर्त्ता।।
जन्मत दश अतिशय आप धरें, अर्हत् बन दश अतिशय पाये।
चौदह अतिशय देवों द्वारा, सुरपति करवाये सुख पाये।।1।।

सुर प्रभु की वाणी फैलाते, जो अर्द्धमागधी नाम धरे।
निज पूर्वभवों का वैर छोड़, सब प्राणी मैत्रीभाव वरें।।
प्रभु के प्रभाव से युगपत ही, षड्ऋतुओं के फल-फूल खिले।
इक योजन दर्पणवत् वसुधा, नाना रत्नों की रश्मि खिले।।2।।

औषधमय मन्द सुगंध पवन, प्रभु के विहार पथ पर चलती।
सब जीव परम आनंदित हो, हर्षे प्राणी हर्षित धरती।।
वायुकुमार जिनभक्ति वश, भूमि रज-कण्टक रहित करें।
फिर मेघकुंवर आनंदित हो, अघहर गंधोदक वृष्टि करें।।3।।

प्रभुवर के पाद युगल नीचे, होती है स्वर्णकमल रचना।
फल के भारों से झुके वृक्ष, दिखलाते प्रभु वैभव रचना।।
स्वयमेव फसल हो धान्यवती, अभिनंदन प्रभु का करती है।
सब रोग-शोक से मुक्त प्रजा, प्रभु पद की छाया वरती है।।4।।

नभ शरत् कालवत् निर्मल हो, अक्षय धर्मामृत बरसाता।
यक्षेन्द्र शीशधर धर्मचक्र, मिथ्यात्व मोह को विनशाता।।

सुरगण वसु मंगल द्रव्य लिए, श्री चन्द्रप्रभु की भक्ति करें।
सुरपति प्रभु के प्रतिहारी बन, अक्षय अनंत शिव शक्ति वरें॥5॥

शशि ग्रह, माता, कुल, सुख कारक, भू, यान, भवन सुख दातारी।
औषध, प्रज्ञा, बल, यश, वाणी, संयम मुनिव्रत में सहकारी॥
प्रतिकूल रहे तब हृदयरोग, अपघात मृत्यु का योग करे।
निर्दय, दुर्बुद्धि, दुश्चरित्र, बालारिष्टादि कुयोग करे॥6॥

जो समन्तभद्र मुनी जैसा, श्री चन्द्रप्रभु को ध्याता है।
वो शशि आदि नवग्रह बाधा, सब विघ्न रोग विनशाता है॥
हे नाथ ! तुम्हें मन से ध्याऊँ, मेरा चंचल मन शांत करो।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की आश यही, मम सारे कर्मज क्लांत हरो॥7॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारकाय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्ति भावों से चन्द्रनाथ का ध्यान करे।
नवग्रहरिष्ट विनाशे तत्क्षण निज-पर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षय सुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

वासुपूज्य वसु कर्म नाश कर, बने सिद्ध शिवधामी।
उनका मन से आह्वानन कर, बनूँ भक्त निष्कामी॥
आह्वानन सन्निधिकरण से, श्री जिनवर को ध्याऊँ।
रक्तवर्ण के पद्म पुष्प ले, भौम अरिष्ट मिटाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्टनिवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल की शीतल पावन धारा, श्री जिन चरण चढ़ाता हूँ।
कर्म धूल प्रक्षालन हेतु, प्रभु से प्रेम बढ़ाता हूँ।।
मंगल ग्रह की बाधा हर लो, मंगलमय मंगल कर्त्ता।
वासुपूज्य बस जायें हृदय में, सर्व शोक संकट हर्त्ता।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्टनिवारकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

भवसागर में भटक न जाऊँ, हे प्रभु ! मुझको अपनाओ।
शीतल चंदन चरण चढ़ाता, भव की वांछा विनशाओ।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षयनिधि के स्वामी को जो, अक्षत रोज चढ़ाता है।
अक्षय चिर सौभाग्यवान बन, सुख अनंत पा जाता है।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

रंग-बिरंगे चंपा जूही, पुष्प बाग से ले आये।
काम विजेता जिन चरणों में, हृदय कुसुम भी चढ़ जाये ।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

पुडी-पकौड़ी-रबड़ी-लड्डू, सरस मधुर नित लाता हूँ।
प्रभु चरणों में चढ़ा-चढ़ाकर, अतिशय आनंद पाता हूँ ।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दीप जलाकर तिमिर नशाने, प्रभु की आरती गाई है।
केवलज्ञानी की आरती से, माँ श्रुत भारती पाई है ।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

धूपघटों की धूमगंध से, समोशरण भी सुरभित है।
धूप चढ़ाऊँ प्रभु चरणों में, करने कर्म विसर्जित है ।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

आम-जाम-दाडिम-नारंगी, ताजे रोज मंगाता हूँ।
श्री जिनवर के चरण चढ़ाकर, मनवांछित फल पाता हूँ।।
मंगल ग्रह की बाधा हर लो, मंगलमय मंगल कर्त्ता।
वासुपूज्य बस जायें हृदय में, सर्व शोक संकट हर्त्ता।।

ॐ ह्रीं ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

अष्टद्रव्य की शुभ अर्चा ही, मुक्तिमार्ग दिलवाती है।
प्रभु चरणों के दीवानों को, सर्व सुखी बनवाती है ।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : रक्तवर्ण मणिरत्न युत, घट से है त्रयधार।
लालवर्ण के पुष्प से, पुष्पांजलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
(एक माला जाप करें)

जयमाला

दोहा : वासुपूज्य भगवान की, गाऊँ गुण जयमाल।
मंगल ग्रह बाधा टले, करुँ चरण नत भाल।।

चौपाई

जय-जय वासुपूज्य सुखकारी, तीन लोक के हो मनहारी।
चंपापुर को धन्य बनाया, देवों ने तब उसे सजाया।।1।।

पंद्रह मास रत्न की वर्षा, सुरगण करते हर्षा-हर्षा।
वसुदेवी स्वर्गों से आती, गर्भ सुमंगल के हित आती।।2।।

नाना द्रव्याभूषण लाती, माता की महिमा को गाती।
प्रश्न पूछती उत्तर पाती, माता के मन को बहलाती।।3।।

कोई देवी दर्पण लाती, माता को आनन दिखलाती।
कोई पंखा झलती आती, कोई केश सजाने आती॥4॥
कोई काजल नयन लगाती, कोई माता को नहलाती।
चम्पापुर में जन्मे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी॥5॥
जन्मकल्याणक इन्द्र मनाये, मेरू पर अभिषेक कराये।
बचपन बीता यौवन आया, प्रभु ने छोड़ी सारी माया॥6॥
दीक्षा लेकर ध्यान लगाया, केवलज्ञान जिन्होंने पाया।
वासुपूज्य वसु कर्म नशाये, मुक्तिरमा से ब्याह रचाये॥7॥
मंगल की अनुकूल अवस्था, राजयोग दे सर्व व्यवस्था।
सेनापति व राष्ट्रपती हो, यतिनायक व मुक्तिपती हो॥8॥
यदि आ जाये विकल दशाएँ, जीवन का सौभाग्य नशाऐं।
युद्ध, कलह या आगजनी हो, खल पामर अतिदुर्व्यसनी हो॥9॥
पित्तादि कृत रोग सतायें, शस्त्रघात में प्राण गंवाये।
तब श्री वासुपूज्य को ध्याओ, सर्व पाप दुर्योग नशाओ॥10॥
हे प्रभु ! मैं भी तुमको ध्याऊँ, निज पापों की क्षमा कराऊँ।
'गुप्तिनंदी' गुप्ति को पायें, शिवसुखराज अचल पा जाये॥11॥

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्टनिवारकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से वासुपूज्य का ध्यान करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निजपर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ पूजन

(नरेन्द्र छन्द)

शांति प्रभु शांति के दाता, मोक्षमार्ग के अधिकारी।
इनका नाम जाप सुमरण भी, रोग-शोक संकटहारी॥
नाना विधि के पुष्पों को ले, आह्वानन करने आया।
बुध ग्रह-तिथि-नक्षत्र जनित सब, बाधा को हरने आया॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्री शांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

त्रय मल के प्रक्षालन हेतु, चरणों में शुचि जल लाया।
पुण्यनिधि का संचय करके, जन्म-जरा-मृत विनशाया॥
शांति प्रभु की शांत छवि लख, हृदय शांत हो जाता है।
वंदन-पूजन-कीर्त्तन करके, सब संकट टल जाता है॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारकाय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

चन्दन से शीतल जिनपद में, चंदन लेपन मैं करता।
भव संताप मिटाने हेतु, भव का बंधन कम करता॥ शांति ...

ॐ ह्रीं....संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

भव का बंधन क्षत-विक्षत कर, अक्षयपद को प्राप्त किया।
ऐसे जिनवर के चरणों में, भर-भर अक्षत भेंट किया॥ शांति .....

ॐ ह्रीं.....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

हृदय-कमल के मल को धोने, पुष्प मनोहर मैं लाया।
सुमनाञ्जलि को अर्पण करते, रोम-रोम मम हर्षाया॥ शांति...

ॐ ह्रीं.....कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

षट्रस व्यंजन पकवानों की, थाली भरकर लाया हूँ।
क्षुधावेदनी क्षय होने के, भावों से मैं आया हूँ।।
शांति प्रभु की शांत छवि लख, हृदय शांत हो जाता है।
वंदन-पूजन-कीर्त्तन करके, सब संकट टल जाता है।।

ॐ ह्रीं....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ज्ञान ज्योति से शक्तिशाली, मोहतिमिर हट जाता है।
जगमग आरती लेकर भविजन, प्रभु चरणों में आता है।। शांति...

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

कर्म समूह दहन करने को, धूप दशांगी मैं लाया।
प्रभु भक्ति का अनुरागी बन, साधक पथ को अपनाया।। शांति...

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

भौतिक रस से मन यह ऊबा, भक्ति रस में डूब रहा।
सरस मधुर षट्ऋतु के फल ले, प्रभु चरणों को पूज रहा।। शांति...

ॐ ह्रीं.... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ चढ़ाकर, अष्टम भू की चाह करूँ।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, रत्नत्रय की राह वरूँ।। शांति...

ॐ ह्रीं...अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : त्रय धारा दे नीर की, पा जाऊँ भव तीर।
सुमनाञ्जलि मन से करूँ, मेटूँ मन्मथ पीर।।

शांतये शांतिधारा.......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारकाय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।

(एक माला जाप करें)

जयमाला

दोहा : तीर्थंकर चक्रेश हो, कामदेव जगदीश।
बुधग्रह बाधा नाशने, तुम्हें नवाऊँ शीश॥

(शंभु छन्द)

जयमाला प्रभु गुण की गाने, सुमनों की माला लाते हैं।
श्री शांतिनाथ के चरणों में, वसु द्रव्य सजाकर लाते हैं॥
पितु विश्वसेन-माँ ऐरा के, नंदन को वंदन है मेरा।
कुरुवंश शिरोमणि शांतिनाथ के, चरणों में मिटता फेरा॥1॥

त्रय पद के धारी प्रभुवर की, त्रयकाल वंदना करता हूँ।
प्रभु तीर्थंकर का नाम सुमर, सब तीर्थ वंदना करता हूँ॥
सबके मन को हरने वाले, प्रभु कामदेव जगख्यात हुए।
षट्खण्ड विजेता शांतिप्रभु, वे चक्रवर्ती पद प्राप्त हुए॥2॥

पाँचों कल्याणक से भूषित, पंचम गति को पाने वाले।
पंचम पद की अभिलाषा से, हम आये प्रभु के मतवाले॥
आजन्मजात वैरी अपना, वैरत्व छोड़ प्रभु शरण खड़े।
उस समोशरण की यशगाथा, गाते-गाते भवि भक्त बढ़े॥3॥

ऊँचे अशोक तरु के नीचे, प्रभु का सुन्दर तन मोह रहा।
जैसे काले बादल नीचे, रवि का मण्डल है शोभ रहा॥
पुष्पों की पुष्पांजलि सुरगण, नभ से हर्षित होकर करते।
पर अचरज होता त्रिभुवन को, जब पुष्प सभी सीधे गिरते॥4॥

बहुकोटि प्रमित दुंदुभि बाजे, सुर इन्द्र बजायें हर्ष भरे।
श्री शांति प्रभु का दर्शन पा, निज भावों का उत्कर्ष करें॥

मणि-मुक्तारत्न खचित आसन, उसके ऊपर है कमलासन।
उससे भी चतुरंगुल ऊपर, तुम शोभ रहे प्रभु अधरासन॥5॥

स्याद्वाद विभूषित दिव्यध्वनि, सर्वात्म प्रदेशों से खिरती।
शत सप्त अठारह भाषा में, सबके सबविध भ्रम को हरती॥
त्रयछत्र त्रिजग परमेश्वर के, त्रिभुवन में शासन सिद्ध करें।
उसके नीचे श्री शांति प्रभु, जग के सब मंगल सिद्ध करें॥6॥

चौसठ चवरों युत यक्ष युगल, मनहारी नृत्य रचाते हैं।
जन-मन शासक की भक्ति कर, आगामी शिव सुख पाते हैं॥
कोटि रवि-शशि का तेज हरे, हे देव ! तुम्हारा मुख मण्डल।
उसका प्रतीक बन शोभ रहा, जिनरवि सम भाषित भामण्डल॥7॥

वसु प्रातिहार्य निधि से पूजित, श्री शांति प्रभो अघहारी हो।
बुध ग्रह कृत सर्व अरिष्ट हरें, तुम भव्यों के उपकारी हो॥
तुम सम जिन गुण सम्पत पाने, हे नाथ ! तुम्हारे गुण गाऊँ।
त्रय 'गुप्ति' धर शिवराज वरूँ, भव भ्रमण शृंखला विनशाऊँ॥8॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्ति भावों से शांतिनाथ का ध्यान करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज पर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री आदिनाथ पूजन

(गीता छन्द)

हे आदि ब्रह्मा ! आदि युगधर, आद्य प्रभु आदीश जिन।
यह लोक व्याकुल हो गया, जग बन्धु आदिनाथ बिन॥
मैं स्वर्ण वर्णी पुष्प ले, आह्वान अभिनंदन करूँ।
गुरु ग्रह-तिथि-नक्षत्र कृत, सब कष्ट का भंजन करूँ॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छन्द)

पुखराज मणि युत स्वर्ण कुम्भ, उससे जल की त्रयधार करूँ।
शुचि सम्यक् रत्नत्रय पाऊँ, त्रय रोगों का परिहार करूँ॥
हे आद्य ! बंधु जिन आदीश्वर, मैं तुम गुण पूजन-भजन करूँ।
गुरु ग्रह कृत सर्व अमंगल हर, श्री आदि प्रभु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चिर पाप-ताप-संतापों ने, हे नाथ ! मुझे झुलसाया है।
मम अतिशय पुण्य प्रताप आज, तव चरणन् गंध लगाया है॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं.....भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

निज मोह कषाय विभाव नाश, तुमने अक्षय सुख पाया है।
उसको पाने पुष्कर मुक्ता, अक्षत का पुंज चढ़ाया है॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

मैं पीत पुष्प जल-भूमिज ले, प्रभु पद में रख अति हर्षाया।
संसार बीज का हनन करूँ, यह भाव आप सन्मुख आया॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

बरफी-पपड़ी-खाजे बहुविध, भक्ति से व्यंजन थाल भरा।
उन क्षुधा विजेता को अर्पित, जिसने सुख श्रेष्ठ विशाल वरा॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं.....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

मोहान्ध तिमिर नाशक जिन को, मैं दीप चढ़ा कर सुख पाऊँ।
उन सन्मुख दीपक नित्य रखूँ, निज केवलरवि को प्रगटाऊँ॥
हे आद्य ! बंधु जिन आदीश्वर, मैं तुम गुण पूजन-भजन करूँ।
गुरु ग्रह कृत सर्व अमंगल हर, श्री आदि प्रभु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

अध्यात्म जगत के भूप आप, मैं आया धूप चढ़ाने को।
कैसे तुमने वसु कर्म नशे, यह सूत्र समझने पाने को॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

निष्फल चिरकाल गया मेरा, अब सफल हुआ तुमको पाया।
उसके प्रतिफल में भक्ति सहित, आमादिक बहुविध फल लाया॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

हे नाथ ! आप पूजन-दर्शन, अक्षय अनर्घ्य पद दातारी।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ नृत्य करूँ, बनने क्षायिक लब्धिधारी॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : **पुष्कर मणि शोभित कलश, करें नीर की धार।**
प्रभु पद में अर्पण करें, पीत पुष्प का हार॥

शांतये शांतिधारा.......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नमः।
(एक माला जाप करें)

जयमाला

दोहा : **आदि ब्रह्म आदीश जिन, आद्य सुविधि कर्तार।**
आदि नाम जयमाल ही, कर्म शैल हर्त्तार॥

चौपाई

जय-जय आदि जिनेश हमारे, मरुदेवी नंदन मनहारे।
नाभिराय के नयन सितारे, साकेता के राजदुलारे॥1॥

जग में सुंदर रूप तुम्हारा, शचि को समकित गुण दातारा।
तन से रंच भी स्वेद न आये, नहीं खेद तन क्लांति नशाये॥2॥

सब पर तुम वात्सल्य अपारा, इस विध बहे श्वेत रज धारा।
लक्षण सहस अठोत्तर पाये, सर्वश्रेष्ठ जग में कहलाये॥3॥

मधुर श्रेष्ठ हित-मित-प्रिय वाणी, सर्व जगत को है कल्याणी।
उत्तम संहनन तुमसे शोभे, भव्य जगत को प्रतिपल लोभे॥4॥

चउविध दान किया करवाया, मुनिसेवा का फल अब आया।
बल अतुल्य जिनवर ने पाया, पाँच शतक धनु ऊँची काया॥5॥

सम चौरस प्रभु का संस्थाना, अनुपम-अद्‌भुत श्रेष्ठ महाना।
तन भी सुरभित गंध बहाये, पाप-ताप सब रोग नशाये॥6॥

स्वर्गों का प्रभु भोजन पाये, जिसका हर कण बल बन जाये।
स्वेद नहीं नीहार नहीं है, रोग-शोक लवलेश नहीं है॥7॥

ये दश अतिशय जन्मत पाये, दस अरिहंत बने तब आये।
चौदह अतिशय सुरकृत होते, धर्म बीज वे जग में बोते॥8॥

पांच सुमंगल जिनके होते, जो जग मंगल में रत होते।
ऐसे श्री जिन आदि हमारे, सब दु:ख-संकट कष्ट निवारे॥9॥

जिसका पाप उदय जब आये, गुरु ग्रह बाधा उसे सताये।
पीड़ायें बहु रूप बनावें, मरणतुल्य भी संकट आवे॥10॥

बहु परिश्रम पर लाभ ना होवे, सुलझे कार्य उलझते होवे।
विद्याभ्यास निरर्थक जाता, याद नहीं हो समझ न आता॥11॥

धन डूबा-व्यापार में घाटा, जीवन में छाया सन्नाटा।
इत्यादिक बहुविध पीड़ायें, प्रभु का नाम सहज विनशायें॥12॥

जग में नाम सुना तुम भारी, मैं भी आया शरण तुम्हारी।
मेरी अर्ज सुनो हे स्वामी !, मुझे बनाओ शिवपथगामी॥13॥

धर्म मार्ग में दृढ़ मैं होऊँ, निर्मल मुनिव्रत में रत होऊँ।
त्रय 'गुप्ती' की सिद्धी पाऊँ, शिवसुख राज सहज पा जाऊँ॥14॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से आदिनाथ का ध्यान करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज पर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत पूजा

(गीता छन्द)

श्री पुष्पदंत जिनेश की, यशगंध जग विख्यात है।
गणधर गुरु शत इंद्र भी, जिस द्वार पर नत माथ है॥
बहुपुष्प ले जिनपुष्प का, आह्वान अभिनंदन करूँ।
ग्रह शुक्र-तिथि-नक्षत्र वा, वसुकर्म का बंधन हरूँ॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंतजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चामर छन्द

स्वच्छ नीर वज्रयुक्त हेमकुम्भ में भरूँ।
तीन धार दे अनादि रोग तीन को हरूँ॥
शुक्र दोष नाश हेतु पुष्पदंत को जजूँ।
भक्ति-पाठ-जाप से निजात्म सौख्य को भजूँ॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

गंध चन्दनादि ले जिनेश पाद चर्चता।
पाप-ताप नाश हेतु आपको हि अर्चता॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं...भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

श्वेत दीप्त वा अखंड शालि हाथ में लिए।
पाँच पुंज सर्वश्रेष्ठ ज्येष्ठ नाथ को चढ़े॥
शुक्र दोष नाश हेतु पुष्पदंत को जजूँ।
भक्ति-पाठ-जाप से निजात्म सौख्य को भजूँ॥

ॐ ह्रीं...अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

श्वेतकुंद पुष्प वा गुलाबपद्म आदि ले।
आपको चढ़ा अनादि काम व्याधि को नशे॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं...कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

श्वेत वर्ण श्रेष्ठमिष्ट व्यजनांदि थाल से।
श्री जिनेश को चढ़ा क्षुधादि व्याधि जीत लें॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं...क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दीपराग भक्ति-नृत्य साथ आरती करूँ।
मोहध्वांत नाश आत्मज्ञान भारती वरूँ॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं... मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

श्वेतधूप ले अनूप धर्मभूप को चढ़ा।
दैत्यरूप बंधभूप कर्म को जला रहा॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

आम-जाम-संतरा मनोज्ञ थाल में सजा।
आप द्वार आय भक्त भक्ति भाव से सजा॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

ढोल-बांसुरी-मृदंग से जजूँ जिनेश को।
अर्घ को चढ़ा वरूँ अनर्घ सिद्धवेष को॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं...अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा : पुष्प पत्र युत कुंभ से, करूँ नीर त्रय धार।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, हरूँ काम का भार॥

शांतये शांतिधारा.......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः। (एक माला जाप करें)

जयमाला

दोहा : पुष्पदंत का जाप कर, भविजन होय निहाल।
उनकी जय गुणमाल पढ़, पायें जिन गुणमाल॥

(शंभु छन्द)

जय पुष्पदंत तुम तीर्थवंत, श्री मुक्तिपंथ के अधिकारी।
सुग्रीव पिता के कुलदीपक, जयरामा नंदन मनहारी॥
कांकदी के हो राजकुंवर, सौ धनुष प्रमित ऊँची काया।
तन कुन्दपुष्प सम श्वेतवर्ण, जिसको लख सुरपति शर्माया॥1॥

द्वय लाख पूर्व आयु पाकर, भव्यों का भाग्योद्धार किया।
अक्षय अनंत गुणनिधि पाने, तुमने अंतिम तन धार लिया॥
प्रभु की केवलरविकिरणों ने, अद्‌भुत आश्चर्य दिखाया था।
सुरपति ने समवशरण विस्तृत, मनभावन भव्य बनाया था॥2॥

जिनके चारों दिश में सुभिक्ष, सौ-सौ योजन तक रहे सदा।
नभ प्रांगण में वे गमन करें, वसुधा उनको पाकर प्रमुदा॥
प्रभु का वात्सल्य वलय जग में, हिंसा का भाव मिटाता है।
प्राणीवध या उपसर्ग नहीं, मैत्री के सुमन खिलाता है॥3॥

जिनवर अक्षयबल के धारी, अतएव ना कवलाहार करें।
सब विद्याओं के वे स्वामी, भवि जीवों का उद्धार करें॥
अनिमेष नयन चहुँदिश आनन, नख-केश कभी नहीं बढ़ते हैं।
छाया विरहित तव रूप देख, भव्यों के भाव उमड़ते हैं॥4॥

इत्यादिक छ्यालिस गुणधारक, श्री पुष्पदंत गुण गाता हूँ।
दुर्दैव, कर्म, विधि, ज्योतिष कृत, सब विघ्नों को विनशाता हूँ॥
ग्रह शुक्र जहाँ प्रतिकूल बना, दुष्कर्म-दुराशय उपजाता।
दुष्कृत्य व्यसन सब पापों में, सत्पुरुषों को भी फंसवाता॥5॥

कफ-रक्त-चर्म या राज रोग, अपमृत्यु संकट आ घेरे।
जो श्रद्धा वश प्रभु नाम जपे, उसके सब दिन प्रभु ने फेरे॥
हे प्रभु ! मैं भी चिर रोगी हूँ, मेरी सब बाधा विनशाओ।
'गुप्तिनंदी' शिव सदन वरे, ऐसा वह सूत्र बता जाओ॥6॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से पुष्पदंत का ध्यान करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज-पर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा

(गीता छन्द)

मुनिनाथ मुनिसुव्रत प्रभो, पूरण करें मम आश को।
मम भव भ्रमण क्षय पूर्व तक, पूजूँ सदा तुम पाद को॥
ले कृष्ण पद्म गुलाब नीले, भक्ति आह्वानन करूँ।
शनिग्रह-तिथि-नक्षत्र कृत, सब विघ्न का भंजन करूँ॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छन्द)

घट में ले शुचि नीर, प्रभु के चरण पखारूँ।
जन्म-जरा-मृत नाश, हित प्रभु रूप निहारूँ।।
मुनिसुव्रत प्रभु नाम, हर क्षण ध्यान करूँगा।
ले पूजन की थाल, शनिग्रह दोष हरूँगा।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भव-भव का संताप, मुझको कष्ट दिलाता।
प्रभुपद चंदन लेप, मन शीतलता पाता।। मुनिसुव्रत ....

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षयनिधि के नाथ, अक्षयपद के दाता।
भर-भर अक्षत पुंज, अक्षयपद हित लाता।। मुनिसुव्रत ....

ॐ ह्रीं.....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

कामबाण को नाश, ब्रह्मरूप को ध्याऊँ।
जल-भूमिज बहुपुष्प, पदपंकज में लाऊँ।। मुनिसुव्रत ....

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

क्षुधावेदनी त्रास, नाशन हित मैं आया।
बहु नेवज मिष्ठान्न, अर्पण कर हर्षाया।। मुनिसुव्रत ....

ॐ ह्रीं.....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

जगमग दीप प्रकाश, तम को दूर भगाता।
भक्त प्रभुपद पाय, ज्ञानरश्मि को पाता।। मुनिसुव्रत ....

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

ध्यान अग्नि से आप, कर्मकलंक नशाया।
कर्मविनाशन हेत, घट में धूप खिराया।। मुनिसुव्रत ....

ॐ ह्रीं.....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सुफल कामना साथ, फल का थाल सजाया।
इच्छापूरक नाथ, शरण तिहारी आया।। मुनिसुव्रत ....

ॐ ह्रीं.....महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

गुण अनंत के ईश, भव का अंत कराते।
जल-फलादि के संग, भविजन नृत्य रचाते॥
मुनिसुव्रत प्रभु नाम, हर क्षण ध्यान करूँगा।
ले पूजन की थाल, शनिग्रह दोष हरूँगा॥

ॐ ह्रीं.....अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा : **नीलमणिमय कुंभ से, करता हूँ त्रय धार।**
नील-कृष्ण बहु पुष्प की, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः। (एक माला जाप करें)

जयमाला

सोरठा : **मुनियों के मुनिनाथ, मुनिसुव्रत व्रत के धनी।**
भक्त करें सब साथ, जयमाला जयकार से॥

दोहा

गुण मणियों की माल से, गाऊँ मैं जयमाल।
मुनिसुव्रत जिननाथ जी, करते मालामाल॥1॥

यदुवंश शोभित हुआ, राजगृही का आज।
पद्मा माँ के उर बसे, मुनिसुव्रत जिनराज॥2॥

रत्नवृष्टियाँ हो रही, देव करें जयकार।
धन-वैभव से हो रहा, सबको हर्ष अपार॥3॥

जन्में त्रिभुवन नाथ जब, प्रमुदित सुर-नर-इन्द्र।
सुरपति का आसन हिला, करें नमन सुरवृंद॥4॥

हर्षित हो शचि आ रही, प्रभुदर्शन के काज।
प्रभुमुद्रा को लख करे, सम्यग्दर्शन प्राप्त॥5॥

तप करने प्रभुजी चले, लौकांतिक सुर आय।
भाव आकिंचन धार कर, वीतराग पद पाय॥6॥

ज्ञान दर्शनावरण वा, मोहनीय रिपु कर्म।
अन्तराय चउ घातिया, गुण को नाशे कर्म॥7॥

गुण अनंत को धारते, घातिकर्म को नाश।
समोशरण प्रभु राजते, भविजन बैठे पास॥8॥

द्वादश कोठे मध्य में, गंधकुटी मनहार।
बैठे चउ अंगुल अधर, प्रभु जग तारणहार॥9॥

दिव्यध्वनि सुन कर रहे, भविजन पाप विनाश।
प्रभु साक्षी व्रत धारकर, पाने मुक्तिनिवास॥10॥

गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान और, कल्याणक निर्वाण।
पंच परावर्तन हरें, प्रभुपद में हम आन॥11॥

शनिग्रह बाधा से जनित, सब अरिष्ट मिट जाय।
प्रभु पद में वंदन-नमन, कर्म कलंक मिटाय॥12॥

मोक्षमार्ग के राज को, वरें श्रमण निर्ग्रन्थ।
'गुप्ति' की श्रम साधना, देती मुक्तिपंथ॥13॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से मुनिसुव्रत का ध्यान करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निजपर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ पूजा

(गीता छन्द)

नरनाथ गणधर इन्द्रशत, नागेन्द्र नित नमते जहाँ।
नेमीश बाल यतीश की, पदछाँव में रहते सदा ।।
हम कृष्ण पद्म गुलाब ले, आह्वान अभिनंदन करें।
नक्षत्र-राहू-ग्रह-दशादिक, विघ्नकृत क्रंदन हरें।।

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्टनिवारक श्री नेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छन्द)

ले नीर कृष्ण कुंभ में त्रयधार करायें।
त्रय रोग नाशें रत्न तीन आपसे पायें।।
श्री नेमीनाथ की करेंगे श्रेष्ठ अर्चना।
जिन भक्ति से नशे अनादि कर्म वंचना।।

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्टनिवारकाय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चन्दन कपूर मिश्र आप पाद में धरे।
जग श्रेष्ठ आप भक्ति हि भवताप को हरे।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मुक्ता व अक्षतों के पुंज श्रेष्ठ चढ़ायें।
अक्षय अखंड लब्धि हेतु भक्ति रचायें।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

राजुल को छोड़ नेमि काम शत्रु नशायें।
इस हेतु कृष्ण पद्म पुष्प चर्ण चढ़ायें ।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

छप्पन प्रकार श्रेष्ठ मिष्ठ नेवजों को ले।
प्रभु को चढ़ा क्षुधादि सर्व रोग को हरें।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हम भक्ति-नृत्य साथ आज आरती करें।
मोहांध नाश पूर्ण ज्ञान भारती वरें।।
श्री नेमीनाथ की करेंगे श्रेष्ठ अर्चना।
जिन भक्ति से नशे अनादि कर्म वंचना।।

ॐ ह्रीं..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

लाये हैं धूप सर्वरोग हारी सौख्यदा।
उनको चढ़ायें जिसने आठों कर्म को हना।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

फलगुच्छ षड्ऋतु के हमने आज सजायें।
शिवफल की चाह में चढ़ा शुभ नृत्य रचायें।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जल आदि अष्टद्रव्य लेय अर्घ सजायें।
अक्षय अनर्घ आत्म सिद्धी लाभ कमायें।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : कोहिनूर नीलम जड़ित, घट से त्रय जलधार।
कृष्ण कमल पुष्पाद्य से, सुमनांजलि सुखकार।

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्टनिवारकाय श्री नेमीनाथजिनेन्द्राय नमः। (एक माला जाप करें)

जयमाला

दोहा : रत्नत्रय रथ पर चले, श्री नेमी जिनराज।
राजुल तज तुमने वरी, मुक्तिरमा शिवराज।।

(शंभु छन्द)

जय नेमि जिनेश्वर जगत्प्रभो, तुम धर्म अहिंसा अवतारी।
जय मातशिवा के नंदन तुम, नृप समुद्रजय सुत मनहारी।।

तन इन्द्रनील सम श्यामसुभग, दशधनुष प्रमाण सुयश दाता।
जिसमें लक्षण अठ इकहजार, सर्वोच्च श्रेष्ठ मंगल दाता॥1॥
त्रयखंडपति श्री वासुदेव, बलभद्र अनुज तुम कहलाये।
यदुवंश शिरोमणि जगत्पिता, राजुलमति को ब्याहन आये॥
पशु क्रन्दन सुन वैराग्य जगा, जगबंधन से मन घबराया।
निर्ग्रंथ बनें छप्पन दिन में, अर्हत् तीर्थंकर पद पाया॥2॥
धनपति आज्ञा ले सुरपति की, शुभ समोशरण निर्माण करें।
वसु मंगलद्रव्य लिए सुरगण, नेमीप्रभु का गुणगान करें॥
झालर मुक्ता मणि रत्न खचित, त्रय छत्र लगे अतिमनहारे।
प्रभु का शासन त्रय लोकों में, त्रय काल रहे यह स्वीकारें॥3॥
सुरयक्ष चंवर चौसठ लेकर, प्रभु के चहुँदिश में लहराये।
रत्नत्रय दायक नृत्य रचा, जयकारों से नभ गुंजाये॥
घंटों का नाद मधुर मंगल, भव्यों को नित्य बुलाता है।
जिन दिव्यध्वनि का अधिकारी, घंटे का दान बनाता है॥4॥
मणि कंचन रत्नों की झारी, ले आयीं सुरकन्या सारी।
प्रभु सन्मुख भक्ति नृत्य करें, सम्यक्त्व वरें विस्मयकारी॥
शुभवर्ण-चिह्नयुत धर्मध्वजा, प्रभु के चहुँदिश में फहराये।
निर्मल यशधर की कीर्तिध्वजा, भव्यात्म जगत को हर्षाये॥5॥
जिनवर को पंखा भेंट करें, सौधर्म-शचि मंगल गायें।
सुरगण भी दर्पण अर्पण कर, निज काम दर्प को विनशायें॥
स्वस्तिक मंगलमय मंगलकर, मन के सब पाप गलाता है।
सुरपति वसु मंगलद्रव्य चढ़ा, चहुँगति का भ्रमण मिटाता है॥6॥
वसु मंगलद्रव्यों-प्रातिहार्य, पूजित श्री नेमी जिनेश्वर हैं।
राहुग्रहकृत सब कष्ट विघ्न, हरते जिनवर करुणाधर हैं॥
दुर्व्यसनी-तस्कर-खल-वँचक, राहू प्रतिकूल बनाता है।
अपमृत्यु संकट कालसर्प, आदि दुर्योग बनाता है॥7॥

राहू आदिक नवग्रह पीड़ा, प्रभु पूजा ही विनशाती है।
निर्ग्रन्थ श्रमण की सेवा भी, ग्रह की पीड़ा विनशाती है।।
हे जिनवर ! तव पद पूजा से, मैं भी सब विघ्न विनाश करूँ।
मैं 'गुप्तिनंदी' तव पथ अनुचर, शिवराजसदन में वास करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारकाय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से नेमीनाथ का ध्यान करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज-पर का उत्थान करे ।।
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ पूजन

(गीता छन्द)

श्री कर्मजेता मोक्षनेता, भव्यत्रेता आप हो।
श्री पार्श्वनाथ अनाथ के, हरते सकल संताप हो ।।
ले कृष्ण पद्म गुलाब नीले, भक्ति आह्वानन करूँ।
ग्रह केतु-तिथि-नक्षत्र कृत, सब विघ्न का भंजन करूँ।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

त्रय रोग नाशक जिन चरण में नीर की धारा करूँ।
त्रय रोग का मम नाश हो त्रय रत्न निधि धारण करूँ।।
आनंदरस के धाम श्री पारस प्रभु की अर्चना।
समता सुरस देती सदा हरती जगत की वंचना।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

भवताप के संताप से घबरा चरण आया प्रभो।
लेपन करूँ चंदन प्रभु संताप मेटो हे विभो।।
आनंदरस के धाम श्री पारस प्रभु की अर्चना।
समता सुरस देती सदा हरती जगत की वंचना।।

ॐ ह्रीं ..... संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मोती समान अखण्ड अक्षत मुट्ठी भर-भर ला रहा।
उज्जवल अखंडित गुण मिले यह भावना मैं भा रहा।। आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

श्री बालयति तीर्थेश को बहुभांति पुष्प चढ़ा रहा।
मैं कामबाण विनाश हेतु जिन चरण को ध्या रहा।। आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

गुजिया कचौड़ी रसभरी षट्रसमयी व्यजंन लिये।
संगीत भक्ति नृत्य संग जिननाथ को अर्पण किये।। आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

कंचन-रजत-घृत-रत्न की दीपावली से आरती।
भक्ति रचा मिथ्यात्व हर पाऊँ सकल श्रुत भारती।। आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

कर्मठ कमठ सम कर्म काष्ठ जला दिये शुचि ध्यान से।
इस हेतु मैं भी धूप ले अर्चा करूँ सद्ज्ञान से।। आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

तुम मोक्षफल से फल गये मेरा सफल जीवन करो।
मीठे सरस फल ले खड़ा भगवन मेरी झोली भरो।। आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

पारस प्रभु के द्वार पर वसुद्रव्य लेकर आ रहा।
संसार दु:ख का क्षय मेरा हो भावना यह भा रहा।। आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : कोहिनूर युत कुंभ ले, करता शांतिधार।
पुष्प अंजलि में लिए, अर्पण है मनहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः। (एक माला जाप करें)

जयमाला

दोहा : पार्श्वप्रभु का नाम है, सुख शांति का धाम।
उनकी जयमाला पढ़ूँ, ध्याऊँ आठों याम॥

चौपाई

जय-जय पार्श्व प्रभु मनहारी, जयमाला जिनकी सुखकारी।
जयमाला प्रभु की हम गायें, जिनगुण की मणिमाला पायें॥1॥
मात-पिता की महिमा गायें, प्रभुजी जिनके पुत्र कहाये।
काशी नगरी स्वर्ग समाना, दृश्य निराला सबने जाना॥2॥
जन्मत दश अतिशय को धारा, गूंजे नभ में जय-जयकारा।
सुरपति-शचि ऐरावत लायें, प्रभु को मेरू पर ले जायें॥3॥
क्षीरोदधि से न्हवन कराये, श्रमणों ने शुचिभाव बनाये।
पारस नाम जगत हितकारी, सुरपति घोष करें अघहारी॥4॥
बालक की क्रीड़ायें न्यारी, संकटमोचन हित उपकारी।
बचपन बीता यौवन आया, एक दिवस मन को यह भाया॥5॥
संग मित्रों के सैर करूँगा, मन की इच्छा पूर्ण करूँगा।
वन में इक तापस को पाया, जिसने पंचाग्नि तप ध्याया॥6॥
अवधिज्ञान से प्रभु ने जाना, जिसका सम्यक् किया निदाना।
प्रभु ने तापस को समझाया, खोटे तप को क्यों अपनाया॥7॥
प्रभु की बात उसे ना भायी, मन में उसके दया न आयी।
फिर भी प्रभु जी खेद न करते, नाग युगल पे करुणा करते॥8॥

महामंत्र नवकार सुनाया, जलते नाग युगल ने पाया।
महामंत्र को मन में धारे, मरकर वे पाताल सिधारे।।9।।

पद्मावती-धरणेन्द्र कहाये, प्रभु का नाम सुमर हर्षाये।
पारस प्रभु ने दीक्षा धारी, वीतराग मुद्रा मनहारी।।10।।

कर्म नशाने तप को धारा, जग जीवों का यही सहारा।
मन-वच-तन को वश करते थे, चिंतन कर्मों का करते थे।।11।।

पूर्व जन्म का वैरी आया, बदला लेना मन में भाया।
ओले-शोले-पत्थर-पानी, दैत्य कमठ करता मनमानी।।12।।

सात दिवस तक दैत्य सताता, किंचित् प्रभु को हिला न पाता।
परम ध्यान प्रभुवर ने ध्याया, सुर धरणेंद्र शची संग आया।।13।।

पद्मावती ने शीश बिठाया, अहिपति ने फणछत्र लगाया।
पारस प्रभु उपसर्ग विजेता, कर्म विजेता सबके त्रेता।।14।।

श्री अरिहंत सिद्ध गुण गायें, अपने सारे पाप नशायें।
जब केतु ग्रह बाधा होवे, गुरु भक्ति में मन रत होवे।।15।।

जयमाला की माला लायें, धर्मतीर्थ पारस को ध्यायें।
'गुप्तिनंदी' गुप्ति को धारें, समता धर शिवराज सम्हारे।।16।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से पार्श्वनाथ का ध्यान करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निजपर का उत्थान करे।।
मुनि बन धर्मतीर्थ विकसाये निश्चय ही शिवराज वरे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री तीर्थक्षेत्र पूजा

(अडिल्ल छन्द)

गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान क्षेत्र जिन ईश के।
भूत-भविष्यत्-वर्तमान तीर्थेश के।।
ऐसे क्षेत्र महान् परम सुखकार हैं।
करते हम थापना यहाँ त्रय बार हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पंचकल्याणकादि सर्वतीर्थ क्षेत्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल जल चरणों में लाये नाथ हम।
भावों से अर्पण करके नत माथ मम।।
तीर्थक्षेत्र की महिमा अपरंपार है।
करते हम सब पूजन बारंबार हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पंचकल्याणकादि सर्वतीर्थ क्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुरभित चंदन केसर ला रहे।
शीतलता पाने को चरण चढ़ा रहे।। तीर्थक्षेत्र......।।2।।

ॐ ह्रीं श्री .... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अखंडित शाली अक्षत ला रहे।
रत्नत्रय पाने को नाथ चढ़ा रहे।। तीर्थक्षेत्र......।।3।।

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध भाँति के पुष्प चढ़ायें नाथ को।
संयम धारें मदन अरि के नाश को।। तीर्थक्षेत्र......।।4।।

ॐ ह्रीं श्री .... कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विधि के व्यंजनों को भाव से।
अर्पण करते प्रभु चरणों में चाव से।। तीर्थक्षेत्र......।।5।।

ॐ ह्रीं श्री .... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पर प्रकाशक जिन रवि से तम नाश हो।
हम भी दीप चढ़ायें कर्म विनाश हो।।
तीर्थक्षेत्र की महिमा अपरंपार है।
करते हम सब पूजन बारंबार हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री......... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरिपु से मुक्ति पाने के लिए।
प्रतिदिन धूप चढ़ाते अर्चन के लिए।। तीर्थक्षेत्र......।।7।।

ॐ ह्रीं श्री .... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर नाना सुंदर फल लायेंगे।
करके पूजन मोक्ष महाफल पायेंगे।। तीर्थक्षेत्र......।।8।।

ॐ ह्रीं श्री .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य से पूजें सिद्ध अशेष को।
अष्टकर्म से रहित जिनेश्वर वेष को।। तीर्थक्षेत्र......।।9।।

ॐ ह्रीं श्री .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सर्वतीर्थ का उदक ले, करें विमल त्रयधार।
करें सदा सब तीर्थ पर, पुष्पांजलि अघहार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री पंचकल्याणकादि सर्वतीर्थ क्षेत्रेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : तीरथ क्षेत्र महान है, कर लो इनका ध्यान।
रोग-शोक संकट नशे, हो आतम कल्याण।।

शेर छंद (तर्ज- हे दीनबंधु श्री पति...)

वंदन करें हम बार-बार तीर्थक्षेत्र को।
तप-जन्म-गर्भ-ज्ञान और सिद्धक्षेत्र को।।

आ पंचकल्याणक सभी मनाते हैं यहाँ।
कल्याण के भावों से सभी आते हैं यहाँ॥1॥

शुभ धन्य है वह क्षेत्र प्रभु गर्भ में आए।
सुररत्न की वर्षा करें सब हर्ष मनाएँ॥
फिर जन्म कल्याणक मनाते इंद्र मिल सभी।
शुभभाव से पूजन करें मिलकर यहीं सभी॥2॥

जिननाथ ने जो तप किया वो थान है प्यारा।
त्रिकाल में नमन हो बार-बार हमारा॥
द्वय तप किया प्रभु ने शुक्ल ध्यान लगाया।
ध्यानाग्नि से उन्होंने दिव्यज्ञान को पाया॥3॥

आदि ऋषभ से वर्द्धमान देव के सभी।
स्थान केवलज्ञान को वंदन करें सभी॥
समोशरण में दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी।
भव्यों ने पा उपदेश नशाए करम गिरी॥4॥

जहाँ-जहाँ भी क्षेत्र हैं निर्वाण भूमि के।
कण-कण भी हैं महान उस पवित्र भूमि के॥
इन सर्व क्षेत्र की सदा हम वंदना करें।
निर्वाण हमको भी मिले हम अर्चना करें॥5॥

महान संत के पड़े जहाँ-जहाँ चरण।
उनको करें सदा ही प्राणिमात्र भी नमन॥
ये तीर्थ मध्यलोक के हरें सभी का मन।
यह 'राजश्री' त्रय योग जोड़ कर रही नमन॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पंचकल्याणकादि सर्वतीर्थ क्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : क्षेत्र परम स्थान को, करते कोटि प्रणाम।
पूजा का फल मैं चहूँ, हो निर्वाण महान्॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पूजा

शेर छन्द (तर्ज : हे दीनबंधु...)

सम्मेदशिखर का जहाँ कण-कण महान है।
उस तीर्थक्षेत्र का करें मन से आह्वान है।।
भावों से तीर्थ वंदना जो भव्य हैं करें।
भवरोग दूर कर वे मुक्तिरमा को वरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सम्मेदशिखर दे रहा शिक्षा महान है।
यह तीर्थ परम मुनियों का मुक्तिथान है।।
ऐसे ही परम तीर्थ को हम जल चढ़ा रहे।
बीसों प्रभु के ध्यान से निजगुण बढ़ा रहे।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

इस तीर्थ के दर्शन से हमें प्रेरणा मिले।
भवताप से कैसे बचें यह देशना मिले ।।
अतएव चंदनादि ले जिन अर्चना करें।
मिथ्यात्व के इस जाल से अब और ना डरें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

हमने कभी किया नहीं प्रभु का ध्यान है।
अतएव अपने लक्ष्य का हुआ ना ज्ञान है।।
अक्षय अनंत तीर्थ का गुणगान हम करें।
अक्षय अखंड तंदुलों से अर्च हम करें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ये पुष्प प्यारे-प्यारे आज हम चले लिये।
कोमल हृदय में भावना के पुष्प भर लिये।।

मन में नहीं विकार ना ही अहं भाव है।
हमको तो सिर्फ तीर्थ से विरला लगाव है॥
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

प्रासुक बना के आज मैं नैवेद्य ले चला।
प्रभु वंदना औ अर्चना की सीखने कला॥
नैवेद्य से पूजा करूँ जिनराज की सदा।
मुझको नहीं सताये कभी वेदनी क्षुधा॥
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

ये जगमगाते दीप की शुभ थाल सजाकर।
प्रभु की उतारूँ आरती मैं नाच बजाकर॥
आनंद मुझे धर्म में जिस क्षण भी मिलेगा।
भवरोग मेरा वो ही एक काल हरेगा॥
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

ये धूप प्यारी मन को हरने वाली मँगाकर।
सब टोंक में चढ़ाऊँगा मैं भाव से जाकर॥
बीसों प्रभु की अर्चना और ध्यान करूँगा।
मैं दुर्गुणों को नाश के कल्याण करूँगा॥
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

उत्तम फलों की थाल प्रभु आज सजाकर।
मैं भक्तिरस में डूब रहा नाच बजाकर॥
श्री मुक्तिधाम पाने करूँ भाव अर्चना।
महान पुण्य से मिले ये तीर्थ वंदना॥
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

ये अष्टद्रव्य थाल विधिवत् सजा लिया।
जिन अर्चना क्रिया के हेतु मन लगा दिया॥
हर टोंक में शुभभाव से जिन अर्घ चढ़ाकर।
बन जाऊँ मैं भी सिद्ध सारे कर्म खपाकर॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9 ।।

दोहा (प्रत्येक टोंक के अर्घ)

1. चौबीसों जिनराज के, गणधर मुनि का कूट।
अर्घ चढ़ा पूजन करूँ, श्रद्धाभाव अटूट।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामी आदि गणधर मुनि चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. कुन्थुनाथ जिनराज का, प्रथम ज्ञानधर कूट।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, भव से जाऊँ छूट।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्रादि 96 कोड़ा-कोड़ी, 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार, 742 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3. नमिनाथ जिनराज का, मित्रधर यह कूट।
अर्घ चढ़ा जिनदेव को, नाशूँ पाप अटूट।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्रादि 900 कोड़ा-कोड़ी 1 अरब 45 लाख 942 हजार मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4. अरहनाथ जिनराज का, नाटक कूट महान।
भक्ति से मैं अर्घ ले, करूँ प्रभु का ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्रादि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

5. मल्लिनाथ जिनराज का, संवल कूट विशाल।
भाव सहित मैं अर्घ ले, बनूँ नाथ खुशहाल।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्रादि 69 करोड़ ऋषिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6. श्रेयांसनाथ जिनेश का, संकलकूट महान।
अर्घ चढ़ा जिनराज को, धारूँ मैं शुभध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्रादि 96 कोड़ा-कोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

7. पुष्पदंत जिनराज का, सुप्रभ कूट मनोज्ञ।
अर्घ चढ़ा जिनराज को, धारूँ मैं शुभयोग।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्रादि 1 कोड़ा-कोड़ी 99 लाख 7 हजार 480 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. पदमप्रभु जिनराज का, मोहनकूट महान।
सब मुनि की पूजा करूँ, पाऊँ सम्यग्ज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्रादि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 427 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. मुनिसुव्रत जिनराज का, नीरज कूट प्रसिद्ध।
सब मुनियों को पूजकर, काम करूँ सब सिद्ध॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्रादि 99 कोड़ा-कोड़ी 97 करोड़ 9 लाख 999 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. चन्द्रप्रभु जिनराज का, ललितकूट अतिदूर।
सब मुनियों को पूज कर, कर्म करूँ चकचूर॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्रादि 984 अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 595 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. गढ़ कैलाश से मुक्त हैं, आदिनाथ भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भाव से, होवे मम् कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्रादि 10 हजार मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. शीतलनाथ जिनेन्द्र का, विद्युतवर है कूट।
सब मुनियों का अर्घ ले, जाऊँ भव से छूट॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्रादि 18 कोड़ा-कोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. अनन्तनाथ जिनेश का, कूट स्वयंभू श्रेष्ठ।
सब मुनियों का अर्घ ले, बन जाऊँ मैं श्रेष्ठ॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्रादि 96 कोड़ा-कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. सम्भवनाथ जिनेन्द्र का, धवल कूट है श्वेत।
सब मुनियों को पूजकर, काटूँ कर्मन् खेत॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथजिनेन्द्रादि 9 कोड़ा–कोड़ी 72 लाख 42 हजार 500 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. वासुपूज्य प्रभु ने किया, चम्पापुर निर्वाण।
भाव सहित हम अर्घ ले, करते उनका ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि 1 हजार मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

16. अभिनंदन जिनराज का, आनंद कूट महान।
सब मुनियों को अर्घ ले, करूँ उन्हीं का ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथजिनेन्द्रादि 72 कोड़ा–कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

17. धर्मनाथ जिनराज का, कूट सुदत्त महान।
सब मुनियों का अर्घ ले, करूँ मैं उनका ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि 29 कोड़ा–कोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 795 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

18. सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट महान।
सब मुनियों का अर्घ ले, करता उनका ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि 1 कोड़ा–कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 781 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

19. शांतिनाथ जिनराज का, कूट कुंदप्रभ जान।
सब मुनियों का अर्घ ले, करता उनका ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ा–कोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

20. पावापुर से सिद्ध हैं, महावीर जिनराज।
उनका नित प्रति अर्घ ले, करूँ वंदना आज॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि 27 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

21. सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र का, प्रभास कूट महान।
सब मुनियों का अर्घ ले, करता उनका ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 49 कोड़ा-कोड़ी 84 करोड़ 32 लाख 7 हजार 742 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

22. विमलनाथ जिनराज का, सुवीर कूट महान।
सब मुनियों को पूज कर, बन जाऊँ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि 70 कोड़ा-कोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

23. अजितनाथ जिनराज का, कूट सिद्धवर जान।
सब मुनियों को अर्घ ले, करता उनका ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि 1 अरब 84 करोड़ 45 लाख मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

24. गिरनारी से सिद्ध हैं, नेमिनाथ भगवान।
मन-वच-तन से अर्घ ले, करता उनका ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि 72 करोड़ 700 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

25. पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्ण भद्र है कूट।
मन-वच-तन से पूजकर, जाऊँ भव से छूट।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनिराज चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **गिरी सम्मेद महान को, वंदन बारम्बार।**
शांतिधार अर्पण करूँ, पुष्पांजलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्राय नम: । (9,27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : **गिरि सम्मेद अनादि से, करो न कोई विवाद।**
अनधिकार चेष्टा करी तो, पाओ घोर विषाद।।

चौपाई *(तर्ज : झीनी-झीनी उड़ी रे गुलाल...)*

झीनी-झीनी उड़ी रे गुलाल चालो रे शिखरजी को।
आई है भक्ति की बहार, चालो रे शिखरजी को।।

मेरे शिखरजी की शोभा न्यारी, ऊँचे-ऊँचे पर्वत भारी।
टोंक हैं जिन पे अपार...चालो रे... ॥1॥

शाश्वत तीरथ है ये हमारा, जिससे मिलता मुक्तिद्वारा।
इस पे हमारा अधिकार... चालो रे... ॥2॥

सबसे पहले मधुवन मिलता,दर्शन से मन हर्षित होता।
चैत्यालय मनहार... चालो रे... ॥3॥

समोशरण भी बना है भारी, जिसमें चौबीसी अतिप्यारी।
रच्यो विमल गुरुराज... चालो रे... ॥4॥

आगे बढ़ो तो गन्धर्व नाला, जिसमें बहती शीतलधारा।
प्यास बुझाते नर-नार... चालो रे... ॥5॥

प्यारा-प्यारा तीरथ हमारा, जिसमें मिलता शीतल नाला।
मिट जाये सारी थकान... चालो रे... ॥6॥

धीरे-धीरे सब चढ़ जावें, पूजा-पाठ में ध्यान लगावें।
करें अपना उद्धार... चालो रे... ॥7॥

प्रभु अनंतों मोक्ष गये हैं, यहीं पर योग निरोध किये हैं।
किया करम निस्तार... चालो रे... ॥8॥

प्रभुजी हम भी हरदम आवें, 'क्षमा' तुम्हारा ध्यान लगावें।
बन जाऊँ भगवान... चालो रे... ॥9॥

'क्षमा' करो प्रभु ज्ञान न मुझमें, भक्ति सदा मैं धारूँ मन में।
दर्शन पाऊँ हर बार... चालो रे... ॥10॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : गिरी सम्मेद महान की, महिमा अपरंपार।
'क्षमा' अल्पमति है प्रभु, कर न सके विस्तार॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री निर्वाण क्षेत्र पूजा

स्रग्विणी छंद (तर्ज– मेरे अंगने में....)

आदि से वीर तक पाया मुक्तिधाम है।
सर्व सिद्ध क्षेत्र को त्रियोग से प्रणाम है।।
अष्टकर्म काटने से पूज्य हो गई धरा।
अभिवादन करूँ भक्तिभाव से भरा।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाण क्षेत्र समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

जन्म–जरा–मृत नाश करो प्रभु, जल चरणों में लाया हूँ।
सम्यक् रत्नत्रय निधि पाने, अर्चन करने आया हूँ।।
परम तीर्थ क्षेत्रों की पूजन, हरती कर्मों का क्रंदन।
उनका पूजन ध्यान करूँ मैं, करता चरणों में वंदन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आधि–व्याधि–उपाधि नशाने, चंदन घिसकर लाता हूँ।
पीड़ित हो संसार ताप से, शांति पाने आता हूँ।। परम तीर्थ.....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी अक्षय अखंड सुख, प्राप्त किया था प्रभुवर ने।
अक्षत पुँज चढ़ाता प्रभुवर, तुम सम निश्चयकर मन में।। परम तीर्थ.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर–सुन्दर पुष्पों से मैं, जिनवर की अर्चा करता।
कामबाण क्षय करने हेतु, तव गुण की चर्चा करता।। परम तीर्थ.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर सुगंधित षट्रस व्यंजन, थाल सजाकर लाया हूँ।
क्षुधारोग को दूर भगाने, प्रभु चरणों में आया हूँ।। परम तीर्थ.....।।5।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ क्षेत्र की आरति करके, मोह तिमिर का नाश करूँ।
सम्यक् दीप जलाकर अपना, सम्यक् भाव प्रकाश करूँ॥
परम तीर्थ क्षेत्रों की पूजन, हरती कर्मों का क्रंदन।
उनका पूजन ध्यान करूँ मैं, करता चरणों में वंदन॥6॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ही प्राणी को, भव-भव में भ्रमण कराता है।
धूप चढ़ाकर अग्नि में, कर्मों को भक्त जलाता है॥ परम तीर्थ..... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवफल पाने का इच्छुक नर, हरे-भरे फल लाता है।
सिद्ध क्षेत्र की अर्चा करके, मोक्ष महाफल पाता है॥ परम तीर्थ..... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य का थाल सजाकर, प्रभु चरणों में लाऊँगा।
गढ़ गिरनारी चंपापुर, कैलाश शिखर को ध्याऊँगा॥ परम तीर्थ..... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : मोक्ष गये जिस क्षेत्र से, चौबीसों भगवान।
निर्मल जल की धार दे, फूल चढ़ाऊँ आन॥

शांतये शांतिधारा... दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : सिद्ध भूमियों को नमन, नमन करूँ जिनदेव।
करूँ वंदना भाव से, बनूँ सिद्ध हे देव॥

चौपाई

आदि जिनेश मोक्ष पद पाये, अष्टापद को धन्य बनाये।
वासुपूज्य जगपूज्य कहाये, चंपापुर से मुक्ति पाये॥1॥

नेमिनाथ की महिमा भारी, त्यागी राजुल जैसी नारी।
बाल ब्रह्मचारी प्रभुवरजी, गिरनारी से मुक्ति वरली॥2॥

पाप ताप पावापुर हरता, नर–नारी को हर्षित करता।
पावापुर में जाकर स्वामी, वीर बने थे शिवपथगामी॥3॥

बीसों प्रभुवर को हम नमते, गिरि सम्मेदशिखर को भजते।
इन तीर्थों को जो भी ध्याते, पंच परावर्तन कट जाते॥4॥

महिमा मंडित तीर्थ हमारे, जो जन–जन को लगते प्यारे।
पापों का प्रक्षालन कर लो, तीर्थक्षेत्र का वंदन कर लो॥5॥

भव्य भाव से तीरथ जावे, तीर्थ शिखर के दर्शन पावें।
भक्तिभाव से इनको ध्याता, रत्नत्रयनिधि वो ही पाता॥6॥

बालक–वृद्ध सभी चढ़ जाये, टोंक–टोंक पे अर्घ चढ़ावें।
नाचें–गायें धूम मचायें, प्रभुवर की जयकार लगायें॥7॥

सोनागिर गजपंथा जायें, राजगृही मथुरा को ध्यायें।
मांगीतुंगी पावा पूजें, मुक्तागिर रेसदी पूजें॥8॥

कुंथुलगिरी तारंगा प्यारा, शत्रुंजय द्रोणागिर न्यारा।
सिद्ध हुये जो गुरु हमारे, उनके पावन चरण पखारें॥9॥

सिद्धवर कूट उन बड़वानी, पाई गुरु ने शिवरजधानी।
सिद्धभूमियों को हम ध्यायें, कर्म काट के शिवसुख पायें॥10॥

हृदय कमल पुलकित हो जाये, हम जिनवर के दर्शन पायें।
'आस्था' नत हो शीश झुकायें, अपना जीवन धन्य बनाये॥11॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अष्टापद गिरनार से, मोक्ष गये भगवान।
चंपापुर पावापुरी, गिरि सम्मेद महान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री गजपंथा सिद्धक्षेत्र पूजा

शेर छंद (तर्ज- हे दीनबन्धु...)

गजपंथ सिद्ध क्षेत्र के सब सिद्ध को ध्यायें।
उनके गुणों में भक्ति से निज चित्त लगायें॥
हाथों में ले पुष्पांजलि हम थापना करें।
पावन पुनीत तीर्थ की आराधना करें॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथसिद्धक्षेत्र सप्तबलभद्रादिष्टकोटि मुनिवराः ! अत्रावतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

प्रासुक मनोज्ञ नीर प्रभु चरण में लाये।
निज जन्म-मरण मेटने जिन चरण चढ़ायें॥
बलभद्र सात और अष्ट कोटी मुनीशा।
वे सिद्ध हुए थे सभी गजपंथ के शीशा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथसिद्धक्षेत्राय सप्तबलभद्रादि अष्टकोटि मुनिवरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर गंध श्रेष्ठ केशरादि ले।
प्रभु के चरण चढ़ायें सर्व पाप तम गले॥ बलभद्र......॥2॥

ॐ ह्रीं श्री ....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल अखंड मोती पुंज ला रहे।
अक्षय अनंत लाभ के लिए चढ़ा रहे॥ बलभद्र......॥3॥

ॐ ह्रीं श्री ....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मरुआ कमल गुलाब ताजे स्वच्छ मंगाये।
जिनराज के पदपद्म में भक्ति से सजाये॥ बलभद्र......॥4॥

ॐ ह्रीं श्री ....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवज मनोज्ञ मिष्ट नाना जाति के बना।
जिनराज को समर्प क्षुधा कर्म को हना॥
बलभद्र सात और अष्ट कोटी मुनीशा।
वे सिद्ध हुए थे सभी गजपंथ के शीशा॥5॥

ॐ ह्रीं श्री ....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत रत्न दीप हेमथाल में सजायेंगे।
प्रभु की करेंगे आरती गायें बजायेंगे॥ बलभद्र...... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री ....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध तगर धूप धूपायन में चढ़ायें।
अरिहंत सिद्ध को नमें सब कर्म नशायें॥ बलभद्र...... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री ....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर पेरु आम नाना वर्ण के लिए।
चरणों में भेंट कर रहे भवतरण के लिए॥ बलभद्र...... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री ....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-गंध-पुष्प-दीप आदि आठद्रव्य लें।
श्री सिद्धक्षेत्र पूजते शिव सम्पदा मिले॥ बलभद्र...... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री ....अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **बलधर सात महान है, आठ कोटि निर्ग्रन्थ।**
पुष्पांजलि जलधार कर, बोलें जय गजपन्थ॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्राय नमः। (9, 27 या 108 बार पढ़ें)

जयमाला

दोहा : **गजपंथा को नमन कर, करें आत्मकल्याण।**
सिद्ध प्रभु जयमाल से, मिले मोक्ष वरदान॥

(तर्ज – नरेन्द्र छंद)

जय–जय तीर्थ क्षेत्र गजपंथा, सिद्ध भूमि अतिशायी।
विजय, अचल, सुधर्म व सुप्रभ, अपराजित सुखदायी॥
नंदी, सुदर्शन आदि सात, बलभद्र यहाँ शिव पाये।
आठ कोटि मुनि परम तपस्वी, आठों कर्म नशाये॥1॥

गजकुमार ने गजपंथा में, आकर ध्यान लगाया।
परम घोर उपसर्ग जीत कर, शिवरमणी को पाया॥
सिद्धक्षेत्र के दर्शन का जो, भाव हृदय में लाये।
भाव मात्र से इक हजार, उपवासों का फल पाये॥2॥

तीर्थक्षेत्र प्रति पग बढ़ते ही, होवे लख उपवासी।
हर सीढ़ी पर पुण्य कमाये, जिनदर्शन अभिलाषी॥
कोटाकोटी उपवासों का, फल मिलता दर्शन से।
सर्व सिद्धियाँ होय सहज ही, तीर्थक्षेत्र दर्शन से॥3॥

सिद्धक्षेत्र के सिद्ध–श्रमण को जो निजमन में धारे।
उन सम तपकर अल्पभवों में वह शिवधाम पधारे॥
नवग्रह की अति दुस्सह पीड़ा तीर्थभक्त विनशाये।
देहज–कर्मज–मानस दुःखहर, सर्व सुखों को पायें॥4॥

तीर्थक्षेत्र का कण–कण पावन, इसको शीश नवाओ।
अष्टद्रव्य से पूजन करके, अपना मोह भगाओ॥
'गुप्तिनंदी' तव शरणा में आ, सर्वसिद्धि पा जाये।
सिद्धक्षेत्र का ध्यान लगाकर, स्वयंसिद्ध बन जाये॥5॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथसिद्धक्षेत्राय सप्तबलभद्रादि अष्टकोटि मुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सिद्ध क्षेत्र गजपंथ को, कोटि अनंत प्रणाम।
सिद्ध होय सब कामना, पायें शिव सुख धाम॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री गोम्मटेश बाहुबली पूजा

(गीता छन्द)

श्री बाहुबली बल के धनी, मन्मथ मनोज्ञ जिनेश हो।
शिवपथ प्रदर्शक आत्मदर्शक, गुणनिधि के ईश हो॥
भरतेश जेता जग विजेता, धर्मनेता आप हो।
आह्वान पुष्पों से करूँ, जीवन मेरा निष्पाप हो॥

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल धार प्रभु पग से चली, कल्याणी सरवर बन गई।
प्रभु पाद में जल धार दे, निज आत्म धूलि धुल गई॥
श्री विंध्यगिरी के बाहुबली, छवि को निहारूँ हर घड़ी।
पूजन-भजन-कीर्तन करूँ, तोडूँ सभी कर्मन् कड़ी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पाद में आकर मेरा, जीवन सुरक्षित हो गया।
तुम पाद में चंदन चढ़ा, सर्वात्म सुरभित हो गया॥ श्री विंध्यगिरी..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्डित तप धरा, बाहुबली जिनराज ने।
अक्षय धवल तंदुल चढ़ा, पाऊँ परम शिवराज मैं॥ श्री विंध्यगिरी..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्मथ महाबल कामजेता, आप जग विख्यात हो।
जूही कमल बहु पुष्प से, प्रभु अर्चना दिन रात हो॥ श्री विंध्यगिरी..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इकवर्ष का उपवास कर, प्रभुवर क्षुधा-तृष्णा हरें।
तृष्णा क्षुधा के नाश हित, व्यंजन सरस अर्पण करें॥ श्री विंध्यगिरी..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रज भरत को जीत प्रभु, निज आत्मदीप जला लिया।
उनको चढ़ा घृत रत्न दीपक, ज्ञान दीप जला लिया॥ श्री विंध्यगिरी..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य के हो भूप तुम, यह धूप मैं अर्पण करूँ।
प्रभु आप सम तप धारकर, वसुकर्म का खण्डन करूँ॥
श्री विंध्यगिरी के बाहुबली, छवि को निहारूँ हर घड़ी।
पूजन-भजन-कीर्तन करूँ, तोड़ूँ सभी कर्मन् कड़ी॥7॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चिरभक्ति का यह फल मिला, प्रभु आज तुम दर्शन हुआ।
आमादि बहुविध फल चढ़ा, जीवन सफल पावन हुआ॥ श्री विंध्यगिरी..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा परम पावन प्रभो, की आत्मसंबोधन करे।
हम अष्टद्रव्य चढ़ा प्रभु को, आत्मसमता धन वरें॥ श्री विंध्यगिरी..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : जल के मंगल कुंभ से, करता शांतिधार।
प्रभु पद में अर्पण करूँ, पुष्पों के उपहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश बाहुबली जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : गोम्मटेश बाहुबली, विंध्यगिरी के नाथ।
प्रभु की गुण गाथा कहूँ, जयमाला के साथ॥

शंभु छंद

जय गोम्मटेश श्री वृषभपुत्र, जय मात सुनंदा के नंदन।
जय-जय पोदनपुर के राजा, श्री भरत अनुज का अभिनंदन॥
चामुण्डराय मूर्ति बनवायें, मात और गुरु आज्ञा से।
अतिशायी सुंदर रूप दिया, इक शिल्पकार ने विद्या से॥1॥

सौभाग्य चिह्न उन्नत ललाट, घुंघराले केश मनोहर हैं।
सुख-शांति का उपदेश करें, द्वय नयन सुलोचन सुखकर हैं॥
भौहें शुभ धनुष समान लगे, मानो वे निश्चल ध्यान धरें।
निज काम कषाय विभावों पर, वह ध्यानी शर संधान करें॥2॥

विंध्याचल जैसी नासा से, वे स्वाभिमान संदेश कहे।
द्वय अधर मंदमुस्कान धरे, मानो वे हमसे बोल रहे॥
दो गोल कपोल शिशु जैसे, जग को आनंदित करते हैं।
और कर्ण सभी की विनती सुन, सबके दुःख संकट हरते हैं॥3॥
कंधे उन्नत ग्रीवा विशाल, उन्नत विचार के सूचक हैं।
वक्षस्थल करुणा का सागर, जग जीवों का हितचिंतक है॥
प्रभु की अजानबाहु दोनों, संकल्प सूत्र बतलाती हैं।
कटि नाभि त्रिवलियों से रम्यक्, जग का सौंदर्य लजाती हैं॥4॥
व्रत त्याग तपस्या की प्रतीक, द्वय जांघे सुदृढ़ सुन्दर हैं।
तन से लिपटी माधवी लता, चरणों में कुक्कुट विषधर हैं॥
पगतल पर सुंदर कमल खिला, सबका मन कमल खिलाता है।
गोम्मट की गोम्मट मूरत को, युग-युग तक अमर कराता है॥5॥
अनुपम विशाल इस प्रतिमा की, हर उपमा छोटी लगती है।
मानव या देव रचित प्रतिमा, होकर अनहोनी लगती है॥
मनहारी प्रभु की छवि लखकर, मन आनंदित हो जाता है।
दृष्टि अपलक हो जाती है, हटने को मन नहीं करता है॥6॥
दुनिया में जिसको शरण नहीं, वो शरण तुम्हारी आता है।
प्रभुवर की मन से भक्ति कर, अपने सब कष्ट मिटाता है॥
युग-युग से महाभिषेक हुए, फिर भी युग तृप्त नहीं होता।
यह जग हर बारह वर्षों में, प्रभु भक्ति को प्रस्तुत होता॥7॥
तुम हो विशाल करते निहाल, जयमाल तुम्हारी गाता हूँ।
प्रभु आप रूप गुण गाने में, मैं खुद को लज्जित पाता हूँ॥
हे नाथ ! क्षमाधर क्षमा करो, शिवपुर का राज बता जाओ।
'गुप्तिनंदी' प्रभु भक्ति करे, प्रभु मेरे मन में बस जाओ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : प्रभु चरणों का ध्यान हो, यही मिले वरदान।
दर्शन दो मुझको सदा, बाहुबली भगवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री बाहुबली पूजा

(गीता छन्द)

बाहुबली बलधर प्रभो, शिव सौख्य के भरतार हो।
हो कामदेव जिनेश तुम, चारित्र के भण्डार हो॥
मन में बिठाऊँ आज मैं, आह्वान करता भाव से।
गुणगान गाऊँ मैं तुम्हारा, अर्चता नित चाव से॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

निर्मल जल चरणों में आज चढ़ाऊँगा।
प्रभुवर की पूजा से कर्म नशाऊँगा॥
बाहुबली स्वामी की करता अर्चना।
भक्ति और श्रद्धा से करता वंदना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का मोह ममत्व मुझे झुलसा रहा।
शीतलता पाने चरणों में आ रहा॥ बाहुबली स्वामी....॥2॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी सुख पाने पुञ्ज चढ़ाऊँगा।
कर्म नशाके अक्षय पदवी पाऊँगा॥ बाहुबली स्वामी....॥3॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

खिले हुए पुष्पों से तव अर्चन किया।
कामदेव ने मन्मथ का मर्दन किया॥ बाहुबली स्वामी....॥4॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर नैवेद्य सुगंधित ला रहा।
क्षुधा वेदनी रोग नशाने आ रहा॥ बाहुबली स्वामी....॥5॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली मैं ला रहा।
सम्यक् दीप जलाने तव गुण गा रहा॥
बाहुबली स्वामी की करता अर्चना।
भक्ति और श्रद्धा से करता वंदना॥6॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी आज चरण में ला रहा।
कर्म कालिमा नशने धूप चढ़ा रहा॥ बाहुबली स्वामी....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाने सुफल चढ़ा रहा।
नारंगी, केला, अनार फल ला रहा॥ बाहुबली स्वामी....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदि द्रव्यों से पूजा करूँ।
पाप तिमिर का हनन करूँ मुक्ति वरूँ॥ बाहुबली स्वामी....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **प्रभु के पद में धार कर, दर्श करूँ त्रयकाल।**
रंग-बिरंगे पुष्प ले, चरण चढ़ाऊँ माल॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **बाहुबली भगवान के, चरणों में नत भाल।**
सतत नाम लेते रहें, काटें कर्मन् जाल॥

(नरेन्द्र छंद)

नगर अयोध्या पावन है बाहुबली प्रभु ने जन्म लिया।
मात सुनंदा पुलकित होवे पिता वृषभ को धन्य किया॥

पिता ऋषभ ने बड़े प्रेम से अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान दिया।
धर्म नीति की शिक्षा देकर पोदनपुर नृप मान दिया॥
बाहुबली ने पोदनपुर का न्यायनीति से राज्य किया।
पिता ऋषभ के आदेशों पर धर्म पूर्ण साम्राज्य किया॥1॥

षट्खण्डों को जीत भरत ने विजय पताका फहराई।
चक्री को जब चक्र मिला तब सबने मिल महिमा गाई॥
नगर अयोध्या के बाहर ही भरत चक्री का चक्र रुका।
मंत्री ने संदेश दिया कि अनुज आपका नहीं झुका॥2॥

भरत कहे सब भ्राताओं से शीश झुकाओ चरणों में।
छहखण्डों का महीपती मैं झुक जाओ तुम चरणों में॥
पोदनपुर के स्वामी को कर्त्तव्य-बोध का भान हुआ।
क्षणभंगुर सुख साधन में मुझको न निज का ज्ञान हुआ॥3॥

वेष दिगम्बर धार उन्होंने काया से ममता छोड़ी।
एक वर्ष तक करी तपस्या कर्मों की कड़ियाँ तोड़ी॥
उनके तनपे चढ़ी लतायें फिर भी ध्यान नहीं छोड़ा।
ध्यानाग्नि से कर्म जलाकर मुक्ति से नाता जोड़ा॥4॥

गोम्मटगिरी और श्रवणबेलगोला में प्रतिमा न्यारी है।
धर्मस्थल और कारकल की मूरत लगती प्यारी है॥
जय-जयकार करें नर-नारी नित प्रति अर्घ चढ़ाते हैं।
भक्तिभाव से प्रेरित हो हम जयमाला नित गाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : तुम समान तप साधना, पा जायें जिनराज।
'आस्था' से वंदन करें, सफल होय सब काज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री विंध्यगिरी बाहुबली पूजा

(गीता छंद)

जय विंध्यगिरी के बाहुबली, जय गोम्मटेश महान हैं।
सुंदर अति अनुपम छवि, बाहुबली भगवान हैं।।
जगख्यात तपनिष्णात प्रभु का, रूप मन को भा रहा।
मन में बसाने आपको, पुष्पाञ्जलि ले आ रहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

श्रीफल व फूल से सजे ये नीर कुंभ ले।
जिन पाद पद्म धोय जन्म-मृत्यु अघ धुले।।
श्री श्रवणबेलगोला तीर्थ दर्श पा रहा।
जय गोम्मटेश-गोम्मटेश गीत गा रहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं द्वंद-फंद बंधनों से तंग हो गया।
शुभ गंध से अर्चन किया आनंद हो गया।।
चंदन ले श्री जिनेश पाद को सजा रहा। जय गोम्मटेश... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखंड शैल से बना ये रूप मन हरे।
अखंड द्रव्य को चढ़ा अखंड सुख वरें।।
प्रभु से कहूँ प्रभुजी मोक्ष मैं भी आ रहा। जय गोम्मटेश... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके चरण चढ़ी हुई हैं पुष्प बेलियाँ।
चढ़ाके उन्हें पुष्प काम रोग हर लिया।।
जिन पाद पद्म श्वेत नील पद्म ला रहा। जय गोम्मटेश... ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दर्श तुम्हारा भूलाये भूख-प्यास को।
मिठाइयाँ चढ़ा हरूँ क्षुधादि त्रास को॥
पुआ पकौड़ी बर्फी मोदकादि ला रहा।
जय गोम्मटेश-गोम्मटेश गीत गा रहा॥5॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महान मूर्ति कीर्ति तेरी देश-देश में।
उतार आरती नशाऊँ मोह क्लेश मैं॥
दीपक जलाके भक्ति-नृत्य भी रचा रहा। जय गोम्मटेश...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नभचुम्बी काय कहती आप कर्म विजेता।
ये धूप चढ़ा मैं बनूँ मुक्तिपुरी नेता॥
लेकर अगर-तगर को अग्नि में खिरा रहा। जय गोम्मटेश...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आपादकण्ठ रूप मनहरण करे सदा।
हरे फलों से अर्च पाऊँ मोक्ष संपदा॥
हे नाथ ! आप जैसा पद मुझे लुभा रहा। जय गोम्मटेश...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे गोम्मटेश ! अर्घ्य आपको चढ़ा रहा।
बजाके वाद्य पाप नाश पुण्य पा रहा॥
झांझर मंजीरा ढोल ले भक्ति रचा रहा। जय गोम्मटेश...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : शांति का संदेश दे, बाहुबली जिनराज।
शांतिधारा हम करें, गोम्मटेश पद आज॥

शांतये शांतिधारा।

रंग बिरंगे पुष्प ले, पुष्पांजलि चढ़ाय।
प्रभु भक्ति के रंग में, भक्त सभी रंग जाय॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री विंध्यगिरी बाहुबली जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : सुंदर दिव्य मनोज्ञ ये, अनुपम काय विशाल।
आओ भक्ति से पढ़ें, गोम्मटेश जयमाल॥

(नरेन्द्र छंद)

विंध्यगिरी के बाहुबली की, महिमा अतिशयकारी है।
श्रवणबेलगोला के स्वामी, गोम्मटेश सुखकारी है॥
अवधपुरी में जन्म लिया तब, आदिनाथ पितु हर्षाये।
मात सुनंदा की गोदी में, प्रथम देव मन्मथ आये॥1॥

भरत क्षेत्र को जीत अयोध्या, भरत चक्रवर्ती आये।
फिर भी बाहुबली के आगे, चक्री का मद गल जाये॥
है धिक्कार मुझे क्यों मैंने, भाई से नाता तोड़ा।
ऐसा चिंतन कर प्रभुवर ने, शिवपथ से नाता जोड़ा॥2॥

वैरागी बनकर मुनिवर ने, खड्गासन हो तप धारा।
पुष्पलता वा सर्पों ने तब, चरणों में डेरा डाला॥
एक वर्ष तक तप कर भगवन्, अर्हत बन शिवपुर जाये।
ऐसी ही मनभावन प्रतिमा, विंध्यगिरी की मन भाये॥3॥

इस प्रतिमा का श्रेय बनी है, चामुंडराया की माता।
बाहुबली प्रतिमा बनवाकर, बन गई वो तो जगमाता॥
पोदनपुर के बाहुबली का, अजितसेन गुरु गुण गायें।
सुनकर बाहुबली दर्शन को, मात कालला ललचाये॥4॥

गुरु आज्ञा से चंद्रगिरी पर, माता परिजन संग जाये।
नेमिचंद्राचार्य गुरु को, अपनी उलझन बतलाये॥
तब देवी कुष्मांडिनि माँ ने, अतिशय एक किया न्यारा।
माँ बेटे वा गुरुदेव को, बात कही सपने द्वारा॥5॥

देवी कहती इस प्रतिमा का, दुर्लभ है दर्शन न्यारा।
कलिकाल में ये रक्षित है, कुक्कुट सर्पों के द्वारा॥

उत्तरमुख हो बाण चलाना, धीर वीर धीरजधारी।
प्रभु का रेखाचित्र बनेगा, विंध्यगिरी पर सुखकारी॥6॥

चामुण्डराया बाण चलाये, सपना सत्य हुआ सारा।
रेखा चित्र बना प्रभुवर का, गूँजा नभ में जयकारा॥
शिल्पकार की शिल्पकला ने, मानो अतिशय दिखलाया।
बाहुबली प्रतिमा निर्मित कर, जिनशासन ध्वज फहराया॥7॥

केश प्रभु के हैं घुँघराले, मेरू सम उन्नत माथा।
हँसता मुख आजान भुजाऐं, नयन सुलोचन सुखदाता।
लिपटी बेलि कहती हम हैं, पावन पा जिनपद छाया।
ऐसी सुंदर प्रतिमा बनवा, धन्य हुआ चामुंडराया॥8॥

महामहोत्सव अभिषेक में, मान करे चामुंडराया।
इस कारण नाभि तक जाकर, रूकती कलशों की धारा।
इतने में गुल्लिका अज्जि, बनकर इक देवी आये।
करने को अभिषेक प्रभु का, दूध भरी लुटिया लाये॥9॥

बुढ़िया की लुटिया की धारा, महाधार बन बह जाये।
वो ही बन कल्याण सरोवर, जय-जय बाहुबली गाये॥
प्रभुवर की ये पावन गाथा, सबके मन को हर्षाये।
महामहोत्सव अभिषेक में, जनता उमड़-उमड़ आये॥10॥

हे प्रभु ! हम भी स्वर्ण घटों से, तव अभिषेक करायेंगे।
थाल सजाकर ताल बजाकर, जिन जयमाला गायेंगे॥
प्रभुवर हमको अपने जैसा, शिवपुर राज दिला देना।
गुप्तिनंदी के शिष्य चन्द्र का, जीवन 'सुलभ' बना देना॥11॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : क्षमा धर्म धर यश वरे, बाहुबली जिनराज।
आस्था रख जिनपाद में, सफल करें सब काज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ (कचनेर) पूजा

शंभु छन्द (तर्ज- ये देश है वीर...)

पारसबाबा-पारसबाबा, यह नाम सुमर हर्षाया हूँ।
दर्शन की इच्छा लेकर मैं, कचनेर तीर्थ में आया हूँ।।
पुष्पांजलि से आह्वानन कर, पूजा के भाव जगाता हूँ।
मेरे सूने मन मंदिर में, पारस की छवि बिठाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हे नाथ ! कर्ममल तजने को, जल की त्रयधार चढ़ाता हूँ।
हेमाभ रजत मृण कुम्भों में, भक्ति से जल भर लाता हूँ।।
चिंतामणि पारस बाबा के, चरणों में शीश झुकाता हूँ।
चिंतायें चित् से दूर करो, चिंतायें तजने आता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का क्रंदन हरने वाले, प्रभु को वंदन कर हर्षाता।
संसार तपन से बचने को, चंदन लेपन करने आता।। चिंतामणि..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री.......संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद के स्वामी की मैं, अक्षत से पूजा करता हूँ।
अक्षयपद की अभिलाषा से, त्रय बार वंदना करता हूँ।। चिंतामणि..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री.......अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज पुष्प सजा करके, प्रभु पद में अर्पित करता हूँ।
हे मदन अरि जेता प्रभुजी, मैं ब्रह्म रूप को वरता हूँ।। चिंतामणि..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री.......कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी गुजिया बरफी लड्डू, षट्रसमय व्यंजन की थाली।
नैवेद्य समर्पित करके मैं, मेंटू कर्मों की सब जाली।। चिंतामणि..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री.......क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की शुभ अर्चा, भक्तों के संकट हरती है।
यह श्रद्धा से दीपक अर्चा, मम मोह कालिमा हरती है।।
चिंतामणि पारस बाबा के, चरणों में शीश झुकाता हूँ।
चिंतायें चित् से दूर करो, चिंतायें तजने आता हूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री.......मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मठ कर्मों की काठ जला, उपसर्ग विजेता पद पाया।
यह धूप दशांगी लेकर मैं, जिन सम्मुख अर्पण हित आया।। चिंतामणि..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री.......अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की शुभ इच्छा लेकर मैं, षट्ऋतु के फल ले आया हूँ।
हो कर्म दुःखों का क्षय मेरा, यह भाव हृदय में लाया हूँ।। चिंतामणि..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री.......महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस बाबा के दर्शन को, कचनेर ग्राम में आता हूँ।
अष्टम वसुधा का राज मिले, आठों द्रव्यों को लाता हूँ।। चिंतामणि..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री.......अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्ज- म्हारा हीवडा में....)

प्रभु गर्भ में आये आज तथ थइया-2
सब मिलके बजाओ साज ढोलक झाँझरियां।
धन्य हमारे भाग्य जगे हैं और छाई हैं खुशियाँ-2 प्रभु......

वैशाख कृष्ण दुतिया मंगल, पारस प्रभु माँ के उर आये।
पितु अश्वसेन के आंगन में, आनंद सहित सुर-नर आये।।
रत्नवृष्टि से मनहर लगती वाराणसी नगरिया। प्रभु......

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज- उड़ी जब जब...)

वाराणसी नगरी सजाई-2, पारसनाथ जन्मे-2, प्रभुवरजी...
शुभ पौष वदी ग्यारस को-2, वामा माँ हर्षे।
सौधर्म शचि प्रभु निरखे-2, नयन हजार करें-2, प्रभुवरजी...
मेरू पर न्वहन कराके-2, शचि शृंगार करें।
हम अर्घ चढ़ा प्रभुजी को-2, अक्षय पुण्य भरें-2, प्रभुवरजी...

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज- ये तो सच है..)

हम तो दीक्षा के गुण गा रहे, फिर भी उसको न ले पा रहे।
ये तो पुण्य का संयोग है, जिसे पारस प्रभु पा रहे॥ हम तो..
त्यागा संसार को, त्यागा घर-बार को।
प्रभु वन को चले, पाने शिवनार को॥ आऽऽऽ
पौष कृष्णा की एकादशी, वे तो दीक्षा के व्रत पा रहे॥ ये तो पुण्य...
चौथे बालयति, बनने मुक्तिपति।
तोड़े बंधन सभी, पाने पंचमगति। आऽऽऽ
हम तो उनकी शरण आ रहे, उनके वैराग्य को ध्या रहे॥ ये तो पुण्य...

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज- मेरे अंगने में...)

प्रभु ज्ञान धारी की महिमा महान है।
अर्चा तुम्हारी बनाये ज्ञानवान है।
घाति कर्म नाशे प्रभु जी शुक्ल ध्यान से।
चैत चौथ श्यामा-2, को पाये दिव्यज्ञान है। अर्चा....
धर्म सभा सौधर्म रचता महान है।
करें ज्ञान अर्चा-2, वो पाये पूर्णज्ञान है। अर्चा....

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज– ऐ मेरे वतन के लोगों...)

हम पार्श्व प्रभु को ध्यायें, मुक्ति का पर्व मनायें।
सम्मेद शिखर को ध्यायें, निर्वाण लाडू ले जायें।।
था समोशरण मनहारा, प्रभु ने उसको निस्तारा।
प्रभु अंतिमध्यान लगाया, कर्मों का पिंड जलाया।।
श्रावण सुदि सप्तम आये, प्रभु श्रेष्ठ सिद्धपद पायें।। सम्मेद....
सौधर्म वहाँ पर आये, अग्निकुमार भी आये।
अग्नि संस्कार कराये, निर्वाणधाम को ध्याये।।
कचनेर भविक जन आयें, शिवमंगल दिवस मनायें।। सम्मेद....

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **चिंतामणि प्रभु पार्श्व के, चरणों में त्रय धार।**
भक्ति श्रद्धा से करूँ, नमन तुम्हें त्रय बार।।

शांतये शांतिधारा।

सुमनाञ्जलि क्षेपण करूँ, अर्पण करता भाव।
सुमन सुतन सत्वचन से, होवे विघ्न अभाव।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **जयकारा प्रभु पार्श्व का, जयमाला के साथ।**
गुण से मालामाल कर, हे प्रभु ! पारसनाथ।।

1. चै.कृ. 14 म.पु.।

नरेन्द्र छंद

चिंतामणी पारस बाबा के, चरणों में हम आये हैं।
जयमाला की माल सजाकर, जीवन धन्य बनायेंगे॥
वामा माँ पितु अश्वसेन से, जन्मे त्रिभुवन स्वामी हैं।
जय-जयकार करे भवि प्राणी, ये प्रभु मुक्तिगामी हैं॥
बचपन बीता यौवन आया, प्रभु जी सैर को जाते हैं।
जलते नाग युगल को वे जिन, महामंत्र दे जाते हैं॥1॥
धर वैराग्य भाव पारस ने, मोक्षमहल पथ अपनाया।
लौकांतिक देवों ने आकर, तप अनुमोदन दर्शाया॥
ओले-शोले-पत्थर-पानी, कमठ दैत्य ने बरसाया।
शक्तिशाली महाबली के, बल को भी न डिगा पाया॥2॥
दिव्यदेशना से जिनवर ने, द्वादशांग उपदेश दिया।
कर्म समूह दहन करने को, तीन योग का रोध किया॥
पारसप्रभु की प्रतिमा न्यारी, जग का मन हर्षाती है।
इनके दर्शन करने से, जीवन में समता आती है॥3॥
अहिच्छेत्र जिन्तूर चूलगिरि, नैनागिरि और कुंथुगिरी।
नागफणी चँवलेश्वर मक्सी, अंदेश्वर सम्मेदगिरी॥
इन क्षेत्रों को शीश झुकाकर, दर्शन भाव बनाते हैं।
अतिशय भू कचनेर तीर्थ की, गाथा हम सब गाते हैं॥4॥
यहाँ विराजे पारस जिनवर, अतिशय जाग्रत सुख दाता।
भूतल में थापित प्रतिमा पर, दूध झराती गौमाता॥
स्वस्थ सबल धेनु क्यों रिक्ता, गोपालक अचरज करता।
इस टीले में क्या अतिशय जो, दूध बिना दोहे झरता॥5॥
संपतराया की दादी को, सपना प्रभु ने दिखलाया।
जन-जन के संकट को हरने, दर्शन का पथ बतलाया॥

टीले से जब प्रतिमा निकली, जग में जय-जयकार हुआ।
चिंतामणी का दर्शन पाकर, दुःखियों का उद्धार हुआ॥6॥
तब से प्रतिदिन आकर भविजन, पंचामृत अभिषेक करें।
चंदन लेपन पुष्पवृष्टि वा, आरती से निज कोष भरें॥
एक दिवस प्रतिमा का धड़-सिर, स्वयं अचानक अलग हुआ।
नूतन प्रतिमा थापित कर ले, सोच भक्त मन बिलख उठा॥7॥
जल में मुझको मत डलवाओ, स्वप्न भक्त जन को आया।
घी शक्कर में रखकर मेरी, जुड़ जायेगी यह काया॥
लच्छिराम वा भक्तगणों ने, महामंत्र का पाठ किया।
सात दिवस में ताले टूटे, प्रभु ने अक्षयदर्श दिया॥8॥
पूर्व चमत्कारों से भी यह, चमत्कार अतिभारी था।
दर्शन पाने भारत भर से, पहुँचा हर नर-नारी था॥
तब से ही नाना शुभ अतिशय, यहाँ सदा ही होते हैं।
रोगी-पापी-दुर्भग-पामर, यहाँ पापमल धोते हैं॥9॥
रोने वाले हंसकर जाते, कष्ट यहाँ मिट जाते हैं।
धन-सुत-संपत-यश-वैभव व्रत, यहाँ भक्त जन पाते हैं॥
मन की चिंता दूर हटाते, चिंतामणि पारसबाबा।
सर्व मुरादें पूरी होती, भक्तों का पक्का दावा॥10॥
निज चेतन को चैत्य बनाने, हम भी तुम गुण गाते हैं।
चित् की चिंता दूर भगाने, चिंतामणी को ध्याते हैं॥
नाथ तुम्हारे गुण को गाकर भक्त तुम्हारे गुण पायें।
त्रय 'गुप्ति' धर क्षमाशील बन, मुक्ति राजश्री पा जाये॥11॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चिंतामणि कचनेर के, अतिशयवान महान।
चिंताये जग की हरें, करे सर्व सुख दान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ (बाबा नगर) पूजा

शंभु छन्द (तर्ज- चिंतामणि पारसनाथ पूजा)

बाबा नगर के पार्श्व जिन, चिंतामणि जगख्यात हैं।
चिंता हरें हर भक्त की, अतिशय करें दिन-रात ये॥
धरणेन्द्र पद्मावती विराजे, आपके द्वय पास में।
आह्वान हम करते प्रभो ! आओ मेरे हिय पार्श्व में॥

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

बारह बजे अभिषेक, होता नित्य आपका।
हम इन्द्र रूप में, करें अभिषेक आपका॥
बाबा नगर के चिंतामणि पार्श्वनाथ जी।
चिंता हमारी सारी हरें पार्श्वनाथ जी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गंध चंदनादि आप चर्ण में लगा।
तुम भक्ति से मिटायें, पाप ताप का दगा॥ बाबा..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्ड रत्न मुष्टि पुँज में भरें।
अक्षय अखण्ड पद विशेष आप से वरें॥ बाबा..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम नील कमल आदि सर्व पुष्प चढ़ायें।
हे बालयति नाथ ! हम भी काम नशायें॥ बाबा..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य ले अनेक हम दरबार सजायें।
पूजा रचायें तेरी क्षुधा कर्म नशायें।।
बाबा नगर के चिंतामणि पार्श्वनाथ जी।
चिंता हमारी सारी हरें पार्श्वनाथ जी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे पार्श्व ! आप द्वार में जो दीप लगायें।
उसके समस्त कार्य आप सिद्ध करायें।। बाबा..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित दशांग धूप अग्नि पात्र में चढ़ा।
तुम ध्यान लगा भग्न करें पाप का घड़ा।। बाबा..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आम द्राक्ष दाडिमादि फल के थाल ले।
पूजा रचायें तेरी पहुँचें लोक भाल पे।। बाबा..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम माल ध्वजा दीप संग द्रव्य चढ़ायें।
अनुपम अनर्घ सौख्य पार्श्व भक्ति से पायें।। बाबा..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **प्रभु चरणों में हम करें, जल से शांतिधार।**
आप कृपा से हो प्रभो !, जग शांति सुखकार।।

शांतये शांतिधारा।

रंग-बिरंगे फूल की, सुन्दर सी ले माल।
चढ़ा प्रभु के चरण में, होवें माला माल।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : बाबा नगर विराजते, पार्श्वनाथ भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें, करते उनका ध्यान।।

(शंभु छंद)

जय-जय चिंतामणि पारस जिन, उनकी जयमाला गायें हम।
समताधारी संकटहारी, उनकी यश गाथा गायें हम।।
प्रभु काशी देश बनारस में, पितु अश्वसेन घर जन्म हुआ।
माँ वामा देवी धन्य हुई, औ उग्रवंश भी धन्य हुआ।।1।।

पाँचों कल्याणक से पूजित, उपसर्ग विजेता कहलाये।
मधुवन सम्मेदशिखर जी से, पारस प्रभु मोक्षमहल पायें।।
तुम हर प्रतिमा में अतिशय है, तीर्थों में महिमा भारी है।
उसमें भी बाबानगर क्षेत्र, उसमें तुम प्रतिमा न्यारी है।।2।।

लगभग पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व, इस प्रतिमा का निर्माण हुआ।
हरिताभ रत्नमय अति सुन्दर, यह बिम्ब शास्त्र की शान हुआ।।
मुगलों निजामशाही ने जब, जैनों को खूब सताया था।
प्रतिमायें मंदिर नष्ट किये, भीषण आतंक मचाया था।।3।।

तब भक्तों ने भूगर्भ बना, हे नाथ ! तुम्हें बैठाया था।
सोना-चांदी घर देश छोड़, अपना जैनत्व बचाया था।।
इस बीच आपने हे जिनवर !, अपने कई अतिशय दिखलायें।
उसका इतिहास बड़ा रोचक, हम अब उसकी गाथा गायें।।4।।

आदिलशाही सेना लेकर, जब यहाँ घूमता आया था।
उसमें इक घोड़ा ठहर गया, यह देख भूप चकराया था।।
फिर सब घोड़ों का दल ठहरा, वे खुर से पृथ्वी को खोदें।
अब राजा की आज्ञा पाकर, कुछ सैनिक भी धरती खोदें।।5।।

तब धरती से अतिशयकारी, चिंतामणि पारस प्रगट हुए।
पर मूर्ति भंजक राजा के, प्रभु पुतली बनकर निकट हुए॥
मूर्ति भंजक राजा के संग, प्रभु पुतली बनकर जाते हैं।
पर उसकी रानी को पारस, बाबा बन दर्श दिखाते हैं॥6॥

राजा को प्रभु पुतली लगते, रानी को बाबा लगते थे।
महलों से हिंसा दूर हुई, कई अतिशय प्रभु के दिखते थे॥
हे पार्श्व ! तुम्हारे अतिशय से, प्रौढ़ा रानी के गर्भ रहा।
बीजापुर आदिलशाही में, छाया उत्सव आनंद महा॥7॥

दिन पूरे होने पर फिर से, अंतःपुर में संकट छाया।
बेचैन प्रसूता तड़फ रही, पर शिशु का जन्म न हो पाया॥
अब राजा ने ऐलान किया, जो मेरा कष्ट मिटायेगा।
वो मेरा आधा राज्य और, सम्मान बहुत ही पायेगा॥8॥

तांत्रिक-मांत्रिक व वैद्य सभी, जब कोशिश करके हार गये।
तब नाथ ! आपसे प्रेरित हो, जिन पंडित एक पधार गये॥
दृढ़ता से राजाज्ञा पाकर, उनने प्रभु तेरा न्हवन किया।
तव मंत्रित जल रानी को दे, उसका सारा दुःख शमन किया॥9॥

तब राजा ने दरबार बुला, पंडित को आधा राज्य दिया।
पर पंडित ने सब छोड़ दिया, बस पार्श्व प्रभु को मांग लिया॥
इसविध हे चिंतामणि बाबा !, तुम बाबानगर लौट आये।
पर जैन धर्म की रक्षा हित, तुमने कई अतिशय दिखलाये॥10॥

तुमसे प्रेरित वह पंडित नित, बारह बजते अभिषेक करे।
पूजा कर प्रभु की नाभि में, सूई छू सोना प्राप्त करे॥
हर दिन वह स्वर्ण शलाका पा, प्रभु के पीछे रख देता था।
निःस्वार्थी निर्लोभी पंडित, वह किंचित् काम न लेता था॥11॥

इक दिन फिर आदिलशाह यहाँ, पंडित से मिलने आता है।
पर उनको स्वर्ण चोर बतला, वह मृत्युदंड सुनाता है।।
अब पंडित राजा के सम्मुख, सूई को स्वर्ण बनाता है।
तब राजा लालच में पड़कर, फिर से सूई लगवाता है।।12।।

सूई आधा सोना बनती, आधा लोहा रह जाता है।
यह देख निरंकुश राजा तब, पंडित को दंड सुनाता है।।
तब पार्श्व भक्त की रक्षा हित, फिर से गुड़ियाँ बन जाते हैं।
गुड़िया से फिर भगवान रूप, अभिमानी को दिखलाते हैं।।13।।

इस चमत्कार से राजा का, मानस परिवर्तन हो जाता है।
यह जैन धर्म सच्चा जग में, अब नृप जयघोष लगाता है।।
जैनों के बाबा को जग में, अब कोई मिटा ना पायेगा।
जिनशासन का झण्डा जग में, कल्पांत काल लहरायेगा।।14।।

हे नाथ ! तुम्हारे तीरथ में, युग-युग से अतिशय होते हैं।
जो दीप जलाये मंदिर में, उसके सब मंगल होते हैं।।
सब कार्य सिद्ध होते उसके, जो जिन अभिषेक रचाता है।
इच्छा पूरी होती उसकी, जो शांतिधार कराता है।।15।।

हे नाथ ! तुम्हारे दर्शन को, लाखों नर-नारी आते हैं।
खाली झोली ले आते सब, पर झोली भरकर जाते हैं।।
हे चिंतामणि ! पारस बाबा, मेरी भी सब चिंता हरलो।
सूरी 'गुप्तिनंदी' कहते, हमको अपने जैसा कर लो।।16।।

ॐ ह्रीं श्री बाबानगर चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बाबा नगर विराजते, चिंतामणि भगवान।
तब तक प्रभु महिमा रहे, जब तक सूरज चाँद।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री चन्द्रप्रभु पूजन (देहरा)

स्थापना (गीता छंद)

देहरे तिजारा तीर्थ में प्रभु चंद्र की महिमा बड़ी।
जिनके चरण में भक्ति से जिनभक्त की टोली खड़ी॥
मन चंद्र में प्रभु चंद्र को ले पुष्प आज बसा लिया।
अगवानी में प्रभु आपकी बाजे मधुर शहनाइयाँ॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शेर छंद) (तर्ज - हे दीन बन्धु श्रीपति...)

मनमोहनी मनभावनी छवि मन को लुभाएं।
हम जल चढ़ाके जन्म-जरा-मृत्यु नशाएं॥
चंदा प्रभु हमारे रोग-शोक-दुःख हरो।
बाबा तिजारा के तिजोरी पुण्य से भरो॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चंद्र के चरण में आत्म सुख की चाँदनी।
चंदन चढ़ाके हमको भी मिले वो चाँदनी॥ चंदा प्रभु....॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वांछनीय फल प्रभु से भक्त माँगते।
अक्षत चढ़ाके हम प्रभु से मोक्ष माँगते॥ चंदा प्रभु....॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आप राजते सुनहरे कमल पे।
हम काम नशाने चढ़ायें पुष्प कमल के॥ चंदा प्रभु....॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भक्त चढ़ायें तुम्हें नेवज की थालियाँ।
उसने क्षुधाहरण का सिद्ध मंत्र पा लिया॥
चंदा प्रभु हमारे रोग-शोक-दु:ख हरो।
बाबा तिजारा के तिजोरी पुण्य से भरो॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपमें ज्योति अनंतज्ञान दीप की।
हम आरती उतारते त्रैलोक्य दीप की॥ चंदा प्रभु....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्म नशाने प्रभु को धूप चढ़ायें।
मानो सुगंध दशमी पर्व आज मनायें॥ चंदा प्रभु....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की शुभार्चना फलों से आज हम करें।
उसके सुफल में मोक्षफल महान् फल वरें॥ चंदा प्रभु....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

देहरे के चंद्रनाथ की पवित्र देहरी।
हमने प्रभु को अर्घ चढ़ा अर्चना करी॥ चंदा प्रभु....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

॥ पंचकल्याणक॥

(मतगयंद छंद) (तर्ज-वीर हिमाचल तें...)

चंद्रप्रभो जय चंद्रप्रभो शुभ गर्भ महोत्सव में सुर गायें।
चंद्र रवि अति लज्जित थे जब सज्जित चंद्रपुरी उर आये॥
मात सुलक्षण के उर में शुभ लक्षण युक्त जिनेश्वर आये।
चैत वदी तिथि पंचम को जग को जगदीश जगावन आये॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म महोत्सव में प्रभु के जनमे सुख-शांति-अशांति पछाड़े।
भेरि बजे कहिं शंख बजे सिंहनाद बजे कहिं भव्य नगाड़े॥
निर्मल शीतल क्षीर समुंदर का जल कलकल नाद सुनावे।
झटपट झटपट पयघट ले शचि इन्द्र महाअभिषेक करावे॥2॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर से मुखमंडल का प्रतिबिम्ब प्रभुवर ने जब देखा।
सोच तभी प्रभुजी मन में जग का सुख नश्वर ज्यों जल रेखा॥
वस्त्र तजे व्रत शस्त्र धरें प्रभुजी जग को करते अनदेखा।
पौषवदी तिथि ग्यारस सा शुभ सिद्ध मुहूर्त कभी नहिं देखा॥3॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान हुआ प्रभु को तब केवल कर्म अघाति बचे थे।
दिव्य अनंत चतुष्टय से प्रभु मोहजयी बन आप सजे थे॥
फागुन में सब फागुन उत्सव चंद्रप्रभो सह खेल रहे थे।
इत्र मिला जिनआगम का सब पे प्रभु रंग उड़ेल रहे थे॥4॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

योग निरोध किया प्रभु ने तब मुक्ति रमा सहयोग मिला था।
कर्म शिला चकचूर करी तब राज्य वरा शुभ सिद्धशिला का॥
फागुन सात सुदी दिन को प्रभु स्वागत में शिवद्वार खुला था।
मोक्ष महोत्सव में प्रभु के मन मोर सभी जन का मचला था॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य सुधन्य धरातल वो जिसके उर चंद्रप्रभो जिनराई।
श्रावण शुक्ल तिथी दशमी प्रतिमा प्रगटी जनता हरषाई॥

भोजन काम दुकान मकान सभी कुछ छोड़त लोग लुगाई।
दौड़त भागत नाचत गावत सुधबुध खोवत भीड़ समाई॥6॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लादशम्यां देहरा स्थाने प्रकटरूपाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **शांतिधार कर जिनचरण, हुए शांत परिणाम।**
उन परिणामों से करे, पुष्पांजलि भगवान॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : **बाबा तेरे द्वार पर, लगती भीड़ विशाल।**
उसका क्या कारण भला, कहती ये जयमाल॥

शंभु छंद

जय तीर्थ देहरे के बाबा, जय नगर तिजारा के बाबा।
जय जय जय चंद्रप्रभु बाबा, जय दुःखियों के दुःखहर बाबा॥
राजस्थानी जिल्हा अलवर, जिसमें इक नगर तिजारा है।
जिसके चंदाप्रभु के गुण गा, कवियों का कवि गुण हारा है॥1॥

इस नगरी में पारस मंदिर, जो दो सौ वर्ष पुराना है।
आचार्य मुनि आ कहें यहाँ, नगरी में अतिशय होना है॥
सन् उन्नीस सौ छप्पन में ही, मुनियों का कहना सत्य हुआ।
नगरी में सड़क खुदाई का, मानो मंगलमय कृत्य हुआ॥2॥

उस सड़क खुदाई में पहले, त्रय खंडित जिन प्रतिमा निकली।
फिर भी मुनियों की वाणी पर, श्रद्धा रखकर जनता संभली॥

जब खोद तोड़ कुछ नहीं मिला, तब सबका कोमल मन टूटा।
कर बंद खुदाई सब सोचे, क्यूँ भगवन् तू हमसे रूठा॥3॥

नगरी में वैद्य बिहारी की, सौभाग्यवती थी सरस्वती।
वो दिव्य शक्ति से प्रेरित हो, कहती फिर से खोदो धरती॥
तब दिखी स्वप्न में इक प्रतिमा, उन सरस्वती दादी माँ को।
आवाज सुनी भू से भू पर, माँ प्रगटाओ जिनप्रतिमा को॥4॥

जाकर तब उसी जगह दादी, इक दीप जला वापस आई।
फिर से उसको इक स्वप्न दिखा, दीपक में घी डालो माँई॥
दादी ने अगले दिवस वहाँ, जा भव्य खुदाई करवाई।
धरती से प्रगटे चंद्रप्रभो, तब सबकी आँखें चकराई॥5॥

तब चंद्रप्रभु के स्वागत में, रिमझिम छमछम पानी बरसे।
प्रकृति कृत जिन अभिषेक देख, तब जैन-अजैन सभी हरषे॥
ये दिन अक्षय दशमी व्रत का, श्रावण शुक्ला दशमी तिथि है।
जब चंद्रप्रभु के रूप मिली, जग को जग की अक्षय निधि है॥6॥

जिनका शुभ वेष दिगम्बर हैं, दश दिश में जिनकी कीरत है।
घुँघराले केशों वाली ये, हँसती मुस्काती मूरत है॥
प्रभुवर के श्वेत कमल दल सम, नयनों में करुणा का जल है।
भक्तों की विनती सुनने को, कानों में जिनके हलचल हैं॥7॥

सुन्दर मुस्काते ओठों से, लगता की बाबा अब बोले।
ऐसे प्रभु की आपाद कण्ठ, सुन्दरता हम किससे तोले॥
अंधा भी चंदा बाबा से, चंदा सी ज्योति पाता है।
लंगड़ाकर आने वाला भी, घर दौड़-दौड़कर जाता है॥8॥

बाबा तेरे दर गूँगा भी, बहरे को गीत सुनाता है।
रोगी भी रोग मिटा तुझसे, तेरा जोगी बन जाता है॥

हे बाबा ! तेरे अतिशय से, सुत रहित नार माँ शब्द सुने।
हर मन्नत पूरी होती है, जो भगवन् तेरा द्वार चुने॥9॥

शुभ श्वेत वर्ण की प्रतिमा ये, भक्तों के काले पाप हरें।
बिन बोले ये बाबा भोले, घर में धन अपने आप भरें॥
जिस धरती से प्रगटे बाबा, उस प्रगट कुण्ड की रज न्यारी।
उस रज से सब दुःख-रोग-शोक, मिट जाते भारी से भारी॥10॥

यहाँ क्षेत्रपाल पद्मावती है, जो तीर्थ सुरक्षा करते हैं।
जो इनकी अर्चा करते हैं, उनकी रक्षा ये करते हैं॥
भगवन् तुम दिखने में छोटे, पर काम आपके बड़े-बड़े।
भारत के कोने-कोने से, इसलिए भक्त तुम द्वार खड़े॥11॥

भक्तों को सुख दे हरें कष्ट, ये तीर्थ देहरे के बाबा।
अंबर का चंद्र लगे फीका, लख तुमको हे चंदा बाबा !॥
बाबा तेरे गुण गा-गाकर, हम भक्त प्रमादी थक जाते।
पर आप रात-दिन भक्तों के, दुःख हर-हर कर ना थक पाते॥12॥

देहरे वाले की देहरी पर, मस्तक रख ये मन्नत माँगें।
प्रभु तेरी पूजा के फल से, हम शीघ्र भवोदधि को लाँघें॥
हे नाथ ! तिजारा के वर दो, हम सदा तिजारा में आयें।
मुनि 'चन्द्रगुप्त' का हृदय चंद्र, श्री चंद्रप्रभु से सज जायें॥13॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम-जनम के पुण्य से, पाया दर्शन आज।
अब दर्शन हर बार हो, सुनो विनत जिनराज॥
संघ सहित आये यहाँ, गुप्तिनंदी गुरुदेव।
उनसे प्रेरित हो लिखी, पूजन ये जिनदेव॥

इत्याशीर्वादः ॥दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ पूजा

स्थापना

(गीता छंद)

श्री कुंथुगिरी के मूलनायक, पार्श्वप्रभु कलिकुण्ड हैं।
जिनकी सदा सेवा करें, पद्मावती धरणेन्द्र हैं।।
गुरु कुंथुसागर ने बिठाया, कुंथुगिरि में आपको।
हम पुष्पमाला ले खड़े, मन में बिठाने आपको।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

1. **प्रभु पर कलशों की धार, कल-कल नाद करें।**
कर तीन रोग परिहार, हम आल्हाद भरें।।
कुंथु गुरुवर के नाम, कुंथुगिरी न्यारी।
जहाँ पार्श्वनाथ भगवान, भव्य चमत्कारी।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

2. **प्रभु पद में चंदन आज, सोने सा चमके।**
हम भी चंदन बन आज, प्रभु पद में चमके ।। कुंथु ...

ॐ ह्रीं श्री .... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

3. **धवलाक्षत मुक्ता पुंज, मुट्ठी में लाये।**
मिल जायें मुक्ति निकुंज, अक्षय सुख पाये।। कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

4. शुभ फूल कमल का फूल, उस पर पार्श्व प्रभो।
हम लाय कमल का फूल, हरलो काम विभो॥
कुंथु गुरुवर के नाम, कुंथुगिरी न्यारी।
जहाँ पार्श्वनाथ भगवान, भव्य चमत्कारी॥

ॐ ह्रीं श्री .... कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

5. नमकीन मधुर पकवान्न, फैनी आदि लिये।
नश जाय क्षुधा भगवान, विनती ये सुनिये ॥ कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री .... क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6. दीपों से तीर्थ सजाय, करते आरतियाँ।
केवल ज्योति मिल जाय, जय-जय साँवरियाँ ॥ कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री .... मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

7. हे कुंथुगिरी के भूप, तुमको धूप चढ़ा।
लखकर तुम सुंदर रूप, भरलें पुण्य घड़ा ॥ कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री .... अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

8. प्रभु पारस को रसदार, आम अनार चढ़ा।
प्रभु कर दो अब उद्धार, मुक्ति द्वार चढ़ा ॥ कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री .... महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

9. कुंथुगिरी के प्रभु पार्श्व, विघ्न नशाते हैं।
हम आये प्रभु के पार्श्व, अर्घ चढ़ाते हैं॥कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री .... अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्ज- मीठो-मीठो बोल थारो काय बिगड़े...)

जय पारस जय पारस की, कुंथुगिरी के पारस की।
हम मंगल पूजा गा रहे, प्रभुवर के पंचकल्याणक की॥ जय...

1. **वदी वैशाख दूज की मंगल रात, सोलह सपने देखे वामा मात।**
धनपति करता रत्नों की बरसात, गर्भ में आये प्रभुवर पारसनाथ॥
घूमर रचा, गरबा रचा।
हम जय-जयकार लगा रहे, प्रभुवर के गर्भकल्याणक की॥ जय...

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. **पौष वदी ग्यारस का भव्य प्रभात, पारस जन्में करने धर्म प्रभात।**
कुंथुगिरी में जन्मोत्सव का ठाठ, आओ मनायें कुंथु गुरु के साथ॥
कलशे ढुरा, पलना झूला।
हम जय-जयकार लगा रहे, प्रभुवर के जन्म कल्याणक की॥ जय...

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3. **पारसनाथ बनारस के युवराज, बन गये चौथे बालयति ऋषिराज।**
पौष वदी ग्यारस को दीक्षा धार, जन्म महोत्सव बना त्याग त्यौहार॥
संयम वरें, समता धरें।
हम जय-जयकार लगा रहे, प्रभुवर के तप कल्याणक की॥ जय...

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4. **कमठ करें उपसर्ग दुष्ट हर्षाय, पद्मावती धरणेन्द्र उसे विनशाय।**
कृष्णा चैत चतुर्थी बनी महान्, पारस प्रभु ने पाया केवलज्ञान॥
दीपार्चना, उत्सव मना।
हम जय-जयकार लगा रहे, जिनवर के ज्ञान कल्याणक की॥ जय...

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा चतुर्थ्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. चै.कृ. - 14 म.पु.

5. मुकुट सप्तमी का पावन त्यौहार, प्रभु पहनें शिवराज मुकुट मनहार।
कुंथुगिरी में गिरी सम्मेद विशाल, वहाँ चढ़ायें आओ लड्डू थाल॥
पारस मेरे, द्वारे तेरे।
हम जय-जयकार लगा रहे, जिनवर के मोक्ष कल्याणक की। जय...

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आम्र वाटिका से चुने, आम्र पत्र मनहार।
उनको कलशों पर सजा, करते शांतिधार॥

शांतये शांतिधारा।

कुंथुगिरी के बाग से, चुनें पुष्प मनहार।
प्रभु के पद अरविंद में, चढ़े पुष्प के हार॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **कुंथुगिरी के पार्श्व जिन, सर्व सुखों के धाम।**
उनकी जयमाला पढ़ें, जपें प्रभु का नाम॥

(शंभु छंद)

जय-जय कुंथुगिरी के बाबा, जय पार्श्वनाथ अतिशयकारी।
हम माल लिए जयमाल पढ़े, मन आप गुणों पर बलिहारी॥
नृप अश्वसेन माँ वामा घर, लोकोत्तर प्रभु ने जन्म लिया।
वह नगर बनारस धन्य-धन्य, पाकर प्रभु पारस साँवलिया॥1॥

गजराज सजा घंटादि बजा, शुभ नृत्य रचा मदमस्त चला।
उस पर प्रभु को ले सुर नायक, मेरू पर्वत की ओर चला॥
सौधर्म सहित शचि इन्द्राणी, जन्माभिषेक करती प्रभु का।
मानो हर नारी से कहती, तुम भी अभिषेक करो प्रभु का॥2॥

प्रभुवर ने नाग युगल तारे, जो पद्मावती धरणेन्द्र हुए।
उपसर्ग विजेता पारस का, शुभ यश धरती वा गगन छुए॥
ऐसे ही पारसनाथ प्रभु, कुंथु गुरुवर के मन मोहे।
कुंथुगिरी में कलिकुंड यंत्र, जिस पर पारस बाबा सोहे॥3॥

जब संघ सहित कुंथु गुरुवर, शुभ ग्राम आलते आये थे।
तब पद्मावती माता ने आ, गुरुवर को स्वप्न दिखाये थे॥
सपने में चंद्राकार गिरी, माता गुरुवर को दिखलाये।
वह पद्मा माँ पथ दिखलाये, जब गुरुवर इस गिरी पर आये॥4॥

तब चंद्राकार गिरी पर आ, गुरुवर ने ध्यान लगाया है।
कुंथुगिरी में सम्मेदशिखर, कैलाशशिखर बनवाया है॥
कलिकुंड यंत्र पर कमलासन, कमलासन पर पारस बाबा।
बाबा पर बने हजारों फण, रवि सम मुखमंडल की आभा॥5॥

प्रभु पुरिमताल उन्नत ललाट, दो नयन नयन के तारे हैं।
दो गोल कपोल लगें ऐसे, ज्यों पूर्ण चंद्रमा प्यारे हैं॥
दो अधर अमर संदेश कहे, नासा गुण गौरव दिखलाये।
श्री वत्स चिन्ह से सजा वक्ष, प्रभु की विशालता बतलाये॥6॥

शुभ चिन्ह सहित द्वय हस्त भुजा, भक्तों को सब सुख दान करे।
पद्मासन प्रभु का दर्शाये, मानो प्रभु चौथा ध्यान धरें॥
नख से घुँघराले केशों तक, हर अंग-अंग अति सुंदर है।
त्रय लोकों की सुंदरता का, मानो प्रभु आप समुंदर हैं॥7॥

प्रभु के दायें धरणेंद्र यक्ष, बायें पद्मावती माता है।
नभ चुंबी तीन शिखर उत्तम, जिन पर झण्डा लहराता है॥
प्रभु के दायें गुरु मंदिर में, रत्नों की सुन्दर प्रतिमायें।
बायें सुन्दर श्रुत मंदिर में पूर्वाचार्यों की रचनायें॥8॥

श्री कूट सहस्र जिनालय में, जिनबिम्ब हजारों दु:खहारी।
मैना सुन्दरी श्रीपाल कथा, मंदिर में चित्रित मनहारी॥
प्रभु सम्मुख मानस्तंभ श्रेष्ठ, उत्तुंग घंटियों वाला है।
कुंथुगिरी का कीर्ति सूचक, श्री कीर्तिस्तंभ निराला है॥9॥

श्री मुनिसुव्रत मंदिर जिसका, हर भाग कलामय दिखता है।
नीचे श्री क्षेत्रपाल बाबा, तीरथ रक्षक दु:खहर्त्ता हैं॥
इन सबकी प्राण प्रतिष्ठा में, गुरु सब शिष्यों को बुलवायें।
गुरु आज्ञा पा आचार्य सभी, निज संघ सहित चलकर आये॥10॥

परगण के नाना संघ सहित, दो सौ पीछी का संघ यहाँ।
मानो पारस का समोशरण, लगता मन भावन दृश्य यहाँ॥
श्री चंद्राकार शिखर जिस पर, सम्मेदशिखर मन भावन है।
जिस पर राजे चौबीस प्रभु, ये दूजा मधुबन पावन है॥11॥

पारस प्रभु का पंचामृत से, अभिषेक करें सब नर-नारी।
शरणागत के सब दु:ख संकट, हरते प्रभु के अतिशय भारी॥
हे कुंथुगिरी के नाथ ! तुम्हें, पूजे कुंथु गुरु का नंदन।
ले भक्ति पुष्प की जयमाला, करता 'गुप्तिनंदी' वंदन॥12॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : कुंथुगिरी तब तक रहे, जब तक सूरज चाँद।
भक्तों को मिलता रहे, गुरु आशीष प्रसाद॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अंजनगिरी शांतिनाथ पूजा

गीता छंद

अंजनगिरी के शांति प्रभु की शांत छवि मन भा रही।
सुंदर-सलौनी-साँवली प्रतिमा विशाल लुभा रही।।
प्यासे नयन पथ में बिछे जिनवर पलक वा पावड़े।
आह्वान करने पुष्प ले अंजनगिरी हम चल पड़े।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सिर पर सजा जलकुंभ को, जलकुंभ पर श्रीफल सजा।
प्रभु का न्हवन कर क्षम्य हो, जन्मादि रोगों की सजा।।
प्रभु शांति की अंजनगिरी, अंजन बनी मम नेत्र की।
गुरु गुप्तिनंदी से बढ़ी, शोभा निराली क्षेत्र की।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्तिक ध्वजादिक चिह्न से, शोभित चरण प्रभु आपके।
चंदन चढ़ा उन चरण में, संकट कटें भवताप के।। प्रभु शांति...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पाँचवें चक्रेश हो, आई शरण में नवनिधी।
मोती व अक्षत हम चढ़ा, पायें परम अक्षय निधी।। प्रभु शांति...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपके सुंदर नयन, दो नीलकमल समान है।
हम पूजते बहु कमल ले, अब काम से क्या काम है।। प्रभु शांति...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेश दे कल्याण का, मुस्काती छवि प्रभु आपकी।
हम थालियाँ अर्पण करें, नमकीन वा मिष्ठान्न की।। प्रभु शांति...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय शांतिजिन जय शांति जिन, ऐसा लिखें हम दीप से।
अरिहंत पद हमको मिले, कर आरती इन दीप से।।
प्रभु शांति की अंजनगिरी, अंजन बनी मम नेत्र की।
गुरु गुप्तिनंदी से बढ़ी, शोभा निराली क्षेत्र की।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू सुदर्शन धन्य हैं, करके सुदर्शन आपका।
हम धूप पावक में चढ़ा, छोड़े प्रदर्शन पाप का।। प्रभु शांति...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

धनभाग्य मम अखियाँ हुई, जो आपका दर्शन किया।
भज जाम जामुन आम से, हमने सुपुण्यार्जन किया।। प्रभु शांति...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे कल्पतरू ! शांति प्रभो, सुख कोष को अक्षय भरो।
अर्घावतारण हम करें, दुःख कोष को प्रभु क्षय करो।। प्रभु शांति...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

चौपाई (तर्ज - रंगमा-रंगमा रंगमा रे...)

शांतिनाथ-शांतिनाथ-शांतिनाथ रे-2
जय हो अंजनगिरी के प्रभु शांतिनाथ रे।।
आओ सभी अंजनगिरी आओ, प्रभु का पंचकल्याणक मनाओ।
भक्ति रचाओ, जोड़-जोड़ हाथ रे-2,
जय हो अंजनगिरी के प्रभु शांतिनाथ रे। शांतिनाथ रे....

आया भादो मास निराला, कृष्ण पक्ष में ले उजियाला।
तिथि सप्तम का पुण्य विशाला, गर्भोत्सव करवाने वाला।।
गर्भ कल्याणक मनाओ आज रे, जय हो...........

विश्वसेन सुत विश्वविधाता, गर्भकल्याणक विश्व मनाता।
ऐरा मात बनी जगमाता, जिनके उर आये जगत्राता।।
गर्भ कल्याणक हुआ था रात में, जय हो.........

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

जेठ वदी चौदस मन भाये, जन्म तिथि प्रभु की बन जाये।
सज-धजकर ऐरावत आये, ऐरा नंदन के गुण गाये।।
जन्मकल्याणक मनाओ आज रे, जय हो................
स्वर्गपुरी मेरुगिरी जाये, कामदेव का न्हवन कराये।
हम सब भी अंजनगिरी जायें, बाबा का अभिषेक रचायें।।
जन्मकल्याणक हुआ प्रभात में, जय हो...............

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

वर्षों बाद जन्म दिन आये, हस्तिनागपुर झूमें गायें।
जन्मदिवस सब भव्य मनाये, इधर प्रभु तप दिवस मनायें।।
दीक्षाकल्याणक मनाओ आज रे, जय हो................
प्रभु ने दर्पण में मुख देखा, सोचा जग सुख जल की रेखा।
राजचक्र का चक्र छुड़ाया, धर्मचक्र का चक्र चलाया।।
दीक्षाकल्याणक हुआ था शाम में, जय हो................

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

सोलह वर्ष हुए दीक्षा के, आये दिन देने शिक्षा के।
पौष शुक्ल दशमी दिन न्यारा, प्रभु ने शुक्ल ध्यान को धारा।।
ज्ञानकल्याणक मनाओ आज रे, जय हो..............
रत्नावली दीपावली लाओ, केवलज्ञान कल्याण मनाओ।
शांतिप्रभु की आरती गाओ, सर्व अशांति दूर भगाओ।।
ज्ञानकल्याणक हुआ था शाम में, जय हो..............

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

चारित रथ की किये सवारी, क्षायिक गुण बाराती भारी।
प्रभुवर वर राजा कहलाये, शिवरानी को ब्याहन जाये॥
मोक्षकल्याणक मनाओ आज रे, जय हो.................
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस जब आये, लाडू ले हम प्रभु गुण गायें।
कूट कुन्दप्रभ जग में आला, प्रभुवर का शिवधाम निराला॥
मोक्षकल्याणक हुआ था शाम में, जय हो.................

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

दोहा : अंजनगिरी के शांति जिन, सौख्य शांति आधार।
सौख्य शांति हित हम प्रभो, करते जल की धार॥

शांतये शांतिधारा।

पुष्पवृष्टि हम कर रहे, मानो बरसे मेघ।
पुण्यवृष्टि हम पर हुई, पुष्पवृष्टि को देख॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अंजनगिरी स्थित शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जय सांवलियाँ शांति जिन, अंजनगिरी के नाथ।
जयमाला हम पढ़ रहे, पुष्पमाल ले हाथ॥

नरेन्द्र छंद (तर्ज- माइन माइन.........)

आओ-आओ अंजनगिरी की, यशगाथा हम गायें।
अंजनगिरी के शांतिनाथ की, जयमाला हम गायें॥
जय-जय शांतिनाथ की जय, जय-जय अंजनगिरी की जय-2

अंजनगिरी की पर्वतमाला, निर्झर झरनों वाली।
पर्वत गुफा वनों से इसकी, शोभा बड़ी निराली॥
कैसे नाम पड़ा अंजनगिरी, आओ आज सुनाये।
अंजनगिरी के शांतिनाथ, की जयमाला हम गायें॥ जय-जय शांतिनाथ ..॥1॥

नृप महेन्द्र की अंजनबाला, सती शिरोमणि न्यारी।
सौ-सौ भाई में इकलौती, बहना राजदुलारी॥
पवनंजय दूल्हेराजा की, दुल्हनियाँ कहलाये। अंजनगिरी.....॥2॥

बाईस बरस बिना स्वामी के, सती अंजना तरसे।
फिर पुण्योदय से पतिप्रिय बन, गर्भवती बन हर्षे॥
फिर भी पतिव्रता के व्रत पर, सास कलंक लगाये। अंजनगिरी.....॥3॥

वन-वन भटकी सती अंजना, अंजनगिरी तक आये।
श्री पर्यंक गुफा में मन्मथ, हनुमान को जाये॥
सती अंजना के मामा तब, अनायास ही आये। अंजनगिरी.....॥4॥

मामा ने माँ को बालक संग, भव्य विमान बिठाया।
माता के आँचल से बालक, गिरकर नीचे आया॥
फिर भी महापुरुष के तन को, चोट नहीं लग पाये। अंजनगिरी.....॥5॥

बालक जैसे गिरा शैल पर, शैल चूर्ण हो जाये।
ये गाथा रविषेण गुरु का, पद्मपुराण सुनाये॥
उसी दिवस से धन्य धरा ये, अंजनगिरी कहाये। अंजनगिरी.....॥6॥

यहाँ शताधिक मंदिर जिनके, खंडहर कहीं-कहीं हैं।
सात बचे उनमें बाकी का, नाम निशान नहीं है॥
फिर भी सोया भाग्य जगाने, गुप्तिनंदीजी आये। अंजनगिरी.....॥7॥

तीर्थ पुराना तभी बचे जब, नया कार्य कुछ होगा।
यही प्रेरणा दे गुरुवर ने, भक्तों को संबोधा॥
तब से हे जिन ! शांतिनाथ तुम, अंजनगिरि में आये। अंजनगिरी.....॥8॥

अंजनगिरी के प्रभु तुम्हारा, अंजनगिरी सम माथा।
केश निराले घुँघराले, घूँघर वाले जग त्राता॥
नेत्र कमल को देख आपके, नीलकमल शरमायें। अंजनगिरी.....॥9॥

पुरिमताल द्वय कर्ण आपको, शाश्वत सुखी बताये।
उन्नत नासा जिनशासन का, स्वाभिमान दरशाये॥
नन्हे बालक जैसे सुन्दर, ओठ सदा मुस्काये। अंजनगिरी.....॥10॥

पूनम के चंदा के जैसे, गोल गाल मन भाये।
सप्त स्वरों सम सप्त भंग के, गीत कंठ नित गाये॥
प्रभु ने कर्मों को जीता है, मानो कहे भुजायें। अंजनगिरी.....॥11॥

वक्षस्थल वीरों के जैसा, प्रभु को वीर बताता।
जिस पर है श्रीवत्स चिह्न जो, दुःखहर्त्ता सुखदाता॥
सुंदर उदर कृशोदर जिस पर, गहरी नाभि सुहाये। अंजनगिरी.....॥12॥

चंद्र-खंड सम नख से शोभित, प्रभु के हस्त कमल हैं।
हस्तकमल के नीचे देखो, सुंदर चरण-कमल हैं॥
जाँघें दोनों मानो हमको, पद्मासन सिखलाये। अंजनगिरी.....॥13॥

कमलासित प्रभु के चरणों में, मृग भी धन्य हुआ है।
प्रभु की सुंदर प्रतिमा बन ये, पत्थर धन्य हुआ है॥
गुप्तिनंदी गुरु इस प्रतिमा के, पूर्ण श्रेय कहलाये। अंजनगिरी.....॥14॥

यहाँ भव्य जिनमंदिर था जो, दुष्ट जनों ने तोड़ा।
प्रतिमा भी लेना चाहा पर, हिला न पायें थोड़ा॥
खुले गगन के नीचे अब भी, वो प्रतिमा मन भाये। अंजनगिरी.....॥15॥

हनुमान की जन्म धरा पर, शांतिनाथ प्रभु राजे।
कामदेव की जन्म धरा पर, कामदेव प्रभु साजे॥
दो-दो कामदेव को भज हम, कामरोग विनशायें। अंजनगिरी.....॥16॥

ये तीरथ प्राचीन धरोहर, जैन धर्म की न्यारी।
उसमें शांति प्रभु के दर्शन, खुशियों की फुलवारी॥
'चन्द्रगुप्त' शिवराज वरे प्रभु, जीवन सुलभ बनाये। अंजनगिरी.....॥17॥

ॐ ह्रीं श्री अंजनगिरी शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अंजनगिरी के नाथ के, दर्शन हो हर बार।
सर्व कार्य सिद्धि मिले, शांतिनाथ के द्वार॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री धर्मतीर्थ आदिनाथ पूजन

स्थापना (हरिगीता छंद)

कचनेर तीरथ के निकट में धर्म तीर्थ सुहावना।
श्री वृषभ जिनवर का जहाँ हो दर्श अति मनभावना।।
सबसे प्रथम हे प्रथम जिनवर तुम बसे इस तीर्थ में।
हम भी करें मनुहार प्रभुजी आ बसो मन तीर्थ में।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कचनेर तीर्थ का पवित्र जल मंगा लिया।
श्री धर्मतीर्थ के जिनेश पर ढुरा दिया।।
श्री धर्मतीर्थ के ऋषभ जिनेश दुःख हरे।
गुरु गुप्तिनन्दी तीर्थ में स्वर्गों सा सुख भरें।।1।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपका स्वरूप ये सुवर्ण वर्ण का।
भव दुःख नशे चढ़ाके गंध स्वर्ण वर्ण का।। श्री धर्मतीर्थ....।।2।।

ॐ ह्रीं..... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय तृतीय पर हुई तुम्हारी प्रतिष्ठा।
अक्षत चढ़ा मिले हमें शिवलोक प्रतिष्ठा।। श्री धर्मतीर्थ....।।3।।

ॐ ह्रीं..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

महाराष्ट्र की वसुंधरा पे फूल हजारों।
वे फूल चढ़ा भक्त कामशूल निवारो।। श्री धर्मतीर्थ....।।4।।

ॐ ह्रीं ... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मठरी गजक कसार भाखरी व रेवड़ी।
प्रभु आपको चढ़ाने भीड़ द्वार पे खड़ी।। श्री धर्मतीर्थ....।।5।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ के चरण में दीप हम रखे।
दीपों से 'आदिनाथ स्वामिने नमः' लिखे।।
श्री धर्मतीर्थ के ऋषभ जिनेश दुःख हरे।
गुरु गुप्तिनन्दी तीर्थ में स्वर्गों सा सुख भरें।।6।।

ॐ ह्रीं..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँगली व अंगूठे के मध्य धूप जो बसे।
वो धूप आपको चढ़ा सभी करम नशे।। श्री धर्मतीर्थ....।।7।।

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृषि कर्म से दी तुमने फल उगाने की विधि।
हम वो ही फल चढ़ाये तुमको पाने गुणनिधि।। श्री धर्मतीर्थ....।।8।।

ॐ ह्रीं..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

थालों पे थाल अर्घ के विशाल भरें हम।
अर्घावतरण करके कर्मजाल हरें हम।। श्री धर्मतीर्थ....।।9।।

ॐ ह्रीं..... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ
(मत्तगयंद छंद)

(तर्ज– 1. वीर हिमाचल तें निकसी, 2. कौं नहिं जानत हैं जग में कपि..)

श्री अवधेश्वर नाभिनरेश्वर श्री मरु माँ जिनकी पटरानी।
सोलह स्वप्न दिखे जिसको कहती हमको जननी जिनवाणी।।
षाढ़ वदी तिथि दूज महा जिसकी रजनी[1] अति भव्य सुहानी।
गर्भ महोत्सव से चमके तब ज्येष्ठ जिनेश्वर की रजधानी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. रात।

श्री जिनसेन महामुनि का इक आदिपुराण सुग्रंथ निराला।
जन्म महोत्सव की जिसमें अति अद्भुत विस्तृत वर्णनमाला।।
सप्तसुरों पर सर्वसुरासुर संग सुरेन्द्र सुनृत्य रचावे।
दश दिश में दिक्पाल बिठाकर श्री वृषभेश्वर को नहलावे।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहुबली भरतेश्वर आदिक पुत्र वरें तुमसे प्रभु शिक्षा।
भोग तजे उपभोग तजे प्रभु योग धरे धरके मुनि दीक्षा।।
चैत वदी नवमी दिन से इक वर्ष हुई घनघोर परीक्षा।
श्रेय करें नृप श्रेयस[1] का प्रभु लेकर के उनके घर भिक्षा।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंगल कंदर[2] पर्वत वा सरिता तट पे कर घोर तपस्या।
वर्ष हजार बिताकर के प्रभु घात करी चउ घाति[3] समस्या।।
ये युग में सबसे पहले प्रभु आप वरें अरिहंत अवस्था।
द्वादश अंग व भंग सिखाकर दी जग को जिनधर्म व्यवस्था।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदहवाँ गुणथान वरा वह माघ वदी तिथि चौदस प्यारी।
सद्गुण माल लिए वरली शिवमंडप की शिवराजकुमारी।।
देकर के जग को जग की निधि छोड़ गये हमको त्रिपुरारी।
सिद्धशिला पर आरुढ़ होकर सिद्ध बने प्रभुजी अविकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. श्रेयांस राजा, 2. गुफा, 3. चार घातिया कर्म।

अक्षय तीज बड़ी सुखदा जब प्राण प्रतिष्ठित आप हुए थे।
वर्ष अनंतर ये हि घड़ी इस तीरथ में स्थित आप हुए थे।।
धर्ममयी इस तीरथ में हर अक्षय तीज लगे इक मेला।
भव्य महाअभिषेक रचावन आज प्रभो हमने ईख[1] पेला।।6।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला तृतीयायां अक्षयतृतीया दिवसे प्राण–प्रतिष्ठिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : धर्मतीर्थ में शांतता, होवे सदाबहार।
इसी भाव से हम प्रभो, करें शांति की धार।।

शांतये शांतिधारा

प्रभुवर हम तुम पर करें, पुष्पों की बरसात।
हम पर भी प्रभु तुम करो, खुशियों की बरसात।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।

जयमाला

दोहा : धर्मतीर्थ में धर्म का, शंख बजे दिन रात।
जयमाला पढ़ हम भजे, जयति वृषभ जिननाथ।।

(जोगीरासा छंद) *(तर्ज – माँईन माँईन...)*

धर्मतीर्थ की धर्मधरा पर आदिनाथ मन भाये।
सप्त सुरों की सरगम में हम जिन जयमाला गाये।।
बोलो वंदे आदिजिनम्–2...
मरुदेवी माँ देवों से भी सुन्दर लल्ला जाये[2]।
नाभिराज के राजकुँवर पर किसका मन ना आये।।
गर्भ जन्म कल्याणक द्वारा अवधपुरी हरषाये।। सप्तसुरों....

1. गन्ना, 2. जन्म दिया।

सुषमा-दुषमा काल जहाँ जब विकट घड़ी आई थी।
तुमने ही तब शिक्षा देकर उलझन सुलझाई थी।।
इस कारण ही पन्द्रहवें मनु भगवन आप कहाये।। सप्तसुरों....
वास्तु गणित ज्योतिष आदिक सब जग ने तुमसे जाना।
इस हित हर धर्मों ने तुमको आदि ब्रह्म हैं माना।।
षट्कर्मों का मार्ग बताकर धर्ममार्ग बतलाये।। सप्तसुरों....
प्रथम तीर्थकर प्रथम केवली प्रथम गुरु कहलाये।
धर्मतीर्थ में भी हे प्रभुवर सर्वप्रथम तुम आये।।
यहाँ उसी अक्षय तृतीया पर मेला भक्त लगाये।। सप्तसुरों....
धर्मतीर्थ के आदिनाथ की अष्ट धातु मय प्रतिमा।
सबके कष्ट विनष्ट हुए है गाकर इनकी महिमा।।
श्री कचनेर तीर्थ के पूरब, सूरज सम तुम छाये।। सप्तसुरों....
निर्धन को धन बांझन[1] को सुत भगवन तुम देते हो।
दुखियारों के दुःख हर करके सारे सुख देते हो।।
तुम विद्या ऐश्वर्य धर्म के कल्पवृक्ष कहलाये।। सप्तसुरों....
धर्म धुरन्धर गुप्तिनंदी गुरु धर्मतीर्थ प्रेरक हैं।
मात राजश्री के सपनों की जिसमें श्रेष्ठ महक है।।
धर्मराजश्री तपोभूमि ही धर्मतीर्थ कहलाये।। सप्तसुरों....
नाथ आप ही धर्मतीर्थ की दृढ़ आधार शिला हो।
ऐसा क्या हैं प्रभु जो तुमसे हमको नहीं मिला हो।।
आदिनाथ के चरणचंद्र में 'चंद्रगुप्त' सुख पाये। सप्तसुरों....

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : ऋषभदेव प्रभुवर हमें, ऐसा दो वरदान।
धर्मतीर्थ में धर्म से, हो सबका उत्थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

---

1. संतानहीन स्त्री

श्री जिनवाणी (सरस्वती) पूजा

(गीता छंद)

हे दिव्यध्वनि ! वागेश्वरी, आये शरण में हम सदा।
आह्वान अम्बे हम करें, तव नाम हरता आपदा॥
जिनदेव के मुख से खिरी, ओंकार वाणी दिव्यतम्।
निज आत्म में कर थापना, पायें निजातम रूप हम॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चामर छंद)

नीर क्षीर सिंधु का सुताप हारि ले लिया।
पूज ज्ञानमात को विशेष ज्ञान पा लिया॥
दिव्यदेशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की॥1॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध युक्त चन्दनादि ले पुनीत हाथ में।
मात अर्चना करें सुभक्ति भाव साथ में॥ दिव्यदेशना...... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री .... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

खण्डहीन गंधवान शालिपुंज को लिये।
आपको चढ़ा अखण्ड सौख्यवान हो लिये॥ दिव्यदेशना...... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा गुलाब चम्प भेंट आप चर्ण में।
काम को विनाश मान धार आत्म शर्म मैं॥ दिव्यदेशना...... ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री .... कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण मिष्ठ वा नवीन व्यंजनादि ला रहे।
आप गान लीन मोह कर्म को नशा रहे॥ दिव्यदेशना...... ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री .... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजवान दीप लेय आरती उतारते।
आपके समीप मात मोह को निवारते।।
दिव्यदेशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।6।।

ॐ ह्रीं श्री .... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में चढ़ाय मात आप आँगना।
अष्ट कर्म के विनाश की करें प्रभावना।। दिव्यदेशना...... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री .... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संतरा, बदाम, आम श्री फलादि थाल से।
भक्ति से चढ़ा बढ़े विमुक्तिभू विशाल में।। दिव्यदेशना...... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।। दिव्यदेशना...... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा : दिव्यध्वनि जगमात, तीन लोक में सर्वदा।
करता शांतिधार, पुष्पांजलि ले पूजहूँ।।

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अर्हन्मुखकमलवासिनी पापात्मक्षयंकरी वद्-वद् वाग्वादिनी ऐं ह्रीं नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : जिनवाणी की शरण में, कटे कर्म का जाल।
ध्यान शारदे का करें, गायें अब जयमाल।।

शेर छंद (तर्ज- पंछीड़ा...)

माँ शारदे की शरण में आये हैं आज हम।
चारों गति के पाप से घबरा गये हैं हम।।
अत्यंत पापकर्म से निगोद में गये।
इकश्वास में अठारह बार जन्म ले मरे।।1।।

जन्मादि मृत्यु के अनेक काल दुःख सहे।
महान पुण्य योग से वहाँ से च्युत हुए।।
तिर्यंचगति के दुःखों को क्या कहूँ तुम्हें।
जिसका विचार मात्र भी दुःखी करे हमें।।2।।

त्रस थावरादि योनियों में घूमते रहे।
अनेक पापकर्म से हम जूझते रहे।।
प्रथमादि सात नर्क में अपार दुःख सहे।
उत्तम-जघन्य-मध्यकाल पापरत रहे।।3।।

वहाँ क्षुधा-तृषा मिली औ गर्मी-ठंड भी।
कुछ पूर्व वैर से लड़ायें दुष्ट देव भी।
मनुजगति में गर्भवास की व्यथा सही।
यह बाल-वय-जवानी सारी मोह में बही।।4।।

हमको अकाम निर्जरा से देवपद मिला।
वहाँ भी लोभ मान से अपार दुःख मिला।।
सम्यक्त्व के बिना अनेक योनि में गये।
जिनेन्द्र धर्म छोड़ भवसमुद्र में बहे।।5।।

पायी अपार पुण्य से जिनेन्द्र देशना।
है जिनके पास रंच मात्र मोह द्वेष ना।।
जो सप्तभंग नयप्रमाण को बखानती।
नाना सुनाम धारती है मात भारती।।6।।

नमन करें त्रियोग से त्रिकाल बार-बार।
महिमा तुम्हारी भक्ति से गायें अनेक बार।।
हे मात ! हमको तीनरत्न दान दीजिये।
त्रय 'गुप्ति' व्रत की पूर्णता प्रदान कीजिये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द

जिनभक्त निर्मल भाव से 'जिनवाणी' की पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पावे उसे सुरनर सभी वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
'गुप्ति' व्रतों को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री नंदीश्वर जिनालय पूजा

सोरठा

नंदीश्वर के नाथ, बार-बार तुमको नमें।
पुष्पांजलि ले हाथ, अर्पण करते भाव से॥
करते जिन पद हेत, स्थापन सन्निधिकरण।
पायें मुक्ति निकेत, शरण जिनालय की लहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपसंबंधी चतुर्दिक्द्विपंचाशत्सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

शुचि नीर लाये हे जिनेश्वर ! अर्चना के भाव से।
मम जन्म-मृत्यु क्षय करो प्रभू जल चढ़ाते चाव से॥
इस द्वीप के बावन जिनालय, चैत्य जन-मनहार हैं।
यह द्वीप नन्दीश्वर जगत में, आठवाँ हितकार है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपंचाशत्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदाह नाशक नाथ को चंदन चरण अर्पण करें।
सब पाप-ताप विनाश कर भवदाह का तर्पण करें॥ इस द्वीप...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री ....जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयनिधि के ईश को अक्षत चढ़ाते पुंज से।
अक्षय परम पद लाभ हो पहुँचे निजात्म निकुंज में॥ इस द्वीप...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री ....जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर सुमन अर्पित करें तुम काम जेता नाथ को।
मदनारि का भंजन करें तव पाद में नत माथ हो॥
इस द्वीप के बावन जिनालय, चैत्य जन-मनहार हैं।
यह द्वीप नन्दीश्वर जगत में, आठवाँ हितकार है॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपंचाशत्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन हैं क्षुधा अरि के विजेता भक्त के क्रंदन हरें।
उनको चढ़ा सर्वोच्च व्यंजन भाव से वंदन करें॥ इस द्वीप...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री .... जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वज्ञ त्रिभुवन देखते कैवल्य दीप महान् में।
कर आरती दीपों से हम तन्मय तुम्हारे ध्यान में॥ इस द्वीप...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री .... जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्म हर्ता हे प्रभु ! हर लो करम अभिशाप को।
उज्ज्वल सुगंधित धूप ले करते प्रभु तव जाप को॥ इस द्वीप...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री .... जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन जिनालय के प्रभु की सरस फल से अर्चना।
देती हमें वह मोक्ष फल हरती सभी दुःख वंचना॥ इस द्वीप...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री .... जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकाग्रवासी वीतरागी अनर्घ पद मम दीजिए।
हम अष्ट द्रव्य चढ़ा रहे हमको शरण में लीजिए॥ इस द्वीप...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपंचाशत्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सर्वसिन्धु की धार दे, हरूँ आत्म की पीर।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, पाऊँ भवदधि तीर॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : नंदीश्वर जिनधाम को, झुक-झुक करूँ प्रणाम।
जयमाला मैं पढ़ रहा, पाने शिवपुर धाम॥

(नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के बावन जिन चैत्यालय सुख के आलय हैं।
कार्तिक-फागुन-षाढ़ मास में सुरगण पूजन में लय हैं॥
एक शतक त्रेसठ करोड़ लख चौरासी योजन वाला।
चार दिशा में अंजन गिरी है इन्द्रनील मणियों वाला॥1॥

योजन चौरासी हजार विस्तृत वृत तुंग मनोहारी।
अंजन गिरी की चारों दिश में चार वापियाँ सुखकारी॥
नंदा नंदवती नंदोत्तर नंदीघोषा नाम कहें।
एक लाख योजन विस्तृत यह निर्मल जल से पूर्ण रहे॥2॥

उन वापी की सर्व दिशा में हरे-भरे उद्यान बड़े।
सप्त पर्ण चंपक अशोक आम्रादिक उत्तम तरु खड़े॥
सर्व वापी के मध्य दधिमुख दश हजार योजन वाला।
सुर-असुरों से पूजित है व दधि सम श्वेत वर्ण वाला॥3॥

वापी के द्वय बाह्य कोण में रतिकर अचल चैत्य वाले।
इक हजार योजन विस्तृत ऊँचे गिरी स्वर्ण वर्ण वाले॥
एक दिशा में तेरह गिरि उन सबमें भव्य जिनालय हैं।
चार दिशा की बावन गिरि में सिद्धकूट सुख आलय हैं॥4॥

सिद्धकूट के इक मंदिर में प्रतिमा इक सौ आठ रहें।
धनुष पाँच शत पद्मासन में रत्नत्रय का पाठ कहें॥
सर्व चैत्य सर्वांग मनोहर सम्यग्दर्शन को देते।
उनको लखकर भव्य जीव निज भवपरिवर्तन हर लेते॥5॥

ऋद्धिधर मुनि विद्याधर नर वहाँ कभी नहीं जा सकते।
प्रभु का ध्यान, मनन व पूजन वे परोक्ष में कर सकते॥
हम भी अर्घ चढ़ायें भगवन जिन स्वरूप को नमन करें।
'राजश्री' भी भक्ति करके मोक्षपुरी को गमन करें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिग द्विपंचाशत जिनालय स्थित सर्वजिन-बिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

यह द्वीप पावन बन गया प्रभु के अतिशय धाम से।
पुष्पांजलि क्षेपण करें वे जन-नयन अभिराम हैं॥
हे नाथ ! तेरी चरणरज पाता रहूँ मैं भाव से।
शिवराज की ले कामना वंदन करूँ मैं चाव से॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सोलहकारण पूजा

(शंभु छन्द)

सोलहकारण भाने वाले भवि तीर्थंकर हो जाते हैं।
तीर्थंकर पद को पाकर वे शिव बीजांकुर बो जाते हैं॥
केवली-श्रुतकेवली के चरणों में पुण्य भावना भाते हैं।
पुष्पांजलि सुरभित लेकर हम आह्वानन करने आते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारण भावना समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

शीतल स्वच्छ सुवासित जल की धार दे।
उनको ध्याऊँ जो भव्यों को तारते॥
दर्शविशुद्धि आदि सोलह भावना।
पूजूँ सबको रखूँ मोक्ष की कामना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि, विनयसंपन्नता, शीलव्रतेष्वनतीचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचनवात्सल्य, इतिषोडशकारणेभ्योः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

केसर गंध कपूर मिलाऊँ भाव से।
भवसंताप प्रलय हित अर्चूं चाव से॥ दर्शविशुद्धि...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर तंदुल से भक्ति करूँ।
परमानंद परम अक्षय शक्ति वरूँ ।।
दर्शविशुद्धि आदि सोलह भावना।
पूजूँ सबको रखूँ मोक्ष की कामना।।3।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केवड़ा सुमन विनय से ले लिए।
अर्पण करता मदन पराजय के लिए।। दर्शविशुद्धि...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म साधना में बाधक होती क्षुधा।
अर्पण कर व्यंजन पाऊँ संयम सुधा।। दर्शविशुद्धि...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झाँझर दीपक लेकर करता आरती।
मोह विलय हो जागे सम्यक् भारती।। दर्शविशुद्धि...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व रोगहर धूप चढ़ाऊँ भक्ति से।
अष्ट करम क्षय होवे संयम शक्ति से।। दर्शविशुद्धि...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल मिले मोह के नाश से।
सरस मधुर फल अर्पित है इस आश से।। दर्शविशुद्धि...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ समर्पण अनर्घपद की चाह में।
बढ़ूँ निरन्तर महाव्रतों की राह में।। दर्शविशुद्धि...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **सोलह रत्नों से खचित, घट से कर जलधार।**
षोडशवर्णी कुसुम ले, कुसुमावलि दुःखहार।।

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : सोलह कारण भावना, करती निर्मलभाव।
भवदधि तिरने के लिए, इनका हो सद्भाव॥

(चौपाई छंद)

दरश विशुद्धी को अपनाये, जिन सम निज का रूप बनाये।
अनुनय-विनय परम सुखदाता, सर्व शत्रुता भाव मिटाता॥1॥
निर्मलशील विमलव्रत धारो, यथाख्यात चारित्र सँवारो।
अविरल ज्ञान योग अपनाओ, परम सत्य का शोध लगाओ॥2॥
धर संवेग विषय विषहारी, इस बिन धर्म क्रिया दुःखकारी।
यथासमर्थ त्याग जो करता, यथाजात मुद्रा वो वरता॥3॥
यथाशक्ति द्वादश तप करना, चिदानन्द प्रभु का जप करना।
साधुसमाधि परम सुखदाई, इसे अवश ही धारो भाई॥4॥
वैयावृत्ति सकल गुणशाली, तीर्थंकर पद देने वाली।
अर्हंतों की भक्ति कर लो, जिनवर की गुण निधियाँ वर लो॥5॥
पंचाचार करें करवावें, उन सूरि को हम सिर नावें।
द्वादशांग का ज्ञान कराते, वे पाठक श्रुतबोध कराते॥6॥
प्रवचन भक्ति करो भवि प्यारे, भव-भव के अघ नशे तुम्हारे।
षट् आवश्यक नित्य करे जो, मुक्तिरमा को सहज वरे वो॥7॥
रत्नत्रय का मार्ग निराला, करो प्रभाव जगत में आला।
गौ बछड़े सम प्रीत करे है, प्रवचन वत्सल भाव वरे है॥8॥
सोलह कारण भाव बनाओ, जिससे तीर्थंकर पद पाओ।
इनको हम भी अर्घ चढ़ायें, त्रय 'गुप्ति' वर शिव सुख पायें॥9॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : दर्श विशुद्धि आदि ले, प्रवचन वत्सल भाव।
धारो सोलह भावना, ये शिव सुख की छाँव॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पंचमेरू पूजा

(गीता छन्द)

श्री पंचमेरू के सभी जिनराज को वंदन करें।
करपात्र में पुष्पांजलि ले भाव अभिनंदन करें।।
आओ प्रभु मन में विराजो पाप कल्मष दूर हो।
आह्वान की इस शुभ घड़ी में भक्ति तव भरपूर हो।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरू सम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

त्रय धार जल निर्मल प्रभु के चरण में अर्पित करें।
मुनि सम विमल हो मम हृदय तन–मन सभी अर्पित करें।।
अक्षय अनुपम पंचमेरू पर विराजे जिन भवन।
जिन चैत्य की आराधना में लीन मम तन–मन–वचन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित गंध चंदन आज घिसकर ला रहे।
भवताप का संताप नशने तव चरण में आ रहे।। अक्षय.......।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धवल तंदुल से करें अर्चा श्री भगवान की।
अक्षय अनुपम पद मिले है भावना उत्थान की।। अक्षय.......।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विकसित सुमन से अर्चना विकसित करे मम भाव को।
करके मदन को पूर्ण वश पायें प्रभु पद छाँव को।। अक्षय.......।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन सरस प्रासुक लिये करते महा आराधना।
करे लें क्षुधा आधीन हम हो जाय ऐसी साधना।। अक्षय.......।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन जगमगाते दीप से प्रभु आरती वंदन करें।
सुज्ञान दीप प्रकाश से तम मोह का क्रंदन हरें।।
अक्षय अनुपम पंचमेरू पर विराजे जिन भवन।
जिन चैत्य की आराधना में लीन मम तन-मन-वचन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अष्टकर्मों से घिरी मम आतमा दुःख पा रही।
यह धूप से अर्चा हमारे पाप ताप नशा रही।। अक्षय.......।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आये मोक्ष पद की कामना से द्वार पे।
तव अर्चना फल से करें बह जायें भक्ति धार में।। अक्षय.......।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म गुण में थिर रहें ऐसा हमें वरदान दो।
जल चंदनादि अर्घ से पूजें सफल अभियान हो।। अक्षय.......।।9।।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **पंचमुखी जलकुंभ ले, करूँ नीर की धार।**
सुमनावलि अर्पण करूँ, करूँ आत्म उद्धार।।

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री पंचमेरू सम्बन्धी सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

सोरठा : **पंचमेरू के नाथ, रत्नत्रय दीजे मुझे।**
जयमाला के साथ, प्रभु गुण कीर्तन मैं करूँ।।

(शंभु छंद)

इस जम्बूद्वीप में प्रथम सुदर्शन मेरू अतिशयकारी है।
श्री भद्रशाल नंदन सुमनस और पाण्डुक वन मनहारी है।।

इन चार वनों की चार दिशा में सोलह चैत्यालय भारी।
उसमें शाश्वत जिन प्रतिमायें जिनको पूजे सुर नभचारी॥1॥

योजन चतु लक्ष घातकी है उसमें दो सुन्दर मेरू है।
पूरब में विजय खड़ा शाश्वत पश्चिम में अचल सुमेरू है॥
दोनों मेरू में अकृत्रिम बत्तीस जिनालय शोभ रहे।
उनमें चौंतिस सौ छप्पन श्री जिनबिम्ब जगत को लोभ रहे॥2॥

अठ लक्ष महायोजन विस्तृत पुष्करवर अर्द्ध कहा जाता।
इसमें मन्दर, विद्युन्माली पूरब पश्चिम में हर्षाता॥
इनके जिनबिम्ब जिनालय की महिमा का कौन बखान करे।
ऋद्धिधर मुनि सुरगण आदि उनको लख निज उत्थान करे॥3॥

क्षीरोदधि का पावन जल ले सुरगण मेरू पर जाते हैं।
वे बालप्रभु का न्हवन करा सम्यग्दृष्टि बन जाते हैं॥
प्रभु के अतिशय से मेरू का अतिशय दुगुना हो जाता है।
प्रभु बाल सुलभ की मुद्रा लख सुर तृप्त नहीं हो पाता है॥4॥

श्री पंचमेरू के दर्शन से हम पंच परावर्तन हरते।
[1]षट्शीति शत चालीस चैत्य का नमन सहित कीर्तन करते॥
जयमाल तुम्हारी मनहारी अध्यातम बोध कराती है।
नित 'राजश्री' चरणों में आ जयमाल तुम्हारी गाती है॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : पंचमेरू की अर्चना गाओ नित सब आज।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ पाने मुक्ति राज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. पाँचों मेरु की 8640 प्रतिमा होती है।

श्री दशलक्षण धर्म पूजा

(शंभु छन्द)

गुण उत्तम क्षमा मृदु आर्जव, और सत्य शौच संयम धारो।
तप त्याग अकिंचन ब्रह्मचर्य, इनसे कर्मों को परिहारो॥
इन दस धर्मों का आह्वानन, साधक को सिद्धि दिलाता है।
गति चार भ्रमण के बंधन से, छुटकारा तब मिल जाता है॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

शुचि नीर चरण में लाय, जन्म जरा नाशे।
त्रय धार देत हर्षाय, हम जिन गुण प्यासे॥
दशलक्षण धर्म महान, अतिशय सुखकारी।
ये शुद्धातम गुण खान, मंगल गुणकारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमा मार्दवार्जव शौच सत्य संयम तपस्यागाकिंचन्य ब्रह्मचर्येति.. दशलक्षणधर्माय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चंदन घिसकर लाय, चरण चढ़ाऊँ मैं।
भव के आताप नशाय, प्रभु गुण गाऊँ मैं॥ दशलक्षण....॥2॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धोकर हम लाय, झोली भर दीजे।
अक्षत के पुंज चढ़ाय, अक्षय पद दीजे॥ दशलक्षण....॥3॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज पुष्प मंगाय, वंदन करता हूँ।
मम काम बाण हट जाय, निवेदन करता हूँ॥ दशलक्षण....॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा वेदनी पाप, दर–दर भटकाता।
हो दूर क्षुधा संताप, व्यंजन मैं लाता॥ दशलक्षण....॥5॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों का थाल, प्रभु को अर्पित हो।
छूटे माया का जाल, तन-मन हर्षित हो॥
दशलक्षण धर्म महान, अतिशय सुखकारी।
ये शुद्धातम गुण खान, मंगल गुणकारी॥6॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप दशांगी लाय, पावक में डाला।
दश धर्म हृदय से ध्याय, होवे उजियाला॥ दशलक्षण....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसदार मधुर फल लेय, करता वृष अर्चा।
जाना भव बंधन हेय, त्यागूँ भव चर्चा॥ दशलक्षण....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विधि आठों द्रव्य, मिश्रित कर लाये।
पूजन हित आते भव्य, प्रभु के गुण गाये॥ दशलक्षण....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सब सारों का सार है, दशलक्षण गुण खान।
दश धर्मों को धारकर, करो स्वपर उत्थान॥

दशलक्षण धर्म के अर्घ *(तर्ज : यह देश है वीर....)*

यह क्षमा वीर का आभूषण, इसको जो धारण करता है।
वह मोक्ष महल पर चढ़ जाता मुक्ति रानी को वरता है॥
यह क्रोध महा दुःखदायी है जो जग में अयश दिलाता है।
नाना गतियों में भटका कर छेदन-भेदन करवाता है॥
तन-मन के रोग बढ़ा करके यह द्वंद-फन्द बढ़वाता है।
दीपक सम सुख को जला-जला निज पर के कष्ट बढ़ाता है॥

दोहा : क्रोध भाव को छोड़कर, उत्तम क्षमा विचार।
त्रिभुवन में सब जीव का, यही भाव आधार॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

(तर्ज : सूरज कब....)

ममकार हटाने वाले, मृदुता को धारने वाले।
जग जीवों के रखवाले, दशधर्म पालने वाले।।
गुरुओं का यही तो संयम है चरणों में वंदन है।
यह मान महा दुःखदाता, मानी को दुःख पहुँचाता।
मार्दव से मान घटाओ, और विनयवान बन जाओ।
यह विनय बड़ा सुखकारी, कहती है श्री जिनवाणी।
हम इसको अर्घ चढ़ायें, समता रस को पा जाये।। गुरुओं...

दोहा : मान भाव को त्यागकर, धारो मार्दव भाव।
परम विनय के भाव से, जग में हो सद्भाव।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

(तर्ज : मेरा जीवन...)

छल-कपट में मेरी आयु पूरी ही खो गयी।
अब धरम को धारकर मति शुद्ध हो गयी।।
माया जगत के प्राणियों को भव भ्रमण करवा रही।
बहुरूपिया का रूप धर तिर्यंच में भरमा रही।।
भौतिक सुखों की चाह में दिन-रात मन से लग रहा।
परपंच रचता कपट करता और निज को ठग रहा।।

दोहा : उत्तम आर्जव धारकर, मान कपट को त्याग।
दुर्लभ मानव लाभ ले, भव्यातम तू जाग।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

(तर्ज : माइन माइन...)

तृष्णा आशा वश हो मैंने जीवन व्यर्थ गँवाया।
शौच धरम मन से अपनाकर गुण संतोष जगाया।।
लोभ पाप के वश होकर प्राणी धन संचय करता है।
अशुचि अपावन तन में रत हो कर्म शृंखला वरता है।।

जल आदि वस्तु को लेकर तन की शुचिता करता।
निज वैभव के ज्ञान बिना वह सुख शांति न वरता॥

दोहा : उत्तम शौच महान है, सुख-शांति की खान।
भवदधि तिरने के लिए, इसको नौका जान॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

(तर्ज : पार्श्वनाथ देव सेव..)

झूठ बोलकर कभी न सत्य शोध पाओगे।
सत्य के बिना कभी न पूर्ण बोध पाओगे॥
प्रेम से कहो सखे सदा ही स्याद्वाद को।
मौन साधना ही देती सत्य साम्यवाद को॥

दोहा : उत्तम सत्य सदा धरो, पावो शिवपुर धाम।
सत्य धर्म की अर्चना, सदा करो निष्काम॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

(तर्ज : जय-जिनेन्द्र, जय-जिनेन्द्र बोलिये...)

इन्द्रियों में रत हुआ विवेकहीन हो रहा।
हो अधीन भोग के तू व्यर्थ काल खो रहा॥
गति चार के भ्रमण से अब तो जाग-जाग रे।
यम नियम को धार के तू धार वीतराग रे॥

दोहा : उत्तम संयम धार लो, पाने बोधि लाभ।
कर्म कटे पुरुषार्थ से, विषयाशा को दाब॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

(तर्ज : तुमसे लागी लगन...)

तप ही तारण तरण, ले लो इसकी शरण।
तप ही न्यारा, सब प्राणी का ये ही सहारा॥
तप को धारे ऋषि, कर्म काटे यति, तप के द्वारा॥
ऐसे गुरुओं को वंदन हमारा-2

तन की ममता को जिसने हटाया, तप से कर्मों को उसने नशाया।
समता धारी बने, ज्ञान धारी बने, तप के द्वारा।। ऐसे.....

दोहा : उत्तम तप तुम धार लो, करो पाप परिहार।
नरभव पाकर तुम करो, इस तन पर उपकार।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

(चाल हे दीनबन्धु....)

मुनिराज त्याग के प्रत्यक्ष मूर्ति रूप हैं।
श्रावक भी परिग्रह तजे यह दान रूप है।।
तुम शास्त्र-अभय-औषधि-आहार दान दो।
मुक्ति के गमन हेतु इस ओर ध्यान दो।।

दोहा : त्याग दान अपनाइये, जो चाहो सुख चैन।
त्याग बिना यह जीव तो, रहता है बेचैन।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

(तर्ज : रोम-रोम से निकले...)

किंचित भी पर द्रव्य, मेरा नहीं रहा है।
इससे करके मोह, मैंने कष्ट सहा है।।
धार अकिंचन भाव, परम समाधि पाऊँ।
मनहर अर्घ चढ़ाय, आधि-व्याधि नशाऊँ।।

दोहा : परिग्रह ग्रह सम कष्ट दे, दुर्गति में ले जाय।
उत्तम आकिंचन धरम, गति-आगति मिटाय।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

चौपाई

उत्तम ब्रह्मचर्य मुनि धारे जिससे कर्म शिखर परिहारे।
मन-वच-तन से जो भी पाले, सुख पावे दुःख-संकट टाले।।
त्रय लोकों में पूज्य बने वो, साम्य सुधारस पान करे वो।
उनको हम सब अर्घ चढ़ावें, ब्रह्मचर्य के भाव बढ़ावें।।

दोहा : ब्रह्मचर्य दशधर्म में, सब धर्मों की खान।
उसको अर्घ चढ़ाय के, पाऊँ धर्म महान्॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥10॥

दोहा : रत्न झारि से धार दे, पाऊँ शांति अपार।
कुसुम पुँज अर्पण करूँ, हो जाऊँ भवपार॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : दशलक्षण दशधर्म को, धारण करें मुनीन्द्र।
जयमाला पूजन करे, नर-सुर-गण और इन्द्र॥

(तर्ज- मन डोले मेरा तन डोले...)

पूजन कर लो, वंदन कर लो, दशलक्षण धर्म को धार रे।
हम अर्घ चढ़ायें भावों से॥

उत्तम क्षमा धरो सब प्राणी, जो बंधन कटवाता।
उत्तम मार्दव मान हटाता, आर्जव ऋजुता लाता॥ आर्जव..2
पालन कर लो, धारण कर लो, यह धर्म ही जग आधार रे॥1॥
हम अर्घ चढ़ायें भावों से॥

उत्तम शौच पाप का हरता, सत्य ही शिव सुखदाता।
उत्तम संयम रक्षा करता, तप गुण वृद्धि कराता॥ तप गुण..2
जीवनदाता, जग के त्राता, इनसे तू भाव सँवार रे॥2॥
हम अर्घ चढ़ायें भावों से॥

आकिंचन सर्वज्ञ बनाता, त्याग चिदानंद दाता।
ब्रह्मचर्य दशधर्म शिरोमणि, सिद्धलोक पहुँचाता॥ सिद्ध...2
जग नेह तजो, दशधर्म भजो, तू अपना जनम सुधार रे॥3॥
हम अर्घ चढ़ायें भावों से॥

धर्म ज्योति से मोक्षमहल का पथ हमको मिल जाता।
'राजश्री' का धर्म शरण में ज्ञान सुमन खिल जाता॥ ज्ञान..2
दश धर्म वरो, शिवराज करो, तुम पाओ सौख्य अपार रे॥4॥
हम अर्घ चढ़ायें भावों से॥

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्मेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : धर्म सूर्य की दश किरण, देती धर्म प्रकाश।
दश धर्मों की साध में, बीते मम हर श्वास॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री रत्नत्रय पूजा

(शंभु छन्द)

हे भव्य ! सभी आओ-आओ, रत्नत्रय का शुभ ध्यान धरो।
शुभ सम्यग्दर्शन ज्ञान-चरित, मुक्ति पथ पर अभियान करो॥
तीनों मिल मोक्ष सुपथ बनते, इनका आह्वानन करते हैं।
इन आत्मगुणों का श्रद्धा से, शत-शत अभिनंदन करते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शंभु छंद)

क्षीरोदधि सम निर्मल जल भर, यह रत्नकलश ले आये हैं।
मम जन्म-जरा-मृत नाश हेतु, भावों से जल भर लाये हैं॥
सम्यग्दर्शन और ज्ञान-चरित, यह आतम गुण कहलाते हैं।
रत्नत्रय धारण करने हित, हम इनकी भक्ति रचाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

माया के बंधन में फँसकर, निज आतम को भरमाया है।
संसार तपन से बचने को, प्रभु चंदन चरण चढ़ाया है॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

यह मधुर सुगंधित अक्षत के, मनहारे पुंज समर्पित हो।
हम अक्षय पद को पा जायें, क्षत-विक्षत भाव विसर्जित हो॥
सम्यग्दर्शन और ज्ञान-चरित, यह आतम गुण कहलाते हैं।
रत्नत्रय धारण करने हित, हम इनकी भक्ति रचाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

हम कमल-केतकी-बकुल-कुसुम, सुन्दर मनहारे पुष्प लिए।
श्रद्धा से आज चढ़ाते हैं, संग मन पंकज के पुष्प लिए॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

षट्रस भूषित बरफी आदिक, शुचि नेवज मिष्ट चढ़ाते हैं।
हम अपनी क्षुधा नशाने को, हे नाथ ! शरण में आते हैं॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

जग तमहारी घृत रत्नों के, हम सुंदर दीपक लाते हैं।
रत्नत्रय दीपक से जिनवर, निज आतम दीप जलाते हैं॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

वह धूप दशांगी लाये हैं, जो मन को प्रमुदित करती है।
निज ज्ञानप्रभा प्रगटायेंगे, जो आतम कल्मष हरती है॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

अंगूर-आम-अमरूद-पनस, वसु फल के थाल समर्पित हो।
हम मोक्ष महाफल को पायें, मम भौतिक चाह विसर्जित हो॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जल-चंदन आदिक अष्ट द्रव्य, उनका इक थाल बनाया है।
अविचल अनर्घ पद पायेंगे, यह उत्तम भाव बनाया है॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

सोरठा : भव दुःख शांति हेत, शांतिधारा नित करें।
समता सुख में लीन, पुष्पांजलि चढ़ाय के॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : रत्नत्रय की भाव से, करें भक्ति त्रयकाल।
रत्नत्रय का लाभ ले, पढ़ें सदा जयमाल॥

(शंभु छंद)

शिवपुर पथ का सोपान प्रथम, सम्यग्दर्शन कहलाता है।
सम्यग्दर्शन के होने पर, भव का बंधन कट जाता है॥
मिथ्यात्व तिमिर के हटने पर, श्रद्धा का सूर्य निकलता है।
इस सूर्य किरण से भव्यों का, सम्यक्त्व बीज तब फलता है॥1॥
सम्यग्दर्शन के साथ ज्ञान, सम्यक्त्व ज्ञान कहलाता है।
जो केवलज्ञान दिवाकर का, इक मूलस्रोत कहलाता है॥
जब ज्ञान सुसम्यक् होता है, तब सत् आचरण सुहाता है।
निज मोहकर्म विगलित होते, शिवसुख पथ हमें लुभाता है॥2॥
मुनिपद बिन मुक्ति नहीं मिलती, चाहे तीर्थंकर क्यों न हो।
व्रत बिन वसुकर्म नहीं नशते, चाहे प्रलयंकर क्यों न हो॥
सम्यग्दर्शन और ज्ञान-चरित, मिल मुक्ति सौख्य दिलवाते हैं।
रत्नत्रय धारण करके ही, अरिहंत सिद्ध बन जाते हैं॥3॥
रत्नत्रय पालन करने हम, जिन-आगम-गुरु को ध्याते हैं।
इनकी शरणा पाने वाले, भवसागर से तिर जाते हैं॥
इस हेतू मोक्ष महापथ की, शिवरूचि से चर्चा करते हैं।
हम 'गुप्ति' व्रतों के पालन हित रत्नत्रय अर्चा करते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से, यह **'रत्नत्रय'** पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पावे सदा, सुर-नर उसे वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को, शिवराज वे पा जायेंगे।
'गुप्ति' व्रतों को धारकर, भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सम्यग्दर्शन पूजा

(शंभु छन्द)

भविजन आओ जिन गुण गाओ, सम्यग्दर्शन का ध्यान धरो।
रत्नत्रय को पाने हेतू, सत्श्रद्धा का आह्वान करो।।
सम्यग्दर्शन जो पाते हैं, वो भवसागर तिर जाते हैं।
भवसागर का शोषण करके, गुण गागर भर ले जाते हैं।।
इस कारण सम्यग्दर्शन का, भावों से वंदन करते हैं।
मन पंकज सहित सुमन लेकर, नित शत अभिनंदन करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरिगीता छंद)

निर्मल हृदय निर्मल करण से, जल यहाँ अर्पण करें।
मम जन्म-मृत्यु विनाश हेतू, विनय से अर्चन करें।।
जो मोक्षपथ के प्रथम पद की, भाव से पूजा करें।
वे भवभ्रमण से छूटकर, निज आत्म में झूला करें।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

केसर सुगन्धित मलय चंदन, आज हम अर्पण करें।
संसार ताप विनाशकर निज, आत्म का तर्पण करें।। जो मोक्ष.....।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

उज्ज्वल अखंडित अक्षतों को, आज हम अर्पित करें।
अक्षय अखंडित सहज मंडित, आत्मगुण अर्जित करें।। जो मोक्ष.....।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

चम्पा-चमेली-मालती, मचकुन्द सुन्दर सुमन ले।
निज कामरिपु का नाश करने, गुण सुमन अर्पण करें।। जो मोक्ष.....।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

बरफी इमरती थाल भर-भर, लाय निर्मल भाव से।
पापिन क्षुधा के नाश हित हम, भक्ति करते चाव से।।
जो मोक्षपथ के प्रथम पद की, भाव से पूजा करें।
वे भवभ्रमण से छूटकर, निज आत्म में झूला करें।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

छाया तिमिर घन मोह का, निज आत्म अवलोकन किया।
स्वर्णाभ घृत दीपक जला निज, मोह तम खण्डन किया।। जो मोक्ष.....।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

आठों करम की श्रृंखलायें, रोकती जग जाल में।
यह धूप पावक में चढ़ायें, ना फसें जंजाल में।। जो मोक्ष.....।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

है मोक्षफल सुन्दर महाफल, और सब निस्सार है।
जो नित्य नूतन फल चढ़ावे, वो जगत से पार है।। जो मोक्ष.....।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

प्रभु दर्श से सब पाप नशते, पार ना हो हर्ष का।
ऐसे अमल परिणाम ही हैं, नाम सम्यग्दर्श का।। जो मोक्ष.....।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : **रत्न कुंभ जल से भरें, करें सुखद जलधार।**
समकित रत्न सुलाभ हित, अर्पें सुमन अपार।।

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **गुणमाला सम्यक्त्व की, देती ज्ञान अपार।**
मोक्ष महल के हेतु हम, आये प्रभु के द्वार।।

शेर छंद (तर्ज- हे दीनबंधु...)

सम्यक्त्व मोक्षमार्ग की पहली इकाई है।
सुरेन्द्र-इन्द्र-खगपति ने कीर्ति गाई है॥
आगम-गुरु-जिनेन्द्र पर श्रद्धान जो करें।
सम्यक्त्व धार आत्म का उत्थान वो करें॥1॥

ये आठ अंग आठ गुण से पूर्ण कहाता।
भव्यात्मा के कर्मशैल चूर्ण कराता॥
जिनदेव-श्रुत मुनीश पे संदेह ना करो।
चारित्र ज्ञान धार मुक्ति अंगना वरो॥2॥

निष्काम भक्ति से मिलेंगी सर्व सिद्धियाँ।
सेवा ये तीन रत्न की दिलाये ऋद्धियाँ॥
त्रय मूढ़ता तजो अमूढ़दृष्टि को वरो।
औरों के दोष देख के तुम उपवृहंण करो॥3॥

पथ भ्रष्ट जीव का करो तुम स्थितिकरण।
गो वत्स के समान होवे नेह का वरण॥
प्रकृष्ट भावना से होवेगी प्रभावना।
अष्टांग पूर्ण दृष्टि पाऊँ ये ही कामना॥4॥

सम्यक्त्वी प्रथम नरक छोड़ अन्य ना जावें।
तिर्यंच स्त्री भुवन त्रय का स्वर्ग ना पावें॥
दारिद्रता के कष्ट को वो पाये ना कभी।
कुलहीन अल्पमृत्यु को वो पाये ना कभी॥5॥

त्रेषठ शलाका पुरुष में वो जन्म पायेगा।
क्रम-क्रम से वो ही भव्य मुक्ति धाम जायेगा॥
अक्षय अनंत आत्मलीन सौख्य है जहाँ।
सिद्धात्मा अनंत नित विराजते यहाँ॥6॥

सम्यक्त्व युक्त आत्मा को शीश नवायें।
संसार भ्रमण नाश हेतू नाथ को ध्यायें।।
ऐसी अखण्ड सौख्यदायी दृष्टि वरेंगे।
त्रय 'गुप्ति' धार करके, कर्मकृष्टि करेंगे।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जिन भक्त निर्मल भाव से 'सम्यक्त्व' की पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पावें सदा सुर-नर उसे वंदन करें।।
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सम्यग्ज्ञान पूजा

(गीता छन्द)

शिवपुर महापथ के पथिक, त्रयरत्न को धारण करें।
पाये परम दृग-ज्ञान-व्रत, वसुकर्म निरवारण करें।।
ऐसे सुसम्यक्ज्ञान का, हम आज आह्वानन करें।
कैवल्य ज्योति प्रकाश हित, निज आत्म में थापन करें।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निज आत्म क्षालन के लिए, जल स्वच्छ शीतल ला रहें।
निज कर्म दोष निवारने, जिनवर शरण में आ रहें।।
अज्ञान तम से दुःखित हम, त्रैलोक्य में भटकें फिरें।
सद्ज्ञान की पूजा करें, दुर्वार भवसिंधु तिरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी का शुभ्र चंदन, देह दाहकता हरे।
चंदन प्रभु चरणन् चढ़ा, निज आत्म पातकता हरें।। अज्ञान तम.. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय निधी के लाभ हित, हम आज अक्षत ला रहे।
हो ज्ञान-अक्षय सौख्य-अक्षय, भाव अक्षय भा रहे॥
अज्ञान तम से दुःखित हम, त्रैलोक्य में भटकें फिरें।
सद्ज्ञान की पूजा करें, दुर्वार भवसिंधु तिरें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना तरह के पुष्प ले, पुष्पांजलि अर्पण करें।
आत्मोत्थ आनंद लाभ हित, हम स्वयं को अर्पण करें॥ अज्ञान....॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस मनोहर व्यंजनों से, ज्ञान की अर्चा करें।
नाशें क्षुधा का रोग हम, निज आत्म परिचर्या करें॥ अज्ञान....॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्य ज्योति प्रतीक दीपक, तम हरे अज्ञान का।
ज्ञानावरण के नाश हित, मम् लक्ष्य हो सुज्ञान का॥ अज्ञान....॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध मनहर धूप को, पावक जला सुरभित करें।
तव भक्ति काटे कर्म को, सर्वात्म को प्रमुदित करे॥ अज्ञान....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसदार ताजे मिष्ठ फल से, ज्ञान की अर्चा करें।
हम शिव सदन की भावना से, ज्ञान की चर्चा करें॥ अज्ञान....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-गंध-अक्षत-पुष्प आदिक, अर्घ भरकर ला रहे।
मद मोह विषयादिक तजे, हम ज्ञान महिमा गा रहे॥ अज्ञान....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सम्यक्ज्ञान महान है, श्रद्धाव्रत आधार।
जल की त्रय धारा करें, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : रत्नत्रय का दीप है, निर्मल सम्यक्ज्ञान।
उसकी जयमाला पढ़ें, पायें केवलज्ञान॥

चौपाई छंद

जय-जय श्री जिन केवलज्ञानी, श्री जिनमुख भाषित जिनवाणी।
गणधर-मुनि मनपर्ययज्ञानी, महाश्रमण शुभ अवधिज्ञानी॥1॥
जय-जय सम्यक्ज्ञान निराला, पंचभेदयुत कहें कृपाला।
प्रथम ज्ञान मतिज्ञान कहाये, त्रय शत छत्तीस भेद बताये॥2॥
दूजा है श्रुतज्ञान महाना, द्वादशांगमय भेद बखाना।
अवधिज्ञान के भेद अनेकों, द्वयविध मनपर्यय को देखो॥3॥
क्षायिक केवलज्ञान कहाये, इसे केवली जिनवर पायें।
जब सम्यक्दर्शन होता है, ज्ञान तुरत सम्यक् होता है॥4॥
यह ही सच्चा दीप कहाये, दर्शन-व्रत में शुचिता लाये।
आठ अंगयुत इसको ध्याओ, श्रुत के पाँच नियम अपनाओ॥5॥
जिनवाणी को जब भी पढ़ना, अक्षर कम ज्यादा ना करना।
जैसा का तैसा ही पढ़ना, नहिं विपरीत व संशय करना॥6॥
इक मृग ने जिनशास्त्र सुना था, दूजे भव नरराज बना था।
वे बालि मुनिराज कहाये, श्रुतकेवलि हो जिनपद पाये॥7॥
वायुभूति ब्राह्मण अभिमानी, पायी महाश्रमण की वाणी।
आगे मुनि सुकुमाल कहाये, मुनि सर्वार्थसिद्धि को पाये॥8॥
शिवभूति मुनिराज हमारे, वे आगम को पढ़-पढ़ हारे।
धार त्रिगुप्ति ध्यान लगाया, बने केवली जिनपद पाया॥9॥
ग्वाले ने पायी जिनवाणी, मुनि को भेंट करे वो दानी।
कुन्दकुन्द मुनिराज बने थे, मुनि बन नाना शास्त्र रचे थे॥10॥
सम्यक्ज्ञान रत्न को ध्यायें, भक्तिभाव से अर्घ चढ़ायें।
'गुप्ति' सूर्य जयमाला गाये, केवलज्ञान सूर्य प्रगटाये॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जिनभक्त निर्मल भाव से, '**सद्ज्ञान**' की पूजा करे।
त्रैलोक्य सुख पावें सदा, सुर-नर उसे वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को, शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सम्यक्चारित्र पूजा

(पंच चामर छंद)

विशुद्ध त्याग वा चरित्र की करूँ जिनार्चना।
महान् त्याग के धनी मुनीश की सुवंदना।
अशेष पुष्प हाथ में लिए मुनीश आज मैं।
करूँ पुनीत थापना जिनेश दिव्य भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पवित्र नीर कुंभ ले जिनेश को चढ़ा रहा।
जिनेश का स्वरूप भी सुभक्ति में बड़ा रहा॥
विशिष्ट त्याग में लगे मुनीश ही महान हैं।
चरित्र ही त्रिलोक में जहाज के समान है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त ताप जो हरे उसी सुगंध को चढ़ा।
यहाँ स्वरूप आपका सुभक्ति में डुबा रहा॥ विशिष्ट....॥2॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखण्ड शालिपुंज भी अखंडभाव से चढ़े।
प्रचण्ड-चण्ड कर्म भी प्रखंड-खंड हो पड़े॥ विशिष्ट....॥3॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपुष्प के समूह जो गुलाब आदि नाम हैं।
चढ़े विशेष भक्ति से चरित्र तीर्थ धाम में॥
विशिष्ट त्याग में लगे मुनीश ही महान हैं।
चरित्र ही त्रिलोक में जहाज के समान है॥4॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनीत वा सुनीत जो वही मिठाइयाँ चढ़ीं।
यहाँ क्षुधा पिशाचिनी विमूढ़ लस्त हो पड़ी॥ विशिष्ट....॥5॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रदीप्त दीप थाल से जिनारती उतारता।
जिनेन्द्र सूर्य पास में प्रमोह ध्वान्त हारता॥ विशिष्ट....॥6॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निजाष्टकर्म नाशने विशुद्ध धूप लायके।
खिरा सुयोग्य अग्नि में प्रयाग भाव पायके॥ विशिष्ट....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बदाम आम संतरादि श्रीफलादि थाल ले।
सुधर्म सूर्य को चढ़ा सुभक्त भी निहाल है॥ विशिष्ट....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश दिव्य अर्घ की मनोज्ञ थाल ला रहा।
अनर्घ सौख्य लाभ हो यही विचार भा रहा॥ विशिष्ट....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : समकित नींव सुज्ञानघट, कलश श्रेष्ठ चारित्र।
शांतिधार अर्पण करूँ, अर्पित पुष्प पवित्र॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : सम्यक् चारित के धनी, होते भव से पार।
इनके गुण गण गान से, मिलता सौख्य अपार॥

चौपाई छंद

सम्यक् श्रद्धा जब जग जाये, ज्ञान चारित सम्यक् हो जाये।
मोक्षमहल की मुख्य इकाई, सबको मुक्तिरमादिक दायी॥1॥
यह जग सारा भूल-भुलैया, इसमें अपना कोई न भैया।
जग सारा स्वारथ का मेला, स्वार्थ निकलते जीव अकेला॥2॥
नाना भव के रिश्ते नाते, पुण्य उदय से साथ निभाते।
कर्म बली जग में भटकाता, कभी हँसाता कभी रुलाता॥3॥
षट्कर्मों की कला सिखायें, युगनेता आदीश कहाये।
अन्तराय उदयागत आया, छह महीने भोजन न पाया॥4॥
कुष्ठी पति मैना ने पाया, समता से उसको अपनाया।
सिद्धचक्र से कुष्ट मिटाया, फिर भी पति का सुख ना पाया॥5॥
जनक सुता रघुवर की नारी, वन-वन भटकी वो बेचारी।
अशुभ कर्म उदयागत आये, प्राणी को दर-दर भटकाये॥6॥
गिरधर जो गोवर्धन धारें, बाण लगा परलोक सिधारे।
कर्म किसी को भी ना छोड़े, योगी इनसे नाता तोड़े॥7॥
प्रशम आदि भावों को धारें, विषय वासना को परिहारे।
यथायोग्य संयम अपनायें, ध्यान लगा निज कर्म नशायें॥8॥
जो सम्यक्चारित अपनाये, मोक्षमहल को वो ही पाये।
कर्मकाष्ठ क्षण में विनशाये, परमानंद परमसुख पाये॥9॥
हम भी उत्तम संयम पाये, 'गुप्ति' धरें शिवराज जगाये।
जयमाला प्रभुवर की गाये, भक्तिभाव से अर्घ चढ़ाये॥10॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द

जिनभक्त निर्मल भाव से सद्वृत्त की पूजा करें।
त्रैलोक्य सुख पावें सदा सुर-नर उसे वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्णकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

क्षमावाणी पूजा

(गीता छंद)

जिसने रखी उत्तम क्षमा, वो ही क्षमाधारी बने।
तीर्थेश त्रिभुवन के प्रभु, हम आपके रागी बने।।
शक्ति मिले हमको प्रभु, आह्वान थापन हम करें।
हे नाथ आओ मन बसो, पूजन भजन हम नित करें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रत्नत्रय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेरछंद)

जिनदेव की छवि हमारे मन को लुभाये।
निर्मल नदी के नीर से द्वय पाद धुलाये।।
उत्तम क्षमावणी की जो भी भक्ति रचायें।
करके प्रभु की अर्चना मिथ्यात्व नशाये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री निशंकितांगाय नमः, निकांक्षितांगाय नमः, निर्विचिकित्सांगाय नमः, निर्मूढ़ताय नमः, उपगूहनांगाय नमः, स्थितिकरणांगाय नमः, वात्सल्यांगाय नमः, प्रभावनांगाय नमः, व्यंजनव्यंजिताय नमः, अर्थ समग्राय नमः, तदुभयसमग्राय नमः, गुरुपादापन्हवाय नमः, बहुमानोन्मानाय नमः, अहिंसाव्रताय नमः, सत्यव्रताय नमः, अचौर्यव्रताय नमः, ब्रह्मचर्यव्रताय नमः, अपरिग्रहव्रताय नमः, मनोगुप्त्यै नमः, वचनगुप्त्यै नमः, कायगुप्त्यै नमः, ईर्यासमित्यै नमः, भाषासमित्यै नमः, एषणा समित्यै नमः, आदान–निक्षेपणसमित्यै नमः, व्युत्सर्गसमित्यै नमः, जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके चरण में आके मिटे ताप हमारा।
पूजें प्रभु के चर्ण चमके भाग्य सितारा।। उत्तम...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज आपसे मिलेगी सर्व संपदा।
अक्षत चढ़ाके पायेंगे हम मोक्ष संपदा।। उत्तम...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से अर्चना मिटाये काम वेदना।
सम्यक्त्व में कारण बने जिनवर की देशना।।
उत्तम क्षमावणी की जो भी भक्ति रचायें।
करके प्रभु की अर्चना मिथ्यात्व नशाये।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य से करेंगे हम प्रभु की अर्चना।
जिनराज ही हरेंगे क्षुधारोग वंचना।। उत्तम... ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपों की दीप माल ले करेंगे आरती।
जिननाथ की ये आरती दे ज्ञान भारती।। उत्तम... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो महामोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रक की गंध में ये कर्म कालिमा जले।
हम अष्ट कर्म नाशके शिवधाम को चले।। उत्तम... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कामना जिनराज एक मुक्तिधाम की।
पूजा करी है फल से हमने आप नाम की।। उत्तम... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों ही द्रव्य का समूह अर्घ कहाये।
हम झूमते गाते प्रभु को अर्घ चढ़ायें।। उत्तम... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निर्मल भावों से करें, प्रभु चरणन् जल धार।
प्रभु के पद प्रक्षाल से, पायें शांति अपार॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा : सुंदर–सुंदर फूल से, मनवा अति हर्षाय।
फूल चढ़ा प्रभु चरण में, जिन का ध्यान लगाय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : पर्व क्षमावाणी कहे, सरल करो परिणाम।
जयमाला इसकी पढ़ें, पायें मोक्ष मुकाम॥

(नरेन्द्र छंद)

क्षमावान ही क्षमा भाव से, क्षमा भावना चित्त धरें।
क्षमा धर्म को पाने हेतू, जिन गुरुओं को नमन करें॥
रत्नत्रय को धारण करके, जो मुनि उत्तम सुख पाते।
उनके चरणों में नत हो हम, उनसे रत्नत्रय पाते॥1॥

शिवपद का सोपान सुदर्शन, सम्यक्ज्ञान खजाना है।
तीजा सम्यक् चारित उत्तम, इससे सिद्धी पाना है॥
अष्ट अंगयुत सम्यक्दर्शन, ज्ञान अष्टविध कहलाये।
तेरह भेद कहे चारित के, हम इनको पाने आये॥2॥

शंका छोड़ो बनो निशंकित, अंग निशंकित कहता हैं।
जग के सुख की इच्छा त्यागो, अंग निकांक्षित कहता है॥

निर्विचिकित्सा कहता हमसे, ग्लानि भाव नहीं लाओ।
अंग अमूढ़ दृष्टि को धारो, सर्व मूढ़ता विनशाओ॥3॥

उपगूहन कहता है भव्यों, गुण अवगुण को पहिचानो।
गिरते के जो सदा उठाये, स्थितिकरण उसे मानो॥
गौ बछड़े सम प्रेम अमर हो, वत्सल अंग सिखाता है।
अंग आठवाँ है प्रभावना, धर्म प्रभाव बढ़ाता है॥4॥

सम्यक्ज्ञान आठ अंगों युत, केवलज्ञान दिलाता है।
इनमें जो श्रद्धा कर लेता, निश्चय भव तर जाता है॥
पाँच महाव्रत पाँच समिति, तीन गुप्तियाँ जो पाले।
सर्व परिग्रह के त्यागी ही, सम्यक् तप करने वाले॥5॥

राग-द्वेष मद मोह विनाशे, समता संयम को धारें।
क्षमा धनी उत्तम मुनियों की, अर्चा सब दुःख परिहारे॥
गुरुओं की सेवा पूजा से, हम सम्यक्दर्शन पायें।
करें वंदना त्रय गुप्ति से, 'आस्था' से भव तिर जायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन-अष्टांग सम्यग्ज्ञान-त्रयोदश विधि सम्यक्चारित्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

जिनधर्म क्षमावाणीमय है, यह क्षमा धर्म सिखलाता है।
मुनिराज इसे सम्पूर्ण धरें, श्रावक आंशिक अपनाता है॥
रत्नत्रय का सम्पूर्ण सार, इस क्षमा धर्म में आता है।
ये पर्व क्षमावाणी उत्तम, अर्हंत सिद्ध पद दाता है॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री सर्व गणधर पूजा

(गीता छन्द)

चौबीस जिन के गणधरों की, आज हम अर्चा करें।
सुरभित सुमन ले साथ में, उनकी परम अर्चा करें॥
गणधर गुरु सब आइए, हममें भरें तप ज्योत्सना।
उन सम विरागी हम बने, इस हेतु यह आराधना॥

ॐ ह्रीं इर्वी श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

नीर भरे घट से करें, गणधर पद प्रक्षाल।
जन्मादिक त्रय रोग हर, पायें सुख त्रय काल॥
चौबीसों जिन राज के, गणधर का गुणगान।
सर्व रोग संकट हरें, करें अखिल उत्थान॥

ॐ ह्रीं इर्वी श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

शीतल सुरभित गंध से, अर्चें श्री गुरुपाद।
नशें सकल संताप वा, राग-द्वेष अवसाद॥ चौबीसों...॥

ॐ ह्रीं .... गंधं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

अक्षत उज्ज्वल धवल ले, उत्तम पुंज चढ़ाय।
गणपति कृपा रहे वहाँ, अक्षय सुख मिल जाय॥ चौबीसों...॥

ॐ ह्रीं .... अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

कमलादिक बहु सुमन ले, जपें गुरु का नाम।
आत्म ब्रह्म में लीन हो, नशें अधम खल काम॥ चौबीसों...॥

ॐ ह्रीं .... पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

पुड़ी इमरती आदि ले, पूजें गण अधिनाथ।
क्षुधाविजय क्षण में करे, बन जायें जगनाथ॥ चौबीसों...॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5 ।।

दीप आरती से करें, गणनायक गुणगान।
मोह तिमिर अज्ञान हर, पायें केवलज्ञान ।।
चौबीसों जिन राज के, गणधर का गुणगान।
सर्व रोग संकट हरें, करें अखिल उत्थान ।।

ॐ ह्रीं .... दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6 ।।

धूप अनल में खेयकर, पूजें गुरु पद पद्म।
आठों कर्म विनाश कर, वरें सुखद शिव सद्म ।। चौबीसों... ।।

ॐ ह्रीं .... धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7 ।।

केलादिक बहु फल लिए, आये गणधर द्वार।
उनका शुभ आशीष ही, नाशे कर्म विकार ।। चौबीसों... ।।

ॐ ह्रीं .... फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8 ।।

जल से फल तक द्रव्य ले, मनहर अर्घ सजाय।
विघ्न विनायक को भजें, पद अनर्घ मिल जाय ।। चौबीसों... ।।

ॐ ह्रीं .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9 ।।

समुच्चय अर्घ (नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ से महावीर तक, तीर्थंकर सुखकारी।
उनके चौदह सौ बावन हैं, गणधर ज्ञान प्रचारी ।।
वृषभसेन से इन्द्रभूति तक, सब गणधर को ध्यायें।
मनहर अर्घ चढ़ाकर हम सब, रत्नत्रय गुण पायें ।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विपंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **क्षीरोदक ले कलश में, नित त्रय धारा देय।**
पुष्पांजलि अर्पित करें, रत्नत्रय गुण लेय ।।

शांतये शांतिधारा ...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नम: स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **ऋद्धि-सिद्धि दातार हैं, श्री गणधर भगवान।**
उनकी जय गुण मालिका, करे स्वपर उत्थान॥

(शंभु छंद)

जय-जय गणधर गुणमणि आकर, तुम तीर्थंकर पथचारी हो।
चौसठ सुऋद्धि के धारक तुम, द्वादश अंगों के धारी हो॥
निज-निज तीर्थंकर जिन सन्मुख, तुमने मुनिपद को पाया है।
तप-त्याग विशुद्ध भावना से, सब ऋद्धि-सिद्धि को पाया है॥1॥

पूर्वार्जित निज अति सुकृत से, तुम मुनि गण के आचार्य बने।
जिन रविकिरणों के धारक हो, गुरु सर्वोत्तम श्रमणार्य बने॥
गणधर-गणीन्द्र-गण के नायक, मुनि गणपति विघ्न-विनायक हो।
अघ-रोग-शोक-संकटहर्त्ता, भव्यों के भाग्य-विधायक हो॥2॥

तीर्थंकर जिन की धर्म सभा, द्वादश कोठों में भाजित है।
उसमें मुनिगण के कोठे में, गण अधिपति नित्य विराजित हैं॥
तीर्थंकर दिव्यवचन पावन, ओंकार रूप में आते हैं।
दिनकर की किरणों के जैसे, गणधर में आन समाते हैं॥3॥

जिन वचन महोदधि गूढ सरस, शतइन्द्र समझ नहीं पाते हैं।
द्वादश अंगों व पूर्वों में, गणि उनको सुगम बनाते हैं॥
गणधर गुंथित जिन आगम ही, बहु प्रज्ञादीप जलाता है।
निज-निज भवांत कर भवि प्राणी, इससे रत्नत्रय पाता है॥4॥

फिर कर्म नशा गणधर स्वामी, अरिहंत सिद्ध पद पाते हैं।
तब त्रिभुवन वासी उत्सव से, अतिशायी भक्ति रचाते हैं॥

हे जिन ! यती 'गुप्तिनंदी' भी, तव गुण में ध्यान लगाते हैं।
शिवराज आप सम पाने को, उत्तम जयमाला गाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री गणधर परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से 'गणधर वलय' पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो, सुर-नर उन्हें वंदन करें।।
फिर धर क्षमादिक धर्म को, शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर, भवदुःख कभी ना पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री गौतम गणधर पूजा (दीपावली पूजा)

(नरेन्द्र छन्द)

सुर-नर-किन्नर से वन्दित हैं, गणधर प्रभु के चरण-कमल,
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षामंत्र धवल।
तीर्थंकर के प्रमुख शिष्य, गणधर का करता आह्वानन्,
सर्वकार्य की सिद्धि हेतु, करता गुणगण स्थापन।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठि ऋद्धिसंपन्न श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जग में जय-जयकार हो रही, जिनका गाते सब यशगान।
जग मंगल का बीजभूत है, सम्यग्दर्शन रत्न महान्।।
क्षीरोदधि का जल ले निर्मल, करता प्रभुवर का पूजन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर, उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

परम ज्योति उद्योतित करते, मोहतिमिर हरने वाले।
विशद विनय से सहित शिष्य, गुण गाते प्रभु के मतवाले॥
मलयागिरि चंदन हम लाये, करते चरणों में लेपन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर, उनका मैं करता अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

सुर-नर-खेचर-इन्द्र सभी, सम्यक् आराधन करते हैं।
जिनवर के गुण पाने को वे, पाप विराधन करते हैं॥
ललित मनोहर अक्षत लाया, तीर्थंकर के लघुनंदन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

भवसागर से पार लगाकर, मोक्षमहल ले जाते हैं।
संत भी जिनकी सेवा करके, शिवसमृद्धि पाते हैं।
कमल वकुल कुन्दादि चढ़ाऊँ, भौरों का जिसमें गुंजन॥ मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

मोहपाश की अग्नि ने, भूमण्डल का है नाश किया।
किन्तु आपने इसको वशकर, मोहमल्ल का नाश किया॥
घेवर-बावर-फैनी आदि, नाना विधि के ले व्यंजन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अखिलविश्व के सब ज्ञेयों को, भगवन् तुमने जान लिया,
दिव्य अतीन्द्रिय आत्मज्योति से, समतारस का पान किया।
दीप थाल से करूँ आरती मोहतिमिर का हो भंजन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

जिनके ध्यान-मनन से मिटती, भव की सारी पीड़ायें।
भूत-प्रेत सब देव शांत हो, करते मनहर क्रीड़ायें॥
अगर-तगर की धूप चढ़ाऊँ, बनूँ प्रभु का लघुनंदन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

गणधर की सेवा अर्चा से, विपुल सौख्य मिल जाता है।
गुण अनंत का स्वामी बनकर, महामोक्ष फल पाता है।।
केला, लौंग, बिजौरा, श्रीफल, करते सबका मनरंजन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर, उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु, वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से, कर्म अरि पर वार किया।।
जल-फल आदि आठ द्रव्य से, करता प्रभु का अभिनन्दन। मुनिगण... ।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : गणधर गुरु के पाद में, करूँ सुखद जलधार।
सुरभित सुमनों को चढ़ा, पाऊँ सौख्य अपार।।

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : गणधर गण के ईश को, नमन करें त्रय बार।
जयमाला इनकी पढ़ें, होवें भवदधि पार।।

(गीता छन्द)

जय-जय श्री महावीर की गौतम ऋषि की जय कहे।
पाई शरण महावीर की उनकी शरण में तुम रहें।।
ऋद्धी धरें सिद्धी करें सब विघ्न के नाशक प्रभू।
चउ ज्ञान के धारी गुरु हो प्रथम गणधर तुम विभू।।1।।

तव गौत्र गौतम ख्यात था और इन्द्रभूति नाम था।
चलते स्वयं उन्मार्ग पे जग को चलाना काम था॥
शत पाँच शिष्य समूह को अध्ययन कराते वेद का।
मद मोह से आक्रान्त थे नहीं भाव स्व-संवेद का॥2॥

छ्यासठ दिनों तक दिव्य वाणी न मिली श्री वीर की।
श्रावक पपीहा भाव से आशा करे भव तीर की॥
जाना स्वयं के ज्ञान से चिंतित हृदय सौधर्म ने।
बन विप्र बूढ़े रूप में गौतम को लाया यज्ञ से॥3॥

लख दृश्य मानस्तंभ का गौतम का मिथ्या मद गला।
शिष्यत्व वर महावीर का सीखी सुखद संयम कला॥
आषाढ़ सुदी पूनो के दिन प्रभु वीर के दर्शन किये।
गुरु पूर्णिमा को बन गुरु निज आत्म के दर्शन किये॥4॥

धारा था गणधर रूप को महावीर के नंदन बने।
पाई थी चौसठ ऋद्धियाँ वे जगत का क्रंदन हने॥
गणधर के शुभ सद्भाव में श्री वीर की वाणी खिरी।
श्रावण वदि एकम दिवस स्थान विपुलाचल गिरी॥5॥

प्रत्यूष कार्तिकमावसी महावीर मुक्ति को गये।
उस ही दिवस की साँझ में सर्वज्ञ गौतम हो गये॥
प्रातः समय सब भक्तगण लड्डू चढ़ाये भाव से।
कैवल्य लक्ष्मी गणपति को सांझ पूजे चाव से॥6॥

जिनवाणी लक्ष्मी मात है गणधर प्रभु ही गणपति।
बारह वर्ष उपदेश दे फिर बन गये मुक्तिपति॥
गणनाथ-गणधर-गणपति गणईश-गणनायक प्रभो।
तुम ही विनायक विघ्ननाशक सर्व सुखदायक विभो॥7॥

गणधर प्रभु की अर्चना देती हमें सुख संपदा।
तव भक्ति कीर्त्तन से हमारी नाश होवे आपदा॥
ऋद्धिपति-सिद्धिप्रदाता सौख्यकारी मुनिवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो गुरुवरा॥8॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर महामुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा : गणधर श्री भगवान, ऋद्धि सिद्धि दातार हैं।
करो इन्हीं का ध्यान, जब भी आवे आपदा॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री केवलज्ञान लक्ष्मी पूजा (दीपावली पूजा)

(गीता छंद)

तीर्थेश अर्हत् केवली अक्षय युगल लक्ष्मीपति।
कैवल्य ज्ञान महान लक्ष्मी और मुक्ति श्री पति॥
श्री समवशरण विशाल लक्ष्मी लोक त्रय में मान्य है।
ले हाथ में पुष्पांजलि उनका यहाँ आह्वान है॥

ॐ ह्रीं समवशरण श्री सहित केवलज्ञान महालक्ष्मी ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

पत्र पुष्प की माल सजे जल कुंभ ले।
ज्ञान लक्ष्मी के सन्मुख त्रयधारा करें।
मुनि-गणधर जिस दिव्यलक्ष्मी को पूजते।
सर्व सौख्य हित हम भी उसको पूजते॥

ॐ ह्रीं समवशरण श्री सहित केवलज्ञान महालक्ष्म्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

सुरभित शीतल चंदन से अर्चा करें।
अपने भव संतापों की चर्चा हरें ।।
मुनि-गणधर जिस दिव्यलक्ष्मी को पूजते।
सर्व सौख्य हित हम भी उसको पूजते।।

ॐ ह्रीं समवशरण श्री सहित केवलज्ञान महालक्ष्म्यै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मुक्ता अक्षत चढ़ा प्रफुल्लित आज हम।
निश्चय पायें अक्षयपद साम्राज्य हम।। मुनि गणधर.......।।

ॐ ह्रीं ....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

कमल मोगरा विविध पुष्प की माल ले।
जिनमुखवासी माता की अर्चा करें।। मुनि गणधर.......।।

ॐ ह्रीं ....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

घेवर आदिक व्यंजन थाली में भरें।
क्षुधाजयी जगदम्बा को अर्पण करें।। मुनि गणधर.......।।

ॐ ह्रीं ....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

घृत दीपक कर्पूर रत्न से आरती।
ज्ञान भारती मोह तिमिर परिहारती ।। मुनि गणधर.......।।

ॐ ह्रीं ....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

अगर-तगर मय प्रासुक सुरभित धूप ले।
दिव्यध्वनि श्री लक्ष्मी माँ को पूज लें।। मुनि गणधर.......।।

ॐ ह्रीं ....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

सरस मनोहर फल के गुच्छ चढ़ा रहे।
समवशरण श्री लक्ष्मीपति को ध्या रहे ।। मुनि गणधर.......।।

ॐ ह्रीं ....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

वसु द्रव्यों की थाल-थाल की माल ले।
पद अनर्घ्य दात्री माँ की भक्ति करें।। मुनि गणधर.......।।

ॐ ह्रीं ....अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : इहभव परभव शांति हित, करता शांतिधार।
श्री लक्ष्मी जगमात को, चढ़ें फूल के हार॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ऐं अर्हं समवशरण श्री युक्त केवलज्ञान महालक्ष्म्यै नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : समवशरण श्री युक्त हैं, ज्ञानलक्ष्मी जगदम्ब।
उनकी जयमाला पढ़ें, मिटे कर्म का दम्भ॥

(शंभु छंद)

सुरपति-नरपति-खगपति-मुनिपति, जिसका नित ध्यान लगाते हैं।
उस ज्ञान रमा शिव लक्ष्मी की, हम उत्तम भक्ति रचाते हैं॥
जिनका शुभ पुण्य उदय आया, वे ही अर्हत पद पाते हैं।
उनमें सातिशय सुकृतधर, तीर्थंकर पद को पाते हैं॥1॥

प्रभु के पाँचों कल्याणक में, लक्ष्मी बहु रूप बनाती है।
वे जितना जग सुख त्याग करें, वो उतना उन्हें रिझाती है॥
माता के सोलह स्वप्नों में, गज लक्ष्मी देवी आती है।
तीर्थंकर जिन लक्ष्मीपति हैं, वह जग को आन बताती है॥2॥

गर्भागम से आगे-पीछे, वो रत्न वृष्टियाँ खूब करें।
प्रभु के जन्मोत्सव में आकर, कलशाभिषेक का रूप धरे॥
तब से दीक्षा के पहले तक, लक्ष्मी प्रभुवर की भक्ति करे।
दिव से भोजन आदिक आये, नव निधियाँ चौदह रत्न वरें॥3॥

फिर चक्ररत्न बनकर लक्ष्मी, षट्खंडों में यश फैलाये।
प्रभु की जिन दीक्षा होते ही, चौसठ ऋद्धि बनकर आये॥

मुनि के आहार होते तत्क्षण, वो पंचाश्चर्य बने बरसे।
तीर्थंकर महाश्रमण त्यागी, उनको लक्ष्मी पाने तरसे॥4॥

चउ घाति कर्म क्षय होते ही, कैवल्यज्ञान लक्ष्मी वरती।
श्री समवशरण लक्ष्मी बनकर, तीर्थंकर की अर्चा करती॥
प्रभु के विहार में सब दिश में, वो स्वर्ण कमल को रचती है।
अंतिम निर्वाण लक्ष्मी बनकर, वो सदा प्रभु संग रहती है॥5॥

सौधर्मादिक शत इन्द्र सदा, निर्वाण रमा को नित ध्यायें।
गणधर-मुनिवर-योगी-आगम, उस ज्ञान लक्ष्मी के गुण गायें॥
अकृत्रिम जिन चैत्यालय में, श्रुत वा श्रीदेवी होती हैं।
जिनभक्तों को लक्ष्मी सुख वा, विद्या का वर वे देती हैं॥6॥

जो उत्तम सुकृत करते हैं, लक्ष्मी उनके संग रहती है।
तुम निशदिन प्रतिपल पुण्य करो, सब जीवों से यह कहती है॥
श्री जिनमुखकमलवासिनी माँ, हम मंगल कमल चढ़ाते हैं।
चौसठ दीपक शिवलाडू ले, कैवल्यलक्ष्मी को ध्याते हैं॥7॥

श्री वर्धमान तीर्थंकर वा, गौतम गणधर का ध्यान करें।
माँ सरस्वती शिव लक्ष्मी को, पूजें अपना उत्थान करें॥
इसविध जो लक्ष्मी को ध्याये, वो दुःख दारिद्र मिटाते हैं।
आगम सम्मत श्री लक्ष्मी को, 'गुप्तिनंदी' भी ध्याते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं समवशरण श्री सहित केवलज्ञान महालक्ष्म्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : तीन लोक में श्रेष्ठ है, केवलज्ञान महान।
नमें-नमें उनको सदा, पायें पद निर्वाण॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री ऋषिमंडल पूजा

गीता छंद

इस द्वीप जम्बू मध्य में, मेरू जगत में शोभते।
उस पर ऋषिमंडल महा, शुभ यंत्र मंगल राजते॥
इस यंत्र का आह्वान कर, करता यहाँ स्थापना।
प्रभु संग विराजो मम हृदय, पूरी करो सब कामना॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर, अष्टवर्ग, अर्हंतादि पंचपद, दर्शनज्ञान चारित्र रूप रत्नत्रय, चतुर्णिकाय देव, चतुःर्विध अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धिधारी ऋषि, चतुर्विंशति देवी, त्रय ह्रीं, अर्हंत बिम्ब, दश दिग्पाल इति ऋषिमंडल यंत्र संबंधी परमदेव समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल लिए जलझारी हम, ऋषि यंत्र की पूजा करें।
चौबीस श्री जिनराज युत, इस मंत्र की अर्चा करें॥
जिनवर सहित यह यंत्र है, इनकी हमें ऊर्जा मिले।
इनके पदों को पूज कर, सब दुःख से मुक्ति मिले॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यंत्र संबंधी परमदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्लेप उत्तम यंत्र पर, चंदन सुगंधित लेपते।
कर्मों से झुलसे जीव सब, संताप अपना मेटते॥ जिनवर......॥2॥

ॐ ह्रीं ....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

राजस करम को नाशकर, अक्षय धवल पद पा लिया।
अक्षय धवल तंदुल चढ़ा, हमने प्रभु गुण गा लिया॥ जिनवर......॥3॥

ॐ ह्रीं ....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

है पंचवर्णी ह्रीं यह, चौबीस जिन तद्वर्ण हैं।
निज काम क्षय हित भेंटते, पुष्पांजलि जिन चर्ण में॥ जिनवर......॥4॥

ॐ ह्रीं ....कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस जिनवर को सदा, पूजे जो विधिवत चाव से।
लड्डू इमरती रसभरी, प्रभु को चढ़ावें भाव से।।
जिनवर सहित यह यंत्र है, इनकी हमें ऊर्जा मिले।
इनके पदों को पूज कर, सब दुःख से मुक्ति मिले।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यंत्र संबंधी परमदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति जला निज ज्ञान की, मिथ्या तिमिर विनशा दिया।
दीपार्चना कर भक्त ने, प्रभु की शरण को पा लिया।। जिनवर...... ।।6।।

ॐ ह्रीं ....मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्यंक आसन पर प्रभु, बैठे जगत मन मोहते।
ले धूप प्रभु के सामने, भक्ति से हम नित खेवते।। जिनवर...... ।।7।।

ॐ ह्रीं ....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में हैं सबसे श्रेष्ठ जो, ऐसे महाफल के धनी।
उनकी सरस फल थाल ले, पूजा करूँ मन भावनी।। जिनवर...... ।।8।।

ॐ ह्रीं ....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नित प्रति जिनराज संग, ऋषियंत्र की पूजा करे।
अष्टार्घ चरणों में चढ़ा, सुख स्वर्ग में झूला करे।। जिनवर...... ।।2।।

ॐ ह्रीं ....अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा : **चौबीसों जिनराज हैं, ह्रीं मध्य सुखकार।**
आदिश्वर से वीर तक, वर्तमान मनहार।।
पंच वर्ण शोभित प्रभु, हरें जगत की पीर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय कर, पाऊँ भवदधि तीर।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय वृषभादि-चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दरी छन्द

अक्षर 'अ' आदि शुभ जानिये, अंत 'श', 'ष', 'स', 'ह' शुभ मानिये।
अर्घ आठों द्रव्य मिलाइये, प्रभु चरण चढ़ा सुख पाइये।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव–विनाशन–समर्थाय अ वर्गादि श–ष–स–ह पर्यंत अष्टवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छन्द

अरहंत, सिद्ध सूरि आदि ज्ञानवान हैं।
पाठक, ऋषि ये पाँच लोक में महान हैं।।
शुभ अर्घ्य थाल ले करूँ पूजा व आरती।
कर्मों की तोडूँ शृंखला पा ज्ञान भारती।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव–विनाशन–समर्थाय पंच–परमेष्ठी परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तोमर छन्द

सम्यक्त्व ज्ञानहितकारी, चारित्र महासुखकारी।
हम इनको अर्घ्य चढ़ायें, बनने निज आत्म बिहारी।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव–विनाशन–समर्थाय सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र–रूप रत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

व्यंतर, ज्योतिष, भौमपति, वैमानिक सुरपति हैं सारे।
इनके भवनों में शोभित, जिन चैत्य जिनालय मनहारे।।
घंटा वाद्य ध्वजा लहरायें, चौसठ चंवर ढुरें जिन पर।
अर्घ्य चढ़ा हम भक्ति करते, पाने मुक्ति नगर डगर।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव–विनाशन–समर्थेभ्यः भवनेन्द्र व्यंतरेन्द्र ज्योतिषीन्द्र कल्पेन्द्र चतुःप्रकार देव गृहेषु श्री जिन चैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छन्द

जो अवधिज्ञान से युत हैं, ऋद्धिधारी मुनिवर हैं।
हम उनको अर्घ चढ़ायें, वे गुरु मम कष्ट मिटायें।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव–विनाशन–समर्थेभ्यः चतुर्विधप्रकार अवधिधारक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छन्द

ऋद्धि आठों से शोभित, हैं परमावधि समन्वित।
नित उनको अर्घ्य चढ़ायें, मुक्तिपुर में बस जायें।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव–विनाशन–समर्थेभ्यः अष्टऋद्धि सहित मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री देवी को आदि ले, चौबीस देवी जान।
प्रभु भक्ता ये देवियाँ, रखें सभी का ध्यान॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थेभ्यः श्री आदि सर्वदेव सेवितेभ्यः चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छन्द

कंचन रजत व धातु के शुभ यंत्र बनाओ।
नित जाप करो ध्यान धरो पाप नशाओ॥
रक्षा करें हमारी ऋषि यंत्र साधना।
नित अर्घ्य दे पूजूँ सदा यही है कामना॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय त्रिकोणमध्ये तीन ह्रीं संयुक्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

जो आठ मास तक प्रातः उठ, इस महापाठ को पढ़ता है।
जप आठ हजार करे पूरी, प्रभुवर का दर्शन करता है॥
छ्यालीस मूलगुण से शोभित, अर्हंत प्रभु को ध्याता है।
उस फल को पाने भक्त यहाँ, श्रद्धा से अर्घ चढ़ाता है॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय अष्टादशदोष-रहिताय छ्यालीस महागुणयुक्ताय अरहन्त परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

दशों दिशा के दश दिग्पाल, करते रक्षा बन प्रतिपाल।
वहाँ जिनालय लगे नवीन, पूजूँ पाऊँ सौख्य नवीन॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थेभ्यः दशदिग्पालभवनेषु जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिमंडल पूजा फल (चौपाई)

ऋषिमंडल शुभ यंत्र महान, उसमें देव-देवी गुणवान।
प्रभु को पूज करें कल्याण, हम भी पूजें श्री भगवान॥
धन अर्थी को धन मिल जाय, पुत्रार्थी भी पुत्र लहाय।
ऋद्धि-सिद्धि से घर भर जाय, बड़े-बड़े संकट टल जाय।

जो नर पूजे मन-वच-काय, सुख भोगे स्वर्गों में जाय।
प्रभु दर्शन उसको मिल जाय, भव-बंधन उनका कट जाय।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थेभ्यः ऋषिमंडल यंत्र सम्बन्धी देवीदेव सेवितेभ्यः श्री जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : ऋषिमंडल इस यंत्र पर, करता शांतिधार।
सुमनों का शुभ थाल ले, पुष्पांजलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः ममदुरित ग्रह व्याधि विघ्नोपद्रव शांतिं कुरु-कुरु ह्रीं नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : ऋषिमंडल शुभयंत्र की, गायें हम जयमाल।
जो ध्यावे इस यंत्र को, सदा रहे खुशहाल।।

चौपाई

ऋषिमंडल श्री यंत्र महाना, ऋद्धि-सिद्धि का श्रेष्ठ खजाना।
'अ' आदि 'ह' अंतिम अक्षर, अर्हं मंत्र बना है सुन्दर।।1।।

'ह्रीं नमः' मंगल सुखदाता, सर्वकार्य में सिद्धि प्रदाता।
अरहंतादि आठ पदों का, ध्यान धरें इन बीजाक्षर का।।2।।

दिशा आठ में स्थापन कर, पा जायें हम लक्ष्मी सुखकर।
जम्बूद्वीप के मध्य मनोहर, कंचन वर्ण सुमेरू गिरिवर।।3।।

उसमें यंत्र ऋषिमंडल है, जो सब मंगल में मंगल है।
पाँचों पद हैं जिसमें राजे, चौबीसों भगवान विराजे।।4।।

राजस, तामस कर्म विनाशे, अक्षय केवलज्ञान विकासे।
इसमें पंचवर्ण मनहारी, प्रभु तन की वर्णाभा प्यारी।।5।।

पाँच वर्ण के हैं तीर्थंकर, ह्रीं मध्य शोभे क्षेमंकर।
श्री जिनवर का वलय विशाला, हम सबके दुःख हरने वाला।।6।।

उनकी आभा को हम पाये, भूत-प्रेत बाधा विनशायें।
सर्प-गोह व नागिन-डाकिनि, काकिनि-शाकिनि-राकिनि-लाकिनी॥7॥

हाकिनी-भैरव, राक्षस-व्यन्तर, लीनस, नवग्रह व खल-तस्कर।
अग्नि व जल प्रलय मचायें, ऋषिमंडल सब कष्ट मिटायें॥8॥

सींग-दाढ़-नख वाले प्राणी, गज-खग-सिंह-शूकर अज्ञानी।
दैत्य-मेघ-चीते डरवाये, नृप-शत्रु-बहुरोग सतायें॥9॥

या कैसी भी विपदा आये, पाठ-जाप सब विघ्न नशायें।
गौतम गुरु का ध्यान लगायें, श्रुतज्ञानी का लाभ उठायें॥10॥

उनसे अधिक जिनेश्वर ज्ञानी, अर्हत् सर्वनिधीश्वर दानी।
त्रयविध अवधिज्ञान के धारी, मुनिवर चौसठ ऋद्धिधारी॥11॥

हम सब गुरु के चरण पुजारी, करते रक्षा गुरु हमारी।
सर्वदेव जो प्रभु को ध्यायें, प्रभु भक्तों को सुख पहुँचायें॥12॥

चौसठ देवी सेवा करती, प्रभु भक्तों की रक्षा करती।
ऋषिमंडल स्तोत्र दिव्य है, गुरु प्रदत्त शुभ सिद्ध गोप्य है॥13॥

मेरू पर शाश्वत निर्मित है, तीर्थंकर मुख से भासित हैं।
नित-प्रातः उठ पाठ करे जो, आठ हजार जाप करले जो॥14॥

वो जिनवर का दर्शन पाये, मंत्र सिद्ध उसको हो जाये।
'क्षमाश्री' जिन भक्ति रचाये, मुक्तिराज मुझको मिल जाये॥15॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय रोग-शोक सर्वसंकटहराय सर्वशांति पुष्टिकराय, श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर, अष्टवर्ग, अरहंतादि पंचपद, दर्शन-ज्ञान-चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चतुर्विध अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त ऋषिमंडल, चतुर्विंशति देविभ्यो, त्रय ह्रीं, अर्हत बिम्ब, दशदिग्पाल इति यंत्र संबंधी देव-देवी सेविताय, परमदेवाय ऋषिमंडल यंत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अल्पबुद्धि मैं हूँ प्रभु कर न सकूँ गुणगान।
'क्षमा' करो मुझको प्रभु मेंटूँ कर्म विधान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अक्षय तृतीया पूजा

(हरिगीता छन्द)

युग के विधाता ज्ञान दाता, युग प्रमुख आदीश हैं।
सन्मार्ग दाता सुख प्रदाता, तीर्थंकर जगदीश हैं॥
श्रेयांस जैसे भाव लेकर, कर रहे आह्वान हम।
कर में सुमन सुन्दर सजाकर, पूजते दिनरात हम॥

ॐ ह्रीं अक्षय तृतीयाधिपति श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

वृषभदेव के चरणों में जल धार दे।
प्रभु पूजा कर तीन रोग परिहारते॥
अक्षय तृतीया पर्व पर्व में श्रेष्ठतम।
प्रभु को पूजें बन जायें जग ज्येष्ठ हम॥1॥

ॐ ह्रीं अक्षयतृतीयाधिपति श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में गंध लगायें श्रेष्ठतम।
शेष शीश में लगा मिटायें पाप हम॥ अक्षय....॥2॥

ॐ ह्रीं..............चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत तंदुल वा मोती के पुञ्ज ले।
प्रभु पूजा कर पहुँचे मोक्ष निकुञ्ज में॥ अक्षय....॥3॥

ॐ ह्रीं..............अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदेश के सर्व सुमन की माल ले।
प्रभु को पूजें अंत वरें जयमाल ये॥ अक्षय....॥4॥

ॐ ह्रीं..............पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मिठाई शुद्ध बनाई चाव से।
क्षुधारोग क्षय करने भेंटे भाव से।।
अक्षय तृतीया पर्व पर्व में श्रेष्ठतम।
प्रभु को पूजें बन जायें जग ज्येष्ठ हम।।5।।

ॐ ह्रीं अक्षयतृतीयाधिपति श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय .नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप लगायें जिनवर तेरे द्वार पे।
ज्ञान भानु प्रगटायें मोह निवार के।। अक्षय....।।6।।

ॐ ह्रीं...............दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ नमो वृषभाय मंत्र हम जप करें।
अग्नि पात्र में धूप खिरा सब अघ हरें।। अक्षय....।।7।।

ॐ ह्रीं..............धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अर्पे हम सफल होय मम साधना।
मोक्ष सुफल हित करते हम आराधना।। अक्षय....।।8।।

ॐ ह्रीं..............फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांस कुंवर के जैसे भाव ले।
अर्घ चढ़ायें तुमको नाथ उछाव से।। अक्षय....।।9।।

ॐ ह्रीं..............अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **गंगा की जल धार से, प्रभु पद चरण पखार।**
उन पर कर युग से करें, पुष्पांजलि सुखकार।।

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अक्षयसुखप्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 18, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **जय-जयश्री नाभेय जिन, मरुदेवी के लाल।**
अक्षय तृतीया पर्व की, पढ़ते हम जयमाल।।

चौपाई

जय-जय प्रथम आद्य तीर्थंकर, पन्द्रहवें कुलकर जगदीश्वर।
नाभिराय के राजदुलारे, मरुदेवी के नैन सितारे ॥1॥
भाग्य विधाता आप कहाये, सबको जीवन सूत्र बतायें।
कारण पाकर बने विरागी, घर वनिता सब सम्पत त्यागी ॥2॥
प्रतिमायोग धरा छह महीने, चर्या मिली नहीं छह महीने।
महाश्रमण चर्या हित जाते, लेकिन श्रावक समझ ने पाते ॥3॥
कोई अपनी कन्या लाते, वस्त्राभूषण उन्हें दिखाते।
कोई भोजन फल ले आये, छप्पन व्यंजन थाल दिखाये ॥4॥
नाथ निरख आगे बढ़ जाते, क्षोभ तनिक ना उर में लाते।
अंतराय वह लंबा आया, एक वर्ष आहार न पाया ॥5॥
नृप श्रेयांस बड़े बड़भागी, उनकी दान लब्धि आ जागी।
दिव्य स्वप्न उनको तब आयें, आदिपुराण ग्रन्थ बतलायें ॥6॥
कल्पवृक्ष मेरु को देखा, निर्मल सूर्य चन्द्र को देखा।
धवल बैल आदिक को देखा, और वृषभ जिनवर को देखा ॥7॥
सपनों का फल उनने जाना, धन्य-धन्य अपने को माना।
आये ज्यों जिनवर बड़भागी, नृप श्रेयस की प्रज्ञा जागी ॥8॥
झलकी भव-भव पूर्व कहानी, वज्रजंघ सह श्रीमती रानी।
युगल श्रमण उनने पड़गायें, विधिवत नवधा भक्ति रचायें ॥9॥
उसी पुण्य की अद्भुत माया, प्रभु ने तीर्थंकर पद पाया।
इक्षु कुंभ श्रेयस ने धारा, अत्र तिष्ठ यह मंत्र उचारा ॥10॥
परिक्रमा त्रय बार लगायी, उच्चासन राजो मुनिरायी।
अश्रु धार से पैर धुलाये, पूजा कर वसु द्रव्य चढ़ाये ॥11॥
मन वच तन मम शुद्ध मुनीशा, इक्षु रस है शुद्ध जिनेशा।
लो अहार अब जिनवर स्वामी, मोक्ष मार्ग दर्शाओ स्वामी ॥12॥

अंजुलि कर प्रभु पारण कीना, दान धर्म तब चला नवीना।
सुरकृत अचरज पाँच हुए थे, धन्य सोम श्रेयांस हुए थे॥13॥
धर्मतीर्थ वृषभेष बताये, दान तीर्थ श्रेयांस बताये।
वे अक्षय दाता कहलाये, सिद्ध लोक जिनवर सह पाये॥14॥
सुद वैशाख तीज जब आयें, अक्षय तृतीया पर्व कहाये।
सिद्ध मुहूर्त्तों में यह आता, सर्व कार्य को सिद्ध कराता॥15॥
तीर्थंकर जिन को हम ध्यायें, उनका दान धर्म अपनायें।
हर दिन चारों दान करेंगे, विघ्न कर्म के विघ्न हरेंगे॥16॥
उत्तम जयमाला हम गायें, दान पर्व का अर्घ चढ़ायें।
'गुप्तिनंदी' प्रभुवर को ध्यायें, प्रभु सम अक्षय सुख पा जाये॥17॥

ॐ ह्रीं अक्षय तृतीयाधिपति श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **अक्षय तृतीया पर्व में, कर लो अक्षय दान।**
प्रभु की अर्चा से मिले, अक्षय मोक्ष प्रयाण॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री श्रुतपंचमी पूजा

(गीता छन्द)

हे वीरवाणी ! श्रमणवाणी हे जगत् करुणा सदन।
हे ज्ञानधारा ! गगनसम गणधर पखारें तुम चरण॥
धरसेन गुरुवर भूतबलि मुनि पुष्पदंत महान हैं।
जिन सूत्र का त्रय योग से करते सभी आह्वान हैं॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनी ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

क्षीरोदधि सम क्षीर धवल श्रुत पूजन में लेकर आया।
राग-द्वेष से रहित निरंजन अन्तर्मन लेकर आया॥
गंधोदक की धारा से जिनवाणी पूजन करता हूँ।
जन्म-जरा मम मरण नाश हो यही भावना धरता हूँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर सुगन्धित शीतल चंदन तन की दाह मिटाता है।
जिनवाणी की शरणाँ में जीवन सुरभित हो जाता है॥
भाव सहित मलयागिरी चंदन लेकर अर्चन करता हूँ।
भवसंताप मिटे सब मेरा यही भाव मन धरता हूँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल कुन्द धवल अक्षत सम अक्षय पद का मैं स्वामी।
राजा मंत्री पद में उलझा करी स्वयं की बदनामी॥
शालि सुगन्धित अक्षत से जिन आगम की पूजा करता।
भौतिक पद की चाह रहे ना यही भाव मन में भरता॥3॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

दया क्षमा समता करुणा के आत्मपुष्प मैं लाया हूँ।
उन प्रतीक सम कमल केतकी साथ चढ़ाने लाया हूँ॥
जिनवाणी माँ के चिंतन से राग-द्वेष ममता टारूँ।
काम रोग सब दूर भगे मम अंतर में समता धारूँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी, घेवर, बरफी, मोदक नाना व्यंजन मैं लाया।
क्षमा विनय ऋजु शुचिता आदिक अन्तर्गुण भी विकसाया॥
द्वादशांग की पूजन से मैं भेदज्ञान को प्राप्त करूँ।
क्षुधा रोग को नाश करूँ औ संतोषामृत व्याप्त करूँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामधेनु आदिक गायों का सुंदर घृत दीपक लाया।
भक्ति श्रद्धा संयम साहस आदिक गुण को प्रगटाया।।
सरस्वती की पूजन से मैं आत्मज्योति को प्राप्त करूँ।
मोह तिमिर नश जाये मेरा मिथ्यातम का नाश करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

औषधि युक्त विविध समिधा की धूप अग्नि में खेता हूँ।
विषय कषाय भोग लिप्सा को ज्ञान अग्नि में खेता हूँ।।
सरस्वती की शरणाँ ले मैं ध्यान अग्नि को प्रगटाऊँ।
कर्मेन्धन का दहन करूँ औ आतमगुण को विकसाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला जामुन दाड़िम मधुर सरस फल मैं लाऊँ।
सेवा आदर वैयावृत्ती सरस गुणों को भी लाऊँ।।
तुमको ही हृदयंगम कर लूँ यही सुफल मैं पाऊँ माँ।
तेरी शरणा पाकर निश्चय मोक्ष महाफल पाऊँ माँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल, फल, चन्दन, दीप आदि आठों द्रव्यों का थाल सजा।
सकल गुणों का पुंज लिये मैं निज भावों की माल सजा।।
भावद्रव्य दोनों अर्घों से जिनवाणी पूजन करता।
जिनवाणी पूजन से क्रमशः अनर्घ्य पद सबको वरता।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य मनोहर पावन सुंदर वसन चरण मैं लाता हूँ।
जिनवाणी माँ के चरणों में निज की भेंट चढ़ाता हूँ।।
जिनवाणी माँ की रक्षा में जैनधर्म की रक्षा है।
जिनवाणी माँ की रक्षा में हर प्राणी की रक्षा है।।10।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्रुतदेवी पर धार कर, पाऊँ श्रुत का तीर।
पुष्पवृष्टि कर भाव से, हरूँ मोह की पीर॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः। (9, 18, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जिनवच जयमाला पढ़ो, भौतिक सुख निस्तार।
भौतिक सुख की चाह से, होता दुःख विस्तार॥

(शंभु छंद)

जय माँ जिनवाणी गुरु वाणी, हम तेरा ही गुणगान करें।
हम मोक्षमहल के राही सब, तेरा सम्यक् श्रद्धान करें॥

तुम अरहंतों से प्रगटी हों, और तीर्थंकर की जननी हो।
मुनि गणधर आदिक तुम नंदन, तुम हर भविजन की जननी हो॥
जिनवृषभदेव से सन्मति तक जिनआगम अक्षय बरगद था।
अरहंत और श्रुतकेवलि तक श्रुतज्ञान विमल अतिविस्तृत था॥1॥

फिर पंचमकाल अकाल हुआ, श्रुतज्ञान वृक्ष भी मुरझाया।
वह द्वादशांग घटते-घटते, कम एक अंग पर है आया॥
धरसेनमुनी आकुलित हुये, जिन आगम रक्षा कैसे हो।
सत्ज्ञान प्रकाशित कैसे हो, मुनिमार्ग सुरक्षा कैसे हो॥2॥

फिर श्रमण संघ को पत्र दिया, कुछ कुशल साधु को बुलवाया।
मुनि पुष्पदंत और भूतबलि को, शिष्य रूप में अपनाया॥
श्रुत योग्य परीक्षा लेकर ही, गुरु जिन आगम की शिक्षा दी।
दोनों शिष्यों ने मिल करके, षट्खंडागम की रचना की॥3॥

श्रुतपंचमी पर्व महान हुआ, इस दिन जिन आगम पूर्ण हुआ।
जिन श्रमणों के पावन कर से, जिन आगम था सम्पूर्ण हुआ॥

जिन गुरुओं के सत् आगम से, मन की सब ग्रंथी खुलती है।
पाखण्डों का क्षय होता है, सब अन्तर्भ्रान्ती मिटती है॥4॥

हम जिन आगम को भूल रहे, शंका सागर में भटक रहे।
हम मिथ्यामत में उलझ गये, औ पंथवाद में अटक रहे॥
कोइ भक्ति का चोला पहने, इसको ही सब कुछ मान रहे।
सब मंदिर तीरथ लूट रहे, इसको ही भक्ति जान रहे॥5॥

कुछ ग्रंथ मात्र को पढ़कर ही, सर्वज्ञ स्वयं को मान रहे।
अंतर में कालुष बढ़ा-बढ़ा, शुद्धोपयोग है जान रहे॥
कुछ वस्त्र छोड़ निर्ग्रन्थ बने, निर्ग्रन्थ स्वरूप न पहिचाना।
इससे आगे न निकल सके, समता सुख क्या है ना जाना॥6॥

जिनवाणी की शरणा छोड़ी, एकांगी मत में उलझ गये।
उलझनें अनेकों बढ़ा-बढ़ा, यह मान रहे वो सुलझ गये॥
आघात अनेकों लगे मुझे, इस भव में ठोकर खाई है।
अब पुण्य उदय मेरा आया, जिनवाणी शरणा पाई है॥7॥

श्रुतपंचमी पर्व महान हुआ, हम भाव यही अपनायेंगे।
सब मत पंथों को दूर भगा, हम जिनआगम फैलायेंगे॥
जिनवाणी माँ पर श्रद्धा कर, हम अमृतसुख को पाएँगे।
'गुप्ति' से निज में थिर होकर, अविनश्वर पद को पाएँगे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वत्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : जिन आगम का सार यह, क्षमा हृदय में धार।
त्रय 'गुप्ति' को पाल कर, मुक्ति स्वराज सम्हार॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री रविव्रत पार्श्वनाथ पूजा

बेसरी छन्द

(तर्ज : पारस पारस पारस प्रभु , भक्ति में तेरी मैं नाच रहा रे)

आया रविव्रत शुभ दिन पावन, पार्श्वनाथ प्रभुवर मनभावन।
सुर-नर-असुर करें तुम भक्ति, पाने तीन लोक की शक्ति॥
हम भी प्रभु के शुभ गुण गायें, आह्वानन कर पुण्य कमायें।
यह रविव्रत भविजन हितकारी, मुक्ति मिलती है सुखकारी॥

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल जल की झारी लाऊँ, प्रभु चरणों में रोज चढ़ाऊँ।
पावन मन से नीर चढ़ाता, जन्म-जरा-मृत रोग नशाता॥
पार्श्व प्रभु हैं मंगलकारी, रविव्रत पूजन संकट हारी।
ऐसे जिनवर के गुण गाऊँ, निशदिन प्रभु का ध्यान लगाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव सहित चन्दन घिस लाऊँ, प्रभु चरणों में आज चढ़ाऊँ।
सुरभित भावों से यह अर्चन, करता भव संताप विसर्जन॥ पार्श्व प्रभु..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अखंडित अक्षत लाया, प्रभु चरणों में भाव लगाया।
अक्षय पद की है अभिलाषा, सारे जग की तज दूँ आशा॥ पार्श्व प्रभु..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सुमन सुगंधित प्यारे, लगते जो सबको मनहारे।
पुष्प अर्चना लगे निराली, कामबाण को हरने वाली॥ पार्श्व प्रभु..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर व्यंजन ले आया, चरण चढ़ा के आनंद पाया।
भाव सहित नैवेद्य चढ़ाऊँ, क्षुधावेदनी रोग नशाऊँ ।।
पार्श्व प्रभु हैं मंगलकारी, रविव्रत पूजन संकट हारी।
ऐसे जिनवर के गुण गाऊँ, निशदिन प्रभु का ध्यान लगाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपों के शुभ थाल सजायें, आरति करके मन हर्षाये।
भावों से प्रभु आरति गाओ, मोह तिमिर को दूर भगाओ।। पार्श्व प्रभु..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर-तगर की धूप जलाऊँ, खुश्बू चारों दिश फैलाऊँ।
धूप घटों की सुरभित अर्चा, नष्ट करे कर्मों की चर्चा।। पार्श्व प्रभु..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वऋतु के फल ले आऊँ, चरण चढ़ाकर कीरत गाऊँ।
भावों से जो सुफल चढ़ाता, परम्परा से शिवफल पाता।। पार्श्व प्रभु..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य की थाल सजाऊँ, चढ़ा प्रभु की भक्ति रचाऊँ।
भावों से यशगान तुम्हारा, कर देता भव से छुटकारा।। पार्श्व प्रभु..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

शंभु छन्द *(तर्ज : है प्रीत जहाँ की रीत सदा...)*

तप त्याग जिन्होंने सिखलाया, हम उनकी गाथा गाते हैं।
संकटहारी प्रभु पारस के, चरणों में शीश झुकाते हैं।।
वैशाख कृष्ण द्वितीया के दिन, पारस वामा के उर आए।
वाराणसी नगरी धन्य हुई, सुर-नर सब मिल मंगल गाएँ।।
इस पावन क्षण में हम सब मिल, भक्ति से अर्घ चढ़ाते हैं।
संकटहारी प्रभु......

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

(तर्ज : पंखिड़ा ओ पंखिड़ा...)

पार्श्वजीऽऽ ओ पार्श्वजीऽऽ पार्श्वजीऽऽ ओ पार्श्वऽऽजी
पार्श्वजी की भक्ति करो धूमधाम से,
जन्मे हैं पार्श्व प्रभु काशी धाम में। पार्श्वजीऽऽ ओ...
पौष कृष्ण ग्यारस का शुभ दिन महा,
इन्द्र-इन्द्राणी सब आए थे यहाँ।
मेरु पे अभिषेक करें देव-देवियाँ-2
बाल प्रभु शोभ रहे मन मोहिया॥ पार्श्वजीऽऽ ओ...

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

शंभु छन्द

यह सब संसार असार समझ प्रभुवर ने था वैराग्य लिया।
तत्क्षण छोड़ा सब राजपाट फिर वन की ओर विहार किया॥
लौकांतिक देवों ने आकर तप अनुमोदन में भाग लिया।
शुभ पौष कृष्ण ग्यारस के दिन प्रभुवर ने आतमध्यान किया॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

नरेन्द्र छन्द

(तर्ज : घुँघरू छम छमा छम छन ननंनन बाजे रे बाजे रे...)

पार्श्व प्रभु की पूजा में मेरो मनवाँ नाचे रे। घुँघरू...
कृष्णा चैत चतुर्थी को प्रभु केवल ज्योति पाई।
कर उपदेश सभी भव्यों को मुक्ति राह बताई॥ घुँघरू...
समोशरण सुंदर जिनवर का जिसमें सुर-नर आए।
केवलज्ञानी प्रभु की महिमा गाकर सब हर्षायें॥ घुँघरू...

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां[1] केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

(तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर....)

सम्मेदशिखर से मुक्तिपुरी में जाकर किया बसेरा।
है वंदन उनको मेरा है वंदन उनको मेरा।
श्रावण शुक्ला सातें के दिन प्रभुवर ने कर्म नशाया।
शत इंद्र सहित देवों ने आकर मोक्षकल्याण मनाया-2
श्री स्वर्णभद्र पर प्राणी आकर पाते दर्श सुनहरा॥ है वंदन..

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा : **पार्श्वनाथ भगवान हैं, समता गुण भंडार।**
प्रभु पद में जलधार कर, पुष्पांजलि सुखकार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं णमो भगवते चिंतामणि पार्श्वनाथ सप्तफणमंडिताय श्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय मम ऋद्धिं-सिद्धिं-वृद्धिं सौख्यं कुरु-कुरु स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **पार्श्वनाथ भगवान का, करूँ विनय गुणगान।**
जयमाला नित मैं पढ़ूँ, मेटूँ कर्म विधान॥

चौपाई *(तर्ज : झीनी-झीनी उड़ी रे...)*

पार्श्व प्रभु की महिमा गाओ, अपने सारे पाप नशाओ।
काशी में तुम जन्मे देवा, सुर-नर-असुर करे तुम सेवा॥1॥

अश्वसेन वामा घर आए, सबका जीवन धन्य बनाए।
तीन लोक में हर्ष मनाए, इंद्र सहित सब नाचे गाए॥2॥

राजपाट सब छोड़ी माया, प्रभु ने आतमध्यान लगाया।
प्रभु ने केवलज्ञान उपाया, सब कर्मों को दूर भगाया॥3॥

1 चै.कृ. 14 म.पु.।

मतिसागर इक सेठ था मानी, उसकी पत्नी धर्मप्रधानी।
उसने रविव्रत को अपनाया, जिससे भारी पुण्य कमाया॥4॥

मतिसागर फिर बोला मानी, रविव्रत क्यों करती सेठानी।
मेरे घर में धन है भारी, भूखी रह क्यों बने पुजारी॥5॥

पाप उदय से व्रत को छोड़ा, लक्ष्मी ने झट नाता तोड़ा।
आपत्ति चऊँ दिश से आई, हुई सेठ की लोक हँसाई॥6॥

पहुँचा जिन ऋषिवर की शरणा, भक्ति से पकड़े गुरु चरणा।
मुनिवर ने रविव्रत दिलवाया, उसका सम्यक् रूप बताया॥7॥

सबने रविव्रत को अपनाया, उभयलोक का पुण्य कमाया।
कलिकुंड रविव्रत सुखकारी, विघ्न विनाशक संकटहारी॥8॥

जो भविजन इस व्रत को धारे, क्रम से मुक्तिधाम सिधारे।
'क्षमाश्री' है शरण तिहारी, बने चिदानंद मोक्ष विहारी॥9॥

ॐ ह्रीं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **पार्श्वनाथ भगवान का, करें 'क्षमा' गुणगान।**
रविव्रत कलिकुंड पार्श्व का, देता सिद्धि निदान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री वीरशासन जयंती पूजा

(शंभु छन्द)

जय महावीर अतिवीर सन्मती वर्द्धमान को है वंदन।
जय गौतम गणधर स्वामी की हो नमस्कार शत-शत वंदन॥
उन प्रभुवर की पूजन करता मैं भाव सहित करता वंदन।
मम हृदयकमल में आ जाओ हे नाथ ! तुम्हारा अभिनंदन॥

ॐ ह्रीं श्री वीरशासनप्रवर्त्तक महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

श्री वीर जिनेश्वर के सन्मुख, जल के शुभ कुम्भ सजाये हैं।
निज रोगत्रय विनशाने को, त्रयधारा दे हर्षाये हैं।।
जिनशासन वीर जयंति ही, अभिनव संदेशा लायी है।
धर्मामृत देकर सन्मति ने, इस जग को राह दिखाई है।।

ॐ ह्रीं श्री वीरशासनप्रवर्त्तक वीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

हिंसा की ज्वाला ने जग को, हे नाथ ! बहुत झुलसाया है।
यह जग संताप मिटाने को, चरणों में गंध लगाया है।। जिनशासन...

ॐ ह्रीं ......संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मिथ्यात्व मोह ने हे जिनवर ! जग में मुझको भरमाया है।
अक्षय अखंड निज सुख पाने, शुभ अक्षत पुँज चढ़ाया है।। जिनशासन...

ॐ ह्रीं ......अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

कामारि जीत तप सुरभि से, इस जग को तुमने महकाया।
तुम सम गुण पाने कमलादिक, बहु पुष्प चढ़ा मैं हर्षाया।। जिनशासन...

ॐ ह्रीं ......कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

निज ज्ञानामृत से इस जग की, प्रभु तुमने क्षुधा मिटायी है।
नैवेद्य लिये जयकार सहित, भक्तों की टोली आयी है।। जिनशासन...

ॐ ह्रीं ......क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

कैवल्य सूर्य से प्रभु तुमने, मिथ्यात्व तिमिर को विनशाया।
निज प्रज्ञादीप जलाने को, मैं जगमग दीपक ले आया।। जिनशासन...

ॐ ह्रीं ......मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

शिव भूप ! आपका तप अनूप, चैतन्य रूप प्रगटाता है।
उसको पाने यह भक्त सदा, पावक में धूप खिराता है।।जिनशासन...

ॐ ह्रीं ......अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

रत्नत्रय अंकुर से प्रभु ने, स्याद्वाद वृक्ष फैलाया है।
उसके फल पाने श्रद्धा से, बहुविध फल थाल सजाया है।। जिनशासन...

ॐ ह्रीं ......महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

प्रभु आप नाम स्वर्गापवर्ग, वा पद अनर्घ का दाता है।
अंतिम पद हित शुभ अर्घ लिये, यह भक्त शरण में आता है॥
जिनशासन वीर जयंति ही, अभिनव संदेशा लायी है।
धर्मामृत देकर सन्मति ने, इस जग को राह दिखाई है॥

ॐ ह्रीं ......अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : वीर हिमाचल पर चढ़ा, गंगा जल की धार।
सर्वराष्ट्र के सब सुमन, अर्पित हैं प्रभु द्वार॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री वीरशासनाय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : विपुलाचल के शीश पर, मिली देशना आज।
वीर प्रभु उपदेश को, पावे सकल समाज॥

शंभु छंद

श्रावण कृष्णा एकम का दिन पावन अनुपम शुभ अवसर था।
यह शासन वीर जयन्ती का श्री वीर देशना का दिन था॥
वैशाख शुक्ल दशमी के दिन प्रभुवर ने अर्हत् पद पाया।
तब समवशरण अतिभव्य लगा फिर भी उपदेश न मिल पाया॥1॥

छ्यासठ दिन निकले नाथ मौन यह देख भविकजन चकराये।
सौधर्म ज्ञान से समझ गया गणधर बिन ध्वनि ना मिल पाये॥
ज्यों दूध शेरनी का भारी वह कनक पात्र में ठहरेगा।
त्यों विशद ज्ञान को हम जैसा हर प्राणी कैसे झेलेगा॥2॥

फिर अवधिज्ञान से देख परख युक्तिबल अपना लेकर के।
गौतम द्विज को वह ले आये इक सच्चा पात्र समझकर के॥
जिन मानखंभ अवलोकन कर गौतम का मिथ्या मान गला।
तत्क्षण मुनिपद को धार लिया गणधर पद का सम्मान मिला॥3॥

द्वादश अंगों की रचना की अन्तर्मुहूर्त में गणधर ने।
फैली जग में फिर दिव्य ध्वनि औ जय-जयकार किया सबने॥
श्री पंच पहाड़ी तीर्थ श्रेष्ठ जिसमें जिनवर कई बार गये।
कई भव्य जीव प्रभु चरणों में यहाँ दीक्षा लेकर मोक्ष गये॥4॥

प्रभु निश्चय औ व्यवहार कथन दोनों का पूर्ण प्रचार किया।
हिंसा, रूढ़ि अरु दासप्रथा आदि पर प्रबल प्रहार किया॥
निर्ग्रन्थ मुनि ही जगती में इक चलते-फिरते तीरथ हैं।
मुनि बिन कोई ना सिद्ध बने यह मुनि पद की ही कीरत है॥5॥

हर धर्म कार्य से पूर्व भव्य उसका अध्यन चिंतन करना।
बुद्धि को व्यापक फैलाकर निज मन-वच-तन निर्मल करना॥
श्रद्धा विवेक शुचिता रखकर जिन बिम्बों की पूजा करना।
मद राग-द्वेष अरु पाप क्रिया देवालय में तुम ना करना॥6॥

फिर सप्तभंग मन में रखकर जिन आगम का वाचन करना।
अरु आगम की सीमा में रह जिनमत पर ही चिंतन करना॥
जिनवाणी गुरु को ढाल बना उसमें निजमत तुम ना भरना।
हर शुभचर्चा चर्या में ला निज अन्तर कालुष को हरना॥7॥

अरहन्त सिद्ध जिनआगम सम गुरुओं की भी भक्ति करना।
रत्नत्रय जीवित तीर्थ यही निज तन-मन सब अर्पित करना॥
जिन धर्म शरण सम्यक् लेना निज रत्नत्रय पाने हेतू।
महावीर प्रभु के उपदेशों का सार यही सच्चा सेतू॥8॥

ॐ ह्रीं श्री वीरशासनप्रवर्त्तक महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीर जयंती का यही, जानो सच्चा सार।
'गुप्ति' जिनपथ गमन कर, हो जाओ भवपार॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री रक्षाबंधन पूजा

(गीता छन्द)

जिनधर्म के इतिहास में, विष्णुकुमार महान है।
उपसर्ग जेता गुरु अकंपन, सात शत मुनि मान्य है॥
उनका करूँ आह्वान मैं, पाऊँ सुखद शिव संपदा।
पुष्पांजलि पद में करूँ, नश जाय भव दुःख आपदा॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य विष्णुकुमार मुनि आदि सप्तशत मुनि समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

क्षीरोदधि का निर्मल जल ले, गुरु पद प्रक्षालन करते हैं।
संसार दुःखों का क्षय करने, ऋषियों की भक्ति करते हैं॥
उपसर्ग विजयी शत सात यति, गुरुवर आचार्य अकंपन हैं।
हम विष्णुकुँवर मुनि को पूजें, ये उत्सव रक्षाबंधन है॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य विष्णुकुमार मुन्यादि सप्तशत मुनिराज चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

भव-भव संताप नशें गुरुवर, ये आश लिये हम आते हैं।
हे शिवगामी ! शिवपथ देना, मलयागिरि गंध चढ़ाते हैं॥ उपसर्ग......

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

भारी उपसर्ग सहे गुरुवर, अक्षय पद की अभिलाषा से।
हम पुँज चढ़ायें अक्षत के, हे ऋषिवर ! तव पद आशा से॥ उपसर्ग......

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

तुम काम क्रोध मद लोभ छोड़, जीते रागादिक विषयों को।
सुरभित पुष्पों से अर्चें हम, इन महातपस्वी ऋषियों को॥ उपसर्ग......

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य....कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

हम गुजिया फैनी खीर चढ़ा, गुरुओं का अर्चन करते हैं।
वश करने क्षुधा अरि गुरुवर, तुम जैसा बल हम वरते हैं।।
उपसर्ग विजयी शत सात यति, गुरुवर आचार्य अकंपन हैं।
हम विष्णुकुँवर मुनि को पूजें, ये उत्सव रक्षाबंधन है।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य विष्णुकुमार मुन्यादि सप्तशत मुनिराज चरणेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

जो ज्ञान ध्यान में रत रहके, जग का अज्ञान विनाश करें।
उन महाश्रमण को दीप चढ़ा, हम सम्यक्ज्ञान प्रकाश वरें।। उपसर्ग......

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

भीषण उपसर्गों कष्टों में, जो किंचित ना डिग पाते हैं।
ऐसा समता बल पाने हम, पावक में धूप चढ़ाते हैं।। उपसर्ग......

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

केला अंगूर अनार भरी, सुन्दर थाली लेकर आये।
हम मोक्षमहाफल पाने को, फल चढ़ा गुरु के गुण गायें।। उपसर्ग......

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

आठों द्रव्यों से भक्ति करें, ऋषिवर हमको भवपार करो।
गुरुभक्ति से शिवशक्ति वरें, इस विनती को स्वीकार करो।। उपसर्ग......

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य....अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : **सात शतक मुनि के चरण, चौदह सौ मनहार।**
इन सब चरणों में करें, हम सब शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा : **धन्य-धन्य हम हो गये, पुष्पांजलि कर आज।**
रक्षासूत्र हमें मिला, गुरु चरणों का आज।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य विष्णुकुमारादि सप्तशत मुनिराज चरणेभ्यो नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : रक्षाबंधन पर्व की, महिमा अपरंपार।
जयमाला पढ़ हम करें, जय-जय विष्णुकुमार॥

नरेन्द्र छंद

जय ऋषिराज अकंपन सूरी, उज्जैनी में आये थे।
सात शतक निर्ग्रन्थ दिगंबर, श्रमण मुनि संग लाये थे॥
श्रीवर्मा राजा नगरी का, जिसके मंत्री चार कहे।
धर्मप्रिय राजा के होते, मंत्री मिथ्यावाद करे॥1॥

ज्ञाननिमित्त से गुरुदेव ने, सब अनिष्ट को जान लिया।
नगरवासी से बात न करना, शिष्यों को आदेश दिया॥
गुरुदर्शन को राजा निकले, लेकर अपने मंत्रीगण।
सब ऋषियों की करें वंदना, लेकिन मौन रहें ऋषिगण॥2॥

मुनियों को गाली दे मंत्री, राजा के सह लौट चले।
देख राह में श्री श्रुतसागर, मुनिवर को वो बैल कहे॥
मुनिवर बोले मूरख मंत्री, दम हो तो शास्त्रार्थ करो।
कौन बैल है कौन शेर है, निर्णय ये सब साथ करो॥3॥

हारे सारे मंत्री क्षण में, मुनिवर गुरु के द्वार चले।
संघ सुरक्षा का हित ले वे, उसी जगह पे ध्यान करे॥
बदला लेने आये मंत्री, मुनि पर असि से वार किया।
नगरदेवी ने उसी भूमि पर, पापी जन को कील दिया॥4॥

बैठाकर के उन्हें गधों पे, राजा देश निकाला दे।
फिर उनको हस्तिनागपुर का, राजा पद्म सहारा दे॥

उस राजा का एक शत्रु था, जिस पर मंत्री जय पाये।
आगे मनचाहा वर देना, राजा से ये वर पायें॥5॥

कुछ दिन में आचार्य अकंपन, वहाँ संघ लेकर आये।
तब मौका पा मंत्री नृप से, राज्य सात दिन का पाये॥
मुनियों का कोमल तन दहने, ये षडयंत्र रचाया था।
पशु हिंसामय यज्ञ रचाकर, क्या उपसर्ग रचाया था॥6॥

मुनिगण निर्भय सिंह सरीखे, मेरूवत् सब अचल रहे।
शूरों जैसा शौर्य दिखाकर, समता से उपसर्ग सहे॥
मिथिला में श्रुतसागर सूरी, उनने संकट जान लिया।
गुरुवर विष्णुकुमार मुनि को, संकटहारी मान लिया॥7॥

मंत्रीदास पद्म राजा को, विष्णुकुंवर मुनि समझाये।
मुनियों का हित-अहित जरा भी, समझ नहीं उसको आये॥
तब ऋद्धिबल से वामन का, विष्णुकुँवर मुनि रूप धरें।
वेदों का उच्चारण करके, सबके मन को मुग्ध करें॥8॥

खुश हो पापी मंत्री बोला, वामन कुछ भी माँग करो।
वामन बोला तीन कदम की, धरती मुझको दान करो॥
छोटा वामन बड़ा अचम्भा, अद्भुत रूप विशाल धरे।
दाँतों तले दबाये अंगुली, चारों मंत्री चौंक पड़े॥9॥

पहला कदम बढ़ाया उनने, भव्य सुमेरू पर्वत पे।
दूजा गिरी मानुषोत्तर पर, पृथ्वी काँपे थर-थर के॥
नभ चुम्बी काया लख भागे, सागर भी मर्यादा से।
देव विमान लगे टकराने, लम्बी-चौड़ी काया से॥10॥

जगह नहीं तीजे पग की, तो रखा पीठ पे मंत्री के।
क्षमा-क्षमा चिल्लाया जिसके, पाप नहीं थे गिनती के॥
संकट दूर हुआ मुनियों का, भंग हुआ मद पापी का।
उस श्रावण शुक्ला पूनम से, पर्व बना ये राखी का॥11॥

उस दिन लगे हजारों चौके, सारे हस्तिनागपुर में।
सेवैया की खीर बनी थी, सब श्रावक के घर-घर में॥
जिस घर में मुनिराज पधारे, उनने शुभ आहार दिया।
शेष घरों में मुनिचित्रों पर, नव भक्ति संस्कार किया॥12॥

तब से ही रक्षाबंधन पर, चौका भव्य लगाते हैं।
गुरुओं का आहार कराने, उत्तम खीर बनाते हैं॥
जय-जय विष्णुकुमार गुरुवर, वत्सल अंग प्रसिद्ध हुए।
सात शतक मुनि की रक्षा कर, शिवपुर वासी सिद्ध हुए॥13॥

जय-जय श्री आचार्य अकंपन, जय-जय सात शतक स्वामी।
जय-जय-जय उपसर्ग विजेता, जय जय हे शिवपथगामी॥
गुप्तिनंदी का नंदन बोले, भवसागर से पार करो।
'चन्द्रगुप्त' को निज रक्षा के बंधन में स्वीकार करो॥14॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य विष्णुकुमारादि सप्तशत मुनिराज चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : आठों कर्म नशा वरें मोक्षपुरी का राज।
गुरुवर ये आशीष ही हम भक्तों की लाज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री तीन कम नवकोटि मुनिराज पूजा

(गीता छन्द)

सुन्दर अढाई द्वीप में पन्द्रह करम भू सौख्यदा।
जहँ न्यूनत्रय नवकोटि मुनि होते अधिकतम सर्वदा॥
त्रय रत्न भूषित भावलिंगी पंचविध संयम धरें।
मन में विराजो आज मम आह्वान ऋषिवर हम करें॥

ॐ ह्रीं श्री द्वयार्द्ध द्वीपस्थ न्यून त्रय नवकोटि श्रमण समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

कंचन कलशों में जल ले हम, गुरु पद प्रक्षालन करते हैं।
त्रय दोष हरें त्रय रत्न वरें, नवविध आराधन करते हैं॥
नव कोटि न्यून त्रय मुनियों को, हम वंदन बारम्बार करें।
बन जायें मुनि मन सम निर्मल, यह शुद्ध भावना हृदय धरें॥

ॐ ह्रीं श्री द्वयार्द्ध द्वीपस्थ न्यून त्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

शशिकर सम शीतल शांत श्रमण, भव-भव संताप मिटाते हैं।
भवताप नशे तुम चरण बसे, चंदन हम चरण चढ़ाते हैं॥ नव......

ॐ ह्रीं श्री ....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मुक्ताफल अक्षत श्वेत धवल, धवलात्म श्रमण को अर्पित है।
तुम सम अक्षय तप साधन हित, मम जीवन पूर्ण समर्पित है॥ नव......

ॐ ह्रीं श्री ....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

मचकुन्द मालती मरुवादिक मन्मथ मर्दन हित मँगवाये।
मदनारि जयी ऋषि के सेवक, निज जीवन बगिया महकाये॥ नव......

ॐ ह्रीं श्री ....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

बहु पाप स्रोत क्षुत् डाकिन है, इसको यतिवर ही विनशायें।
उनको बहु व्यंजन थाल-चढ़ा, हम चैत्य सुखामृत को पायें॥ नव......

ॐ ह्रीं श्री ....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अर्हंत वचन के चिंतक वे श्रुतज्ञान दीप प्रगटाते हैं।
श्रुत प्रज्ञापुंज श्रमण सन्मुख, हम मंगलदीप जलाते हैं॥
नव कोटि न्यून त्रय मुनियों को, हम वंदन बारम्बार करें।
बन जायें मुनि मन सम निर्मल, यह शुद्ध भावना हृदय धरें॥

ॐ ह्रीं श्री ....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

मुनि धर्मशुक्ल ध्यानाग्नि में, वसु कर्म काष्ठ का दहन करें।
उनको पावक में धूप चढ़ा, हम भी कर्मों का हनन करें॥ नव......

ॐ ह्रीं श्री ....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

षट्आवश्यक को साध श्रमण, संयम का फल शिवफल पायें।
उनको षट्ऋतु के फल भेंटें, हम निजभव सफल बना पायें॥ नव......

ॐ ह्रीं श्री ....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जल-चंदन-अक्षत-दीप-धूप, नैवेद्य हरित फल लाये हैं।
अन्तर में भक्तिभाव लिये, ऋषिराज शरण में आयें हैं॥ नव......

ॐ ह्रीं श्री ....अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : शांतिधार त्रय बार कर, सांत श्रमण को आज।
सुमनावलि अर्पण करें, पाये मोक्ष सुराज॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री न्यून त्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : ढाई द्वीप के न्यून त्रय, नवकोटि मुनिराज।
उनकी जयमाला पढ़ूँ, पाऊँ मुक्तिराज॥

शंभु छंद

षट् लख सत्रह शत चउ नवति, से हीन कोटि षट् मुनिवर हैं।
वे सब प्रमत्त संयत योगी, चारित्र निष्ठ आगम धर हैं॥
त्रय कोटि में त्रय लक्ष श्रमण, शत अष्ट सप्त नव कम होते।
मुनि अप्रमत्त संयत नामा, कैवल्य बीज अंकुर बोते॥1॥

गुण थान अपूर्वकरण वर्ती, द्वय शत निन्यानव होते हैं।
वे मुनि उपशम श्रेणी चढ़कर, शिव सुख अंकुर नव होते हैं।।
अनिवृत्तिकरण वर्ती मुनिवर, द्वय शत निन्यानव बतलाये।
निज कर्मों का उपशम कर वे, शुद्धात्म योग में रम जायें।।2।।

मुनि सूक्ष्म सांपरायी द्वयशत, निन्यानव उपशम श्रेणी में।
निज कर्म मैल का शमन करें, चढ़ शुक्ल ध्यान की श्रेणी में।।
द्वयशत निन्यानव आगम में, उपशांत मोह बतलाये हैं।
उन सम शुचि रत्नत्रय पाने, भव्यों ने अर्घ सजाये हैं।।3।।

शत पंच अठानव क्षपक श्रमण, गुणथान अपूर्वकरण वरते।
धर निर्विकल्प शुद्धोपयोग, प्रतिपल निज शुद्धकरण करते।
शत पंच अठानव क्षपक श्रमण, अनिवृत्तिकरण वर्ती होवे।
धारण कर निश्चल शुक्ल ध्यान, चंचल कर्मज वृत्ति खोवे।।4।।

मुनि क्षपक पाँच सौ अंठानव, हैं सूक्ष्म सांपरायी योगी।
निर्लोभ निराकुल निर्विकार, निर्मल निज चिन्मय उपयोगी।।
ऋषि पाँच शतक अंठानव ही, छद्मस्थ वीतरागी होवे।
चऊ घाति घात वे क्षीण मोह, कैवल्य बोध भागी होवे।।5।।

अठलक्ष अठानव सहस पाँच, शत युग्म केवली जिननायक।
हितदेशक सकल शरीरी जिन, सन्मार्ग प्रखर प्रज्ञादायक।।
मुनि पाँच शतक अंठानव ही, गत योग केवली परमातम।
अत्यल्प काल में कर्म नशा, वे बनते सिद्ध प्रबुद्धातम।।6।।

जो द्रव्यभाव द्वय लिंगों सह, निर्ग्रंथ श्रमण पद को धारें।
शुभयोग तथा शुद्धोपयोग, धारण कर सब अघ परिहारें।।
जीते परिषह उपसर्ग सदा, वे ध्यान अनुप्रेक्षा द्वारा।
कर परम भेद विज्ञान ध्यान, बन सिद्ध वरें शिवपुर द्वारा।।7।।

जो इन मुनियों को ध्याता है, इनसे अनुराग लगाता है।
वो राहू-केतु-शनि को वशकर, नवग्रह का दोष भगाता है।।

निर्ग्रंथ श्रमण की सेवा से, निर्ग्रंथ महापद मिलता है।
मुनिभक्त भव्य के अंतस् में, सम्यक् रत्नत्रय खिलता है॥8॥

वे शांत संत निर्ग्रंथ श्रमण, सुर असुरों से पूजे जाते।
नव कोटि न्यून त्रय ऋषि की हम, अर्चा कर मुनि सम व्रत पाते।
निर्ग्रंथ दिगम्बर मुनियों को, हम वंदन बारम्बार करें।
पूर्णार्घ्य चढ़ा मुनिव्रत धारें, 'गुप्तिनंदी' शिवराज वरे॥9॥

ॐ ह्रीं श्री द्वयार्द्ध द्वीपस्थ न्यूनत्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

जिनभक्त निर्मल भाव से **मुनिराज** की पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर-नर उन्हें वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्णकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परम पूज्य तीर्थभक्त शिरोमणि, समाधि सम्राट, उपसर्गजयी

आचार्य श्री महावीरकीर्ति गुरुदेव पूजन

गीता छंद

घोरोपसर्गजयी गुरु, उपसर्गहर तेरी शरण।
नंदन प्रभु महावीर के, महावीरकीर्ति को नमन्॥
मन में विराजो नाथ तुम, पूजन-भजन-कीर्त्तन करूँ।
सुमनावली ले हाथ में, मैं आज आह्वानन करूँ॥

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्यश्री महावीरकीर्ति गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कंचन कलश में भक्ति से सब तीर्थ का जल है भरा।
पद पुष्प को प्रक्षालता मन पुष्प भावों से भरा॥
हे सौम्य शीतल शांतश्री संसार के तारण-तरण।
कलिकाल के महावीर श्री महावीरकीर्ति को नमन्॥

ॐ ह्रीं आचार्यश्री महावीरकीर्ति गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

भगवन् हरो पद छाँव दे संसार के संताप को।
चंदा से भी शीतल गुरु चंदन चढ़ाऊँ आपको॥
हे सौम्य शीतल शांतश्री संसार के तारण-तरण।
कलिकाल के महावीर श्री महावीरकीर्ति को नमन्॥

ॐ ह्रीं आचार्यश्री महावीरकीर्ति गुरुदेव चरणेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

शिवसौख्य अक्षयसौख्य है गुरुदेव की यह देशना।
यह आश ले अक्षत चढ़ा पाऊँ कभी भवक्लेश ना॥ हे सौम्य..........

ॐ ह्रीं ....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

सूरजमुखी का फूल ले जिनधर्म सूरज पूजता।
बन फूल तेरे चरण का निज ब्रह्म वैभव खोजता॥ हे सौम्य..........

ॐ ह्रीं ....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

तृष्णा क्षुधा के नाश को तुमने धरा मुनिवेष को।
कर अर्चना नैवेद्य से, मैं भी धरूँ मुनिवेष को॥ हे सौम्य..........

ॐ ह्रीं ....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

चंदा सितारे दीप है अंबर ये कंचन थाल हो।
भक्ति से करता आरती अरिहंत पद वरदान दो॥ हे सौम्य..........

ॐ ह्रीं ....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

सब औषधों के ज्ञान से गुरुवर सभी के दुःख हरें।
यह भक्त धूप चढ़ा तुम्हें भवरोग की औषध वरें॥ हे सौम्य..........

ॐ ह्रीं ....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

केलादि बहुविध फल लिये गुरुदेव का अर्चन करूँ।
संयम तरू बनकर तुम्हें, चारित्र फल अर्पण करूँ॥ हे सौम्य..........

ॐ ह्रीं ....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जल गंध आदिक द्रव्य ले गुरुदेव का अर्चन करूँ।
मन से वचन से काय से, पूजन करूँ शिवपद वरूँ॥ हे सौम्य..........

ॐ ह्रीं .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : शांतिधार हम कर रहे, सुखशांति के हेत।
अंजलिपुट में पुष्प भर, पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

शांतये शांतिधारा......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा : गुणसागर गुण के धनी, गुणरवि हे गुणवान।
गुण गाऊँ कैसे गुरु, हे अगणित गुणखान॥

शंभु छंद

हे आदिसागर गुरुवर के, नंदन तुमको वंदन मेरा।
जिनधर्म प्रवर्त्तक के गुण गा, मिट जायेगा भव का फेरा॥
है धन्य फिरोजाबाद नगर, जिसमें ऋषिवर का जन्म हुआ।
पितु रतनचंद के आंगन में, जन्मोत्सव सुंदर भव्य हुआ॥1॥

सारे जग की जननी माता, बूँदादेवी कहलायी है।
मुनिनायक की माता बनकर, मुनियों की माँ कहलायी है॥
तीरथ करने के भाव जगे, गर्भस्थ आपके अतिशय से।
सम्मेदाचल के दर्श करें, माता तुमको उर में धर के॥2॥

तीर्थंकर मुनिसुव्रत जिन की, शुभ ज्ञान कल्याणक तिथि आई।
तब जन्म लिया तुमने भगवन्, मानो मुनिसुव्रत छवि आई॥
दृढ़ संकल्पी स्वाभिमानी, शुभ नाम महेन्द्र निराला था।
अणुव्रत वा अष्ट मूलगुण को, बचपन से तुमने पाला था॥3॥

बचपन में ही ज्ञानार्जन कर, विद्यालय की वे शान बने।
ज्योतिष औषध वा तर्क छंद, व्याकरण जिनागम शास्त्र पढ़े॥
श्री चंद्र सिंधु ऋषि से तुमने, शुभ ब्रह्मचर्य व्रत पाया था।
मुनिनंदन क्षुल्लक दीक्षा व्रत, श्री वीर सिंधु से पाया था॥4॥

मुनि कुंजर आदि धुरंधर हैं, कलियुग के जो तीर्थंकर हैं।
ऐसे गुरुवर आदिसागर, मुनिपद दाता सूरीश्वर हैं॥
आदिसागर गुरुवर जैसा, ऋषिवर तुमने तप अपनाया।
तप चूड़ामणि की सेवा कर, उत्तम यतिनायक पद पाया॥5॥

अठदश भाषाओं के ज्ञाता, पशु-पक्षी की भाषा जाने।
प्रामाणिक प्रवचन शैली से, जग तुमको जिनवाणी माने॥
नाना उपसर्ग सहे गुरुवर, घनघोर महातप अपनायें।
मेरूवत् अचल रहे हरदम, प्रलंयकर भी क्यों ना आये॥6॥
तुम वाक्यसिद्ध तुम मंत्रसिद्ध, तपसिद्ध यंत्रविद् कहलाये।
सर्वज्ञ कथित विद्यानुवाद, मानो तुम लेकर ही आये॥
पद्माम्बा जिनशासन देवी, तुम भक्ति करने नित आती।
बहु अतिशय तेरे कालजयी, जिनका यश यह दुनियाँ गाती॥7॥
आगम प्रमाण जिनका जीवन, शिष्यों को ज्ञानामृत बाँटें।
करुणा के सागर करुणा कर, खोले दुःखियों की दुःख गाँठें॥
गुरुदेव तुम्हारी पींछी से, विषदंश सर्प का नश जाता।
इस हेतु श्रमण चिकित्सालय, शुभ संघ तिहारा कहलाता॥8॥
जिनधर्म प्रभावक विमल सिंधु, तुम प्रथम शिष्य मुनिरत्न बनें।
सन्मतिसागर तव पट्टसूरि, तुम सम तप गुण प्रतिरूप बने॥
नेमि संभव कुंथुसागर, आदि बहु श्रमण बनाये थे।
गणिनी पद ले विजया माँ ने, तुम सन्मुख भाग्य जगाये थे॥9॥
जब आये मेहसाणा नगरी, रोगों ने तुमको घेर लिया।
पद और संग का भार त्याग, तुमने जग से मुख फेर लिया॥
अतिकष्ट वेदना सहन करी, फिर भी आतम में रमण किया॥
अरिहंत सिद्ध जपते-जपते, शुभ साम्य समाधिमरण किया।॥10॥
गुरुवर आओ मनमंदिर में, इस हृदय-कमल पर बस जाओ।
अपने इस छोटे बालक को, चरणों का कमल बना जाओ॥
महावीरकीर्ति के लघुनंदन, मेरे गुरु 'गुप्ति' कहलाये।
उनका लघुनंदन 'चन्द्रगुप्त', शिवराज वरे भव तिर जाये॥11॥

ॐ ह्रीं आचार्यश्री महावीरकीर्ति गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : महावीरकीर्ति गुरु, शील क्षमा गुणवान।
'चन्द्र' रमें गुरु चरण में, दो मुझको वरदान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव पूजन

स्थापना (गीता छन्द)

हे कुन्थुसागर ! श्री गुरो आचार्य नंदी संघ के।
मुस्कान तुम मुख पे सदा, तुम हो धनी वात्सल्य के॥
गुरु की छवि मन में बसा, उर में उन्हें बैठा रहा।
पुष्पांजलि ले हाथ में, पूजा गुरु की गा रहा॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं प.पू.ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं प.पू.ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शेर छन्द)

नवरत्न मणि युक्त स्वर्ण कुम्भ सजायें।
श्री कुन्थुसिंधु के पवित्र पाद धुलायें॥
जिन धर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वन्दे कुन्थुसागरम॥1॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर चंदनादि द्रव्य मिलायें।
लेकर पवित्र गंध आप पाद लगायें॥ जिन धर्म... ॥2॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती व अक्षतों के दिव्य पुंज चढ़ायें।
अक्षय अखंड दिव्य आत्म सौख्य जगायें॥ जिन धर्म... ॥3॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुगिरी की वाटिका से पुष्प चुनायें।
कोमल हृदय गुरु के पाद पुष्प चढ़ायें॥ जिन धर्म... ॥4॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन प्रकार नेवजों की थाल सजा के।
तुम को चढ़ाई हमने आज नाच बजा के।।
जिन धर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वन्दे कुन्थुसागरम।।5।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतों में दीप आप तुम्हें दीप चढ़ायें।
दे ज्ञान दीप आप मोक्ष मार्ग दिखायें।। जिन धर्म...।।6।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे संत भूप ! धूप चढ़ायें जो मन हरे।
ये धूप अर्चना हमारे कर्म को हरे।। जिन धर्म...।।7।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा फलों का आम सूरि राज को चढ़े।
हम मोक्ष फल को पाने आज द्वार पे खड़े।। जिन धर्म...।।8।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य कुन्थुसिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य उनको अष्ट द्रव्य चढ़ाकर।। जिन धर्म...।।9।।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **कुन्थुसिंधु गुरुदेव का, शांति पूर्ण व्यवहार।**
शांति धार करके मिले, हमें वही व्यवहार।।

शांतये शांतिधारा.....

हँसती मुस्काती छवि, जिनकी पुष्प समान।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, जय भावि भगवान।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रूं कुन्थुसागर सूरिभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- दुःखहरणी सुख कारिणी, जिनकी कला विशाल।
कुन्थुसिंधु गुरुराज की, गायें हम जयमाल॥

(नरेन्द्र छन्द)

जय-जय गुरु वात्सल्य दिवाकर, जय-जय कुन्थुसागर की।
विमल गुरु सम भोले बाबा, जय करुणा के सागर की॥
रेवा जिनदेवा के सेवक, सोहन देवी मैय्या है।
बाठेड़ा में जिनके घर में, जन्में बाल कन्हैया है॥1॥

पिता तुम्हारे आगम ज्ञाता, ज्योतिर्विद जो कहलाये।
विद्यालय में गये बिना ही, उनसे सब विद्या पाये॥
द्रव्यार्जन का लक्ष्य बनाकर, नगर अहमदाबाद चले।
रोजगार से बढ़कर तुमको, सीमंधर अनगार मिले॥2॥

बाल ब्रह्मचारी गुरुवर से, ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।
गुरु के संग बेलगोला में, गोम्मटेश का न्हवन किया॥
वहाँ आदिसागर के नंदन, महावीर कीर्ति आये।
उनकी विद्या त्याग तपस्या, व्रती कन्हैया को भाये॥3॥

हुम्बुज पद्मा माँ के द्वारे, गुरु से मुनिव्रत घोर लिया।
वय किशोर का शोर मिटाकर, जग सुख को झकझोर दिया॥
महावीर कीर्ति गुरुवर ने, गणधर पद का दान दिया।
अनुज प्रेम रख विमल गुरु ने, पद आचार्य प्रदान किया॥4॥

गणधर वा आचार्य शब्द, इन दो शब्दों की संधी से।
आप गणधराचार्य कहाये, महके ज्ञान सुगंधी से॥

ग्रन्थ रचे बहु चलते-फिरते, तीर्थ बनाये गुरुवर ने।
कनक पद्म से रत्न अनेकों, गुरुवर तुम रत्नाकर में॥5॥

देव कल्पश्रुत श्री कुशाग्र वा, गुण-विद्या गुणधरनंदी।
गुरुवर के हैं शिष्य अनेकों, उसमें मैं गुप्तिनंदी॥
कुलभूषण माँ कमल राजश्री, आदि गणिनी आर्यायें।
कई आर्यिका और क्षुल्लिका, कहलाती तुम शिष्यायें॥6॥

नंदी संघ विशाल तिहारा, उसके नायक गुरुवर तुम।
जिस पर हो आशीष तुम्हारा, उसे कभी ना होवे गम॥
स्याद्वाद केसरि गुरुवर ने, धर्म ध्वजा फहराई है।
कर एकांत तिमिर का भंजन, आगम रीति बताई है॥7॥

रानीला आदिश्वर प्रगटा, तीर्थ अणिंदा चमकाया।
पद्माम्बा से प्रेरित होकर, कुंथुगिरी को विकसाया॥
गुरुवर तुम आदर्श हमारे, सबके संकट हरते हो।
बिन माँगे ही सब भक्तों की, झोली निशदिन भरते हो॥8॥

आर्ष मार्ग के संरक्षक तुम, हे भारत गौरव ! ज्ञानी।
जग में सब सुख कोष लुटाये, तुमसा ना कोई दानी॥
हे गुरुवर ! हम तुम गुण गायें, हम बच्चों की लाज रखो।
'गुप्तिनंदी' के सिर पर बाबा, अपने दोनों हाथ रखो॥9॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं गणाधिपति गुरु, वात्सल्य रत्नाकर महा।
उन पर सदा आस्था धरें, करते सुखद अर्चन अहा॥
रवि चंद्र सम उनका सुयश, बढ़ता रहे त्रय लोक में।
गुरु भक्ति से सब सौख्य पा, पहुँचे परम शिवलोक में॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प.पू. कविहृदय, आर्षमार्ग संरक्षक, ज्ञानदिवाकर, प्रज्ञायोगी

आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजा

(शंभु छंद)

हे पंचमहाव्रत ! के धारी, हे बालयोगी ! मुनि को वन्दन।
हम हृदयकमल में बुला रहे, करने भावों से स्थापन॥
हो सौम्य शांत प्रतिभाधारी, गुण गाते हैं सब नर-नारी।
सन्निकट हमारे सदा रहें, बन जायें तुम सम अविकारी॥1॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

निर्मल मन के धारी गुरु को, निर्मल जल चरण चढ़ाते हैं।
भावों की शुचिता पाने को, गुणगान तिहारा गाते हैं॥
गुरुवर की आरती पूजन से, मन में शांति हो जाती है।
गुरु गुप्तिनंदी की शरणा पा, जीवन में क्रांति आती है॥

ॐ ह्रीं आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

शीतल स्वभाव के धारी मुनि, हम चंदन से अर्चा करते।
संसार ताप से बचने को, गुरु शरण धर्म चर्चा करते॥ गुरुवर........॥

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

रत्नत्रय धारी हैं गुरुवर, अक्षय पद को पाने वाले।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, बनकर तेरे हम मतवाले॥ गुरुवर........॥

ॐ ह्रीं.....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

पुष्पों से कोमल हे गुरुवर !, दुर्लभ संयम अपनाया है।
इस काम अरि से बचने को, चरणों में पुष्प चढ़ाया है॥ गुरुवर........॥

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

वश करने क्षुधावेदनी को, कर पात्र एक भुक्ती करते।
ऐसे गुरुवर के चरणों में, नैवेद्य चढ़ा दुःख से बचते॥ गुरुवर........॥

ॐ ह्रीं.....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अज्ञान अँधेरे में भटके, प्राणी को ज्ञान बताया है।
हम दीप चढ़ाते चरणों में, हमने ज्ञानी गुरु पाया है॥
गुरुवर की आरती पूजन से, मन में शांति हो जाती है।
गुरु गुप्तिनंदी की शरणा पा, जीवन में क्रांति आती है॥

ॐ ह्रीं आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

आठों कर्मों से लड़ने को, असिव्रत तुमने है धार लिया।
यह धूप धूपायन में खेकर, हमने तेरा यशगान किया॥ गुरुवर........॥

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

अनुपम फल को पाने वाले, शिवपुर के राही हे गुरुवर।
हम सुफल चढ़ाकर पूज रहे, पाने मुक्ति पथ की ये डगर॥ गुरुवर........॥

ॐ ह्रीं.....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

गुप्तिनंदी गुप्तिधारी, हो मोक्षपुरी के अधिकारी।
हम अष्टद्रव्य का अर्घ चढ़ा, बन जायें संयम के धारी॥ गुरुवर........॥

ॐ ह्रीं.....अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : **गुरुवर के श्री चरण में, पावन जल की धार।**
रंग-बिरंगे पुष्प के, अर्पित सुंदर हार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **गुप्तिनंदी गुरुदेव जी, करते निज कल्याण।**
जयमाला पढ़कर करें, गुरुवर का गुणगान॥

(तर्ज : झीनी-झीनी उड़ी रे गुलाल, चालो रे मंदरिया में..)

माँ त्रिवेणी के भाग्य जगे थे, कोमलचन्द घर वाद्य बजे थे।
खुशियाँ अपरम्पार॥ चालो रे...॥1॥

एक अगस्त उन्नीस सौ बहत्तर, गुरुवर तुमने जन्म लिया था।
हो गया मंगलकार ॥ चालो रे... ॥2॥

नगर भोपाल से चमका सितारा, छोड़ दिया गुरु ने घर बारा।
मच गया हाहाकार॥ चालो रे... ॥3॥

वर्ष अठारह की लघुवय में, मुनिव्रत धार लिया गुरुवर ने।
हो गई जय-जयकार ॥ चालो रे... ॥4॥

सूरीपद गोम्मटगिरि पाया, भक्तों ने जयकार लगाया।
बने स्व पर सुखकार॥ चालो रे... ॥5॥

छत्तिस गुण को पालन करते, निर्भय हो परिषह भी सहते।
करते पाप निवार ॥ चालो रे... ॥6॥

विविध कलायें इनको आतीं, जो जन-जन के मन को लुभातीं।
हो जग के मनहार ॥ चालो रे... ॥7॥

काव्य रचा जिनभक्ति बनाते, प्रवचन से सबको हर्षाते।
करते जग उद्धार॥ चालो रे... ॥8॥

नहीं किसी से मोहित होते, किन्तु सबका मन हर लेते।
हो जन मन आधार ॥ चालो रे... ॥9॥

हे गुरुवर ! हम तव गुण गायें, भव दु:खों से हैं घबराये।
कर दो बेड़ा पार ॥ चालो रे... ॥10॥

शरण आपकी हम नित पायें, अपना जीवन धन्य बनावें।
पावें मुक्तिद्वार॥ चालो रे... ॥11॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अल्प बुद्धि मैं हूँ गुरु, 'क्षमा' करें गुरुराज।
शक्ति हीन हूँ हे गुरु !, दे दो शरणा आज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजन

(नरेन्द्र छन्द)

श्री गुप्तिनंदी गुरुवर जी, कविहृदय प्रज्ञायोगी।
हृदय कमल में आन विराजो, बन जाये हम भी योगी॥
मन मंदिर की तुम हो प्रतिमा, कैसे महिमा गायें हम।
सुरभित मनहर पुष्पांजलि से, आह्वानन कर ध्यायें हम॥1॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर सवौषट् आव्हानम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि सम निर्मल गुरु से, निर्मलता हम सब पाये।
क्षीरोदधि का जल लेकर हम, चरण कमल धोने आये॥
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

गुरुवर तुमने मुनिपद धारा, भवसंताप मिटाने को।
तुम पद चंदन भक्त चढ़ायें, भव आताप नशाने को॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

भौतिक पद के त्यागी गुरु की, महिमा हम गाने आये।
मुक्ता अक्षत अर्पण करके, अक्षयपद पाने आये ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कमल केतकी जूही चम्पा, पुष्प मनोहर लाये हम।
पद पंकज में सुमन चढ़ाकर, भक्तिनृत्य रचायें हम ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं ....कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

मधुर-मधुर वाणी है तेरी, जो हित का उपदेश करे।
षटरस व्यंजन से अर्चाकर, भक्त क्षुधा के क्लेश हरे ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

केवल प्रज्ञा दीप जलाने, जगमग दीप सजायें हम।
ज्ञान दिवाकर के चरणों में, शुभ आरतियाँ गायें हम।
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

आठों कर्म नशाने गुरुवर, द्वादश तप को धरते हैं।
धूप घटों में धूप खिरा हम, पाप कर्म को हरते हैं॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

षट् ऋतुओं के फल लेकर हम, गुरुभक्ति करने आये।
मोक्ष महाफल की आशा ले, नतमस्तक होने आये॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जलगंधादिक अष्टद्रव्य ले, जय-जय घोष लगाते हैं।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, हम सब अर्घ चढ़ाते हैं॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : शांतिदूत गुरू चरण में, करते शांतिधार।
चरण-पुष्प में हम करें, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रूं गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(सखी छंद)

गुणमाला गुरु की गायें, फूलों की माला लायें।
हम जय-जयकार लगायें, जयमाला गुरु की गायें॥

(तर्ज : माईन माईन...)

श्रद्धा के फूलों की माला, भक्त सभी ले आये।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गाये॥ गुरुवर हो ऽऽऽ.........

सावन वद साते को खुशियाँ, सावन बनकर बरसे।
जन्म हुआ भोपाल नगर में, कोमलचंद जी हर्षे॥
मात त्रिवेणी बाल शिशु को, निरख निरख हर्षायें।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गायें॥ श्री गुप्तिनंदी....

पड़गाहन राजेन्द्र करे, गुरुवर को घर ले आये।
भक्ति से आहार दिया पर, अंतराय आ जाये॥
बोला मैं उपवास करूँगा, गुरुवर तब समझाये। श्री गुप्तिनंदी....

घर वालों से आज्ञा माँगी, मुक्तिपथ की ठानी।
बोले जब तक ना जाने दो, लूँ ना भोजन पानी॥
करके अनशन तीन दिवस का, शरणा गुरु की पायें। श्री गुप्तिनंदी....

रोहतक नगरी में आ करके, कुंथुगुरु को ध्यायें।
वर्ष अठारह की लघुवय में, उनसे मुनिव्रत पायें॥
श्री आचार्य कनकनंदी को, शिक्षा गुरु बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

गोम्मटेश के द्वारे गोम्मट, गिरी इन्दौर नगर में।
नर-नारी जयघोष करें, आचार्य पदारोहण में॥
श्रुतपंचमी को मुनिवर 'गुप्ति', जैनाचार्य कहायें। श्री गुप्तिनंदी....

हे गुरुवर ! तुम कविहृदय हो, मनहर काव्य बनाते।
कलम चला भौतिक मानव की, भौतिकता छुड़वाते॥
जो तेरे चरणों में आये, सच्चा भक्त कहाये। श्री गुप्तिनंदी....

हे भवसिंधु तारणहारी, मेरी नाव तिराना।
मुक्तिराजश्री पाने हेतु, संयम शक्ति दिलाना॥
'चन्द्रगुप्त' गुरु शरणा पाके, पूजन-भजन बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

ॐ ह्रीं ...जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : झाँझर-ढपली-ढोल ले, करते जय-जयनाद।
श्री गुप्तिनंदी गुरु, दे दो आशीर्वाद॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प.पू. प्रज्ञायोगी आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव की पूजा

स्थापना (गीता छंद)

शुभ थाल लेकर द्रव्य की, हम आ रहे गुरु द्वार पे।
गुप्ति गुरु गुण कीर्तिधर की, अर्चना लय ताल से॥
चंपा चमेली मोगरादि, पुष्प भर-भर ला रहे।
आह्वान कर गुरुराज का, हम भक्त जन हर्षा रहे॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

अडिल्ल छंद (तर्ज- धीरे-धीरे बोल..)

पत्र युक्त जल कुंभ सजाकर ला रहे।
गुरु के चरण धुलाकर सब हर्षा रहे॥
गुरु की अर्चा जन्म-जरा-मृत क्षय करें।
गुरुवर के चरणों में हम वंदन करें॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

गुरु चरणों में चंदन से लेपन करें।
गुरु चरणों की रज ही सब मंगल करें॥
झूम-झूम कर गुरु को गंध चढ़ा रहे।
मंगल वाद्य बजाकर पुण्य बढ़ा रहे॥

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

क्षायिक पदवी पाने जो मुनिव्रत धरें।
अक्षत पुंज चढ़ा हम अक्षय पद वरें॥
मन-वच-तन से करते हैं आराधना।
गुरु पूजा से पायेंगे सुख साधना॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

निर्गुंडी उत्पल गुलाब जूही सजा।
गुरु चरणों में पुष्पवृष्टि बाजे बजा॥
जिनवाणी घर-घर गुरुवर पहुँचा रहे।
सच्चे सुख की राह हमें बतला रहे॥

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

गुरु गुण गाये भक्ति रस में डूबकर।
अर्पित गुरु को आज मिठाई थाल भर॥
गुरु के दर पे आनंदामृत मिल रहा।
मुरझाया उपवन गुरुवर से खिल रहा॥

ॐ ह्रीं..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

रत्नमयी दीपों से गुरु की आरती।
गुरु की वाणी भव सागर से तारती॥
आर्ष मार्ग की रक्षा करने गुरु चले।
गुरु भक्ति से आगम का दीपक जले॥

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

धूप सुगंधित अग्नि पात्र में खे रहे।
कर्म नशाने नाम गुरु का ले रहे॥
तीर्थ बने गुरुवर के चरण जहाँ पड़े।
गुरु भक्ति में सदा रहेंगे हम खड़े॥

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

केला चीकू श्रीफल दाड़िम ला रहे।
फल के गुच्छ चढ़ाने चरणन् आ रहे॥
हरे-भरे फल से करते हैं अर्चना।
कवि हृदय गुरुवर की करते वंदना॥

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

श्री गुरुवर छत्तीस मूलगुण को धरें।
अर्घ चढ़ा हम भी उनके सद्गुण वरें।।
प्रज्ञायोगी गुरुवर की पूजा करें।
गुप्तिनंदी त्रय गुप्ति पालन करें।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : शांति पथ पर चल रहे, गुप्तिनंदी गुरुराज।
त्रय धारा जल से करे, पाने सुख का राज।।
शांतये शांतिधारा.....

दोहा : रंग-बिरंगे पुष्प ले, पुष्पों की ये माल।
गुरु चरणों में भेंट कर, काटूँ कर्मन जाल।।
दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ हूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सखी छंद- गुरु की जयमाला गायें, सुन्दर सी थाल सजायें।
नाना द्रव्यों की थाली, ध्वज श्रीफल नेवज वाली।।

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी का जयकार कीजिये।
गुरु नाम मंत्र का सदैव जाप कीजिये।।
कुंथु गुरु के लाल का सुंदर सा प्यारा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम।।1।।

है जन्म भूमि आपकी भोपाल नगरिया।
नगरी को छोड़ आप चले मोक्ष डगरिया॥
माता-पिता ने आपका राजेन्द्र रखा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥2॥

कुंथु गुरु के पास में ली आपने दीक्षा।
गुरु कनकनन्दी जी से ली है ज्ञान की शिक्षा॥
मुनि से बने आचार्य आप गोम्मटेश[1] धाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥3॥

पूजन भजन विधान कवितायें बनायें।
जिनभक्त को जिनभक्ति में गुरुदेव लगायें॥
हर एक विषय का विशेष आपको है ज्ञान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥4॥

सब कर्म-कष्ट-रोग हरे रत्नत्रय विधान।
धन-धान्य से पूरण करें गणधर वलय विधान॥
सुख-शांति विद्या ऋद्धि देवें चालीसा प्रधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥5॥

श्री विजय पताका त्रिकाल चौबीसी विधान।
श्री तीस चौबीसी नवग्रह शांति का विधान।
जिन पंचकल्याणक व विद्या प्राप्ति का विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥6॥

---

1. गोम्मटगिरी, इन्दौर।

है सर्वकार्य सिद्धी व श्रुतदेवि का विधान।
जिनदेव के विधान हैं कविता में सावधान॥
इत्यादि गुरुदेव ने लिखे सरल विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥7॥

धन धान्य से पूरण करें गुरुदेव का विधान।
हर भक्त के दुःख कष्ट हरे आपका विधान॥
सद्ज्ञान ऋद्धि-सिद्धि देवें आपका विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥8॥

गुरुवर जहाँ चरण धरें वो भूमि तीर्थ है।
गुरुवर की प्रेरणा से बना धर्म तीर्थ है॥
भक्ति से 'आस्था' करें, गुरुदेव का गुणगान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी आर्षमार्ग संरक्षक, श्रावक संस्कार उन्नायक, कविहृदय, महाकवि आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्रद्धा से 'आस्था' नमे, जोड़े दोनों हाथ।
गुरु चरणों में विनय से, सदा झुकाऊँ माथ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री आर्यिका पूजा

(तर्ज- हे दीनबन्धु...)

जिनराज के समोशरण में आप शोभती।
उपचार महाव्रत को धार भ्रमण मेटती॥
इन आर्यिकाओं की शरण को आज पाऊँगा।
स्थापना करूँगा बोधिलाभ पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित ब्राह्मी प्रमुख सर्वार्यिका समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

पावन जल चरण चढ़ाय, शुचिता माँग रहा।
त्रय रत्न मुझे मिल जाय, तव गुण गाय रहा॥
श्री मात श्रेष्ठ गुणखान, अर्चा सुखकारी।
ये गुरु शरण ही महान, भव भंजन हारी॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित ब्राह्मी प्रमुख सर्वार्यिका चरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

चंदन सम शीतल आप, शीतल गुण धारी।
चंदन अर्चा सब पाप, मोहतिमिर हारी॥ श्री मात.....॥

ॐ ह्रीं श्री .... चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मनहर अक्षत को लाय, अर्चा करते हैं।
श्रावक गुरु भक्ति रचाय, तुम गुण वरते हैं॥ श्री मात.....॥

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

सुरभित सुमनों की थाल, चरण चढ़ाता हूँ।
चरणों में रख यह भाल, मदन भगाता हूँ॥ श्री मात.....॥

ॐ ह्रीं श्री .... पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

षट्‌रस व्यंजन के थाल, तुमको अर्पित हो।
छूटे करमन का जाल, कष्ट विसर्जित हो॥ श्री मात.....॥

ॐ ह्रीं श्री .... नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

यह जगमग दीप महान, तम का नाश करे।
दीपक अर्चा अघ हान, ज्ञान प्रकाश करे।।
श्री मात श्रेष्ठ गुणखान, अर्चा सुखकारी।
ये गुरु शरण ही महान, भव भंजन हारी।।

ॐ ह्रीं श्री .... दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

मैं अगर-तगर की धूप, पूजन हित लाया।
छूटे मेरा भव कूप, भाव हृदय आया।। श्री मात.....।।

ॐ ह्रीं श्री .... धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

केला अंगूर अनार, आम चढ़ाता हूँ।
दो हमको भाव से तार, शीश झुकाता हूँ।। श्री मात.....।।

ॐ ह्रीं श्री .... फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जल चंदन आदि लाय, अर्घ बनाता हूँ।
ये मात शरण मिल जाय, अर्घ चढ़ाता हूँ।। श्री मात.....।।

ॐ ह्रीं श्री .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

पूर्णार्घ

दोहा : समोशरण के ईश को, झुक-झुक करूँ प्रणाम।
वहाँ विराजित अम्ब का, रटता हरदम नाम।।
लख पचास छप्पन सहस, दो सौ तथा पचास।
इनकी अर्चा से हटे, भव-भव के दुःख त्रास।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित ब्राह्मी प्रमुख पंचाशत्लक्षषट् पंचाशत् सहस्र द्वय शत पंचाशत् आर्यिका चरणेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : महिमा अगम अपार है, मात शरण सुखकार।
शांतिधार हम कर रहे, पुष्पांजलि हितकार।।

शांतये शांतिधारा.. दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री सर्व आर्यिका चरणेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

शंभु छंद

श्री आदिनाथ से सन्मति का, है समोशरण अतिशयकारी।
सब जीव परस्पर वैर छोड़, बन जाते सम्यक् व्रतधारी।।
माँ गणिनी ब्राह्मी से लेकर, चंदना जगत् में ख्यात हुईं।
वे छेदन करके नारी वेद, इन्द्रादिक पद को प्राप्त हुईं।।1।।

इसमें जितनी अम्बायें हैं, उनको वंदन सद्भावों से।
मिटता भव-भव का क्रंदन है, इनके वंदन के भावों से।।
सम्यक्त्व गुणों की धारी माँ, अठबीस मूलगुण धारी हो।
सागार भाव के तजने से, शिवपथ गामी अनगारी हो।।2।।

उपचार महाव्रत धारण कर, उपसर्ग परीषह जय करतीं।
मुनिसम चर्या पालन करके, निज कर्म आपदा को हरतीं।।
माता 'ब्राह्मी' गणिनी आर्या, दूजी श्री अम्ब 'प्रकुब्जा' है।
ये मात 'धर्मश्री' धर्म कहे, भक्तों ने इनको पूजा है।।3।।

चौथी गणिनी 'मेरुषेणा', फिर मात 'अनंता' पंचम हैं।
'रतिषेणां' 'मीना' 'वरुणा' वा, 'घोषा' 'धरणा' सर्वोत्तम हैं।।
हे अम्ब ! 'धारणी' 'वरसेना', 'पद्मा' व 'सर्वश्री' माता।
जगमात 'सुव्रता' 'हरिषेणा', जगदम्ब 'भाविता' दे साता।।4।।

'कुन्थुसेना' बन्धुसेना श्री मात, 'पुष्पदत्ता' प्यारी।
श्रीमात 'मार्गिणी' 'राजमति', गणिनी सुलोचना सुखकारी।।
श्री वीर प्रभु का समोशरण, उसकी गणिनी चंदनबाला।
चौबीसों गणिनी माता की, सब अर्चा कर फेरों माला।।5।।

यतिनी-श्रमणी-अम्बा-अज्जा, साध्वी-आर्या-त्यागिन माता।
भिक्षुणी-तापसी-तपस्विनी, इत्यादि तुम संज्ञा माता।।
तव नाम अनेक कहें ज्ञानी, हे ज्ञान प्रचारक शिवगामी।
सुज्ञान दीप का दान करो, हे तमहर ! सुखकर अभिरामी।।6।।

जयघोष करे जयमाल पढ़ें, कर्मों पर जय पाने हेतू।
माँ आप दर्श समझाता है, संयम पथ ही सबका सेतू।।
हे माता ! तेरी पूजन से, हम निज स्वरूप को पायेंगे।
वंदन कीर्त्तन अर्चन करके, शिव 'राज' पथिक बन जायेंगे।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्वार्यिका चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : सर्व आर्यिका मात का, सरल धवल आचार।
धवल पुष्प उनको चढ़ा, पाऊँ धवल विचार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी की पूजा

हे राजश्री ! माता तुम्हारे, चरण में वंदन करूँ।
आह्वान करती हूँ तुम्हें, तुमको हृदय धारण करूँ।।
मम पाप पंक विनाश होवे, मात तेरी भक्ति से।
संसार दुःख से छूट जाऊँ, पूजूँ मन-वच शक्ति से।।

ॐ ह्रीं श्री गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

प्रासुक ये निर्मल नीर मैं, माता चरण में चढ़ा रहा।
मम जन्म मृत्यु विनाश करने, मैं शरण नित आ रहा।।
हे अम्ब ! तेरे चरण की, मैं नित करूँ आराधना।
पावन शरण मिल जाये तो, हो जाये पाप विराधना।।

ॐ ह्रीं श्री गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

केशर सुगन्धित गंध चंदन, आज मैं अर्पित करूँ।
शीतल सुगन्धित गंध से, तव चरण मैं अर्चित करूँ।। हे अम्ब.......

ॐ ह्रीं श्री ....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

उज्ज्वल अखंडित धवल तंदुल, आज चरण चढ़ा रहे।
अक्षयनिधि की प्राप्ति हेतु, मात के गुण गा रहे ॥
हे अम्ब ! तेरे चरण की, मैं नित करूँ आराधना।
पावन शरण मिल जाये तो, हो जाये पाप विराधना॥

ॐ ह्रीं श्री ....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

फूलों सी कोमल माँ तुम्हारी, पुष्प से अर्चा करें।
हम कामबाण विनाश हेतु, धर्म की चर्चा करें ॥ हे अम्ब.......

ॐ ह्रीं श्री ....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

भटका रही यह भूख तृष्णा, चार गति के भ्रमण में।
व्यंजन समर्पित करके पाऊँ, मात तेरी शरण में ॥ हे अम्ब.......

ॐ ह्रीं श्री ....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

निज मोह ममता त्याग जिसने, साम्य सुख को पा लिया।
अज्ञान तम को दूर करके, ज्ञान दीप जला दिया ॥ हे अम्ब.......

ॐ ह्रीं श्री ....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

माता असाता मेट कर, हमको सदा प्रमुदित करें।
कर्मों की धूम नशाने हेतु, धूप हम अर्पित करें ॥ हे अम्ब.......

ॐ ह्रीं श्री ....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

निज मोक्षफल की प्राप्ति हेतू, सरस फल से अर्चना।
हर लेती है संताप सारे, माँ तुम्हारी देशना ॥ हे अम्ब.......

ॐ ह्रीं श्री ....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जल-चंदनादि अर्घ का, शुभ थाल भरकर ला रहे।
हम मोक्षपद के लाभ हेतु, तव शरण में आ रहे॥ हे अम्ब.......

ॐ ह्रीं श्री ....अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा : मात मूर्ति वात्सल्य की, काव्य कुमुदनी आप।
शांतिधार पुष्पांजलि, नश सकल संताप॥

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : राजश्री जगमात हैं, ज्ञान-ध्यान भण्डार।
गाओ जयमाला सभी, हो जाओ भवपार॥

माँ रुक्मणि को शुभ स्वप्न दिखा, देवी ने उदर प्रवेश किया।
शुभ कन्या ने जब जन्म लिया, माता को भी आनंद दिया॥
मध्यांचल नगर रायपुर का, चमका तब भाग्य सितारा था।
शुभ नाम तिहारा था संध्या, रंग रूप मनोहर प्यारा था॥
संसार असार समझ करके, मन में जिनके वैराग्य जगा।
भाई-बहना घर बार छोड़, मुक्ति पथ का अनुराग लगा॥1॥
संघर्ष किया नहीं कदम डिगा, दृढ़ता से शिवपथ अपनाया।
निज बरस बीस की लघु वय में, जिनमत का झण्डा फहराया॥
क्षुल्लिका दीक्षा देख सकल, भूमि छिंदवाड़ा धन्य हुई।
कल्याण सिन्धु से आर्यिका, दीक्षा पाकर तुम धन्य हुई॥2॥
गणधर सूरी कुन्थु ऋषि ने, गणिनी पद का सम्मान दिया।
आचार्य कनकनंदी गुरु ने, अनमोल ज्ञान धन दान दिया॥
उपचार महाव्रत की धारी, तुम आतम ब्रह्म बिहारी हो।
नर-नारी से हो पूज्य सदा, सब जन की संकट हारी हो॥3॥
मुनिसम चर्या पालन करती, अठबीस मूलगुण धरती हैं।
नवधा भक्ति से ले आहार, माता संयम से रहती हैं॥
हे माता ! तेरी पूजा से, भव-भव के अघ मिट जाते हैं।
जो भव्य शरण में आते हैं, वात्सल्य आपका पाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : मात आपके चरण में, झुका रहें हम माथ।
'क्षमा' सदा तव गुण वरें, तव चरणों के साथ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी की पूजा

शंभु छंद

हे मात ! राजश्री जगजननी, वात्सल्यमूर्ति मनहारी हो।
दर्शन कर ऐसे मन हर्षे, ज्यों मूरत अतिशयकारी हो।।
हे अतिशयकारी ! मूरत माँ, इस भक्त हृदय में आ जाओ।
हम सुमन लिए आह्वान करें, आओ ज्ञानामृत बरसाओ।।

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री मात ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शेर छंद

जल का कलश लिये चला मैं हस्त-कमल में।
भक्ति से पखारूँ तुम्हारे चरण-कमल मैं।।
हे मात ! मेरा भव-भ्रमण विनाश कीजिए।
हे मात ! राजश्री मुझे वरदान दीजिए।।

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

माँ ! आपका स्वभाव गंध से भी शीत है।
इस हेतु मुझे गंध चढ़ाने की प्रीत है।।
भवताप नाश हित चरण की छाँव दीजिए। हे मात !......

ॐ ह्रीं ....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक पदों की चाह आपकों नहीं रही।
अक्षत चढ़ाके पाऊँ आपके सुगुण वही।।
हे मात ! मुझे आपसा गुणवान कीजिए। हे मात !......

ॐ ह्रीं ....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ आपके हृदय कमल में राजते प्रभो।

तुमको हृदय बसाय देखूँ मैं भी वो प्रभो।।

मैं भी चढ़ाऊँ कमल काम नाश कीजिए। हे मात !......

ॐ ह्रीं ....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी मधुर तिहारी भक्त मनहरण करें।

व्यंजन मधुर चढ़ाके भव्य भवभ्रमण हरें।।

हे माँ ! क्षुधाहरण का सत्यज्ञान दीजिए। हे मात !......

ॐ ह्रीं ....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ ! आपको निरख-निरख के मन नहीं भरे।

लेकर ये दीपमाल भक्त आरती करे।।

हे मात ! मुझे आप जैसा ज्ञान दीजिए। हे मात !......

ॐ ह्रीं ....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य छवि आपकी वैराग्य जगाऐ।

ये धूप अर्चना महासौभाग्य जगाऐ।।

हे अम्ब ! कर्म की ये आग शांत कीजिए। हे मात !......

ॐ ह्रीं ....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले आश आप शिवनगर की शिवडगर चली।

उत्तम समाधि साध स्वर्गलोक में पली।।

मैं फल चढ़ाऊँ मुझको मोक्षधाम दीजिए। हे मात !......

ॐ ह्रीं ....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य शील प्रेम दया आपकी सखी।

गुणगान गाते-गाते मेरी ये कलम थकी।।

फल अर्घ्य का अनर्घपद प्रदान कीजिए। हे मात !......

ॐ ह्रीं ....अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिप्रिय हे मात श्री !, शांत स्वभावी आप।
शांतिधारा मैं करूँ, शांत करूँ सब पाप॥

शांतये शांतिधारा।

मातृहृदय माँ आपका, कोमल पुष्प समान।
पुष्पांजलि मैं कर रहा, जपूँ राजश्री नाम॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : मात तेरा गुणगान ही, करे हमें गुणवान।
मात राजश्री दो हमें, मुक्ति महल महान॥

(तर्ज- चंदा तू ला रे चंदनिया...)

हे माँ ! तेरी जयमाला, देती हमको गुणमाला।
जयमाला गायें हम सब आपकी...
हो मैया जयमाला गायें हम सब आपकी॥

मात रुक्मिणी देखे सपना, देवी स्वर्ग से आये-2
स्वर्ग धरा से जिनमंदिर आ, गृहप्रवेश कर जाये-2
वो देवी गर्भ में आये, माता को धन्य बनाये।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥1॥

अवधपुरी के ऋषभदेव की, ब्राह्मी सुंदरी न्यारी-
वैसे ऋषभचंद के घर में, जन्में संध्या प्यारी-2
वो सत्रह मार्च कहाये, सन् इकसठ धन्य कहाये।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥2॥

धर्म-ध्वजा ले रायपुर में, पुष्पदंत गुरु आये-2
संध्या का उन चरण पुष्प में, भाग्य पुष्प खिल जाये-2
फिर संघ छिंदवाड़ा जाये, माँ क्षुल्लिका पद पाये।
जयमाला गायें हम सब आपकी.... ॥3॥

श्री कल्याण ऋषि कल्याणी, आर्यिका पद दाता-2
नाम राजश्री रखा तुम्हारा, जो सबके मन भाता-2
श्योंपुर नगरी हर्षाये, तुम जैसी माँ को पाये।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥4॥

कुंथुसिंधु का कनकनंदी से, भव्य मिलन जब होवें-2
नगर अहमदाबाद तुम्हारा, गणिनी महोत्सव होवे-2
कुंथुसागर गुरू ज्ञानी, गणिनी पद दीक्षा दानी।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥5॥

कनकनंदी गुरु से शिक्षा पा, पूजन-भजन रचायें-2
गुप्तिनंदी गुरु के संघ में रह, नवजीवन विकसायें-2
जो तेरा प्रवचन सुनता, वो तेरा ही पथ चुनता।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥6॥

गणधर वलय विधान तुम्हारी, अनुपम काव्यकृति है-2
छंद अलंकारों की मानो, माता भव्य सखी है-2
तुमको महाज्ञानी बोलूँ, या फिर जिनवाणी बोलूँ।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥7॥

जैसा सुंदर रूप तुम्हारा, वैसे गुण मनहारे-2
फूला नहीं समाये वो जो, तेरा रूप निहारे-2
जब तक ना मुक्ति पायें, तुम जैसी माँ हम पायें।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥8॥

तेरे चरण पड़ें जिस कुटिया, महल वहाँ बन जाये–2
जिस पर आशीर्वाद तुम्हारा, उसके दिन फिर जाये–2
मुस्काती छवि तुम्हारी, सारे सुख की भंडारी।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥9॥

आ औरंगाबाद नगर में, जग से मुखड़ा मोड़ा–2
तुमने हमको छोड़ा या माँ, हमें भाग्य ने छोड़ा–2
माता मेरे मन बसती, चाहे स्वर्गों में रहती।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥9॥

यम ने जाल बिछाया तुम पर, फिर भी तुम ना हारी–2
यम सल्लेखन धार मनाया, मृत्यु महोत्सव भारी–2
गुप्ति गुरु के पद पाये, निर्यापक उन्हें बनायें।
जयमाला गायें हम सब आपकी....॥10॥

हे माँ ! हमसे गुरु दक्षिणा, चाहे कुछ भी ले लो–2
मात राजश्री 'सुलभगुप्त' को, मुक्ति राजश्री दे दो–2
हम तेरे बाल सुलभ हैं, माँ तुमसे नहीं अलग हैं।
जयमाला गायें हम सब आपकी..हे मैया..॥11॥

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : मुझमें आन विराजिये, मात राजश्री आप।
जिस मन राजे तुम चरण, उसके कटते पाप॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी यक्ष–यक्षिणी पूजा

स्थापना (शंभु छन्द)

श्री ऋषभदेव से सन्मति तक, तीर्थंकर तीर्थ प्रवर्त्तक हैं।
श्री यक्ष यक्षिणी चौबीसों, उनके जिनशासन रक्षक हैं।।
ये प्रभु के समवशरण में जा, सम्यग्दर्शन स्वीकार करें।
ले पुष्प उन्हें आमंत्रण दे, हम मनहारी मनुहार करें।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष–यक्षिणी समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

हम चाँद के समान चाँदी के कलश भरें।
जल धार दे समस्त देवता को खुश करें।।
चौबीस जिनवरों के यक्ष और यक्षिणी।
जिनकी महान अर्चना हैं पाप भक्षिणी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष–यक्षिभ्यो जलं समर्पयामीति स्वाहा।

धर धर्म प्रेम तुम अधर्मी को सुधारते।
हम गंध चढ़ा आपको सदा पुकारते।। चौबीस....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री .... चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

हम ताल बजा थाल सजा रत्न ला रहे।
तुम सम हि रत्नत्रय की भावना बढ़ा रहे।। चौबीस....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षतं समर्पयामीति स्वाहा।

जसवंत कमल केवड़ा गुलाब मोगरा।
तुमको चढ़ा डँसे न हमें पाप कोबरा।। चौबीस....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री .... पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

तिलपट्टी गजक रसमलाई खीर सिवैया।
स्वीकारिये हे यक्ष और यक्षिणी मैया।। चौबीस....।।5।।

ॐ ह्रीं श्री .... नैवेद्यम् समर्पयामीति स्वाहा।

सुज्ञान दीप तीन आप में सदा जले।
हम आरती करें हमारे विघ्न दुःख टले।। चौबीस....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

जाकर समोशरण में आप धूप चढ़ाते।
हे धर्म मित्र हम भी तुम्हें धूप चढ़ाते।।
चौबीस जिनवरों के यक्ष और यक्षिणी।
जिनकी महान अर्चना हैं पाप भक्षिणी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री .... धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

तोता दशहरी कलमी हाफूसादि आम ले।
तुमको चढ़ायें हम सभी तुम्हारा नाम ले।। चौबीस....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री .... फलं समर्पयामीति स्वाहा।

माता-पिता समान यक्ष और यक्षिणी।
वसुद्रव्य चढ़ा हम हो धर्म पुण्य से धनी।। चौबीस....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री .... अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व आभरण से तुम स्वयं को सजाते।
हम दिव्य वस्त्र आभरण से तुमको सजाते।। चौबीस....।।10।।

ॐ ह्रीं श्री .... वस्त्राभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

शासन देवी देव को, शांतिधार से पूज।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, पाऊँ सौख्य निकुंज।।

शांतये शांतिधारा.......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चतुर्विंशति यक्ष-यक्षिणीभ्यो नमः (9, 27 या 108 बार जाप करे।)

जयमाला

दोहा : **यक्ष यक्षिणी आपने, पाया पुण्य विशाल।**
उसी पुण्य का गीत ये, सुंदर सी जयमाल।।

नरेन्द्र छंद

वृषभदेव से महावीर का, समोशरण मन भावन था।
सुर नर पशुओं के कोठे का, जिसमें श्रेष्ठ विभाजन था।।
उन बारह कोठों में से शुभ, आठ कोठ देवों के हैं।
उनमें से भी शुभ छह कोठे, भवनत्रिक देवों के हैं।।1।।

उन भवनत्रिक देवों में कुछ, यक्ष-यक्षिणी देव बने।
जनम जनम के पुण्य योग से, ये जिनशासन देव बने॥
समोशरण में जाकर के ये, सम्यग्दर्शन पाते हैं।
धर्म धर्मी की रक्षा करके, अपना धर्म निभाते हैं॥2॥
तीर्थंकर के भक्तों में ये, प्रमुख भक्त कहलाते हैं।
इस हित जिन प्रतिमा में भविजन, इनकी मूर्ति बनाते हैं॥
जैनधर्म में इनकी प्रीति, और प्रीत जिन भक्तों में।
इस कारण ये साथ निभाते, जिन भक्तों का कष्टों में॥3॥
पार्श्वनाथ के उपसर्गों को, पद्मावती धरणेन्द्र हरें।
गुल्लिकाजी बन कुष्मांडिणी माँ, गोम्मटेश का न्हवन करें॥
कुंदकुंद आचार्य गये जब, श्री गिरनारी की चोंटी।
तब कुष्मांडिणी जिनमत जय हित, आद्य दिगम्बर बोल उठी॥4॥
अहिच्छत्र पारस के फण पर, पद्मावती माँ श्लोक लिखे।
जिसको पढ़ कल्याण करें, श्री पात्रकेसरि मुनि बनके॥
वाद विजय अकलंकदेव को, चक्रेश्वरी दिलाती हैं।
मानतुंग मुनि की रक्षा हित, भक्तामर लिखवाती हैं॥5॥
भद्र समंत महामुनिवर के, ज्वाला माँ दुर्दैव हरें।
सोमा सीता चंदन अंजन, सबकी रक्षा देव करें॥
जो श्रद्धा से नित्य आपका, शुभ सम्यक् सम्मान करें।
परम दयालु देव आप सब, उनको सब कुछ दान करें॥6॥
हमें आप धन धर्म पुण्य वा, पुत्र संपदा दान करो।
हम बच्चों के मात-पिता तुम, हम बच्चों पर ध्यान करो॥
अर्घ वस्त्र भूषण हम लाये, उसको तुम स्वीकार करो।
आप हमारे अपने ही हो, अपनों का उद्धार करो॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा : माता-पिता सम आप हो, हे जिनशासन देव।
हम बालक हैं आपके, रखना लाज सदैव॥
जिनशासन की कीर्ति को, करदो 'चंद्र' समान।
तुम जिनशासन देव हो, जिनशासन के प्राण॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी छ्यानवे क्षेत्रपाल पूजा

स्थापना (गीता छन्द)

वृषभादि सब तीर्थेश के श्री क्षेत्रपाल सुज्ञानमय।
प्रत्येक प्रभु के चार वा, कुल छानवे सम्यक्त्वमय॥
श्री क्षेत्रपाल विधान में, सब क्षेत्रपाल पधारिये।
जिनभक्त की बिगड़ी घड़ी, हे क्षेत्रपाल सुधारिये॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपाल समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चामर छंद)

तीर्थक्षेत्र का सुनीर क्षेत्रपाल के लिये।
नीर धार दे समस्त भक्त शांति से जिये॥
क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल आइये।
भक्त के समस्त विघ्न कष्ट को नशाइये॥1॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो शाकिनीभूतप्रेत-पिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामडामरदुरितारिमारी घोरोपद्रव विध्वंसकाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

आपके लिए गुलाल तेल गंध इत्र हैं।
आज देव रूप में मिले हमें सुमित्र हैं॥ क्षेत्रपाल....॥2॥

ॐ ह्रां ह्रीं .... चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

रत्न अक्षतों स्वरूप रत्न का किरीट[1] ले।
आपको चढ़ाय छाँव सर्व विघ्न की टलें॥ क्षेत्रपाल....॥3॥

ॐ ह्रां ह्रीं .... अक्षतं समर्पयामीति स्वाहा।

पितृ तुल्य क्षेत्रपाल देव आप छानवे।
आपके लिए गुलाब आदि पुष्प छानवे॥ क्षेत्रपाल....॥4॥

ॐ ह्रां ह्रीं .... पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

---

1. मुकुट।

राजभोग रेवड़ी जलेबियाँ मिठाइयाँ।
क्षेत्रपाल देव को चढ़ा प्रसन्न हैं किया।।
क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल आइये।
भक्त के समस्त विघ्न कष्ट को नशाइये।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो शाकिनीभूतप्रेत–पिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामडामरदुरितारिमारी घोरोपद्रव विध्वंसकाय नैवेद्यम् समर्पयामीति स्वाहा।

स्वर्णथाल भव्य लक्ष[1] लक्ष दीपमाल की।
आरती करो सभी समस्त क्षेत्रपाल की।। क्षेत्रपाल....।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं .... दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

आप मातृ–पितृ भातृ बंधु के समान हो।
देव आपके लिये विशेष धूप दान हो।। क्षेत्रपाल....।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं .... धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

भेंट आपको खजूर बैर–बिल्व[2] आँवला।
दो हमें सुगीत काव्य वाद्य नाट्य की कला।। क्षेत्रपाल....।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं .... फलं समर्पयामीति स्वाहा।

दिव्य नीर दिव्य पुष्प आदि दिव्य अर्घ ले।
दिव्य अर्घ आपको चढ़ाय आपदा टले।। क्षेत्रपाल....।।9।।

ॐ ह्रां ह्रीं .... अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री क्षेत्रपाल शृंगार (मोतियादाम छंद)

(तर्ज : आरती कुंज बिहारी की..) (मारने वाला है भगवान....)

वस्त्र में कनकझरी कनकाभ, चढ़ाकर हो सारे सुख लाभ।
मिले हमको उनका आभार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो वस्त्रं समर्पयामीति स्वाहा।

जनेऊ जिसकी धातु हेम[3], चढ़ाकर मिले कुशलता क्षेम।
बढ़े हम में श्रावक संस्कार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार।।2।।

1. लाख, 2. बेल नाम का फल, 3. सोना।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो यज्ञोपवीतं समर्पयामीति स्वाहा।

अंगूठी कण्ठी बाजूबंद, चढ़ाकर मिले सदा आनंद।
सजा बहु भूषण से मनहार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार॥3॥

ॐ ह्रीं श्री .... आभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

चढ़ाकर चमचम रत्नकिरीट, सदा हो हम भक्तों की जीत।
हृदय में नहीं भक्ति का पार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार॥4॥

ॐ ह्रीं श्री .... किरीटं समर्पयामीति स्वाहा।

तेल गुड़ चना व तिल सिंदूर, थाल में ध्वज वा उड़द मसूर।
चढ़ाकर हो सब दुःख परिहार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार॥5॥

ॐ ह्रीं श्री .... तेल गुड़ आदि यज्ञभागं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल के चरण में, शांतिधार मनहार।
पुष्पांजलि कर आपको, जीवन हो सुखकार॥

शांतये शांतिधारा......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षेत्रपालेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : क्षेत्रपाल के नेत्र से, अपने नेत्र मिलाय।
जयमाला पढ़कर हमें, इच्छित फल मिल जाय॥

शेर छंद

जय क्षेत्रपाल आप तीर्थ क्षेत्र पालते।
जय क्षेत्रपाल तीर्थ के सब दोष टालते॥
जय क्षेत्रपाल आप धर्म क्षेत्र पालते।
जय क्षेत्रपाल धर्म के सब विघ्न टालते॥1॥
जय क्षेत्रपाल सर्व जैन शास्त्र पालते।
जय क्षेत्रपाल सर्व अन्य शास्त्र टालते॥
जय क्षेत्रपाल श्रेष्ठ है सम्यक्त्व पालते।
जय क्षेत्रपाल देवजी मिथ्यात्त्व टालते॥2॥

जय क्षेत्रपाल सब जिनायतन को पालते।
जय क्षेत्रपाल सब अनायतन को टालते॥
जय क्षेत्रपाल देव जैनधर्म पालते।
जय क्षेत्रपाल देव अन्य धर्म टालते॥3॥
जय क्षेत्रपाल ऋषि-मुनि को नित्य मानते।
जय क्षेत्रपाल मुनियों के उपसर्ग टालते॥
जय क्षेत्रपाल संघ चतुर्विध को मानते।
जय क्षेत्रपाल संघ के संकट को टालते॥4॥
जय क्षेत्रपाल शीलवान नर को पालते।
जय क्षेत्रपाल उनके सर्व दुःख को टालते॥
जय क्षेत्रपाल जी सदा सतियों को मानते।
जय क्षेत्रपाल सतियों के अपवाद टालते॥5॥
जय क्षेत्रपाल सर्व धर्मीजन को पालते।
जय क्षेत्रपाल धर्मीजन के क्लेश टालते॥
जय क्षेत्रपाल भक्त को सदा ही पालते।
जय क्षेत्रपाल भक्त की व्यथा को टालते॥16॥
जय क्षेत्रपाल छहों आयतन को पालते।
जय क्षेत्रपाल छह अनायतन को टालते॥
जय क्षेत्रपाल जैन मंदिरों में राजते।
जय क्षेत्रपाल उनके सर्व कष्ट टालते॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो शाकिनीभूतप्रेत-पिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामडामरदुरितारिमारी घोरोपद्रव विध्वंसकाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा : क्षेत्रपाल बाबा रखो, सब क्षेत्रों की लाज।
'चंद्रगुप्त' कहता सुनो, भक्तों की आवाज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री भैरव पद्मावती पूजा

(गीता छंद)

पद्मावती हंसासनी, हे धर्मतीर्थ निवासिनी !।
प्रभु पार्श्व को मस्तक धरे, चौबीस बाहु धारिणी।।
श्रृंगार सोलह हम करें, संगीत संग गोदी भरें।
दरबार पुष्पों से सजा, आह्वान हम तेरा करें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनशासन यक्षिणी धरणेन्द्र प्रिये हे पद्मावती महादेवी ! अत्रागच्छ-2 तिष्ठ-तिष्ठ इति आव्हानम्। स्थापनम्। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती देव्यै स्वाहा, ॐ पद्मावती परिजनाय स्वाहा। पद्मावती अनुचराय स्वाहा। पद्मावती महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भू स्वाहा। र्भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।

(यहाँ पर हल्दी, कुंकुम, पीले चावल या सरसों 14 बार चढ़ाना है।)

(शेर छंद)

सोने की झारी में चढ़ायें, नीर आपको।
पद्मावती माता मिटाओ, सर्व पाप को।।
हे धर्मतीर्थ वासिनी, पद्मावती माता।
सुख शांति दे सौभाग्य दे, पद्मावती माता।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै जलं समर्पयामि स्वाहा।

प्रभु पार्श्व के चरण से, माँ ने शीश सजाया।
उस शीश पे ही हमने आज गंध लगाया।। हे धर्म...।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै गंधं समर्पयामि स्वाहा।

गज मोती हार से, तुम्हारा कंठ सजायें।
अक्षय अखंड तंदुलों के पुंज चढ़ायें।। हे धर्म...।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा।

हे माँ ! तुम्हें सब देश के, हम पुष्प चढ़ायें।
पुष्पों से तेरे द्वार को, व तुमको सजायें।। हे धर्म...।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा।

छप्पन प्रकार व्यंजनों के, थाल चढ़ायें।
तेरी कृपा प्रसाद, भाग्यवान ही पाये।।
हे धर्मतीर्थ वासिनी, पद्मावती माता।
सुख शांति दे सौभाग्य दे, पद्मावती माता।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा।

लाखों करोड़ दीप से, हम आरती करें।
सम्यक्त्व दीप आत्म ज्ञान, भारती वरें।। हे धर्म...।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा।

गुग्गुल दशांग धूप अग्नि, में ही जलायें।
तू कष्टहारिणी हमारे, कष्ट जलाये।। हे धर्म...।।7।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा।

हाथों में मातुलिंग नित्य, शोभता तेरे।
मेवा मनोज्ञ फल चढ़ायें, गोद में तेरे।। हे धर्म...।।8।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै फलं समर्पयामि स्वाहा।

हर कार्य पूर्व मात, तुझे अर्घ चढ़ायें।
निर्विघ्न कार्य पूर्ण करने, तुमको बुलायें।। हे धर्म...।।9।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा- जल ले कंचन कुंभ में, करते शांतिधार।
पुष्पांजलि अर्पण करें, और करें जयकार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र-ॐ आं क्रौं ह्रीं धर्मतीर्थ निवासिनी पद्मावती महादेव्यैः नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- पद्मावती जगदंब की, गायें हम जयमाल।
जो गाये जयमाल यह, होवे मालामाल।।

(शंभु छंद)

जय समतामूरत बालयति, जय चिंतामणि पारस देवा।
जय अश्वसेन वामानंदन, उपसर्गजयी पारस देवा॥
हे नाथ ! आपके जीवन से, पद्मावती माँ का नाम अमर।
हम उसकी जयमाला गायें, बनने श्री शाश्वत सिद्ध अमर॥1॥

युवराज पार्श्व तीर्थंकर जिन, वन में मित्रों संग जाते हैं।
वहाँ तापस का खोटा तप लख, उसको प्रभुवर समझाते हैं॥
वे जलते नाग युगल को लख, उनको नवकार सुनाते हैं।
वे नाग युगल मरकर तत्क्षण, यक्षेन्द्र युगल बन जाते हैं॥2॥

इक दिन प्रभु ने मुनि मुद्रा धर, जब वन में ध्यान लगाया था।
तब तापस ने कमठासुर बन, प्रभु पर उपसर्ग रचाया था॥
भव-भव के सब उपसर्गों को, वो सात दिवस दोहराता है।
पर समता मूरत पारस को, वो किंचित् डिगा न पाता है॥3॥

आसन कम्पित लख यक्ष युगल, तत्क्षण प्रभु सेवा में आये।
पद्मावती प्रभु को शीश धरे, धरणेन्द्र यक्ष फण फैलाये॥
तब भीषण शब्द करे पद्मा, जिसको सुन व्यंतर भाग गया।
उपसर्ग मिटा प्रभु पारस का, प्रभु का केवल रवि जाग गया॥4॥

प्रभु की रक्षा को जब तुमने, अति भीषण शब्द किया माता।
तब से भैरव पद्मावती माँ, जग में तुम नाम पड़ा माता॥
फटकार तुम्हारी सुन माता, व्यंतर डर भागा भरमाया।
सारी दुनिया में डरा छिपा, आखिर में प्रभु शरणा आया॥5॥

पारस प्रभु की शासन यक्षी, पद्मावती माता कहलाई।
पारस प्रभु की जिनधर्म ध्वजा, तुमने माँ जग में फहराई॥
कई आचार्यों मुनिराजों का, तूने उपसर्ग मिटाया है।
सतियों की लाज बचा तूने, दुष्टों को मार भगाया है॥6॥

पारस प्रभु के सब तीर्थों में, माँ तू अतिशय दिखलाती है।
तुम चमत्कार सुन द्वार तेरे, भक्तों की टोली आती है।।
जिनदत्तराय को माँ तू ही, काशी से हुमचा में लाई।
श्री हुमचा अतिशय क्षेत्र बना, बस तेरी महिमा से माई।।7।।

इस तीरथ में नव चमत्कार, माँ अब भी होते रहते हैं।
भक्तों के प्रश्नों पर मैय्या, तव कर से फूल बरसते हैं।।
जिसने व्रत संपत् शुक्रवार, विधिवत श्रद्धा से पाल लिया।
उसको रुक्मा सम माँ तूने, बिन माँगे मालामाल किया।।8।।

हे भैरव पद्मावति माता, जब से तुम धर्मतीर्थ आयी।
इसमें बसने से पहले माँ !, तुम भारत भ्रमण रचा आयीं।।
दुनियाँ के चारों दिश में माँ, तुम इसका यश फैलाती हो।
आने वाले हर भक्तों को, अपना अतिशय दिखलाती हो।।9।।

माँ जो तेरा श्रृंगार करे, उसके तू सब भंडार भरे।
जो तेरा नित अभिषेक करे, उसका तू सुख अभिषेक करे।।
माता जो तुझे झुलाता है, वो जग सुख झूला पाता है।
जो हल्दी कुमकुम भेंट करे, वो चिर सौभाग्य बढ़ाता है।।10।।

जो तव मंदिर निर्माण करे, सुन्दर प्रतिमा का दान करे।
उसके यश वैभव कीर्ति बढ़े, वो नित अपना उत्थान करे।।
परिवार ज्ञान धन मान बढ़े जिन दीक्षा ले कल्याण करे।
'गुप्तिनंदी' के भाव यही, माँ जिनशासन उत्थान करे।।11।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं स्वायुध वाहन वधू चिन्ह परिवार सहित सर्वरोग-दुःख-संकट-कष्ट-पीड़ा निवारिणी, पुत्र-पौत्र-धन-धान्य, सुख-समृद्धि, विद्या-बुद्धि ऐश्वर्य प्रदायिनी हे पद्मावती महादेवी तुभ्यं जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा- माँ भैरव पद्मावती, तेरा किया विधान।
आस्था से माँ तू बढ़ा, धर्मतीर्थ की शान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री पद्मावती पूजन

स्थापना (गीता छंद)

हंसासनी जिनशासनी पद्मासनी पद्मावती।
श्री पार्श्वजिन चरणासनी कमलासिनी पद्मावती॥
श्री पार्श्वप्रभु के पार्श्व में तुमने वरा सम्यक्त्व को।
हम पूजते माँ आपके सम्यक्त्वमय व्यक्तित्व को॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री प्रशस्त वर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन-सचिह्न सपरिवार हे पद्मावती देवी ! अत्र ऐहि-ऐहि संवौषट् आव्हानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

पद्मावती को पद्म सरोवर का जल चढ़ा।
जीवन में सबके सौख्य सरोवर का जल बढ़ा॥
पद्मावती माँ हमको संकटों से तार दे॥
हे भगवती ! पद्मावती बिगड़ी सुधार दे॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पार्श्वनाथभक्त धरणेन्द्र भार्यायै श्री पद्मावती महादेव्यै जलं समर्पयामीति स्वाहा।

मेंहदी व महावर में चंदनादि मिलाके।
चरणों को रंगू लाल-लाल रंग खिलाके॥ पद्मावती...॥2॥

ॐ आं .... चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

अक्षत स्वरूप रत्नमयी दिव्य आभरण।
माँ आपको चढ़ा सफल है तन व मन वचन॥ पद्मावती...॥3॥

ॐ आं .... अक्षतं समर्पयामीति स्वाहा।

पदपद्म में पद्मावती के पद्म सजाऐं।
बन धर्मपुत्र पद्मिनि मैया को रिझाऐं॥ पद्मावती...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पार्श्वनाथभक्त धरणेन्द्र भार्यायै श्री पद्मावती महादेव्यै पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

हम आपके बच्चे हैं आप मात हमारी।
स्वीकार के मिठाई हरो रोग बीमारी।।
पद्मावती माँ हमको संकटों से तार दे।।
हे भगवती ! पद्मावती बिगड़ी सुधार दे।।5।।

ॐ आं .... नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

संगीत संग आरती हे मात ! तिहारी।
वरदानी वर में गीतकला दीजिए न्यारी।। पद्मावती...।।6।।

ॐ आं .... दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

ले धूप मात नाम जाप जो सदा करें।
वो भूत-प्रेत-व्यंतरों की आपदा हरें।। पद्मावती...।।7।।

ॐ आं .... धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

हर भक्त के हृदय बसी तू भक्त वत्सला।
हम फल चढ़ा रहे हैं मात कीजिए भला।। पद्मावती...।।8।।

ॐ आं .... फलं समर्पयामीति स्वाहा।

जिसने बिठाया सिर पे प्रभु पार्श्वनाथ को।
हम अर्घ चढ़ायें उसी जगपूज्य मात को।। पद्मावती...।।9।।

ॐ आं .... अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

माँ दिव्य वस्त्र आभरण से आपको सजा।
हर भक्त आपका महान भाग्य से सजा ।। पद्मावती...।।10।।

ॐ आं .... वस्त्राभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा : पद्मरागमणि से सजा, कलश पद्म[1] आकार।
पद्मरूप पद्मिनि तुझे, भेंट शांति की धार।।

शांतये शांतिधारा।

1. कमल।

पद्मादिक बहु पुष्प से, हस्त पद्म सज जाय।
पुष्पाञ्जलि कर भक्त का, भाग्य पद्म सज जाय॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पदमावती देव्यै नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **प्रिया देव धरणेन्द्र की, सर्व लोकप्रिय आप।**
हम उसकी जयमाल के, गायें सुर आलाप॥

(चौपाई)

पार्श्वनाथ की चरण पुजारी, जिनशासन यक्षी माँ न्यारी।
श्री धरणेन्द्र प्रिया सुकुमारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥1॥

पद्म पुष्प सम मुखड़े वाली, पद्म पुष्प पर बसने वाली।
हृदय पद्म की मूरत न्यारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥2॥

पारस का रस पीने वाली, माताओं में मात निराली।
हम बच्चे तुझ पर बलिहारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥3॥

पारस का उपसर्ग मिटाया, मुनियों का संकट कटवाया।
सतियों की रक्षक महतारी[1], जय माँ पद्मावती हमारी॥4॥

मदनसुंदरी इक महारानी, जिसका जिनरथ रोके मानी।
तूने ही तब नैया तारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥5॥

पात्र केसरी जिनमत द्वेषी, तूने सपना दिया हितैषी।
अहिक्षेत्र नगरी वो प्यारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥6॥

श्लोक लिखा प्रभु फण पर प्यारा, पात्र केसरी पढ़कर हारा।
बना तभी वो मुनिपद धारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥7॥

1. माता।

जो जिनेन्द्र प्रभु का मतवाला, चाहे निर्धन या धन वाला।
तूने उसकी अरज न टारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥8॥
जिनको रोगों ने आ घेरा, रहे वेदना शाम सवेरा।
तूने उसकी हरी बीमारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥9॥
जिस माता की सूनी गोदी, उसको तू देती कुल ज्योती।
माता तू माँ पद दातारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥10॥
जो तेरा श्रृंगार करायें, मैया तेरी गोद भराये।
सदा सुहागन हो वह नारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥11॥
सज्जन पर तू प्रेम लुटायें, दुर्जन को सन्मार्ग बतायें।
ममता स्नेह दया भंडारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥12॥
दुर्घटना पर दुर्घटना हो, मुख पर बस दुखड़ा रटना हो।
तब तू ही इक संकटहारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥13॥
शुक्रवार संपत व्रत न्यारा, जिसने भी उसको स्वीकारा।
उसे मात देती खुशहाली, जय माँ पद्मावती हमारी॥14॥
भाग्य चन्द्र सबका विकसाओ, हृदय चंद्र सबके बस जाओ।
चरण चंद्र तेरे सुखकारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥15॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री प्रशस्त सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन-सचिह्न सपरिवार हे पद्मावती! महादेव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा : वरदानी का वर मिले, यही हमारी आस।
मात पद्मिके भक्त के, कर दो विघ्न विनाश॥
'चंद्रगुप्त' कहता तुम्हें, तुम समकित गुण खान।
जो तुमको पूजे भजे, उसका हो उत्थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री घंटाकर्ण यक्ष पूजन

स्थापना (गीता छंद)

सर्वज्ञ जिन के भक्त में, श्री यक्ष घंटाकर्ण हैं।
जिनवचन से पावन हुए, जिनके मनोहर कर्ण है॥
आह्वान घंटाकर्ण का, घन-घन घनन घंटा बजा।
आ जाइये हे यक्ष ! तुम, जिनधर्म का डंका बजा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार हे घंटाकर्ण यक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इति आव्हानम् - स्थापनं - सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

जीवन का अस्तित्व नहीं जल के बिना।
जल अर्पण कर पायें हम सुख अनगिना॥
यक्षराज श्री घंटाकर्ण जहाँ रहे।
सुख-वैभव खुशहाली धर्म वहाँ रहे॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

चंद[1] समय का चंदन लेप महान है।
चंद समय में मिलता सुख वरदान है॥ यक्षराज...॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

यक्षराज तुम अक्षय सुख को चाहते।
अतः अक्षतार्चन करना हम चाहते॥ यक्षराज...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय अक्षतं समर्पयामीति स्वाहा।

पुष्प सरीखा कोमल मन है आपका।
पुष्प चढ़ा विष हरूँ पाप के साँप का॥ यक्षराज...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

श्वेत श्याम तिल की तिलपट्टी लाइये।
चढ़ा यक्ष को दुःख से छुट्टी पाइये॥ यक्षराज...॥5॥

---

1. थोड़ा (कम)।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दीपथाल में रूनझुन रूनझुन झालरें।
यक्ष आरती करो बजा कर ताल रे॥
यक्षराज श्री घंटाकर्ण जहाँ रहे।
सुख-वैभव खुशहाली धर्म वहाँ रहे॥6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

यक्षभूप को धूप चढ़ा मन खुश हुआ।
पाप ताप संतापों पर अंकुश हुआ॥ यक्षराज...॥7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

फल गुच्छों के तोरण द्वार चढ़ायके।
सुख हो दुख रण में जय ध्वज फहरायके॥ यक्षराज...॥8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय फलं समर्पयामीति स्वाहा।

यक्षराज को अर्घ चढ़ायें झूमके।
हम सब गरबा घूमर नाचें घूम के॥ यक्षराज...॥9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सुंदर वस्त्राभूषण अर्पित आपको।
हरलो बाबा हम सबके संताप को॥ यक्षराज...॥10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय वस्त्राभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा : **विश्वशांति की कामना, शांतिधार के साथ।**
पुष्पाञ्जलि हम कर रहे, जैसे हो बरसात॥

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घंटाकर्ण महावीराय नमोस्तुते मम सर्वकार्य सिद्धिं कुरु-कुरु सर्व रोगोपद्रव शांतिं कुरु-कुरु ठः ठः ठः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : **जिनमत की जो जय ध्वजा, फहराते दिन रात।**
घंटाकर्ण सुयक्ष से, सुधरे बिगड़ी बात॥

(नरेन्द्र छंद)

जय जय घंटाकर्ण यक्ष की, जय जिनशासन रक्षक की।
जय जय जय मुनिभक्त यक्ष की, जय संस्कृति संरक्षक की॥
घंटाकर्ण महावीरा का, जिनआगम में नाम बड़ा।
सम्यग्दर्शन सहित आपका, नाम सरीखा काम बड़ा॥1॥
समोशरण के द्वादशगण में, व्यंतर देवों का गण है।
उसमें जा सम्यक्त्व नीर से, तुमने धोया निज मन है॥
यक्षराज तुम सम्मानित हो, समदृष्टि जन के द्वारा।
पूजे जाते वस्त्र तेल गुड़, पुष्प सिंदूरादिक द्वारा॥2॥
आप स्वयं को भक्त बताते, भगवन नहीं बताते हो।
इस कारण मुनियों के द्वारा, सम्यग्दृष्टि कहाते हो॥
गुणपूजक इस जैनधर्म में, पूजा की जाती गुण की।
अतः करें हम पूजा अर्चा, देव आपके सद्गुण की॥3॥
रोगों के दुर्योगों द्वारा, लोगों को जब दुःख होता।
शासन को कर[1] पे कर देकर, जन मानस जब जब रोता।
या फिर मुनि सति धर्म राष्ट्र पर, जब जब अत्याचार मचे।
तब तब घंटाकर्ण यक्ष का, क्रांति बिगुल साकार बजे॥4॥
हे यक्षेश्वर ! हमने तुमको, केवल इस कारण पूजा।
क्योंकि इस जिन धर्म अलावा, धर्म आपका ना दूजा॥
'चंद्रगुप्त' की मनोकामना, घंटाकर्ण करो पूरण।
जिनशासन संवर्द्धन के हित, कर दो तन मन धन अर्पण॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन–सचिह्न सपरिवार घंटाकर्ण यक्षाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा : सुर असुरों से मान्य हैं, घंटाकर्ण महान्।
धर्म प्रीत रख देव तुम, रखो भक्त का ध्यान॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. टैक्स।

श्री मणिभद्र क्षेत्रपाल पूजा

स्थापना (हरिगीता छंद)

श्री क्षेत्रपाल महान जिनका, नाम श्री मणिभद्र है।
सम्यक्त्व मणि से दिव्य जिनकी आतमा अतिभद्र है।।
मणिभद्र को मणि पुष्प ले, सब भक्त आज पुकारिये।
दुःख शोक संकट विघ्न से, मणिभद्र देव उबारिये।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार हे मणिभद्र क्षेत्रपाल ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इति आव्हानम् - स्थापनं - सन्निधिकरणम्।

(छंद-मोतियादाम) (तर्ज-मारने वाला है भगवान....)

चढ़ाकर तीर्थक्षेत्र का नीर, भजे हम क्षेत्रपाल गुणधीर।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

कषायें करली जिनने मंद, चढ़ाओ इनको इत्र सुगंध।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

अक्षतार्चन में मणिमय हार, चढ़ाकर मिट जाता दुःख भार।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय अक्षतं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्ररक्षक को पुष्प चढ़ाय, खुशी से हृदय पुष्प खिल जाय।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

समर्पित मधुर मधुर बहु भोग[1], हरो मधुमेह आदि सब रोग।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दीप में बाती नवरंगीन, करूँ आरती बजाकर बीन।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

---

1. भोजन (व्यंजन)

धूप के संग चढ़ा कर्पूर, मिले हम सबको सुख भरपूर॥
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान ॥7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

फलों से सजी धजी ये थाल, चढ़ाकर हम हो मालामाल।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान ॥8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय फलं समर्पयामीति स्वाहा।

द्रव्य ये सुंदर आठों आठ, चढ़ाकर मिले जगत का ठाठ।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान ॥9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

आपका कर सुंदर श्रृंगार, सुखी हो हम सबका परिवार।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान ॥10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय दिव्य वस्त्राभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा : शांतिधार के बाद में, पुष्पाञ्जलि बरसाय।
बाबा आप प्रसन्न हो, यही हमारे भाव॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः मणिभद्र क्षेत्रपालाय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : क्षेत्रपाल मणिभद्र की, गाकर के जयमाल।
जयमाला के रूप में, अर्पित हैं मणिमाल॥

(त्रोटक)

जय श्री मणिभद्र अधर्म हरो, जय श्री मणिभद्र अशर्म[1] हरो।
दुःख संकट क्लेश विनष्ट करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥1॥
जय श्री मणिभद्र पिता सम हो, जय देव आप जननी सम हो।
सिर पे हमरे द्वय हस्त धरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥2॥

1. दुःख

जय श्री मणिभद्र सुधर्म धनी, जय श्री मणिभद्र अधर्म हनी।
मत वाद-विवाद कुपंथ हरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥3॥
तुम दीन दुःखी जनपालक हो, मुनि के उपसर्ग निवारक हो।
मुनिपूजक को दुःख मुक्त करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥4॥
शुचि दर्शन ज्ञान धनी तुम हो, नय भंग प्रमाण गुणी तुम हो।
सतियों पर कष्ट विनष्ट करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥5॥
तुम शासनदेव प्रजापति हो, बहु ऋद्धि धनी व कृपापति हो।
सब आधि उपाधि अरिष्ट हरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥6॥
तुम श्री जिनधर्म प्रचारक हो, करुणामय उच्च विचारक हो।
करुणा हम पे हर वक्त करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥7॥
तुम आप्त उपासक देव अहो, हम पे खुश आप सदैव रहो॥
रवि आदिक नौ ग्रहरिष्ट हरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥8॥
धन निर्धन को सुत[1] बांझन[2] को, खुशहाल निहाल करो हमको।
सब रोग मरी कफ कुष्ठ हरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥9॥
सुख में दुख में तुम साथ रहो, जग के हित की शुभ बात कहो।
हमको सुख से तुम तुष्ट करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥10॥
जग में तुम भक्त दिवाकर हो, तुम 'चंद्र' समान प्रभाकर हो।
दुख क्लेश अशांति समस्त हरो, मणिभद्र सभी दुख कष्ट हरो॥11॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार मणिभद्र क्षेत्रपालाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा : तुम हो शासन देवता, जिनभक्तों के प्राण।
'चंद्रगुप्त' ने आपको, माना सद्गुण खान॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. पुत्र, 2. संतानरहित स्त्री।

अर्घावली

(1) श्री नित्यमह पूजा (नरेन्द्र छंद)

नीरादिक आठों द्रव्यों का, सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, भक्तिभाव जगाया है।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर, जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाण भूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।

ॐ ह्रीं श्री नित्यमह समुच्चय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) श्री नवदेवता (शंभु छंद)

जल, चंदन आदि अर्घ मिला पूजन की थाली लाया हूँ।
मैं पद अनर्घ को प्राप्त करूँ यह भाव हृदय भर लाया हूँ।।
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधु को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3) श्री देव-शास्त्र-गुरु (शंभु छंद)

अक्षय अनर्घ्यपद अविनाशी पाने वाले जिन जगभासी।
अविचल पद धात्री हे माता ! जिनवाणी हे ! जिनमुखवासी।।
हे तीर्थंकर के लघुनंदन तुम हो अनर्घ पद अधिकारी।
मैं अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ा पाऊँ अनर्घपद अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4) श्री पंच परमेष्ठी (अडिल्ल छंद)

आठों द्रव्य मिलाकर लाये अर्घ में।
पाँचों पद पा पहुँचे हम अपवर्ग में।।

पाँचों परमेष्ठी की करते अर्चना।
पंच परम पद पाने करते वन्दना॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5) श्री अरिहंत परमेष्ठी (हरिगीता छंद)

जल गंध तंदुल सुमन व्यंजन दीप आदिक आदिक अर्घ से।
जिनराज की पूजा करूँ मैं तब परम शिव सुख मिले॥
अरिहंत मंगल शरण उत्तम सुखद प्रभु की अर्चना।
निर्मल परम जिनराज अर्चा से मिटे अघ वंचना॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6) श्री सिद्ध परमेष्ठी (अडिल्ल छंद)

जल-फल आदिक मिश्रित अर्पित अर्घ में।
पद अनर्घ पा वरू सिद्ध का वर्ग मैं॥
लोक काल त्रयवर्ती सिद्ध समूह को।
पूजूँ नशने निज वसुकर्म समूह को॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7) श्री आचार्य परमेष्ठी (चौपाई-आचलीबद्ध)

अर्घ चढ़ाय भविक हर्षाय पद अनर्घ जिससे मिल जाय।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो॥
छत्तिस गुणधारी ऋषिराज उनको पूजे भव्य समाज।
महाऋषि हो, जय जगबंधु महाऋषि हो॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8) श्री उपाध्याय परमेष्ठी (बसंततिलका छंद)

नीरादि द्रव्य गुरु को हमने भी भेंटे।
पाये अनर्घ्य पद को सब कष्ट मेंटे॥

हे पूज्य पाठक ! सदा हम शीश नायें।
पूजा करें तम हरे सद्ज्ञान पायें।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9) श्री सर्वसाधु परमेष्ठी (शेरछंद)

जल गंध आदि द्रव्य लेय अर्घ बनाया।
पाने अनर्घ सौख्य हेतु भक्ति से लाया।।
ये ज्ञान-ध्यान लीन साधुओं की अर्चना।
शिव पद प्रधान करती करके कर्म वंचना।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10) श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान बीस तीर्थंकर तथा अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठी (शंभु छंद)

आधीन हुआ कर्मों के मैं परद्रव्यों से था जूझ रहा।
पाने मुक्ति वसु कर्मों से मैं अष्ट द्रव्य से पूज रहा।।
श्री देव गुरु जिनवाणी माँ और सिद्ध अनंतानंत महा।
ये बीस जिनेश्वर अविनाशी की करते पूजन ध्यान अहा।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमानविंशति तीर्थंकर, अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11) श्री चौबीस तीर्थंकर (अडिल्ल छंद)

जल फल आदि अर्घ बनायें भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्त्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12) श्री पंचकल्याणक (शेर छंद)

कल्याणवान ईश को हम अर्घ चढ़ाये।
कल्याण भाव से सदा ही शीश झुकाये।।

श्री पंचकल्याणक प्रभु का भक्ति से करें।
प्रभु गान-नृत्य-वंदना से मुक्ति को वरें॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13) श्री आदिनाथ जिनराज (अवतार छंद)

अष्टम वसुधा के नाथ को मैं ध्याता है।
ले अष्ट द्रव्य को साथ भक्ति रचाता हूँ॥
हे जिनवर ! आदिनाथ मैं भव व्याधि हरूँ।
कर लो निज सम हे नाथ ! साम्य-समाधि वरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14) श्री अजितनाथ भगवान (हरिगीता छंद)

वसु द्रव्य इक कर में सजा, करताल इक कर से बजा।
हम छम-छमा-छम नाचते प्रभु अर्घ ये तुमको चढ़ा॥
हे अजितनाथ ! प्रभो हमें ऐसा अटल वरदान दो।
जब तक न जीते कर्म को जिनधर्म पर श्रद्धान हो॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(15) श्री संभवनाथ भगवान (गीता छंद)

जल चंदनादि अर्घ सब लाऊँ मिलाकर थाल में।
प्रभु के चरण में हो मगन गाऊँ मैं लय व ताल में॥
संभव प्रभु की अर्चना संभव करे सब काम हो।
मैं भक्ति रंग में झूमकर भक्ति करूँ निष्काम हो॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16) श्री अभिनंदननाथ भगवान (काव्य छंद)

गज मुक्ता जल गंध दीप धूप फल लाये।
लेकर मंगल वाद्य प्रभु के दर हम आये॥

वसु विधि द्रव्य मिलाय करते प्रभु का अर्चन।
पद अनर्घ मिल जाय बने प्रभु के नंदन॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17) श्री सुमतिनाथ भगवान (शेर छंद)

सुमति प्रभो को हमने आज अर्घ चढ़ाया।
लड़ने करम से दिव्य बिगुल आज बजाया॥
सुमति प्रभो हरो हमारी सारी दुर्मति।
हे पाँचवे ! तीर्थेश दे दो पाँचवी गति॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(18) श्री पद्मप्रभु भगवान (चामर छंद)

हे जिनेश ! अर्घ से करें विशेष अर्चना।
आत्म सौख्य लाभ हेत है पदाब्ज वंदना॥
सर्वलोक पद्म में सुपद्म आप शोभते।
आपके समीप भक्त सर्व पाप खोवते॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान (शंभु छंद)

आठों द्रव्यों को एक बना प्रभु चरणन् भेंट चढ़ाते हैं।
हम अष्ट गुणों को प्राप्त करें बस यही भावना भाते हैं॥
जो श्री सुपार्श्व प्रभु की पूजा भक्ति से नितप्रति करते हैं।
जग के सारे वैभव पाकर अनुक्रम से मुक्ति वरते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20) श्री चन्द्रप्रभु भगवान (शंभु छंद)

जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य धूप फल लाये हैं।
हम अष्टद्रव्य का थाल सजा निज भाव सँजोकर आये हैं॥

हे चंद्रप्रभो ! गुणचन्द्रपुंज मम विनय भक्ति स्वीकार करो।
मैं पद अनर्घ्य को प्राप्त करूँ मम विनय अर्घ स्वीकार करो॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21) श्री पुष्पदंत भगवान (दोहा)

जल चंदन अक्षत चरु दीप धूप फल फूल।
वसु विधि द्रव्यों से जजूँ करूँ कर्म निर्मूल॥
मंगलमय आराधना अष्ट द्रव्य के साथ।
भक्ति भावना से नमें जय हो सुविधिनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22) श्री शीतलनाथ भगवान (नरेन्द्र छंद)

शीतलनाथ जिनेश्वर हमको शीतल शिव सुख देना।
वसु द्रव्यों की थाल चढ़ाये अष्ट करम हर लेना॥
अन्तर्मन को शीतल करते श्री शीतल जिन स्वामी।
पूजा करके नाथ तुम्हारी बन जाऊँ शिव गामी॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23) श्री श्रेयांसनाथ भगवान (गीता छंद)

आये शरण तारण-तरण वसु कर्म से हम डर प्रभो।
थाली अनेक चढ़ा रहे वसु द्रव्य से हम भर विभो॥
श्रेयांसनाथ प्रभु तेरी प्रतिमा हमें मन भा रही।
प्रभु वंदना अरु अर्चना वैराग्य भाव जगा रही॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(24) श्री वासुपूज्य भगवान (सखी छंद)

जल चंदन आदि लाये जिनवर को अर्घ चढ़ायें।
तुम पद अनर्घ के स्वामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी॥

श्री वासुपूज्य जगनामी, आशीष हमें दो स्वामी।
भवसागर से तिर जाये, हम जीवन धन्य बनाये॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(25) श्री विमलनाथ भगवान (शेर छंद)

हे विमलप्रभो ! आप मुझे विमल बनाओ।
संसार के दुःखों से मुझे मुक्त कराओ॥
वसु द्रव्य संजोके प्रभु को अर्घ चढ़ाऊँ।
श्री विमल नाथ को भजूँ सौभाग्य जगाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(26) श्री अनंतनाथ भगवान (काव्य छंद)

अष्ट द्रव्य के साथ प्रभु की पूजा करता।
तीन लोक के ईश तुम को वंदन करता॥
हो अनंत गुणधाम गुण अनंत को पाया।
झूम उठा मन आज द्वार तिहारे आया॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(27) श्री धर्मनाथ भगवान (चामर छंद)

अष्ट द्रव्य से भरी सुवर्ण थालियाँ सजा।
आपको चढ़ा रहे मृदंग तालियाँ बजा॥
धर्मनाथ-धर्मनाथ झूम-झूम गाइये।
ले मृदंग ढोल झाँझ भक्ति से बजाइये॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(28) श्री शांतिनाथ भगवान (शंभु छंद)

तुम मोक्ष महाप्रद सुखकारी हो शांतिनाथ शांतिकारी।
आठों द्रव्यों को साथ चढ़ा बन जाये हम भी अविकारी॥

तीर्थंकर चक्री कामदेव हो तीन पदों के तुम धारी।
प्रभुवर की पूजा करने से मिट जाती भव की बीमारी॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(29) श्री कुंथुनाथ भगवान (गीता छंद)

अष्टम धरा का राज पाने अष्ट द्रव्य चढ़ा रहा।
पूजन भजन कीर्त्तन सहित प्रभु के गुणों को गा रहा॥
श्री कुन्थुनाथ जिनेश की अर्चा हृदय से कर रहा।
प्रभु कल्पतरु के पाद में माँगे बिना सब मिल रहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(30) श्री अरहनाथ भगवान (शेर छंद)

ले अष्ट द्रव्य हम चले जिनेन्द्र पाद में।
अनर्घ पद की चाह में पूजन करें नमें॥
तीर्थेश चक्री कामदेव अरहनाथ हो।
भवसिंधु पार तारने भक्तों को साथ दो॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(31) श्री मल्लिनाथ भगवान (शंभु छंद)

श्री मल्लिनाथ जिनको ध्याकर, शुभ धर्म ध्यान अपनाता हूँ।
अक्षय अनर्घ दाता को शुभ मंगल अर्घ चढ़ाता हूँ॥
हे मल्लिनाथ ! तुम पूजा से मुझको ऐसा वरदान मिले।
सब पाप नशे शिवशर्म मिले अविराम धर्म श्रद्धान बढ़े॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(32) श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान (गीता छंद)

कर्म रहित पद के स्वामी हो मुनिसुव्रत जिनदेव प्रभो।
आप गुणों को हम क्या जाने हो विशाल स्वयमेव विभो॥

भाव सहित हम अर्घ चढ़ायें तुम सम भाव जगा देना।
रत्नत्रय पा जायें हम भी मुक्ति द्वार दिखा देना॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(33) श्री नमिनाथ भगवान (नरेन्द्र छंद)

वसु कर्मों को नमा नमि जिन पद अनर्घ्य के योग्य बने।
उनको अर्घ्य मनोज्ञ चढ़ा हम पद अनर्घ्य के योग्य बने॥
समोशरण लक्ष्मी के स्वामी नमि जिनेश का शुभ अर्चन।
हाथ जोड़कर द्रव्य चढ़ायें करते बारम्बार नमन॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(34) श्री नेमीनाथ भगवान (गीता छंद)

मैं जल फलादिक द्रव्य लेकर पूजता प्रभु चरण को।
मम कर्म सारे नाश हो पाऊँ महापद शरण को॥
नेमिप्रभु की भक्ति को मैं भाव से करता रहूँ।
मेरे करम नाश हो मैं आत्म गुण वरता रहूँ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(35) श्री पार्श्वनाथ भगवान (शंभु छंद)

आठों द्रव्यों का थाल सजा मैं द्वार तेरे नित आऊँगा।
भक्ति करके जिनलिंग धरूँ मैं सीधा शिवपुर जाऊँगा॥
पारसमणि में वह गुण है जो लोहे को स्वर्ण बनाता है।
पारस की पारसमणि पाकर वह नर पारस बन जाता है॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(36) श्री महावीर भगवान (अवतार छंद)

अविचल अनर्घ पद देव, तुम सन्मुख मिलता।
जो करे आपकी सेव, ज्ञान सुमन खिलता॥

मैं अर्घ चढ़ाऊँ वीर, तेरा ध्यान करूँ।
श्री वीर प्रभु अतिवीर, तव यशगान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(37) नवग्रहारिष्ट निवारक समुच्चय अर्घ (नरेन्द्र छंद)

नीर गंध आदिक से मिश्रित अर्घ प्रभु के चरण धरूँ।
शिवसुखदायक कर्म विघातक पद अनर्घ का वरण करूँ।।
चौबीसों प्रभु पंच परम परमेष्ठी जिन को नमन करूँ।
नवग्रह की बाधा हरने को अर्चन पूजन भजन करूँ।।

ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(38) श्री पंच बालयति (तर्ज - जय जिनेन्द्र...)

जल-फलादि द्रव्य ले प्रभु समीप आऊँगा।
पद अनर्घ पूजकर पद अनर्घ पाऊँगा।।
पंच बाल तीर्थ नाथ की करें सुअर्चना।
स्याद्वाद धर्म तीर्थ हरे कर्म वंचना।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(39) श्री बाहुबली भगवान (गीता छंद)

गाथा परम परम पावन प्रभो की आत्म संबोधन करे।
हम अष्ट द्रव्य चढ़ा प्रभु को आत्म समता धन वरें।।
श्री विंध्यगिरी के बाहुबली छवि को निहारूँ हर घड़ी।
पूजन भजन कीर्त्तन करूँ तोड़ूँ सभी कर्मन् कड़ी।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(40) श्री तीर्थक्षेत्र (अडिल्ल छंद)

अष्ट द्रव्य से पूजें सिद्ध अशेष को।
अष्ट कर्म से रहित जिनेश्वर वेष को।।

तीर्थक्षेत्र की महिमा अपरम्पार है।
करते हम सब पूजन बारम्बार हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पंचकल्याणकादि सर्वतीर्थ क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(41) श्री सम्मेदशिखरजी (शेर छंद)

ये अष्ट द्रव्य थाल विधिवत् सजा लिया।
जिन अर्चना क्रिया के हेतु मन लगा दिया।।
हर टोंक में शुभभाव से जिन अर्घ चढ़ाकर।
बन जाऊँ मैं भी सिद्ध सारे कर्म खपाकर।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(42) श्री निर्वाण क्षेत्र (नरेन्द्र छंद)

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर प्रभु चरणों में लाऊँगा।
गढ़ गिरनारी चंपापुर कैलाश शिखर को ध्याऊँगा।।
परम तीर्थ क्षेत्रों की पूजन हरती कर्मों का क्रंदन।
श्रेष्ठ भाव प्रगटाने को करता हूँ चरणों में वंदन।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(43) श्री जिनवाणी माता (चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(44) श्री नंदीश्वर जिनालय (गीता छंद)

लोकाग्रवासी वीतरागी अनर्घ पद मम दीजिए।
मैं अष्ट द्रव्य चढ़ा रहा मुझको शरण में लीजिए।।

इस द्वीप के बावन जिनालय चैत्य जन मनहार हैं।
यह द्वीप नन्दीश्वर जगत में आठवाँ हितकार है।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपंचाशत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(45) श्री सोलहकारण भावना (अडिल्ल छंद)

अर्घ समर्पण अनर्घ पद की चाह में।
बढ़ूँ निरन्तर महाव्रतों की राह में।।
दर्श विशुद्धि आदि सोलह भावना।
पूजूँ सबको रखूँ मोक्ष की कामना।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(46) श्री पंचमेरू का अर्घ (गीता छंद)

निज आत्म गुण में थिर रहूँ ऐसा मुझे वरदान दो।
जल-चंदनादि अर्घ्य से पूजूँ सफल अभियान हो।।
अक्षय अनुपम पंचमेरू पर विराजे जिन भवन।
जिन चैत्य की आराधना में लीन मम तन-मन-वचन।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(47) श्री दशलक्षण धर्म (अवतार छंद)

नानाविधि आठों द्रव्य मिश्रित कर लाये।
पूजन हित आते भव्य प्रभु के गुण गाये।।
दशलक्षण धर्म महान अतिशय सुखकारी।
ये शुद्धातम गुण खान मंगल गुणकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(48) श्री रत्नत्रय पूजा (शंभु छंद)

जल, चंदन आदि अष्ट द्रव्य उनका शुभ थाल बनाया है।
अविचल अनर्घ पद पाऊँगा यह उत्तम भाव बनाया है।।

सम्यग्दर्शन और ज्ञान चरण ये आतम गुण कहलाते हैं।
रत्नत्रय धारण करने से भवि मोक्षपुरी को पाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(49) श्री गौतम गणधर (नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया॥
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(50) श्री ऋषिमंडल (गीता छंद)

जो नित प्रति जिनराज संग ऋषियंत्र की पूजा करे।
अष्टार्घ चरणों में चढ़ा सुख स्वर्ग में झुला करे॥
जिनवर सहित यह यंत्र है इनकी हमें ऊर्जा मिले।
इनके पदों को पूजकर सब दु:ख से मुक्ति मिले॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय यंत्र संबंधी परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(51) श्री तीन कम नवकोटि मुनिराज (शंभु छंद)

जल, चंदन, अक्षत, दीप, धूप, नैवेद्य, हरित फल लाया हूँ।
अन्तर में भक्तिभाव लिये ऋषिराज शरण में आया हूँ॥
नवकोटि न्यून त्रय मुनियों को मैं वंदन बारम्बार करूँ।
बन जाऊँ मुनिमन सम निर्मल यह शुद्ध भावना हृदय धरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री अढ़ाई द्वीपस्थ न्यून त्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(52) ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी (शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु है वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर॥
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्॥

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(53) आचार्य श्री कनकनंदीजी (जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(54) प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी
(तर्ज-मेरे सर पे...)

हे प्रज्ञायोगी गुरुवर दो प्रज्ञा का वरदान।
गुरुवर गुप्तिनंदी को बारम्बार प्रणाम-2
अष्ट द्रव्य से सजी धजी ये सुन्दर थाल निराली है।
गुरुवर तुमको अर्घ चढ़ाकर मिल जाती खुशहाली है।।
हे कुंथु गुरु के नंदन, हे धर्मतीर्थ की शान।
गुरुवर गुप्तिनंदी को बारम्बार प्रणाम-2

ॐ ह्रीं प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

गुप्तिनंदी गुप्तिधारी, हो मोक्षपुरी के अधिकारी।
हम अष्टद्रव्य का अर्घ चढ़ा, बन जायें संयम के धारी।।
गुरुवर की आरती पूजन से, मन में शांति हो जाती है।
गुरु गुप्तिनंदी की शरणा पा, जीवन में क्रांति आती है।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जलगंधादिक अष्टद्रव्य ले, जय-जय घोष लगाते हैं।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, हम सब अर्घ चढ़ाते हैं।।
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया॥
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी॥
बोलो गुप्तिनंदी की जय-3
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें॥
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी जी जय।

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज - जय जिनवाणी माता)

जय गुरु गुप्तिनंदी हम अर्घ चढ़ायें, जय गुरु गुप्तिनंदी।

1. **कुंथु गुरु के हो लघुनंदन, हम सब करते तुमको वंदन-2**
   हे गुरु गुप्तिनंदी, हम अर्घ चढ़ायें....
2. **धर्मतीर्थ के प्रेरक गुरुवर, अंजनगिरी उद्धारक ऋषिवर-2**
   हे गुरु गुप्तिनंदी, हम अर्घ चढ़ायें....

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(55) आर्यिकाश्री पूजा (अवतार छंद)

जल चंदन आदि लाय अर्घ बनाता हूँ।
ये मात शरण मिल जाय अर्घ चढ़ाता हूँ।।
श्रीमात् श्रेष्ठ गुणखान अर्चा सुखकारी।
पाये गुरु शरण महान भव भंजन हारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर सर्वार्यिका चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(56) गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

(गीता छंद)

जल-चंदनादि अर्घ का, शुभ थाल भरकर ला रहे।
हम मोक्षपद के लाभ हेतु, तव शरण में आ रहे।।
हे अम्ब ! तेरे चरण की, मैं नित करूँ आराधना।
पावन शरण मिल जाये तो, हो जाये पाप विराधना।।

ॐ ह्रीं श्री गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

वात्सल्य शील प्रेम दया आपकी सखी।
गुणगान गाते-गाते मेरी ये कलम थकी।।
फल अर्घ्य का अनर्घपद प्रदान कीजिए।
हे मात ! राजश्री मुझे वरदान दीजिए।।

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

हे मात राजश्री प्यारी, अठबीस गुणों की धारी।
हम अर्घ चढ़ा हर्षाये, भक्ति से शीश झुकाये।।

ॐ ह्रीं श्री प.पू. वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री मात चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री निर्वाण काण्ड

(सखी छन्द)

अष्टापद से आदीश्वर, श्री वासुपूज्य चम्पापुर।
श्री नेमीनाथ गिरनार, पाये अक्षय आकार॥
श्री वर्द्धमान पावापुर, वे पहुँचे सीधे शिवपुर।
तीर्थंकर बीस मुनीश, सम्मेदशिखर के शीश॥1॥

चौबीस प्रभु जगनामी, वे सिद्ध सौख्य के स्वामी।
हम उनको शीश नवायें, निर्वाण लाभ को पायें॥
वरदत्त वरांग महाना, सागरदत्त ज्ञान निधाना।
शिवडगर तारवर से वर, साढ़े त्रय कोटि मुनिवर॥2॥

नेमी प्रद्युम्न जिनेशा, शंभु अनिरुद्ध मुनीशा।
ऋषिराज बहत्तर कोटी, गिरनार शिखर की चोटी॥
अरु सात शतक मुनि ज्ञानी, वे पहुँचे शिव रजधानी।
हम उनको वंदन करते, भव-भव का क्रन्दन हरते॥3॥

सुत युगल राम के ज्ञानी, नृप लाड यति विज्ञानी।
मुनि पाँच कोटि जग नामी, पावागिर से शिवगामी॥
त्रय पुत्र पांडु के जानो, नृप द्रविड़ मुनि को मानो।
शत्रुंजय गिरी को जाओ, संग आठ कोटि मुनि ध्याओ॥4॥

मुनि नंग-अनंग हमारे, सोनागिर आप पधारें।
मुनि साढ़े पाँच करोड़ा, मुक्ति से नाता जोड़ा॥
दशमुख नृप के सुत प्यारे, सर्वोच्च ध्यान को धारें।
पंचार्द्ध कोटि मुनि सारे, रेवा तट मोक्ष सिधारे॥6॥

द्वय चक्री मुक्तिगामी, दश कामदेव शिवगामी।
साढ़े त्रय कोटि साधू, उनको मैं नित आराधूँ॥

रेवानदी अपर दिशा में, सोने से पूर्व निशा में।
हम कूट सिद्धवर ध्यायें, सातिशय पुण्य कमायें॥7॥

मुनि इन्द्रजीत गत रागी, श्री कुम्भकरण वैरागी।
बड़वानी श्रेष्ठ नगर के, दक्षिण दिशि चूलशिखर में॥
दोनों ने शिवसुख पाया, सिद्धों का रूप बनाया।
जो उनकी भक्ति करते, वे भवसागर से तिरते॥8॥

पावागिरी नगर विशाला, चेलना नदी तट आला।
श्री स्वर्ण भद्र मुनि चार, पहुँचे थे शिवपुर द्वार॥
फलहोड़ी ग्राम अनूपम, उसकी पश्चिम दिश उत्तम।
श्री द्रोणगिरी के शीशा, गुरुदत्त हरे वसु क्लेशा॥9॥

मुनि बाल महाबालि दो, मुनि नागकुँवर को वंदो।
अष्टापद शिखर हमारा, है सिद्धक्षेत्र मनहारा॥
अचलापुर दिश ईशानो, मुक्तागिरी नाम बखानो।
मुनिवर साढ़े त्रय कोटी, पहुँचे त्रिभुवन की चोटी॥10॥

वंशस्थल नगर अपर में, कुंथलगिरी ख्यात जगत में।
कुलभूषण परम तपस्वी, दिशभूषण पूर्ण मनस्वी॥
दोनों ने कर्म नशाया, निर्वाण लाभ को पाया।
हम मुक्तिक्षेत्र को पूजें, द्वयमुनियों को भी पूजें॥11॥

जसरथ नृप सुत मुनि वन्दो, संग पाँच शतक मुनि वंदो।
मुनि देश कलिंग पधारे, उससे शिवधाम सिधारे।
कोटि मुनि कोटि शिला से, वे पहुँचे सिद्ध शिला पे।
हम उनको नमन करेंगे, पापों का वमन करेंगे॥12॥

शुभ समोशरण पारस का, रेसंदीगिरि आया था।
भव्यों ने पार्श्व प्रभु का, उपदेश यहाँ पाया था॥

इसमें गुरुदत्त मुनि ने, उत्तम वरदत्त मुनि ने।
निर्वाण लाभ को पाया, उनको भी हमने ध्याया॥13॥

जंबूमुनि जंबूवन से, पहुँचे सीधे शिवपुर में।
जो जिन मुनि जिस नभथल से, शिलशैल तीर्थ उदधि से॥
जिस भाव काल शक्ति से, सिद्धालय में पहुँचे थे।
हम उनको शीश नवायें, निर्वाण बोध को पायें॥14॥

शंभु छंद

इंदौर शहर के पूरब में जिन आलय तिलक नगर में है।
उसमें खड्गासन दिगम्बर श्री वीर प्रभु जग दुःखहर हैं॥
श्रावण वदि पंचम दो हजार सत्तावन संवत सुखकारी।
'गुप्ति' कहते निर्वाण काण्ड जिसका चिंतन भी दुःखहारी॥

समुच्चय अर्घ

(तर्ज- नसे घातियाँ...)

परमेष्ठियों को सदा मैं ध्याऊँ, माँ शारदे को शीश नवाऊँ।
अनेकांत मय ये धर्म है प्यारा, सब पापों से हो छुटकारा॥1॥

पंचसुमेरु के अस्सी जिनालय, भव्यों के सुख के हैं आलय।
बावन जिन चैत्यालय प्यारे, नंदीश्वर हैं सब मनहारे॥2॥

तीनलोक के कृत्रिमाकृत्रिम, चैत्यालय में हैं जिनबिम्ब।
उनको नित प्रति अर्घ चढ़ाऊँ, भाव वंदना से सुख पाऊँ॥3॥

सम्मेदगढ़ गिरनार गिरी को, चम्पापुरी और पावापुरी को।
सोनागिर मथुरा चौरासी, बाहुबली गोम्मटगिरी वासी॥4॥

आदि सभी तीरथ को ध्याऊँ, उनको नितप्रति अर्घ चढ़ाऊँ।
सीमंधर आदि जिन स्वामी, पूजा करूँ मैं हे जगनामी॥5॥

दोहा : अष्टद्रव्य का थाल ले, अर्घ चढ़ाऊँ आज।
इहभव-परभव सफल हो, सिद्ध होय सब काज॥

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, नवग्रह धर्मतीर्थ वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत-भविष्यत-वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे....... प्रान्ते-नगरे...... मासानांमासे......मासे....... पक्षे....... तिथौ........ वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करते रहें)

शांतिनाथ हैं जगहितकारी, शान्ति प्रदाता मंगलकारी।
सौम्य शांत प्रतिमा जो लखता, भवसागर से वह नर तिरता॥1॥

शरण तुम्हारी जो भी आता, मंगलमय शिवपद पा जाता।
पूजा प्रतिदिन भाव से करता, वह नर कभी न दुःख में पड़ता॥2॥

(यह श्लोक बोलते समय शांतिधारा करें)

शांतिधारा तुम्हें चढ़ाऊँ, प्रभु सम शांति मैं पा जाऊँ।
जग जीवों को शांति कर दो, धर्म सुधारस सब में भर दो॥3॥

दुःखी दरिद्री रहे न कोई, सबकी मति धर्ममय होई।
देव गुरु की शरणा पायें, भव दुःखों से न घबरायें॥4॥

राजा-प्रजा सभी नर-नारी, भक्ति करते सभी तुम्हारी।
भक्त से वे भगवान हैं बनते, मुक्ति रमा पा सुख में रमते॥5॥

विसर्जन पाठ

(दोहा)

प्रमादवश मैंने प्रभो! की पूजा में चूक।
अज्ञानी हूँ नाथ मैं क्षमा करो शिव भूप॥1॥

भक्ति भाव में मन लगा पाऊँ तुम सम रूप।
चरण शरण पा आपकी काटूँ कर्म अनूप॥2॥

तीन काल त्रैलोक्य में कोई न सच्चा देव।
जगत भ्रमण अब तक किया पूजें देव-कुदेव॥3॥

सत्य लगन हुई आपसे मिट गई मन की प्यास।
सम्यग्दर्शन निधि मिले छूटे भव की त्रास॥4॥

श्री जिन पूजन यज्ञ में आये जो-जो देव।
धर्मप्रेम रख जिन भुवन, आयें नित्य सदैव॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा। इत्याशीर्वादः

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : भगवंतों की आशिका, धारण करता शीश।
भव बंधन मेरे कटें, शरण पाऊँ जगदीश॥

श्री शांतिपाठ (संस्कृत)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करें)

शान्ति जिनं शशि निर्मल वक्त्रं, शीलगुण व्रत संयम पात्रम्।
अष्टशतार्चित लक्षण गात्रं, नौमि जिनोत्तम मम्बुज नेत्रम्॥1॥
पञ्चम मीप्सित-चक्रधराणां, पूजित मिन्द्र-नरेन्द्र-गणैश्च।
शान्तिकरं गण-शान्ति-मभीप्सुः, षोडश-तीर्थंकरं-प्रणमामि॥2॥
दिव्यतरुः सुर-पुष्प-सुवृष्टि-दुर्न्दुभिरासन-योजन घोषौ।
आतप-वारण-चामर-युग्मे, यस्य विभाति च मण्डलतेजः॥3॥
तं जगदर्चित-शान्ति-जिनेन्द्रं, शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्व गणाय तु यच्छतु शान्तिं, मह्यमरं पठते परमां च॥4॥
येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हार-रत्नैः, शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुत-पादपद्माः।
तेमे जिनाः प्रवर-वंश-जगत्प्रदीपाः, तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु॥5॥

(यह श्लोक बोलते समय शांतिधारा करें)

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान्-जिनेन्द्रः॥6॥
क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु, बलवान् धार्मिको भूमिपालः।
काले-काले च सम्यग् वितरतु मघवा, व्याधयो यान्तु नाशम्॥7॥
दुर्भिक्षं चौरमारिः क्षणमपि जगतां, मास्मभूज्जीव-लोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं, सर्व-सौख्य-प्रदायि॥8॥

प्रध्वस्त घाति कर्माणः, केवलज्ञान भास्करा।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः ।।9।।

समाधि भक्ति (अथेष्ट प्रार्थना)

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुण-गण-कथा दोष-वादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो भावनाचात्म-तत्त्वे,
सम्पद्यन्तां मम भव-भवे यावदेतेऽपवर्गः ।।1।।

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तवपद-द्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद् यावन्-निर्वाण-सम्प्राप्तिः ।।2।।

अक्खर पयत्थहीणं, मत्ताहीणं च जं मए भणियम्।
तं खमउ णाण-देव ! य मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु ।।3।।

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाओ य।
मम होउ जगत बांधव ! तव जिणवर चरणशरणेण ।।4।।

विसर्जन पाठ (संस्कृत)

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ।।1।।

आह्वानं नैवं जानामि नैव जानामि पूजनं।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।2।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष-रक्ष जिनेश्वर ।।3।।

आहूता ये पुरा देवाः लब्धभागा यथाक्रमं।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वेयान्तु यथास्थितिं ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधानसमये आगन्तुक सर्वेदेवाः स्वस्थाने गच्छतः गच्छतः गच्छतः जः जः जः स्वाहा। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

आरती संग्रह

श्री पंच परमेष्ठी

ॐ जय केवलज्ञानी, हो स्वामी जय केवलज्ञानी।
आरती करते सब मिल, बन जायें ज्ञानी।। ॐ जय...

अतिशय चौंतीस के तुम धारी, हित उपदेशी महान। हो स्वामी हित...
वीतराग अरिहंत प्रभुजी-2, छोडूँ मिथ्याज्ञान ।। ॐ जय...

अष्टकर्म से रहित जिनेश्वर, गुण अनंत धारी। हो स्वामी गुण...
ज्ञाता दृष्टा सिद्ध प्रभुजी-2, वर ली शिवनारी ।। ॐ जय...

रत्नत्रय के धारी गुरुवर, श्रमण संघ नायक। हो स्वामी श्रमण...
पंचाचारी ऋषिवर-2, हो मंगल दायक ।। ॐ जय...

मोह तिमिर को हरने वाले, मुनियों के पाठक। हो स्वामी मुनियों...
ज्ञान किरण विकसाते-2, बोधि ज्ञान दायक ।। ॐ जय...

मुनिव्रतों को धारण करके, करते आतम ध्यान। हो स्वामी करते...
सुर-नर-किन्नर ध्यावे-2, गाते तव यशगान ।। ॐ जय...

विषय विकार मिटावो भगवन्, शरण पड़ा तेरी। हो स्वामी शरण...
'राज' मुक्ति को पावे-2, छूटे भव फेरी ।। ॐ जय...

श्री आदिनाथ भगवान

घुंघरु छम छमा छम, छन नन-नन बाजे रे बाजे रे।
आदिनाथ की आरती में सब सुर-नर नाचे रे।।

नाभिराय के लाड़ले, मरुदेवी के लाल।
आये जग में आदिप्रभु, नाचे बाल-गोपाल।। घुंघरु.....

तारण-तरण जिनेश ने, पाया केवलज्ञान।
सबको सद् उपदेश दे, किया ज्ञान का दान ।। घुंघरु.....

जग उद्धारक आप हो, आदिनाथ भगवान।
करता आरती भाव से, पाऊँ सम्यक्ज्ञान ।। घुंघरु.....
'क्षमाश्री' भक्ति करें, कर जिनवर गुणगान।
कृपा यदि हो आपकी, पाऊँ मुक्तिथान ।। घुंघरु.....

श्री चंद्रप्रभुजी

(तर्ज : मैं तो आरती उतारु रे...)

मैं तो आरती उतारुँ रे, चंद्रप्रभु स्वामी की-2
जय-जय-जय चंद्रप्रभु जय-जय हो-2
माँ सुलक्षणा के लाल, प्रभुजी तुम प्यारे।
पिता महासेन के बाल चंद्रप्रभु न्यारे।। चंद्रप्रभु...
झूम-झूम भक्ति करें - इन्द्र सब नृत्य करे
गर्भ में आये रे-प्रभुजी गर्भ...2 मैं तो...।।
इन्द्रों ने जाना आज, प्रभु ने जन्म लिया।
मेरु पर्वत पर जाय, प्रभु का कलश किया ।। प्रभु का...2
भक्ति करो गाओ आज - जम कर बजाओ साज
चन्द्रपुरी नगरी में... हो प्रभुजी चंद्रपुरी...2 मैं तो...।।
हे चंद्रप्रभु ! जिनराज, आये शरण तेरी।
तोड़ो मम मोह दीवार, छूटे भव फेरी।। छूटे...2
आओ 'राज' दर्श करे प्रभुवर की भक्ति करे-2
जीवन सुधारो रे... हो प्रभुजी जीवन...2 मैं तो...।।

श्री शान्तिनाथ भगवान

(तर्ज : ना कजरे की धार...)

हम आए तेरे द्वार, हे शान्तिनाथ भगवान।
करें वंदन बारम्बार प्रभु की, आरती करते आज,
प्रभु की आरती करते आज। होऽऽ

हो विश्वसेन के प्यारे, ऐरा के राजदुलारे।
हस्तिनापुर में जन्मे, सब जन के तुम मनहारे।
नाचें-गाएँ धूम मचाएँ-2 देवों ने किया जयकार॥ हम आए....
दुनियाँ की देख दशा को, वैराग्य हृदय में धारा।
संयमपथ पर चलने को, त्यागा धन-वैभव सारा।
प्रभु की वाणी मोक्ष दानी-2 तेरी महिमा अगम अपार॥ हम आए....
तुम तीर्थंकर पद धारी, हो कामदेव जयकारी।
प्रभु चक्रवर्ती पद धारी, छह खण्डों के अधिकारी।
'राज' आए भक्ति गाए-2, तुम सुख के हो भण्डार॥ हम आए....

श्री पारसनाथ भगवान

(तर्ज : मन डोले मेरा तन.....)

प्रभु पारस की, दु:ख हारक की, ले मंगल दीप जलाय हो
हम आज उतारें आरतियाँ-2

हमने निज नयनों से देखी, मूरत आज अनोखी।
मोक्ष-महल के जाने को, यह राह बताती चोखी। प्रभुजी राह-
फणिमण्डित की, प्रतिबिम्बन् की, मनहर शुभ दीप जलाय हो॥ हम.........

चिंतामणी पारस प्रभुवर की, मिलकर सब जय बोलो।
गान-नृत्य से भक्ति बढ़ाकर, आज हृदय पट खोलो। प्रभुजी आज-
सब मिल करके, गुण गा करके, हाथों में दीप अपार ले॥ हम..........

पुण्य उदय से जन्म लिया है, उत्तम कुल में आकर।
'क्षमा' का मन अतिहर्ष भरा है, तीन भुवन पति पाकर। प्रभुजी तीन-
शिवगामी की जगनामी की, मणिमय घृत दीप प्रजाल हो॥ हम..........

श्री महावीर भगवान

(तर्ज : मिलो न तुम तो हम.....)

वीर प्रभु के द्वारे आये, मंगल दीप सजायें। करें हम आरती-2
भक्तिभाव से आरती लाये, तन-मन धन्य बनायें। करें हम...

माँ त्रिशला को धन्य किया था तुमने विभू।
सिद्धारथ घर वाद्य बजाये तुमने प्रभु।
देव-देवियाँ हर्ष मनाये, गीत प्रभु के गायें-।। करें हम.....
मात-पिता को छोड़ा मुनिपद धारा निज ज्ञान से।
घाति कर्म का नाश किया है निज ध्यान से।
समोशरण की शोभा न्यारी, जन-मन संकटहारी।। करें हम.....
जगमग दीपों की थाल सजाकर हम ला रहे।
मोहनी मूरत के दर्शन करने हम आ रहे।
'राजश्री' चरणों में आई, मोहतिमिर विनशाये।। करें हम.....

आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव

(तर्ज : इंजन की सीटी में...)

सगला चालो रे भाया मंदिर होले होले,
गुरुवर की भक्ति में म्हारो-मन डोले-2

बाल ब्रह्मचारी हैं गुरुवर, सौम्यमूर्ति के धारी।
इनके दर्शन करने आवे, मिल के सब नर-नारी।। सगला.....
बाल वय में दीक्षा धारी, वरने मुक्ती नारी।
सकल परिग्रह त्याग बने, जो वेष दिगम्बर धारी।। सगला.....
ज्ञान-ध्यान में रत जो रहते, परिषह को भी सहते।
कर्म विजेता बनने को जो, उपसर्गों को सहते।। सगला.....
बाल-युवा इनके मन भावें, शिक्षा इनसे पावें।
धर्मनीति की शिक्षा देकर, जन-मन को हर्षावे।। सगला.....
भक्तियोग के रस में रमते, औरों को रमवाते।
भौतिक रस के दीवानों को, आतमरस पिलवाते।। सगला.....
नहीं किसी से पक्षपात है, समता रस के धारी।
'क्षमा' करो सब दोष हमारे, आये शरण तिहारी।। सगला.....

श्री क्षेत्रपाल की आरती

(तर्ज–जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा)

क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल राजा।
आरती करें तिहारी हम बजा के बाजा॥
क्षेत्रपाल देव को, जिनदेव प्यारे।
हमको इसलिए ही, क्षेत्रपाल देव प्यारे॥
आप उनके भक्त जो भवोदधि जिहाजा। आरती....

एक हाथ में त्रिशूल, दूजे में भाला।
तीजे में डमरू और, चौथा फूल वाला॥
अस्त्र-शस्त्र धरते धर्म रक्षा के काजा। आरती....

सम्यक्त्ववान आप भक्तों के त्राता।
दीनों को सुख व निर्धनों को धन प्रदाता॥
आपकी कृपा का छत्र भक्त पे विराजा। आरती....

दुर्जन सुधार आप सज्जन को तारे।
जिनधर्मी जन के देव आप ही सहारे॥
पापी को कहते पाप मार्ग में तू ना जा। आरती....

डाकिन पिशाचिन व भूत-प्रेत बाधा।
बाबा प्रसन्न हो तो हो नहीं ये बाधा॥
भक्त 'कपिल' के हो आप प्राणप्रिय राजा। आरती....

जिनशासन भक्त धरणेन्द्र देव

(तर्ज : म्हारा हिवड़ा में ...)

हम आरती गायें आज, ततथइया थइया।
सब मिलके बजाओ साज, ढ़ोलक बांसुरिया।
समोशरण के शासन देवा पद्मावती के सैंया...हम आरती...

तुम पार्श्वप्रभु के रक्षक हो, धरणेन्द्र देव उपकारी हो-होऽऽ तुम...
कच्छप आसन पर शोभ रहे, तुम चारभुजा के धारी हो।
तेरे चरणों में हम आये, पाने तेरी छैया-हम आरती....

नवकार सुना पारस प्रभु से, पारस प्रभु के सेवक बनने। होऽऽ नवकार..
उपकार मान पारस प्रभु का, उपसर्ग मिटाया था तुमने।
फण फैलाया था तुमने और हर्षे पद्मामैया-हम आरती...

जिन भक्तों की रक्षा करते, दु:खियों के दु:ख हर लेते हो। होऽऽजिन...
करुणासागर धरणेन्द्र देव, इच्छा पूरी कर देते हो।
थाल सजाकर तुम्हे चढ़ायें, 'अम्मु' खीर सिवैया-हम आरती...

***

यक्ष-यक्षिणी की आरती

(तर्ज - माईन माईन...)

चौबीस जिन के यक्ष यक्षिणी धर्म प्रभाव बढ़ायें।
घृत कपूर का दीपक ले हम, आरती करने आये॥
बोलो यक्ष-यक्षी की जय-2...॥ घृत...॥

कुसुम श्याम कुमार यक्ष ये, सेवक सब जिनवर के।
गरुड व गोमुख, विजय, वरुण भी, यक्ष हैं ये प्रभुवर के॥
श्री सर्वाण्ह यक्ष धरणेन्द्र-2, सम्यग्दृष्टि कहाये..।
धर्मतीर्थ पर यक्ष-यक्षिणी, प्रभु के साथ बिठाये॥1॥
बोलो यक्ष-यक्षी की जय-2...॥ घृत...॥

शासन देवी है मनोवेगा, ज्वाला मालिनी माता।
गांधारी और महामानसी, चक्रेश्वरी महामाता॥
श्री महाकाली बहुरूपिणी-2, कुष्मांडी मनभाये।

पद्मावती व सर्व देवियाँ, सबके कष्ट मिटायें॥2॥
बोलो यक्ष-यक्षी की जय-2...॥ घृत...॥

विजय वीर मणिभद्र व भैरव, अपराजित यक्षेश्वर।
घंटाकर्ण आदी यक्षों के, जिन प्रभु हैं परमेश्वर॥
क्षेत्रपाल व यक्ष-यक्षिणी-2, समवशरण में जाये।
श्रद्धा से सम्मान करो नित, जिन आगम बतलाये॥3॥
बोलो यक्ष-यक्षी की जय-2...॥ घृत...॥

***

माँ पद्मावती

(तर्ज : इंजन की सीटी...)

भक्तों आओ रे-2 पद्मावती माँ की आरती बोले-2
ढ़ोल मंजीरों के संग मेरा मन डोले-2

पार्श्वप्रभु की चरण सेविका-2, श्री धरणेन्द्र प्रिया हो।
संकट दूर किये जिसने भी, तेरा ध्यान किया हो॥ भक्तों................

पार्श्व प्रभु के उपसर्गों का-2, नाश किया था तुमने।
मेरे उपसर्गों का क्षय हो, शीश झुकाया हमने॥ भक्तों................

भक्तों की तुम भाग्य विधाता-2, दुखियों की दु:खहारी।
दो आशीष तुम्हारा हमको, आये शरण तिहारी ॥ भक्तों................

मुक्तिमार्ग से प्रीत मुझे है-2, रक्षा करो हमारी।
कर्मों से संघर्ष करूँ मैं, शक्ति दो मनहारी॥ भक्तों................

सर्वलोक में तेरी कीर्ति-2, है यशगान तुम्हारा।
'कपिल' तुम्हारी गाथा का माँ, कर न सके विस्तारा॥ भक्तों................

***

श्री नवग्रह शांति स्तोत्र

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरु भाषितै।
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे ॥1॥

जिनेन्द्रा: खेचरा ज्ञेया पूजनीया विधि क्रमात्।
पुष्पैर्विलेपनेर्धूपैर्नैवेद्येस्तुष्टि हेतवे ॥2॥

पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो बुधश्चाष्ट जिनेशिनां ॥3॥

विमलानन्त धर्मेश शान्तिकुन्थ्वरहनमि।
वर्द्धमान जिनेन्द्राणां पाद पद्मं बुधो नमेत् ॥4॥

वृषभाजित सुपार्श्वा साभिनन्दन शीतलौ।
सुमति: संभव स्वामी श्रेयांसेषु वृहस्पति: ॥5॥

सुविधि: कथित: शुक्रे सुव्रतश्च शनैश्चरे।
नेमिनाथो भवेद्राहो: केतु: श्री मल्लिपार्श्वयो: ॥6॥

जन्मलग्नं च राशिं च यदि पीडयन्ति खेचरा:।
तदा संपूजयेद् धीमान् खेचरान् सह तान् जिनान् ॥7॥

भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचम: श्रुतकेवली।
विद्याप्रसादत: पूर्वं ग्रहशांति विधि: कृता ॥8॥

य: पठेत् प्रातरूत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहित:।
विपत्तितो भवेच्छांति: क्षेम: तस्य पदे-पदे ॥9॥

(प्रात:काल इस स्तोत्र का पाठ करने से क्रूर ग्रह अपना दुष्प्रभाव नहीं दिखाते। किसी ग्रह के असर होने पर 27 दिन तक प्रतिदिन 21 बार पाठ करने से अवश्य शांति होती है।)

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

चन्द्रार्क कोटि घटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते,
श्रीचन्द्रिका कलित निर्मल शुभ्रवस्त्रे।
कामार्थदायि कलहंस समाधि रूढे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥1॥

देवा सुरेन्द्र नतमौलिमणि प्ररोचि,
श्री मंजरी निविड रंजित पादपद्मे।
नीलालके प्रमदहस्ति समानयाने,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥2॥

केयूरहार मणिकुण्डल मुद्रिकाद्यैः,
सर्वांगभूषण नरेन्द्र मुनीन्द्र वंद्ये।
नानासुरत्न वर निर्मल मौलियुक्ते,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥3॥

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां,
कांच्याश्च झंकृत रवेण विराजमाने।
सद्धर्म वारिनिधि संतति वर्द्धमाने,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥4॥

कंकेलिपल्लव विनिंदित पाणि युग्मे,
पद्मासने दिवस पद्मसमान वक्त्रे।
जैनेन्द्र वक्त्र भवदिव्य समस्त भाषे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥5॥

अर्द्धेन्दु मण्डितजटा ललित स्वरूपे,
शास्त्र प्रकाशिनि समस्त कलाधिनाथे।

चिन्मुद्रिका जपसराभय पुस्तकांके,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥6॥

डिंडीरपिंड हिमशंख सिताभ्रहारे,
पूर्णेन्दु बिम्बरुचि शोभित दिव्यगात्रे।
चांचल्यमान मृगशावललाट नेत्रे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥7॥

पूज्ये पवित्रकरणोन्नत कामरूपे,
नित्यं फणीन्द्र गरुडाधिप किन्नरेन्द्रैः।
विद्याधरेन्द्र सुरयक्ष समस्तवृन्दैः,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥8॥

॥ इति सरस्वती स्तोत्रम् ॥

श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम्

सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चल भावेन, पूजनीया सरस्वती॥1॥

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी।
अज्ञान तिमिरं हन्ति, विद्या बहुविकासिनी॥2॥

सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमललोचना।
हंसस्कन्ध समारुढ़ा वीणा पुस्तकधारिणी॥3॥

प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी, चतुर्थं हंसगामिनी॥4॥

पंचमं विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरि तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्तं, अष्टमं ब्रह्मचारिणी॥5॥

नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत्॥6॥

वाणी त्रयोदशं नाम, भाषाचैव चतुर्दशम्।
पंचदशं तु श्रुतदेवी, षोडशं गौर्निगद्यते॥7॥

एतानि श्रुतनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्य संतुष्यति माता शारदा वरदा भवेत्॥8॥

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे काम रूपिणी।
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा॥9॥

॥ इति श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम् ॥

श्री महावीराष्टक स्तोत्रम्

(शिखरिणी छन्दः)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य व्ययजनिलसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे(नः)॥1॥

अताम्रं यच्चक्षुः कमल युगलं स्पन्दरहितं,
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे(नः)॥2॥

नमन्नाकेन्द्राली मुकुटमणि भाजालजटिलं,
लसत्पादाम्भोज द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वालाशान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे(नः)॥3॥

यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः।
लभन्तेसद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमुतदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे(नः)॥4॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनु र्ज्ञाननिवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवर सिद्धार्थतनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुत गतिः,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे(नः)॥5॥

यदीया वाग्गङ्गा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे(नः)॥6॥

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येनविजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द, प्रशमपद राज्याय स जिनः,
महावीरस्वामी नयन पथगामी भवतु मे(नः)॥7॥

महामोहातंक प्रशमनपराकस्मिकभिषङ्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदितमहिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां, भवभयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे(नः)॥8॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्॥9॥

॥ इति श्रीमहावीराष्टकस्तोत्रम् ॥

भक्तामरस्तोत्रम्

युगादिकर्त्ता को नमन

भक्तामर प्रणतमौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित पाप तमो वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम्॥1॥

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥2॥

असमर्थता प्रकट

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित-पाद-पीठ
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगत-त्रपोऽहम्
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दु-बिम्ब
मन्यः कः इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्॥3॥

अल्पज्ञता ज्ञापन

वक्तुं गुणान्-गुणसमुद्र! शशांक-कांतान्
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-कालपवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतु-मलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्॥4॥

भक्ति और शक्ति

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्॥5॥

लघुता प्रदर्शन

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिल: किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु ॥6॥

स्तुति का फल

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धम्
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीर-भाजाम्।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु
सुर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्॥7॥

स्वाभिमानता

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः॥8॥

जिननाम भी पापनाशक

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषम्
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकास-भाञ्जि॥9॥

जिनशासन में भक्ति का उदार फल, भक्त का आह्वान

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण ! भूत-नाथ !
भूतै-र्गुणै-र्भुवि भवन्त-मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति॥10॥

भावपूर्वक जिनदर्शन की महिमा

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष विलोकनीयम्
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधे-रसितुं क-इच्छेत्॥11॥

अद्वितीय सुन्दर रूप

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वम्
निर्मापित-स्त्रिभुवनैक-ललामभूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्
यत्ते समानमपरं नहि रूप-मस्ति॥12॥

अनुपम रूप

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि
निःशेष-निर्जित जगत्-त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्॥13॥

जिनाश्रय की महिमा

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक कला-कलाप
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रिता-स्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकम्
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ?॥14॥

मेरुवत् अचल

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्॥15॥

अपूर्व दीपक

निर्धूम-वर्ति-रपवर्जित-तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत् त्रय-मिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्व-मसिनाथ ! जगत् प्रकाशः ॥16॥

अपूर्व सूर्य

नास्तं कदाचि-दुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र ! लोके॥17॥

अपूर्व चन्द्रमा

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारम्,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कान्ति,
विद्योतयज्जग-दपूर्व-शशांक-बिम्बम्॥18॥

अन्धकार-नाशक

किं शर्वरीषु शशिनाऽन्हि विवस्वता वा ?
युष्मन् मुखेन्दु-दलितेषु तमः सु नाथ !
निष्पन्न शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्जलधरै-र्जलभार नम्रैः ॥19॥

अनुपम ज्ञानी

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजो स्फुरन्-मणिषु याति यथा महत्त्वम्
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि॥20॥

संतोषप्रदाता

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि॥21॥

अनुपम जननी-सुत

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिम्
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम्॥22॥

मार्गदर्शक

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-,
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः॥23॥

सहस्रनाम से स्तुति

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माण-मीश्वर-मनन्त-मनंग-केतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः॥24॥

जिन ही बुद्ध, शंकर, ब्रह्मा

बुद्धस्त्व-मेव विबुधार्चित-बुद्धि बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्।
धाताऽसि धीर ! शिव-मार्ग-विधे-र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि॥25॥

नमस्कार

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय॥26॥

पूर्ण निर्दोष

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैर-शेषै,
स्त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश।
दौषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि॥27॥

अशोक वृक्ष

उच्चैरशोक-तरु-संश्रित-मुन्मयूख-,
माभाति रूप-ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्ववर्ति॥28॥

सिंहासन

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्-विलसदंशु-लता-वितानम्,
तुङ्गोदयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः॥29॥

चामर

कुन्दावदात-चलचामर-चारु शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक-शुचि निर्झर-वारिधार-,
मुच्चै-स्तटं-सुरगिरे-रिव शातकौम्भम्॥30॥

छत्रत्रय

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांककान्त-,
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभम्,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥31॥

दुंदुभिनाद

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-,
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्-धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥32॥

पुष्पवृष्टि

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-,
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्-प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां तति-र्वा॥33॥

भामंडल

शुम्भत्-प्रभा-वलय-भूरि विभा विभोस्ते
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर-निरन्तर-भूरि-संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्॥34॥

दिव्यध्वनि

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म-तत्त्व-कथनैक-पटु-स्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनि-र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-,
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः॥35॥

चरण तल में कमल रचना

उन्निद्र-हेमनव-पंकज-पुंजकान्ति-,
पर्युल्लसन् नख-मयूख शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ।।36।।

सूर्य और ग्रह

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् -प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ।।37।।

हाथी का भय

श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोलमूल-,
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तम्-,
दृष्ट्वाभयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ।।38।।

सिंह भय

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्जवल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचल-संश्रितं ते ।।39।।

अग्नि भय

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि कल्पम्,
दावानलं ज्वलित-मुज्जवल-मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तम्
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ।।40।।

सर्पभय

रक्तेक्षणं समद-कोकिल कण्ठ-नीलम्
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंक-
स्त्वन्नाम-नागदमनी-हृदि यस्य पुंसः ॥41॥

युद्धभय

वल्गत्तुरंग-गज-गर्जित-भीमनाद-,
माजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम्।
उद्यद् दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धम्
त्वत् कीर्तनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति ॥42॥

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित वारिवाह-,
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षा-
स्त्वत्पाद-पंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥43॥

समुद्र-भय

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र,
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ।
रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रा-,
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥44॥

रोग-भय

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुपगताश्च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद-पंकज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः ॥45॥

बन्धन–भय

आपादकण्ठ–मुरु–शृंखल–वेष्टिताङ्गाः
गाढं बृहन्–निगड–कोटि–निघृष्ट–जंघाः।
त्वन्नाम–मन्त्र–मनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगत–बन्ध–भया भवन्ति॥46॥

स्तुति से अष्टभय–मुक्ति

मत्त–द्विपेन्द्र–मृगराज–दवानलाहि–,
संग्राम–वारिधि–महोदर–बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते॥47॥

जिन–स्तुति के कंठस्थ करने का फल

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणै–र्निबद्धाम्,
भक्तया मया विविध–वर्ण–विचित्र–पुष्पाम्।
धत्तेजनो य इह कण्ठगता–मजस्रम्,
तं मानतुंग–मवशा समुपैति लक्ष्मीः॥48॥

॥ इति श्री मानतुङ्गाचार्य विरचितं भक्तामर (आदिनाथ) स्तोत्रम् ॥

मोक्ष शास्त्रं तत्त्वार्थसूत्रम्

(श्री उमास्वामी आचार्य विरचितम्)

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुण–लब्धये॥

त्रैकाल्यं द्रव्य–षट्कं, नव–पद–सहितं जीव षट्काय–लेश्याः,
पञ्चान्ये चास्तिकाया, व्रत–समिति–गति–ज्ञान–चारित्र–भेदाः।
इत्येतन्मोक्षमूलं, त्रिभुवन–महितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः
प्रत्येति श्रद्धधाति, स्पृशति च मतिमान्, यः सवै शुद्धदृष्टिः॥1॥

सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउव्विहाराहणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो ॥2॥

उज्जोवणमुज्जवणं, णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसण-णाण-चरित्तं, तवाणमाराहणा भणिया ॥3॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥1॥ तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥2॥ तन्निसर्गादधि-गमाद्वा ॥3॥ जीवाजीवास्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम् ॥4॥ नाम-स्थापना-द्रव्यभावतस्त-न्न्यासः ॥5॥ प्रमाण-नयैरधिगमः ॥6॥ निर्देशस्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः ॥7॥ सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च ॥8॥ मति-श्रुतावधि-मनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥9॥ तत्प्रमाणे ॥10॥ आद्ये परोक्षम् ॥11॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥12॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ॥13॥ तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम् ॥14॥ अवग्रहेहावाय-धारणाः ॥15॥ बहुबहुविध-क्षिप्रा निःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ॥16॥ अर्थस्य ॥17॥ व्यञ्जन-स्यावग्रहः ॥18॥ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥19॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक-द्वादश-भेदम् ॥20॥ भव-प्रत्ययोऽवधिर्देव नारकाणाम् ॥21॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः शेषाणाम् ॥22॥ ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः ॥23॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥24॥ विशुद्धि-क्षेत्र - स्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्यययोः ॥25॥ मति-श्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु ॥26॥ रूपिष्ववधेः ॥27॥ तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य ॥28॥ सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य ॥29॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना-चतुर्भ्यः ॥30॥ मति-श्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥31॥ सदसतोरविशेषाद्य-दृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥32॥ नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जुसूत्र-शब्द-समभिरुढैवंभूता नयाः ॥33॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥1॥

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च॥1॥ द्वि नवाष्टा-दशैकविंशति-त्रि-भेदा यथाक्रमम्॥2॥ सम्यक्त्व-चारित्रे॥3॥ ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च॥4॥ ज्ञानाऽज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रि-पंच भेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च॥5॥ गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शनाज्ञाना-संयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदाः॥6॥ जीव-भव्या-भव्यत्वानि च॥7॥ उपयोगो लक्षणम्॥8॥ स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः॥9॥ संसारिणो मुक्ताश्च॥10॥ समनस्कामनस्काः॥11॥ संसारिणस्त्र-सस्थावराः॥12॥ पृथिव्यप्तेजोवायु-वन-स्पतयः स्थावराः॥13॥ द्वीन्द्रियादय-स्त्रसाः॥14॥ पञ्चेन्द्रियाणि॥15॥ द्विविधानि॥16॥ निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम॥17॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्॥18॥ स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि॥19॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः॥20॥ श्रुत-मनिन्द्रियस्य॥21॥ वनस्पत्यन्ताना-मेकम्॥22॥ कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्या-दीनामेकैक-वृद्धानि॥23॥ संज्ञिनः समनस्काः॥24॥ विग्रह-गतौ कर्मयोगः॥25॥ अनुश्रेणि गतिः॥26॥ अविग्रहा जीवस्य॥27॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः॥28॥ एकसमयाऽविग्रहा॥29॥ एकं द्वौ त्रीन्वा-नाहारकः॥30॥ संमूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म॥31॥ सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः॥32॥ जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः॥33॥ देव-नारकाणा-मुपपादः॥34॥ शेषाणां संमूर्च्छनम्॥35॥ औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि॥36॥ परं परं सूक्ष्मम्॥37॥ प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात्॥38॥ अनन्त-गुणे परे॥39॥ अप्रतीघाते॥40॥ अनादि-संबन्धे च॥41॥ सर्वस्य॥42॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः॥43॥ निरुपभोग-मन्त्यम्॥44॥ गर्भ-संमूर्च्छनजमाद्यम्॥45॥ औपपादिकं वैक्रियिकम्॥46॥ लब्धि-प्रत्ययं च॥47॥ तैजसमपि॥48॥ शुभं

विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥49॥ नारक-संमूर्च्छिनो नपुंसकानि ॥50॥ न देवाः ॥51॥ शेषास्त्रि-वेदाः ॥52॥ औपपादिक-चरमोत्तमदेहासंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥53॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥2॥

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः- प्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ॥1॥ तासु त्रिंशत्पंचविंशति-पंचदश-दश-त्रि-पंचोनैक-नरक-शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ॥2॥ नारका नित्याशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः ॥3॥ परस्परोदीरित-दुःखाः ॥4॥ संक्लिष्टाऽसुरोदीरित-दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥5॥ तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥6॥ जम्बूद्वीप-लवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥7॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥8॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजन-शतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥9॥ भरतहैमवतहरिविदेहरम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥10॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिम-वन्निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ॥11॥ हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः ॥12॥ मणिविचित्र-पार्श्वा उपरिमूले च तुल्य-विस्ताराः ॥13॥ पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केशरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका ह्रदा-स्तेषामुपरि ॥14॥ प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध-विष्कम्भो ह्रदः ॥15॥ दशयोजना-वगाहः ॥16॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥17॥ तद्द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥18॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः ॥19॥ गङ्गा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रूप्य-कूला-रक्ता-रक्तोदाः सरित-स्तन्मध्यगाः ॥20॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥21॥ शेषास्त्वपरगाः ॥22॥ चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गङ्गा-

सिन्ध्वादयो नद्यः ॥23॥ भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागा योजनस्य॥24॥ तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ताः ॥25॥ उत्तरा-दक्षिण-तुल्याः ॥26॥ भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम्॥27॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽव-स्थिताः ॥28॥ एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारि-वर्षक-दैवकुरवकाः ॥29॥ तथोत्तराः ॥30॥ विदेहेषु संख्येय-कालाः ॥31॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भागः ॥32॥ द्विर्धातकीखण्डे॥33॥ पुष्करार्धे च ॥34॥ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥35॥ आर्या म्लेच्छाश्च॥36॥ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तर-कुरुभ्यः ॥37॥ नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्यो-पमान्तर्मुहूर्ते॥38॥ तिर्यग्योनिजानां च॥39॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः॥3॥

देवाश्चतुर्णिकायाः॥1॥ आदितस्त्रिषु पीतान्त-लेश्याः॥2॥ दशाष्ट-पञ्च द्वादश विकल्पाः कल्पोपपन्न-पर्यन्ताः॥3॥ इन्द्र-सामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्ष - लोक - पालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः॥4॥ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः॥5॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः॥6॥ कायप्रवीचारा आ ऐशानात्॥7॥ शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः-प्रवीचाराः॥8॥ परेऽप्रवीचाराः॥9॥ भवनवासिनोऽसुरनाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि-वातस्त-नितोदधि-द्वीप-दिक्कुमाराः॥10॥ व्यन्तराः किन्नर-किंपुरुषमहोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः॥11॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च॥12॥ मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृलोके॥13॥ तत्कृतः काल-विभागः॥14॥ बहिरवस्थिताः॥15॥ वैमानिकाः॥16॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च॥17॥ उपर्युपरि॥18॥ सौधर्मैशानसानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्रमहाशुक्र-शतार-

सहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणा-च्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च॥19॥ स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि-विषय-तोऽधिकाः॥20॥ गतिशरीर-परिग्रहाऽभिमानतो हीनाः॥21॥ पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि-शेषषु॥22॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः॥23॥ ब्रह्म-लोकालया लौकान्तिकाः॥24॥ सारस्वतादित्यवह्न्यरु-रुण-गर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च॥25॥ विजयादिषु द्विचरमाः॥26॥ औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्य-ग्योनयः॥27॥ स्थितिरसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः॥28॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमे-अधिके॥29॥ सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त॥30॥ त्रिसप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि तु॥31॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च॥32॥ अपरा पल्योपममधिकम्॥33॥ परतःपरतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा॥34॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु॥35॥ दशवर्ष-सहस्राणि प्रथमायाम्॥36॥ भवनेषु च॥37॥ व्यन्तराणां च॥38॥ परा पल्योपममधिकम्॥39॥ ज्योतिष्काणां च॥40॥ तदष्टभागोऽपरा॥41॥ लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम्॥42॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः॥4॥

अजीव - कायाधर्माधर्माकाश - पुद्गलाः॥1॥ द्रव्याणि॥2॥ जीवाश्च॥3॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि॥4॥ रूपिणः पुद्गलाः॥5॥ आ आकाशादेकद्रव्याणि॥6॥ निष्क्रियाणि च॥7॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम्॥8॥ आकाशस्यानन्ताः॥9॥ संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम्॥10॥ नाणोः॥11॥ लोकाकाशेऽवगाहः॥12॥ धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने॥13॥ एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम्॥14॥ असंख्येयभागादिषु जीवानाम्॥15॥ प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत्॥16॥ गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः॥17॥ आकाशस्यावगाहः॥18॥ शरीर-वाङ्मनः प्राणापानाः-

पुद्गलानाम् ॥19॥ सुख-दुःख-जीवित-मरणोपग्रहाश्च ॥20॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम्॥21॥ वर्तना-परिणाम-क्रियाःपरत्वाऽपरत्वे च कालस्य॥22॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः॥23॥ शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छायाऽऽतपोद्योत-वन्तश्च॥24॥ अणवः स्कन्धाश्च॥25॥ भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते॥26॥ भेदादणुः॥27॥ भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः॥28॥ सद्द्रव्य-लक्षणम्॥29॥ उत्पाद-व्ययध्रौव्य-युक्तं सत्॥30॥ तद्भावाऽव्ययं नित्यम्॥31॥ अर्पिताऽनर्पितसिद्धेः॥32॥ स्निग्ध-रूक्ष-त्वाद् बन्धः॥33॥ न जघन्य-गुणानाम्॥34॥ गुणसाम्ये सदृशानाम्॥35॥ द्व्यधिकादि-गुणानां तु॥36॥ बन्धेऽधिकौ परिणामिकौ च॥37॥ गुण-पर्ययवद् द्रव्यम्॥38॥ कालश्च॥39॥ सोऽनन्तसमयः॥40॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः॥41॥ तद्भावः परिणामः॥42॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पञ्चमोऽध्यायः॥5॥

कायवाङ्मनः कर्मयोगः॥1॥ स आस्रवः॥2॥ शुभः पुण्यस्याशुभःपापस्य॥3॥ सकषायाऽकषाययोः साम्परायिकेर्या-पथयोः॥4॥ इन्द्रिय-कषायाऽव्रतक्रियाः पञ्च-चतुःपञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः॥5॥ तीव्र-मन्द-ज्ञाताऽज्ञातभावाऽधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः॥6॥ अधिकरणं जीवाजीवाः॥7॥ आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भ-योग-कृत-कारिताऽनुमत-कषायविशेषै-स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः॥8॥ निर्वर्तना-निक्षेप-संयोगनिसर्गा-द्विचतुर्द्वि-त्रिभेदाः परम्॥9॥ तत्प्रदोष-निह्नवमात्सर्यान्तराया-सादनोपघाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः॥10॥ दुःख-शोक-तापाक्रन्दनवध-परिदेवनान्यात्म-परोभय-स्थान्यसद्वेद्यस्य॥11॥ भूतव्रत्यनुकम्पादान-सराग-संयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य॥12॥ केवलि-श्रुतसंघ-धर्म-देवाऽवर्णवादो दर्शनमोहस्य॥13॥ कषायो-दयात्तीव्र-

परिणामश्चारित्रमोहस्य ॥14॥ बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्याऽऽयुषाः ॥15॥ माया तैर्यग्योनस्य॥16॥ अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं मानुषस्य॥17॥ स्वभाव-मार्दवं च॥18॥ निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम्॥19॥ सरागसंयमसंयमा-संयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य॥20॥ सम्यक्त्वं च ॥21॥ योगवक्रता विसंवादनं चाऽशुभस्य नाम्नः॥22॥ तद्विपरीतं शुभस्य॥23॥ दर्शनविशुद्धि-र्विनयसंपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारो-ऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्याग - तपसी - साधु-समाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्तिराऽऽवश्यका-ऽपरिहाणिर्मार्ग-प्रभावना प्रवचन-वत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य॥24॥ परात्मनिन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य॥25॥ तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य॥26॥ विघ्नकरणमन्तरायस्य॥27॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः॥6॥

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम्॥1॥ देशसर्वतोऽणु-महती॥2॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च॥3॥ वाङ्मनोगुप्तीर्याऽऽदाननिक्षेपण-समित्यालोकितपान-भोजनानि पञ्च॥4॥ क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्यनुवीचि-भाषणं च पञ्च॥5॥ शून्यागार विमोचितावास-परोपरोधाकरण भैक्ष्यशुद्धि-सधर्माविसंवादाः पञ्च॥6॥ स्त्रीरागकथाश्रवण-तन्मनोहराङ्गनिरीक्षण-पूर्वरतानुस्मरण-वृष्येष्टरस-स्वशरीर-संस्कारत्यागाः पञ्च॥7॥ मनोज्ञाऽमनोज्ञेन्द्रिय-विषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च॥8॥ हिंसादि-ष्विहामुत्राऽपायाऽवद्यदर्शनम्॥9॥ दुःखमेव वा॥10॥ मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनयेषु॥11॥ जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम्॥12॥ प्रमत्तयोगात्प्राण-व्यपरोपणं हिंसा॥13॥ असदभिधानमनृतम्॥14॥ अदत्तादानं स्तेयम्॥15॥ मैथुनमब्रह्म॥16॥ मूर्च्छापरिग्रहः ॥17॥ निशल्यो-व्रती॥18॥ अगार्यनगारश्च॥19॥ अणुव्रतोऽगारी॥20॥ दिग्देशाऽनर्थ-

दण्डविरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग-परिभोग-परिमाणाऽतिथि-संविभाग व्रत-सम्पन्नश्च ॥21॥ मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥22॥ शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्य-दृष्टि-प्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ॥23॥ व्रत-शीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥24॥ बन्ध-वधच्छेदातिभारारोपणाऽन्नपान-निरोधाः॥25॥ मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान-कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकार-मन्त्रभेदाः ॥26॥ स्तेनप्रयोग-तदाहृताऽऽदान-विरुद्ध-राज्यातिक्रम-हीनाधिक मानोन्मान-प्रतिरूपक-व्यवहाराः ॥27॥ परविवाहकरणे-त्वरिका-परिगृहीताऽपरि-गृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडा-कामतीव्राभि-निवेशाः ॥28॥ क्षेत्रवास्तु हिरण्यसुवर्ण-धनधान्य-दासीदास-कुप्य-प्रमाणातिक्रमाः ॥29॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्य-तिक्रमक्षेत्र-वृद्धि-स्मृत्यन्तराधानानि ॥30॥ आनयनप्रेष्य-प्रयोग-शब्दरूपानुपात-पुद्गलक्षेपाः ॥31॥ कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोग परिभोगाऽऽनर्थक्यानि ॥32॥ योगदुः-प्रणिधानाऽनादर-स्मृत्यनुप-स्थानानि ॥33॥ अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादान-संस्तरोप-क्रमणाऽनादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥34॥ सचित्तसम्बन्ध-संमिश्राभि-षव-दुःपक्वाहाराः ॥35॥ सचित्त-निक्षेपापिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य्य-कालाऽतिक्रमाः ॥36॥ जीवित-मरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्ध-निदानानि ॥37॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥38॥ विधि-द्रव्यदातृपात्र-विशेषात्तद्विशेषः ॥39॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥7॥

मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः ॥1॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानाऽऽदत्ते स बन्धः ॥2॥ प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशा-स्तद्विधयः ॥3॥ आद्यो ज्ञानदर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥4॥ पञ्च-नवद्व्यष्टा विंशति-चतुर्द्विचत्वारिंशद्-द्वि-पञ्च-भेदा यथाक्रमम् ॥5॥ मतिश्रुता वधिमनःपर्यय-केवलानाम् ॥6॥ चक्षुरचक्षुरवधि-केवलानां निद्रा-

निद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥7॥ सदसद्वेद्ये ॥8॥ दर्शनचारित्र-मोहनीया-कषाय-कषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्वि-नवषोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदुभयान्य-कषायकषायौ हास्य-रत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः ॥9॥ नारक-तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि ॥10॥ गतिजाति-शरीराङ्गोपाङ्गनिर्माण-बन्धन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूप-घात-परघातातपोद्योतोच्छ्वास-विहायोगतयः प्रत्येकशरीर-त्रस-सुभग सुस्वरशुभ-सूक्ष्म-पर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्ति-सेतराणि तीर्थकरत्वं च ॥11॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥12॥ दानलाभ-भोगोपभोग-वीर्याणाम् ॥13॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम-कोटीकोट्यः परा-स्थितिः ॥14॥ सप्ततिर्मोहनी-यस्य ॥15॥ विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥16॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोप-माण्यायुषः ॥17॥ अपरा द्वादश-मुहूर्त्ता वेदनीयस्य ॥18॥ नाम-गोत्रयोरष्टौ ॥19॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ॥20॥ विपाकोऽनुभवः ॥21॥ स यथानाम् ॥22॥ ततश्च निर्जरा ॥23॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह-स्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्त-प्रदेशाः ॥24॥ सद्वेद्य-शुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥25॥ अतोऽन्यत्पापम् ॥26॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ॥8॥

आस्रव-निरोधः संवरः ॥1॥ स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षापरीषहजय-चारित्रैः ॥2॥ तपसा निर्जरा च ॥3॥ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥4॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥5॥ उत्तम-क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतप-स्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥6॥ अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव-संवर-निर्जरा-लोक -बोधिदुर्लभ-धर्मस्वाख्यातत्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ॥7॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः

परीषहाः ॥8॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्ण-दंशमशक-नाग्न्यारति-स्त्रीचर्या-निषद्याशय्याक्रोशवध-याचनालाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कारपुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानाऽदर्शनानि ॥9॥ सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थवीत-रागयोश्चतुर्दश ॥10॥ एकादश जिने ॥11॥ बादर-साम्पराये सर्वे ॥12॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ॥13॥ दर्शनमोहान्तराययोर-दर्शनाऽलाभौ ॥14॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्या-ऽऽक्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः ॥15॥ वेदनीये शेषाः ॥16॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोन-विंशतेः ॥17॥ सामायिकच्छेदोपस्थापना परिहार-विशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यातमिति चारित्रम् ॥18॥ अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्याग-विविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥19॥ प्रायश्चित्तविनय-वैयावृत्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम् ॥20॥ नवचतुर्दश-पञ्च-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥21॥ आलोचना-प्रतिक्रमणतदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥22॥ ज्ञानदर्शन-चारित्रोपचाराः ॥23॥ आचार्योपाध्याय-तपस्वि-शैक्ष्य-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधुमनोज्ञानाम् ॥24॥ वाचना-पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय-धर्मोपदेशाः ॥25॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥26॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्ता-निरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ॥27॥ आर्त्त-रौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥28॥ परे मोक्षहेतू ॥29॥ आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति-समन्वाहारः ॥30॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥31॥ वेदनायाश्च ॥32॥ निदानं च ॥33॥ तदविरत-देशविरत-प्रमत्तसंयतानाम् ॥34॥ हिंसानृतस्तेय-विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत-देशविरतयोः ॥35॥ आज्ञाऽपाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम् ॥36॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥37॥ परे केवलिनः ॥38॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-व्युपरत-क्रियानिवर्तीनि ॥39॥ त्र्येकयोग-काय-योगाऽयोगानाम् ॥40॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥41॥ अवीचारं द्वितीयम् ॥42॥ वितर्कः श्रुतम् ॥43॥ वीचारोऽर्थ

व्यञ्जन योग-सङ्क्रान्तिः ॥44॥ सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्तवियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोपशमकोपशांतमोह-क्षपक-क्षीणमोह जिनाः क्रमशोऽसंख्येय-गुण-निर्जराः ॥45॥ पुलाकबकुश-कुशील-निर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥46॥ संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थलिङ्ग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः ॥47॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥9॥

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ॥1॥ बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः ॥2॥ औपशमिकादि-भव्यत्वानां च ॥3॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥4॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्याऽऽलोकान्तात् ॥5॥ पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्-बन्धच्छेदात् तथागतिपरिणामाच्च ॥6॥ आविद्धकुलालचक्रवद्-व्यपगतलेपाऽलाम्बुवदेरण्डबीजवदग्नि-शिखावच्च ॥7॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥8॥ क्षेत्रकाल-गति-लिङ्ग-तीर्थ-चारित्रप्रत्येकबुद्धबोधित-ज्ञानाऽवगाहनान्तर-संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥9॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥10॥

अक्षर-मात्रा-पद-स्वरहीनं, व्यञ्जन-संधि-विवर्जित-रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥1॥

दशाध्याय परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः ॥2॥
तत्त्वार्थ-सूत्र-कर्तारं, गृद्धपिच्छोपलक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्र-संजात, मुमास्वामी-मुनीश्वरम् ॥3॥
जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं ॥4॥
तवयरणं वयधरणं, संजमसरणं च जीव-दया-करणम्।
अन्ते समाहिमरणं, चउविहदुक्खं णिवारेई ॥5॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रापरनाम मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ॥

अभीष्ट सिद्धी स्तोत्र

(श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र)

अभीष्ट सिद्धीदायकम्, अभीष्ट फल प्रदायकम्।
अलोक लोक ज्ञायकम्, हे पार्श्व ! विश्व नायकम्॥
प्रभात सुप्रभात हो, जहाँ जिनेन्द्र साथ हो।
जिनेन्द्र पार्श्वनाथ को, प्रणाम हो प्रणाम हो॥1॥

अनंत ज्ञानवान हो, अनंत दानवान हो।
अनंत सौख्यवान हो, अनंत गुणनिधान हो॥
विनम्र उत्तमांग हो, अनाथ के सनाथ को॥ जिनेन्द्र..॥2॥

सुरेन्द्र पूज्य आप हो, नरेन्द्र पूज्य आप हो।
शतेन्द्र पूज्य आप हो, फणीन्द्र पूज्य आप हो॥
जहाँ जिनेन्द्र जाप हो, वहाँ कभी ना पाप हो॥ जिनेन्द्र..॥3॥

जयंत में जयंत हो, महंत में महंत हो।
अनंत में अनंत हो, हे पार्श्व मुक्तिकंत हो॥
समस्त कष्ट शांत हो, समस्त विघ्न शांत हो॥ जिनेन्द्र..॥4॥

अहिपति तुम्हें नमे, महिपति तुम्हें नमें।
ऋषि यति तुम्हें नमे, मुनिपति तुम्हें नमें॥
सुपुत्र अश्वसेन को, सुमात वामानंद को॥ जिनेन्द्र..॥5॥

अहिपति की वल्लभा, सुमाथ पे धरे सदा।
इसीलिये उसे भजे, समस्त विश्व सर्वदा॥
मुनीन्द्र 'गुप्तिनंदी' को, सुसिद्ध वेष दान दो॥ जिनेन्द्र..॥6॥

***

छोटा सामायिक पाठ

(तर्ज- दिन-रात मेरे स्वामी)

जिनराज के चरण में वंदन करूँ सदा मैं।
गुरुओं के श्री चरण में वंदन करूँ सदा मैं॥1॥
चारों कषाय हरक्षण, अतिकष्ट देती मुझको।
आठों करम सतायें, भव-भव रुलाये, मुझको॥2॥
ये राग-द्वेष मन में, हरपल सता रहे हैं।
मिथ्यात्व मोह ईर्ष्या, हरपल जला रहे हैं॥3॥
सुख-दुःख व लाभ-हानि, जीवन में नित्य आये।
समता का भाव मेरे, तन मन वचन में आये॥4॥
पाँचों ही पाप करके, घनघोर कर्म बाँधे।
इन्द्रिय विषय में रत हो, निज आत्म गुण विराधे॥5॥
हास्यादि नो कषायें, देती प्रमाद मुझको
कभी त्याग व्रत किया ना, भूला मैं नाथ खुद को॥6॥
चिंता करी है पर की, खुद का न बोध आया।
धन पुत्र पत्नि सबसे, बस मोह नित बढ़ाया॥7॥
संसार के ये कारण, संसार ही बढ़ायें।
मुक्ति के हेतुओं से, ये दूर नित करायें॥8॥
जाना कहाँ है मुझको, मंजिल कहाँ है मेरी।
खुद का पता नहीं है, करता हूँ तेरी मेरी॥9॥
सब प्राणियों से दिल से, है मित्रता हमारी।
करता हूँ प्रेम सबसे, यह भावना हमारी॥10॥
गुणवान ज्ञानियों से, मैं प्रेम नित बढ़ाऊँ।
रोगी दुःखी जनों पर, करुणा दया दिखाऊँ॥11॥

विपरीत जो चले नित, माध्यस्थ उनसे होऊँ।
जिनधर्म को समझकर, इक धर्म बीज बोऊँ॥12॥
मन में सदा हो शांति, शांति रहे वचन में।
हो काय में भी शांति, शांति का रस चखूँ मैं॥13॥
बाहर नहीं है शांति, मंदिर में ना है शांति।
खुद में ही खोजूँ शांति, मिल जाये जग में शांति॥14॥
निज आत्म शांति पाने, जिनवर गुरु को ध्याऊँ।
परमात्म नाम से ही, निज आत्म शांति पाऊँ॥15॥
करता हूँ मैं सामायिक, समता की भावना से।
समता मैं नित रहूँ मैं, आस्था की कामना ये॥16॥

दोहा- सामायिक समभाव से, करते सदा त्रिकाल।
''आस्था'' धर त्रय गुप्ति से, पाये मोक्ष विशाल॥

हिन्दी का प्रतिक्रमण

नरेन्द्र छंद

मैंने पापी दुष्टी बनकर, पाप कर्म का बंध किया।
क्रोधी मानी मायावी बन, तीव्र लोभकर बंध किया॥
राग-द्वेष के वश में होकर, अपने मन को मलिन किया।
जो-जो पाप किये प्रमाद वश, उन सब ने ही कष्ट दिया॥1॥

दोहा- प्रतिक्रमण मैं कर रहा, मन वच तन के साथ
सर्व पाप क्षय हो मेरा, सुनो प्रार्थना नाथ॥2॥

नरेन्द्र छंद

क्षमा माँगता सब जीवों से, सर्व जीव भी क्षमा करें।
मैत्री का है भाव सभी से, वैर दूर ही रहा करें॥

एकेन्द्रिय दो ती चतुइन्द्रिय, पंचेन्द्रिय प्राणी सारे।
त्रस स्थावर पृथ्वी आदि, जिन-जिन को मैंने मारे॥3॥

इनका घात किया करवाया, किया पाप का अनुमोदन।
सबसे क्षमा माँगता दिल से, करता मैं निज का शोधन॥
मन में दुष्ट विचार किये हो, दुष्ट वचन मुख से बोले।
प्रतिक्रमण करके भावों से, सर्व पाप मल को धोले॥4॥

दोहा

द्रव्य क्षेत्र व काल में, किये भाव से पाप।
निंदा गर्हा मैं करूँ, नष्ट होय सब पाप॥5॥

नरेन्द्र छंद

हिंसादि पापों के वश हो, बहुत पाप का बंध किया।
बहु आरंभ परिग्रह जोड़ा, अशुभ पाप का बंध किया॥
मैंने पाप किये अति भारी, उनकी निंदा करता हूँ।
भव-भव के अघ दोष नशाने, प्रतिक्रमण मैं करता हूँ॥6॥

क्या-क्या पाप गिनाऊँ भगवन्, तुम तो केवलज्ञानी हो।
मैं अज्ञानी मैं अपराधी, तुम तो अन्तरयामी हो॥
तुमसे दोष छिपाकर भगवन, और नहीं दुःख पाना है।
बड़े पुण्य से तुमको पाया, सब कुछ तुम्हें बताना है॥7॥

दोहा

मन मेरा चंचल अति, रहे धर्म से दूर।
कैसे मन को वश करूँ, मार्ग मिले भरपूर॥8॥

नरेन्द्र छंद

हे चौबीसों नाथ हमारे, परमेष्ठी पाँचो भगवान।
आया हूँ मैं शरण तिहारी, कर देना मेरा कल्याण॥

जाने अनजाने में मुझसे, बहुत हुये हैं ये अपराध।
सभी इन्द्रियों त्रय योगों से, किये नाथ जितने अपराध॥9॥
मारा पीटा गाली दी है, मन में खोटा किया विचार।
कृत कारित व अनुमोदन से, बढ़ा रहा अपना संसार॥
रात दिवस पर की चिंता में, बीत रहा है हर इक श्वास।
पर को अपना मान रहा हूँ, भूल गया मैं निज है खास॥10॥

दोहा

सप्त व्यसन मैंने किये, किये न व्रत उपवास।
श्रावक भी ना बन सका, गया न प्रभु के पास॥11॥

नरेन्द्र छंद

भक्ष्य अभक्ष्य किया है भोजन, पंचेन्द्रिय के वश होकर।
इन सब पापों के कारण ही, खाई है मैंने ठोकर॥
जैन धर्म जिनकुल है पाया, रत्नत्रय मैं भी पाऊँ।
देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति कर, मोक्ष महल को पा जाऊँ॥12॥
अर्चा पूजा और वंदना, नमस्कार प्रभु को करता।
सर्व दुःखों का व कर्मों का, क्षय करने वंदन करता॥
बोधि समाधि सुगति गमन हो, जिनगुण संपत् मैं पाऊँ।
समिति गुप्ति पे 'आस्था'' धारूँ, पापों से मुक्ति पाऊँ॥13॥

दोहा

प्रतिक्रमण निश दिन करूँ, प्रभु या गुरु के पास।
प्रायश्चित्त कर भाव से, करूँ कर्म का नाश॥

***

दीपावली पूजन विधि

पूजन सामग्री :- अष्ट द्रव्य थाली, दीपक, मंगल कलश, पीली सरसों, लाल कपड़ा, लच्छा (कलावा) श्रीफल, धूप, जिनवाणी, चौकी-पाटा-2, कुंकुम, केसर कटोरी, नागरबेल पान-10, पुष्प, पुष्प मालाएँ, नई बहियाँ, कमल, कलम, दवात, मीठा, दुर्वा, हल्दी इत्यादि। नोट :- अपनी आवश्यकतानुसार पूजन सामग्री एकत्रित करें।

पूजन विधि :- सायंकाल को उत्तम मुहूर्त्त में या गोधूलि बेला में अपने निवास स्थान या दुकान के पवित्र स्थान में पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके पूजा प्रारम्भ करें। एक पाटे पर चावलों से स्वस्तिक बनाकर उस पर एक जिनवाणी, दाहिनी ओर घी का दीपक, बाईं ओर धूप दान एवं मध्य में कलश रखें। एक पाटे पर अष्ट द्रव्य की थाली, दूसरे पाटे पर खाली थाली में स्वस्तिक बनाकर द्रव्य चढ़ाने को रख लेना चाहिए, पूजा ग्रहस्थाचार्य या कुटुम्ब के मुखिया द्वारा की जानी चाहिए।

पूजन प्रारम्भ :

मगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्द-कुन्दाद्यौ, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं॥

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए परिवार के सदस्यों (पूजन में बैठे हुए लोगों) को तिलक करें।

मंत्र : ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र के द्वारा पुरुषों के दाएँ हाथ में तथा महिलाओं के बाएँ हाथ में कंकण बंधन करें तथा सभी लोग अपने ऊपर थोड़ा-थोड़ा जल छिड़के। जल छिड़कते समय इस मंत्र को बोलें-

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी, अमृतं स्रावय-स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय इवीं इवीं सं हं हं सः स्वाहा।

इसके उपरान्त इस मंगलाचरण को पढ़ते हुए पुष्प क्षेपण करें–

अर्हन्तो भगवन्त इंद्र महिता, सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा,
आचार्या जिन शासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायका।
श्री सिद्धांत सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलं।।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनशासने भगवतो महति महावीर वर्द्धमान तीर्थंकरस्य धर्मतीर्थे श्री मूल संघे मध्य लोके भरत क्षेत्रे आर्य खंडे भारत देशे.... प्रदेशे श्री मंगल कलश स्थापनं करोमि क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना मंत्र

रुचिर दीप्ति करं शुभ दीपकं सकल लोक सुखाकरमुज्ज्वलं।
तिमिर जाल हरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिर हरं दीपकं प्रज्वालयामि स्वाहा।

अब लक्ष्मी पूजन करने के पूर्व अष्ट द्रव्य तैयार कर चौकियों पर रख लें। एक चौकी पर मंगल कलश की स्थापना करें। गद्दी पर बहीखाता, दवात–कलम, नवीन वस्त्र, रुपयों की थैली आदि रखें।

सर्वप्रथम मंगलाष्टक पढ़कर रखी हुई सभी वस्तुओं पर पुष्प अर्पण करें। इसके बाद स्वस्ति विधान, देव–शास्त्र–गुरु का अर्घ, पंचपरमेष्ठी पूजन, नवदेवता पूजन, महावीर स्वामी पूजन, गणधर पूजन, केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजन करें। इसके उपरान्त बहियों पर साथिया बनाएँ तथा **'श्री ऋषभाय नमः'**, **'श्री महावीराय नमः'**, **'श्री गौतम गणधराय नमः'**, **'श्री केवलज्ञान सरस्वत्यै नमः'** और **'श्री लक्ष्म्यै नमः' लिखकर 'श्री वर्द्धताम्'** लिखें। इसके बाद इस प्रकार से श्री का पर्वत बनाएँ–

❋ श्री ❋
❋श्री श्री ❋
❋ श्री श्री श्री ❋
❋ श्री श्री श्री श्री ❋
❋ श्री श्री श्री श्री श्री ❋

इसके पश्चात् 'श्री देवाधिदेव श्री महावीर निर्वाणत्... तमे वीराद्वे श्री... तमे विक्रमाद्वे..... ईस्यवीय संवत्सरे शुभ लग्ने, स्थिर मुहूर्ते श्री जिनार्चन विधाय अद्य कार्तिक.... कृष्णामावस्यायां शुभवासरे, लाभ वेलायां नूतन वसनामुहूर्तं करिष्ये।'

सब बहियों पर यह लिखकर पान, लड्डू, सुपारी, पीली सरसों, दुर्वा और हल्दी रखें। पश्चात् श्री वर्धमानाय नमः, श्री महालक्ष्म्यै नमः, ऋद्धिः सिद्धर्भवतुतराम् केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः, मम सर्वसिद्धिर्भवतु, काम मांगल्योत्सवाःसन्तु, पुण्यं वर्द्धताम्, धनं वर्द्धताम् पढ़कर बहीखातों पर अर्घ चढ़ाएँ। अनंतर मंगल कलश वाली चौकी पर रुपयों की थैली को रखकर उसमें

''श्री लीलायतनं महीकुलग्रहं कीर्तिप्रमोदास्पदं,
वाग्देवी रति केतनं जय रमाक्रीड़ा निधानं महत्।
सः स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थ-प्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनांघ्रिद्वयं॥''

श्लोक पढ़कर साथिया बनाएँ। पश्चात् लक्ष्मी पूजन करें और लक्ष्मी स्तोत्र, पुण्याह वाचन, शांति विसर्जन करें।

इस यंत्र को लक्ष्मी पूजन के दिन अपने बहीखाते पर लिखें। हल्दी-केशर या चंदन से तथा निम्न मंत्र की एक माला अवश्य जपें-
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

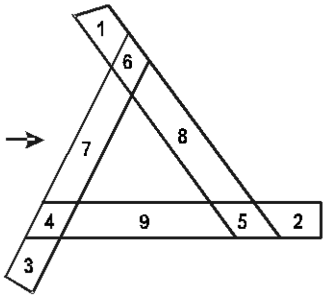

9	16	2	7
6	3	13	12
15	10	8	1
4	5	11	14

इस यंत्र को दीपावली के दिन केशर या सिन्दूर से दुकान पर दाएँ हाथ पर बही पर लिखें।

इसको दीपावली के दिन दुकान के अंदर दीवार पर सामने लिखें, मंगल स्थापना के दाहिने और (दोनों यंत्रों की अष्ट द्रव्यों से पूजा करें।)

10	17	2	7
6	3	14	13
16	11	8	1
4	5	12	15

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पोस्ट कचनेर गट नं. 11-12, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा
आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य
श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री नवग्रह शान्ति विधान (समुच्चय)
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री सर्व सिद्धि (पंच परमेष्ठी) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर (चिंतामणि पार्श्वनाथ) विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री सहस्रनाम विधान (प्रेस से)
39. श्री आदि-पुष्प-शान्ति-पार्श्व-वीर-लक्ष्मी प्राप्ति-बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान
40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान

42. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. श्री दीपावली पूजन (मंत्र-यंत्र-तंत्र संग्रह)
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छयानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ आरती संग्रह
62. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)
63. आचार्य शांतिसागर विधान
64. धर्मतीर्थ आरती संग्रह
65. श्री मुनिसुव्रतनाथ, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान
66. श्री कुन्थुनाथ विधान
67. श्री श्रेयांसनाथ विधान
68. श्री संभवनाथ विधान

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.)
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना